Pt. Nayunandan Mishra
Pratishthamahodadhi
प्रतिष्ठामहोदधिः
Sanskrit
Printed on paper
N.A. Old
Folio: 6+6+6+159
10.5"x4.8"
Complete

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( कर्मकाण्डविभागे ३ ) 'मास्टर' मणिमालायाः षष्ठो मणिः

# अथ प्रतिष्ठामहोदधिः प्रारम्भः ।

पं० श्रीवायुनन्दनमिश्रेण विरचितः ।

विश्वाराध्य सिंहासन
जंगमवाड़ी मठ

प्रथमं संस्करणम् ]

[ मूल्यम् १॥)

अस्याः पुनर्मुद्रणे सर्वेऽधिकारा राजशासनानुसारेण प्रकाशयित्रा स्वायत्तीकृताः ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भास्करमणिमालाया मणिः षष्ठः कर्मकाण्डीयः । श्रीविश्वेशपदेभ्यः सादरमादौ समर्प्यते भक्त्या ॥

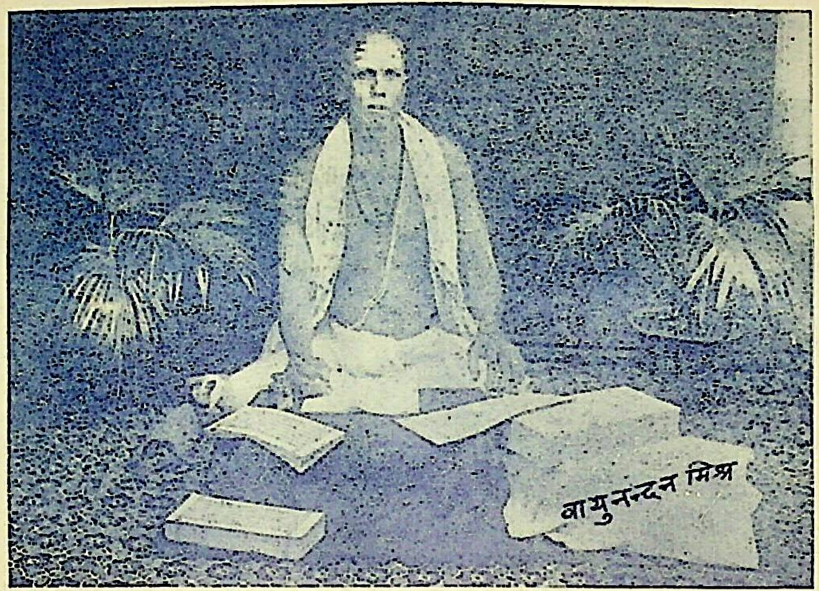


पं० श्रीवायुनन्दन मिश्र कर्मकाण्डी

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ प्रतिष्ठामहोदधिविषयानुक्रमणिका ।


| विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगलाचरणम् | १ | १ | १ | पुण्याहवाचनम् | २६ | २ | ६ |
| सर्वदेवप्रतिष्ठाकालः | १ | १ | ४ | षोडशमातृकापूजनम् | ३१ | १ | ५ |
| सर्वदेवप्रतिष्ठानुक्रमः | १ | २ | १२ | सप्तघृतमातृका पू० (वसोर्द्धारा पू०) | ३३ | १ | ८ |
| कुंडमंडपार्थं भूमिपूजनम् | २ | २ | ७ | आयुष्यमंत्रजपः | ३४ | १ | ४ |
| सूक्ष्मरीत्या मंडपकुंडप्रकारः | ४ | १ | ६ | नान्दीश्राद्धम् | ३४ | २ | १ |
| सर्वप्रायश्चित्तम् | ६ | २ | १ | आचार्यादिवरणानि | ३६ | १ | ६ |
| दश दानानि | १५ | १ | १ | मधुपर्कादिपूजनम् | ३७ | २ | १ |
| गणपतिपूजनम् | २० | १ | १ | मधुपर्काङ्गं गोदानम् | ३८ | २ | ८ |
| कलशस्थापनम् | २४ | १ | १ | मंडपप्रवेशः दिग्रक्षणं प्रोक्षणञ्च | ३६ | १ | १२ |


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

| विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| वास्तुपूजनम् | ४१ | १ | १० |
| मण्डपपूजनम् | ५० | २ | १ |
| सर्वतोलिङ्गतोमंडलदेवतास्थापनं प्रधानपूजनञ्च | ६४ | १ | ६ |
| पंचभूसंस्कारः | ७४ | २ | ५ |
| ग्रहस्थापनम् | ७५ | १ | १ |
| योगिनीस्थापनम् | ८० | १ | ६ |
| क्षेत्रपालस्थापनम् | ८८ | २ | ३ |
| कुशकंडिका | ९४ | १ | १० |
| ग्रहहोमः | ९५ | १ | ७ |
| वास्तुहोमः | ९६ | १ | ९ |
| योगिनीहोमः | ९७ | २ | ८ |
| क्षेत्रपालहोमः | ९८ | २ | ११ |
| प्रधानहोमः | ९९ | २ | १० |
| कर्मकुटीकर्म | १०० | १ | ६ |
| जलाधिवासः | १०१ | १ | ४ |
| अन्नाधिवासः | १०२ | १ | २ |
| स्नपनविधिः | १०२ | १ | ६ |
| ग्रामप्रदक्षिणा | ११० | २ | ५ |
| मधुपर्कादिपूजनम् | ११० | २ | ७ |
| शय्याधिवासः | ११० | २ | ११ |
| शय्यापरितः देवतापूजनम् | १११ | १ | ३ |




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

| विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| दिक्पालबलिः | ११२ | १ | ३ |
| हवनम् | ११२ | १ | ५ |
| न्यासाः | ११२ | १ | ७ |
| शान्तिकपौष्टिकहोमः | १२४ | १ | ७ |
| प्रासादाधिवासनम् | १२६ | २ | ९ |
| प्रासादस्नपनम् | १२६ | २ | १० |
| प्रासादवास्तुपूजनम् | १२८ | १ | ६ |
| प्रासादन्यासः | १२८ | १ | ७ |
| प्रासादशिखरप्रतिष्ठा | १२९ | १ | ४ |
| प्रासादोत्सर्गः | १३० | १ | ५ |
| अचलप्रतिष्ठा | १३० | १ | ९ |

| विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| प्रतिष्ठाहोमः | १३६ | १ | १ |
| अघोरमंत्रहोमः | १३६ | १ | ५ |
| ब्रह्मादिमंडलदेवताहोमः | १३६ | १ | ८ |
| क्षेत्रपालबलिः | १३८ | २ | ८ |
| पूर्णाहुतिः | १३९ | २ | २ |
| वसोर्द्धारा | १४० | २ | १ |
| संक्षेपेण चलप्रतिष्ठा | १४३ | १ | ५ |
| जीर्णोद्धारः | १४५ | २ | ८ |
| बौधायनराधाकृष्णप्रतिष्ठा | १४७ | १ | ९ |
| संक्षेपतो हनुमत्प्रतिष्ठा | १५१ | १ | २ |


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

| विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
| --- | --- | --- | --- |
| संक्षेपेण वापीतडागकूपप्रतिष्ठा | १५३ | १ | ७ |
| यूपस्थापनम् | १५३ | २ | ११ |
| यूपप्रमाणम् | १५५ | २ | १ |
| आरामोत्सर्गः | १५८ | १ | १ |
| पंचायतनक्रमकारिका | १५९ | १ | ६ |
| पंचायतनचक्रम् | १५९ | २ | ६ |


इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ प्रतिष्ठामहोदधिसम्भाराः ।

१) केशर
१) कस्तूरी
=) रोरी
=) नारा
अबीर ऽ१।
बुक्का ऽ=
-) लाल रंग
-) पीला रंग
-) हरा रंग
-) काला रंग
।) धूपबत्ती
कपूर ऽ-

)। मुरा
)॥ जटामासी
)। कुटकी
)। वच
)। चन्दन का भूरा ( बालछड़ीदा )
)। हरदी
)। दारुहरदी
)। कचूर
)। चंपा
)। नागरमोथा
सोपाड़ी ऽ५
नारियल ७

चंदन का मुट्ठा बडा १
चन्दन का मुट्ठा छोटा १
लाल चंदन का मुट्ठा १
पंचमेवा ऽ२॥
लवङ्ग ऽ-
लायची ऽ-
=) जायफल
=) जावित्री
)। हरताल
)। मैनशिल
)। सुरमा सफेद
)। सुरमा काला

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

)। पारा
)। कांत्तीवरिका
)। कौसीस
)। गेरू
)। अगर
)। तगर
)। खश
)। वैष्णवी
)। सहदेवी
)। लक्ष्मणा
)। ब्राह्मी
)। सोंठ ( महौषधी )
)। शमी
)। शतावरी

)। गुडूची
)। सौराष्ट्री
)। अर्जुन
)। आवला
॥) गोरोचन
पीलीसरसो ऽ॑

---

सेवार ( नद्यावर्त )
सोना ))१
चांदी ))१
तामा ))१
सीसा ))१
पीतर ))१
रांगा ))१

पंचरत्न की पुड़िया १७
नवरत्न की पुड़िया १
ब्रह्मशिला १
कूर्मशिला १
लोहे का कांटा ८
मट्टीकी पेटी १
ऊनका सूत ऽ॑
तीन तागका सूत ४०० हाथ
)। कौवाठोंठी
)। शंखपुष्पी
)। वरियारा
)। भटकटैया
)। सोमलता
कुमारी का पाठा १ ( घीकुआर )





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेलफल ५
वैरका फल ५
आम्रफल ५
केला ५
नारंगी ५
वड़ा नीवू १

---

पीपरपत्र
आम्रपत्र
वटपत्र
पाकरपत्र
गूलरपत्र
जामुनपत्र
अशोकपत्र

शमीपत्र
कदम्बपत्र
सेमरपत्र
पंचपल्लव की छाल।

---

घोड़े के स्थान की मट्टी
हाथी के स्थान की मट्टी
दीमक की मट्टी
संगम की मट्टी
तलाव की मट्टी
राजद्वार की मट्टी
गोशाला की मट्टी

---

घी ॥ऽ
गेहूँ ऽ१।

यव ।ऽ
मूँग ऽ॥
तिल्ली काली ॥ऽ
टांगुन ऽ।-
धान ऽ॥।
साँवाँ ऽ१
काला धान ऽ।
पसही ऽ। ( गडहेरुआ )
तिन्नी का चावल ऽ॥
उरदी ऽ२॥
चाउर १ऽ
धान का लावा ऽ=
सतुवा ऽ=
यवका पिसान ऽ१।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चावल का पिसान ऽ।
मसूर का पिसान ऽ।
जटामासी चूर्ण ऽ-
आमलक चूर्ण ऽ-
अन्नाधिवास के अन्न -
मक्खन ऽ।=
दूध गौ का ऽ५
दही गौ का ऽ२॥
गोमूत्र
गोबर
अग्निहोत्र का भस्म
सुरोदक
ऊँख का रस
नारियल का जल

शान्त्युदक
क्षारोदक
तीर्थजल
सितपुष्पोदक
गोश्रृङ्गोदक
मेघजल
फलोदक
नवरत्नोदक
गुलावजल
अतर
फुलेल
सुवर्णोदक
सोने की मूर्ति ५

सोने की शलाका २
चांदी की कटोरी २
सोने का नाग १
सोने का कछुवा १
सोने का कमल १
सोने का टुकड़ा ६०

कमण्डल मै ढकना १
करवा पीतर का २
मट्टीका कलशा २००
तामा का कलशा ७
कांसेका कटोरा २
कांसे की थाली २



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चरु के लिये बटलोही १
सँड़सी पीतर की १
चिमटा पीतर का १
कलछुल पीतर की १
फुकनी पीतर की १

( वरणी का सामान )

१६ पीताम्बर उपरना
१६ धोती
१६ अँगोछा
५ सुवर्ण का जनेऊ
५ सुवर्णमाला
५ सुवर्ण की अंगूठी
१६ सुवर्णपवित्री

५० यज्ञोपवीत
१६ लोटा
१६ पंचपात्र
१६ आचमनी
१६ अर्घा
१६ तष्टा
३२ कांसे की कटोरी
१६ गलैचा का आसन
१६ कुशासन

( मंडप को चढ़ाने के लिये वस्त्र )

थान मलमल का २
थान लाल १
पीला थान १
हरा थान १
काला थान १
१ प्रधान को पीतांबर जोड़ा
१० धाती अँगोछा चढ़ाने को
१ मंडप भर का चंद्वा
१६ चंवर
१६ अयना छोटा
३ अयना बड़ा
गोटा २५ थान

( शय्या का सामान )

पलङ्ग २
तोसक २
तकिया ६

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चादरा २
चांदनी २
रजाई २
दुशाला ऊनी २
पीताम्बर २
पगड़ी (साफा) २
अंगा ( मिरजई ) २
धोती ४
छाता २
जोड़ा २
खडाऊँ २
चँवर २
पंखा २
फरसदरी २

चँदवा २
बटलोही ४
थाली २
कटोरा २
लोटा २
गगरा २
हंडा २
गिलास २
कराही २
तावा २
कलछुल पीतल का २
सँड़सी पीतर की २
चिमटा २
पंचपात्र २

आचमनी २
पानदान २
पीकदान २
डियट पीतर की २
अतरदान २
लालटेन २
चूल्हा २
गलैचा का आसन २
कुशासन २
चौकी २
पीढा २

( मंदिर की पूजासामग्री )

विजयघंट १
घंड़ी २



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शंख १
शंख का अर्घा १
त्रिपाई १
अर्घा तामे का १
कटोरी २
रिकेबी २
कोपर १
आरतो १
धूपदानी १
होरसा १
अष्टबन्ध ऽ२॥

( नवग्रह की समिधा )

प्रादेशमात्र १० अ०
मदार की लकड़ी १०८
पलास की लकड़ी १०८
खैर की लकड़ी १०८
चिचिड़ा की लकड़ी १०८
गूलर की लकड़ी १०८
पीपल की लकड़ी १०८
शमी की लकड़ी १०८
दूर्वा
कुशा

( मण्डप बनाने का सामान )

१२ खंभा ५ हाथ का
४ खंभा ८ हाथ का
१६ लकड़ी १६ खंभों पर के लिए
८ लकड़ी ४ दिशाओं के लिए
८ लकड़ी ८ कोनों के लिए
१ लट्टू याने ( शिखर )
८ लकड़ी ४ द्वार के लिए ५ हाथ लंबी
८ लकड़ी ४ द्वार के देहली उतरन के लिए
२ हाथ ८ अं.
२ पीपर की लकड़ी ७ हाथ लम्बी
१ पीपर की लकड़ी ३॥ हाथ की
२ वट की लकड़ी ७ हाथ की लम्बी
१ वट की ३॥ हाथ की
२ पाकर की ७ हाथ लम्बी
१ पाकर की ३॥ हाथ की
२ गूलर की लकड़ी ७ हाथ लंबी
१ गूलर की लकड़ी ३॥ हाथ की
चटाई कोमल बाँस
फूस छाजन के वास्ते

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूँज का बाध ऽ५

२० बांस पतरा १० हाथ का

२ बाँस बड़ा १५ हाथ का

पीढा ५ लंबा २८ अं. चौड़ा २४ अं. ६ अं. ऊंचा

चौकी १ चौड़ी लम्बी बराबर ४ हाथ की

१०० कटिया

२०० पत्तल

हड़िया २५

दिया २५०

कसोरा २००

दियरी २००

दिया २००

नाँद ५

डीयट काठ की ५

मीठा तेल ऽ२॥

परई २०

रुई ऽ=

सलाई ५

इति प्रतिष्ठामहोदधिसम्भाराः ।





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॥ १ ॥

## सर्वतोभद्रचक्रम्

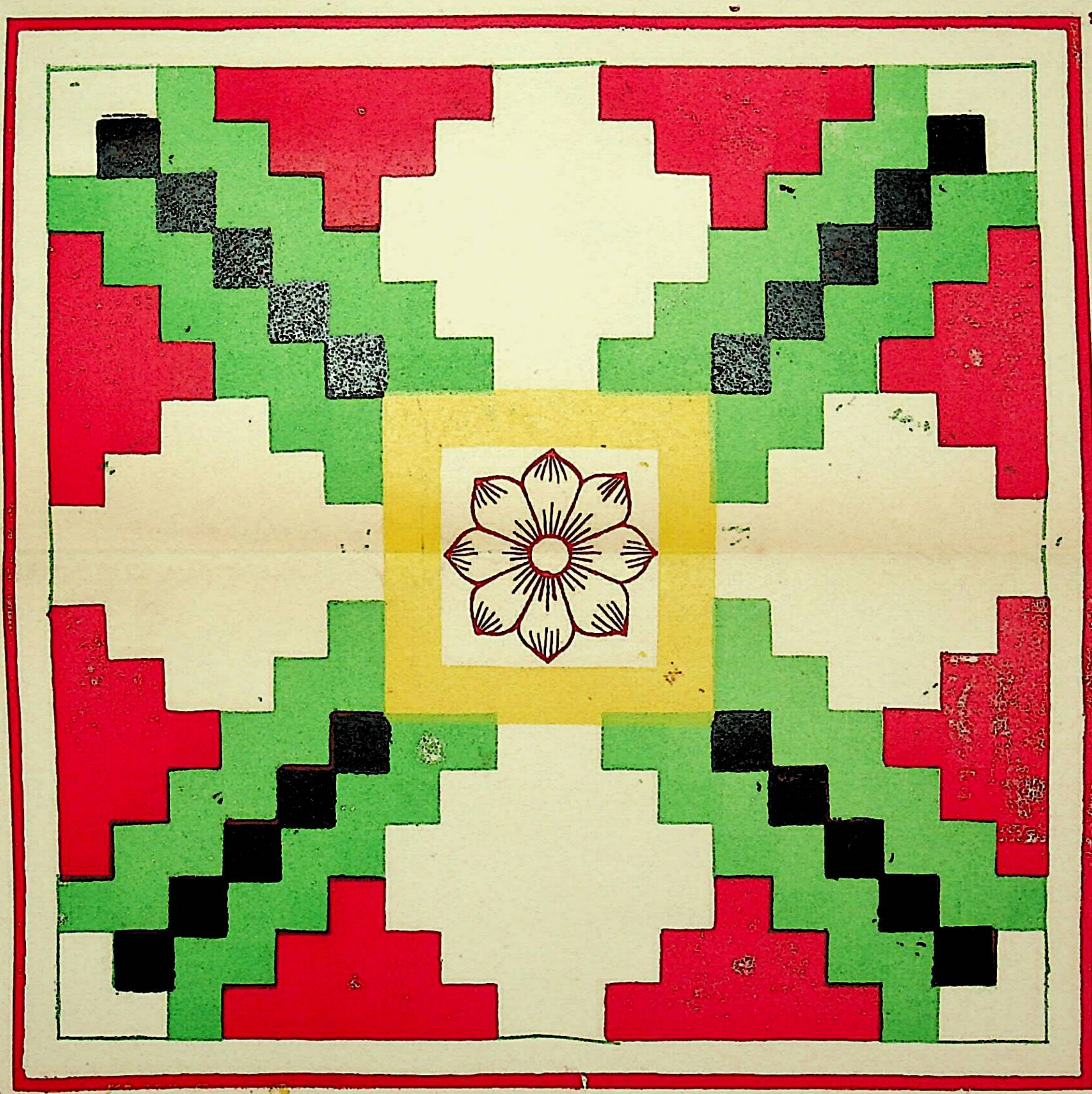

प्र० ॥ १ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र०
॥ २ ॥

म०
॥ २ ॥

## चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्

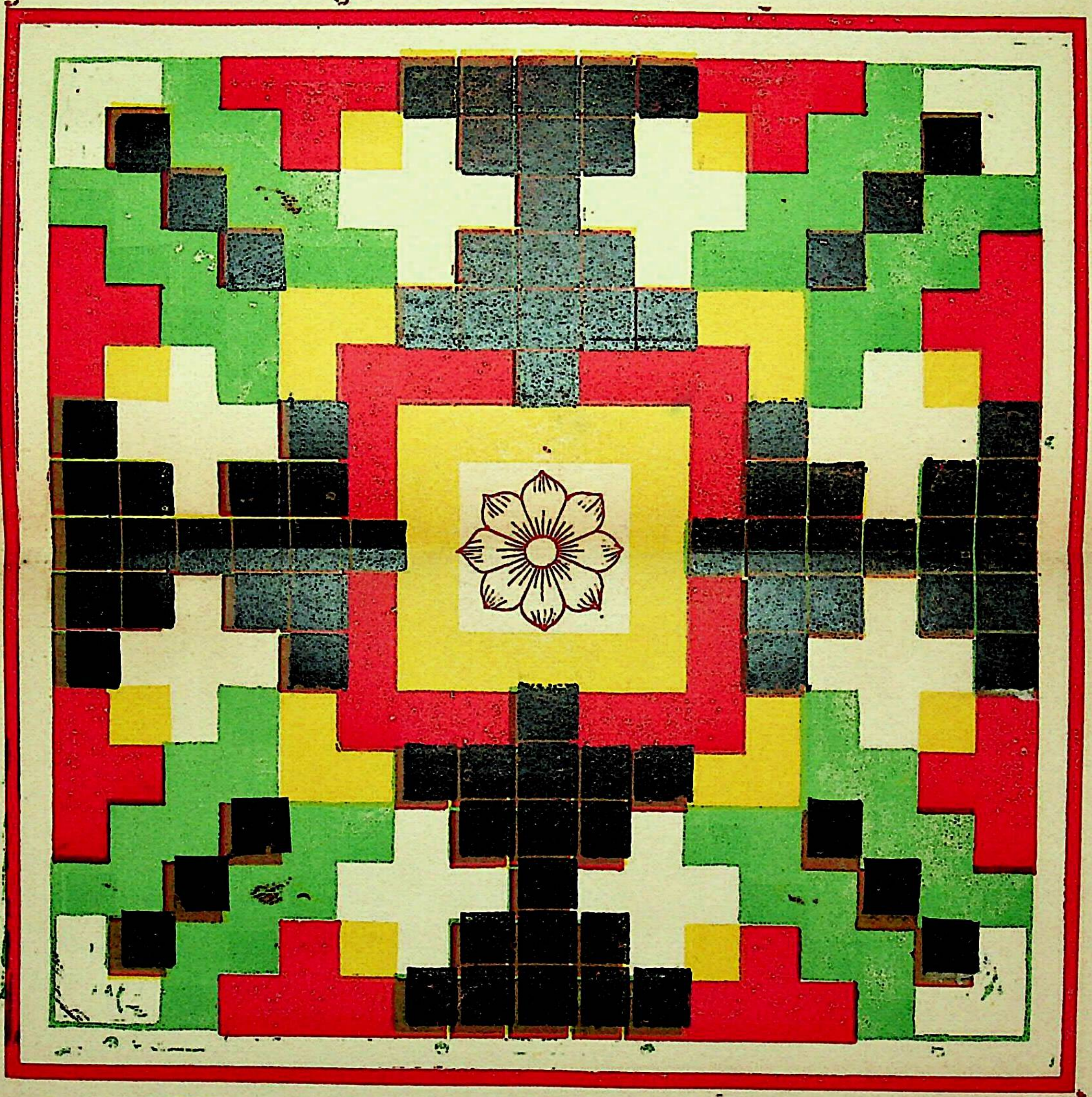

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## ॥ द्वादशलिंगतोभद्रं हरिहरमंडलं ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## वारुण मण्डल चक्रम्

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

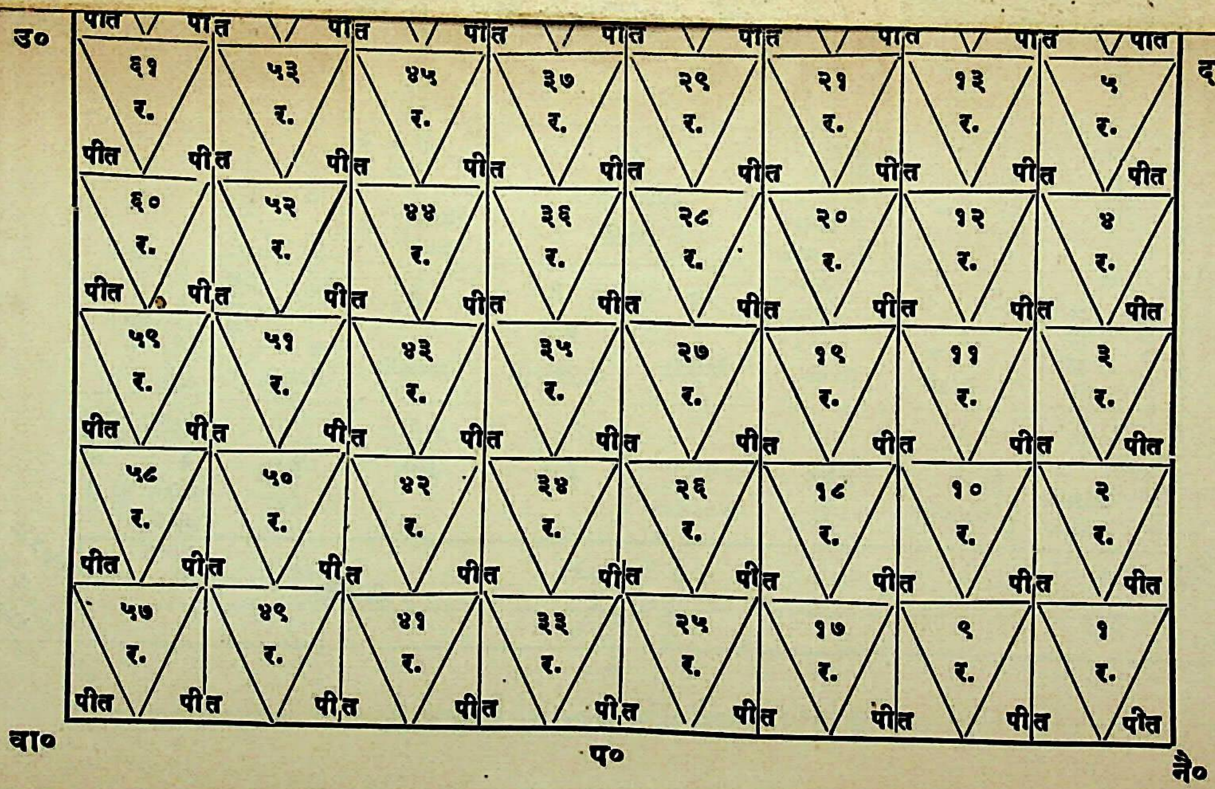


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ चतुःषष्टिपदं वास्तुमण्डलम् ।

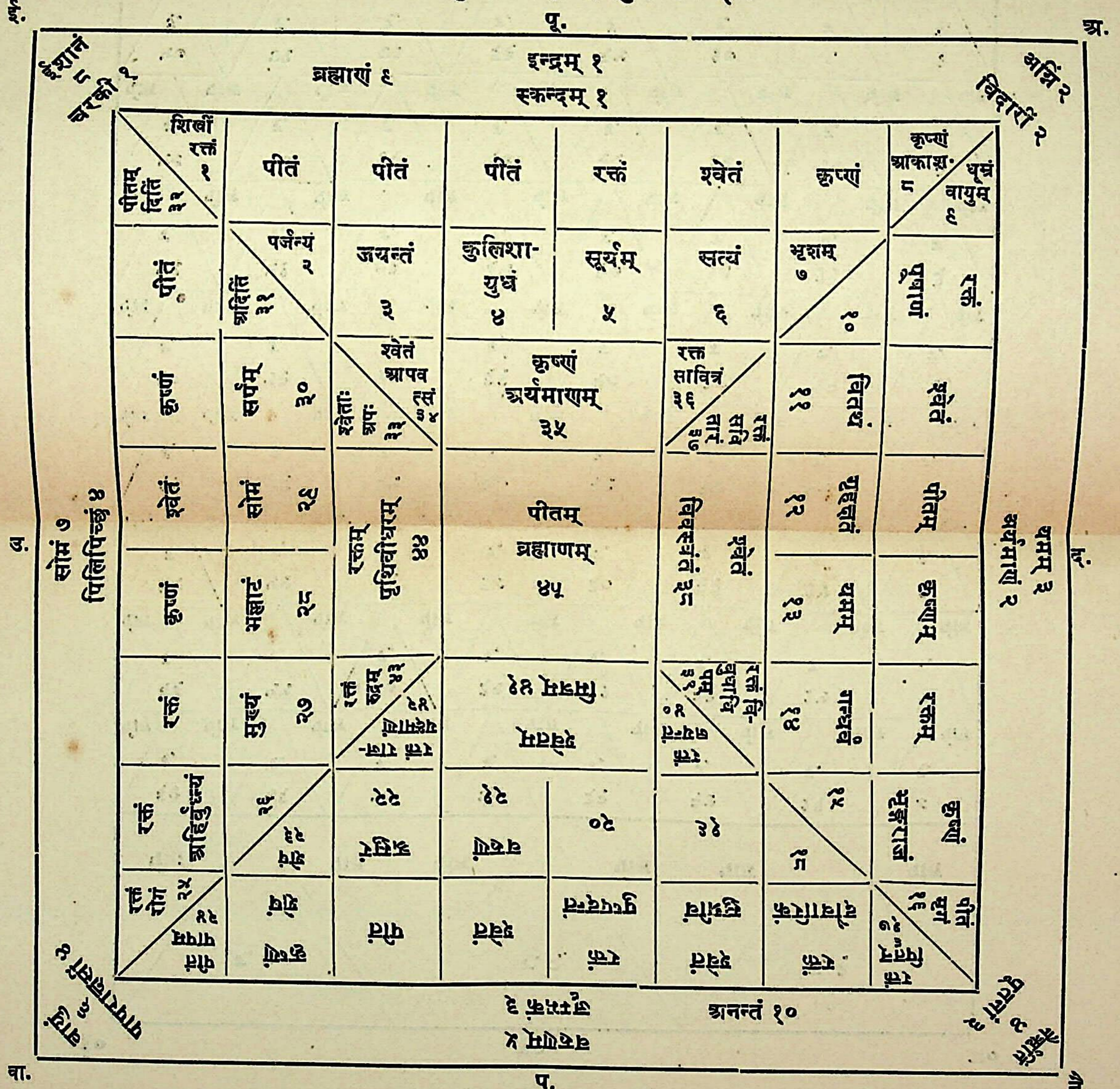


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० म०

# अथ चतुःषष्टियोगिनीचक्रम् ।

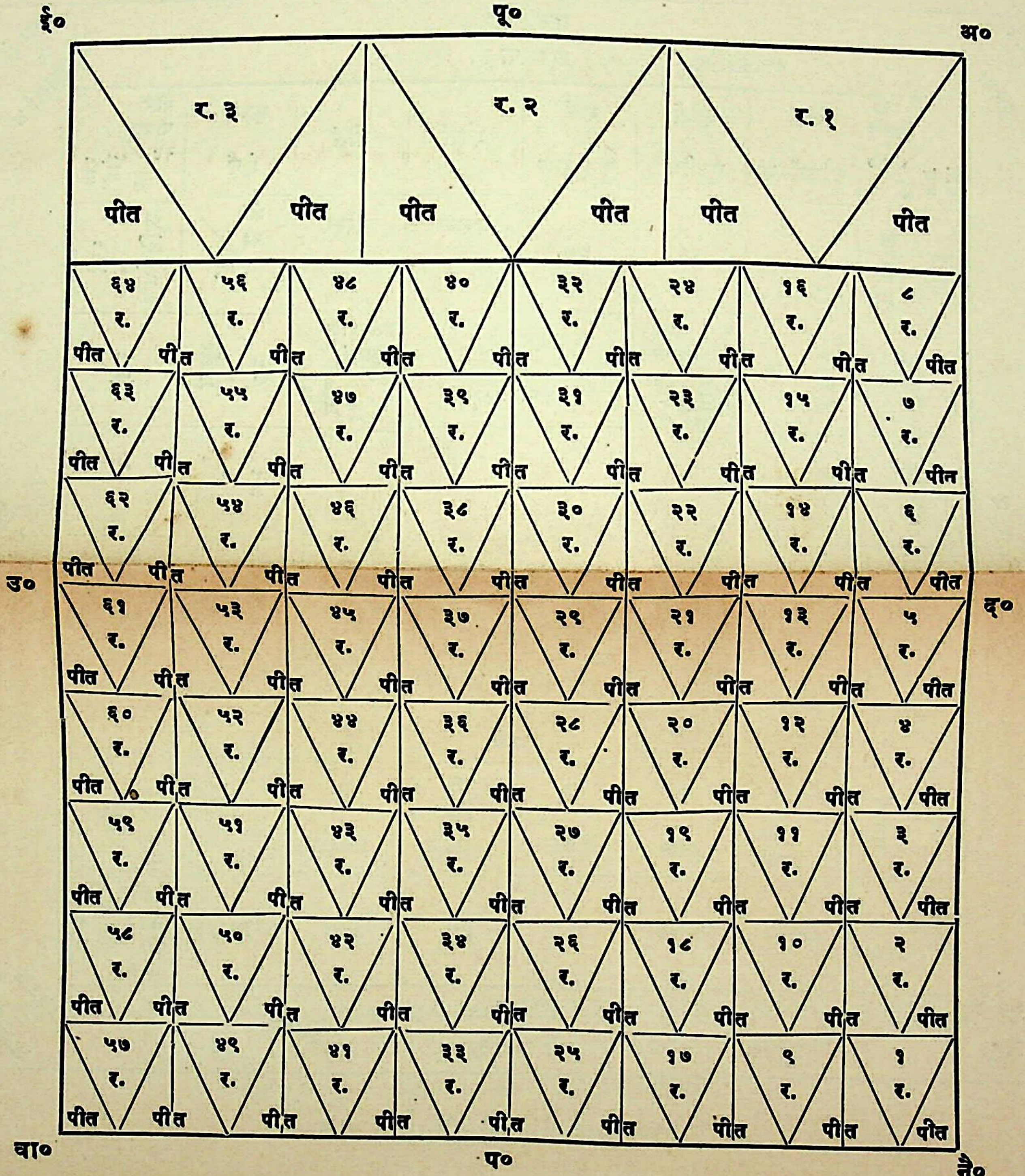


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# क्षेत्रपालचक्रम् ।

पू०

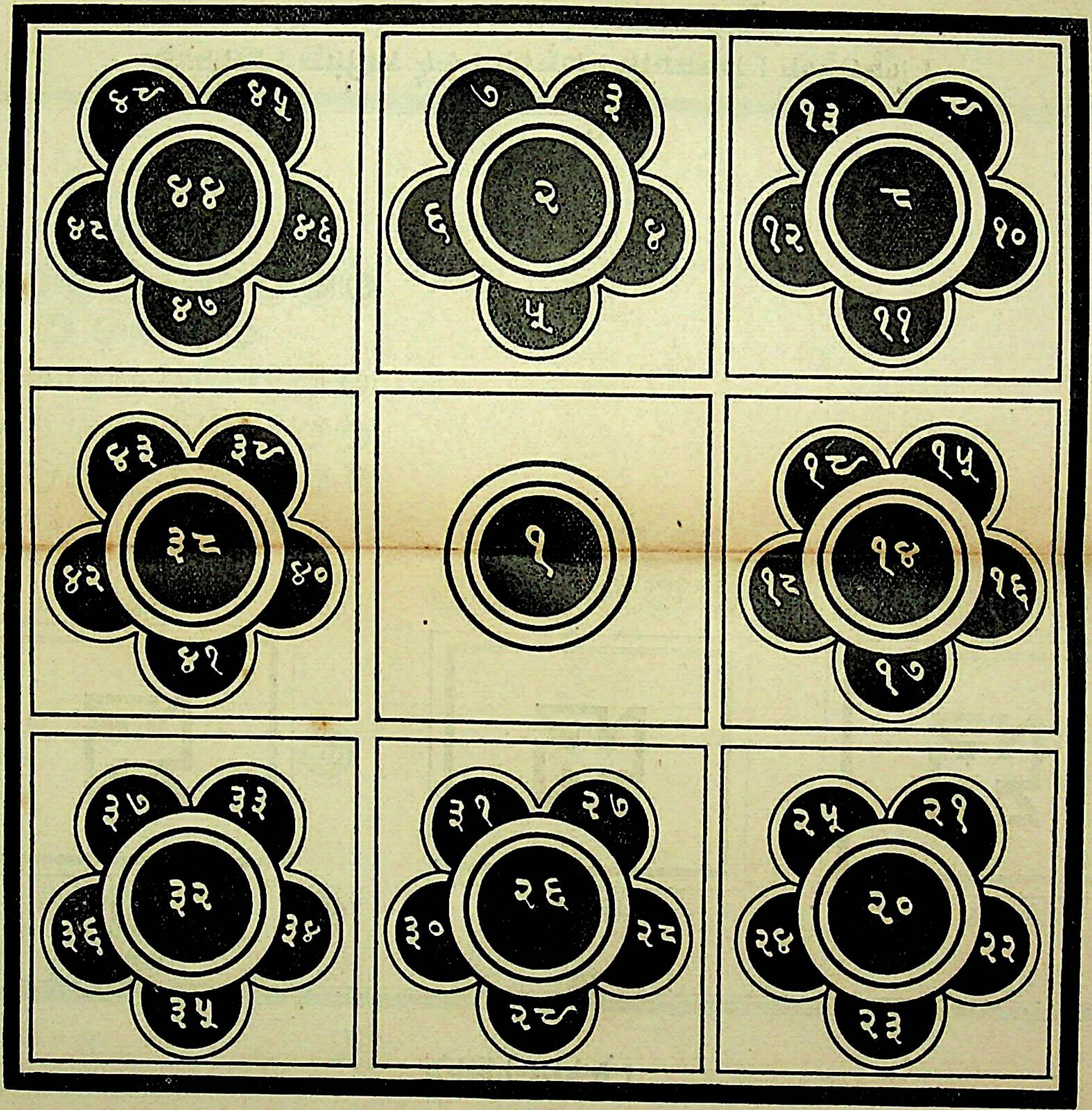


उ० द०

प०

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० म०

# देवस्नपनचक्रम् ।

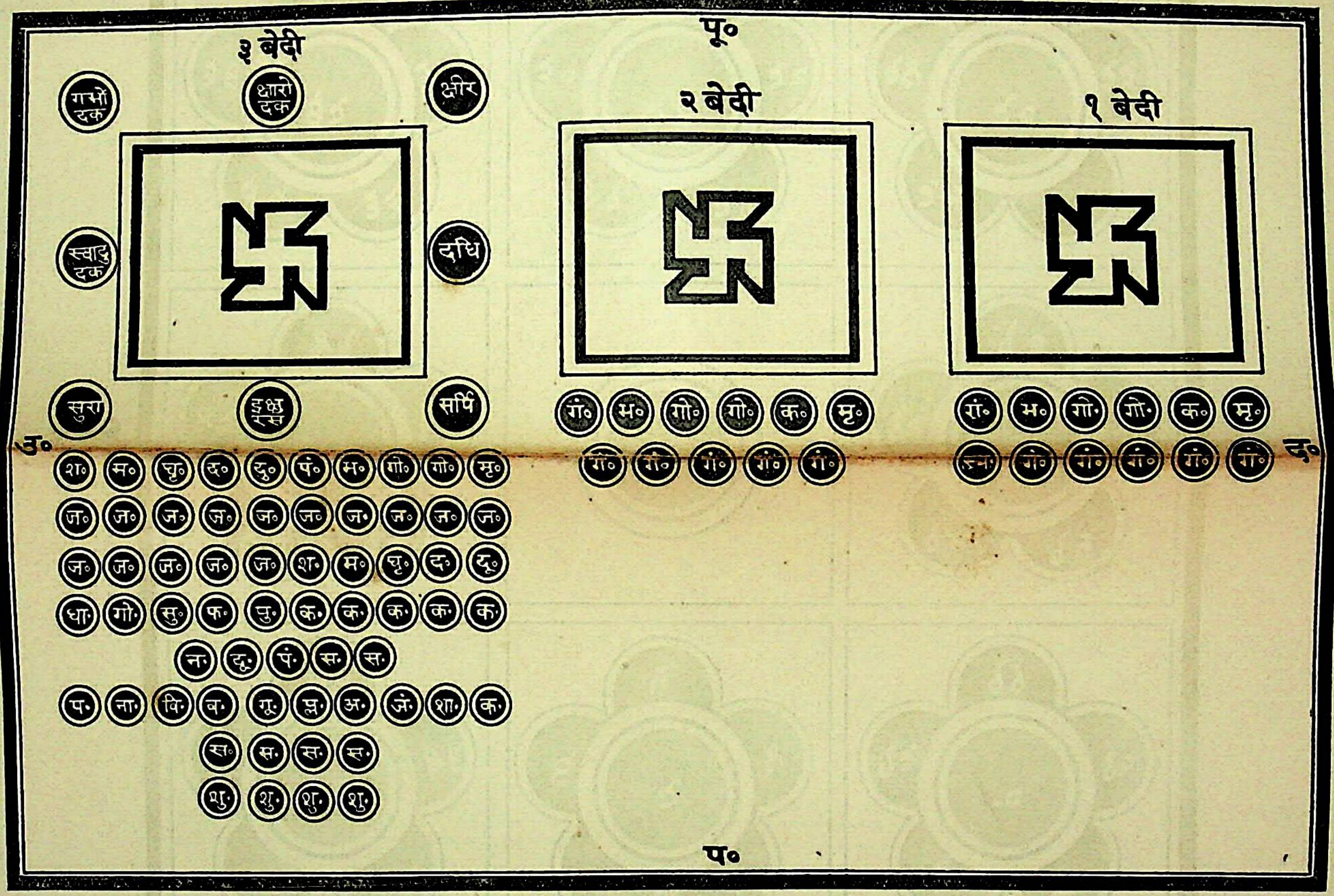


सूक्ष्मवस्त्र । सुगंधित तैल । यवचूर्ण । गोधूमचूर्ण । तण्डुलचूर्ण ।
बिल्वचूर्ण । आमलकचूर्ण । जटामासीचूर्ण ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

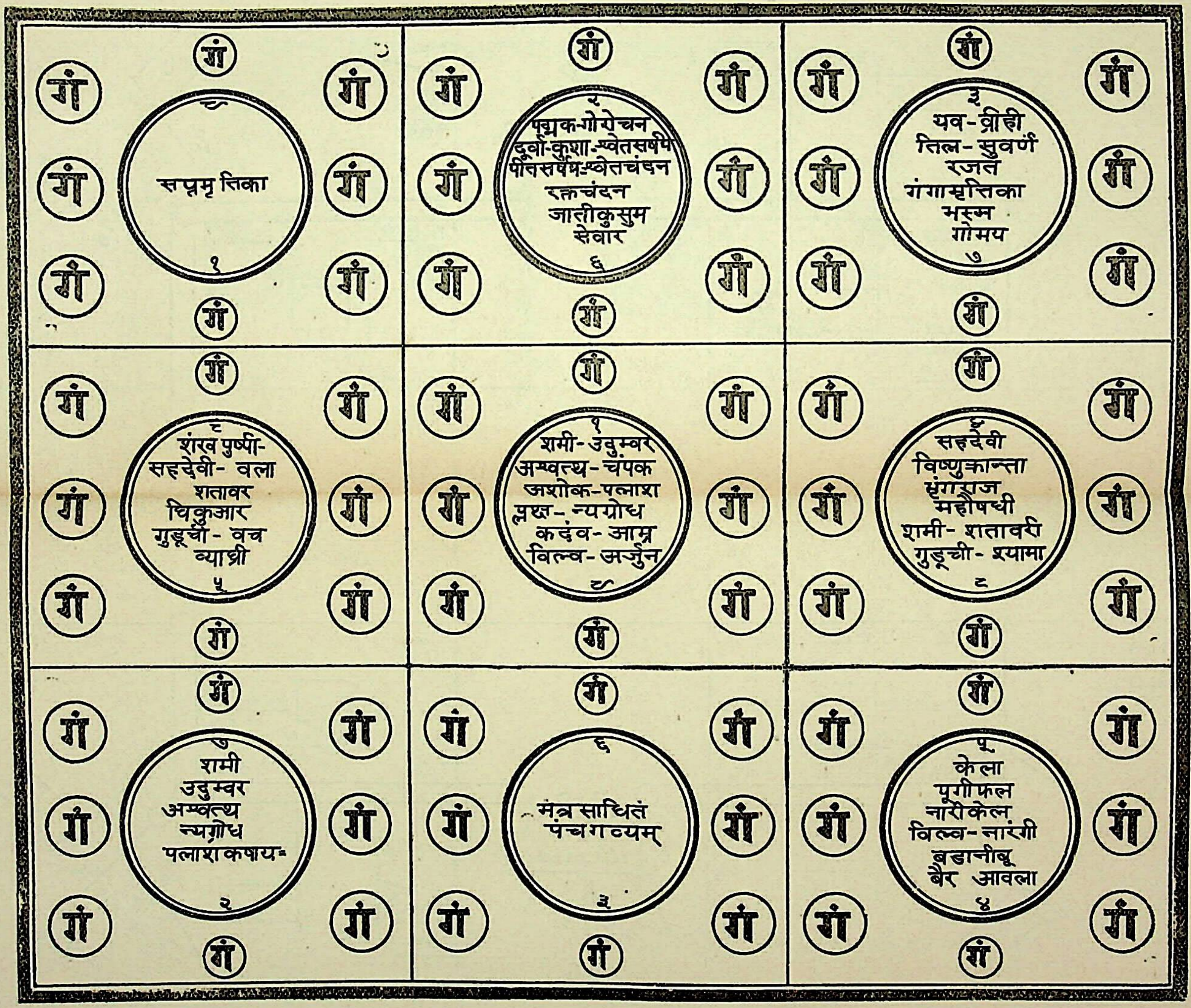




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र०

॥ २ ॥

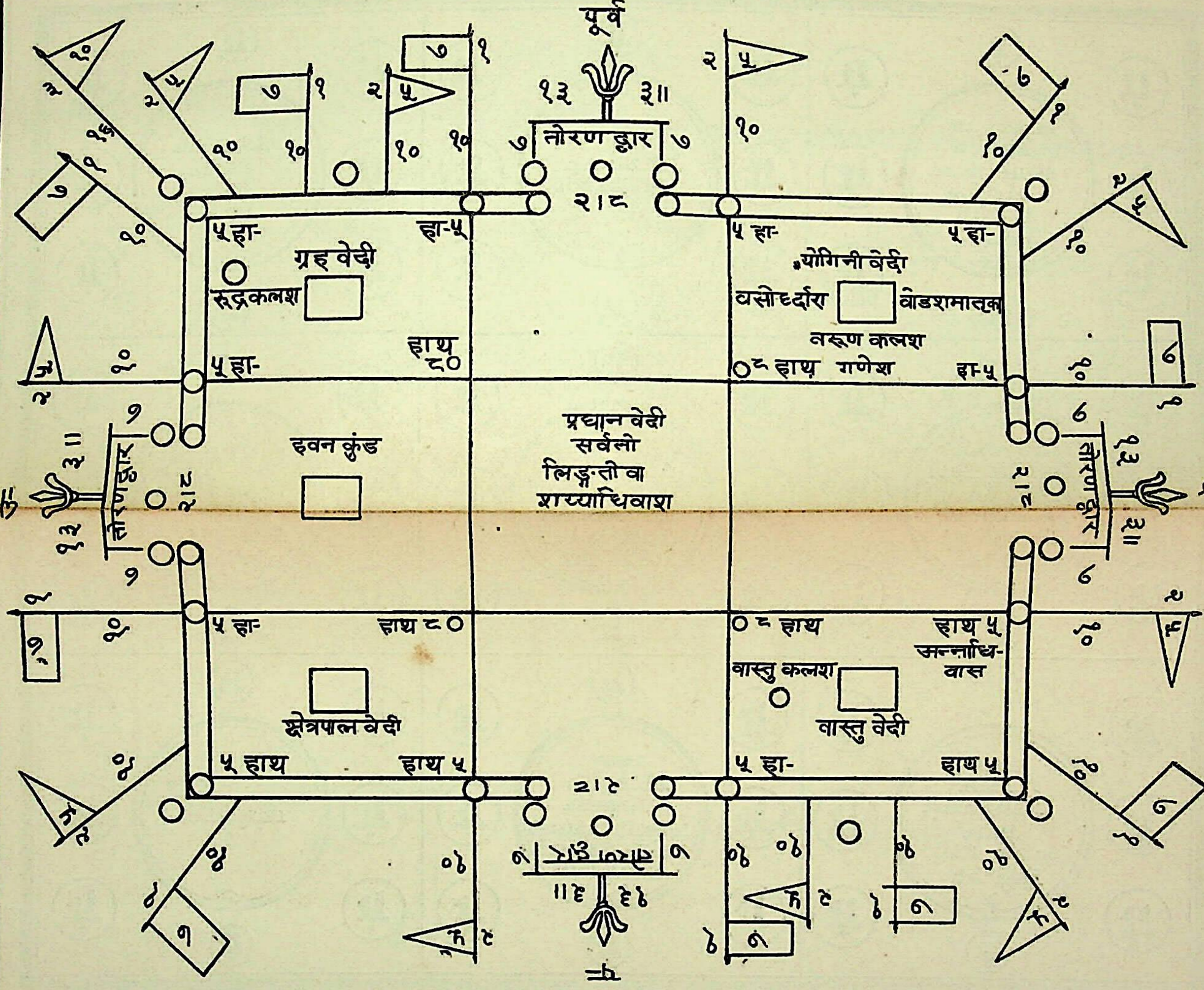


म०

॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॥ ३ ॥

म० ॥ ३ ॥

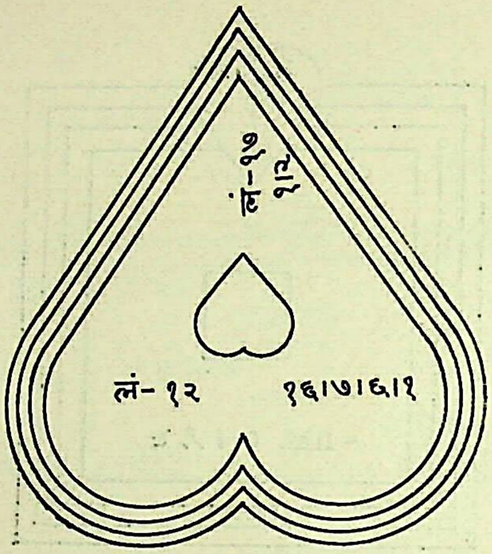


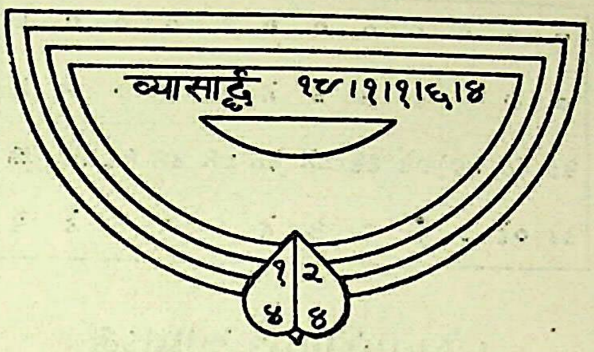


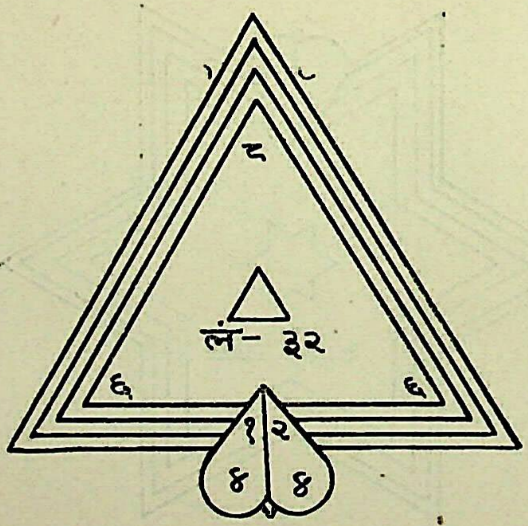


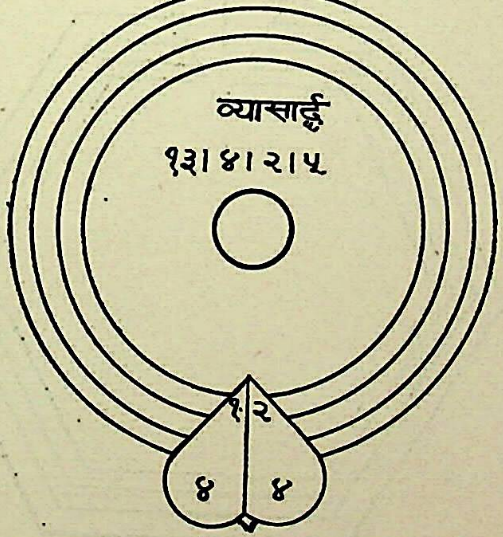


CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

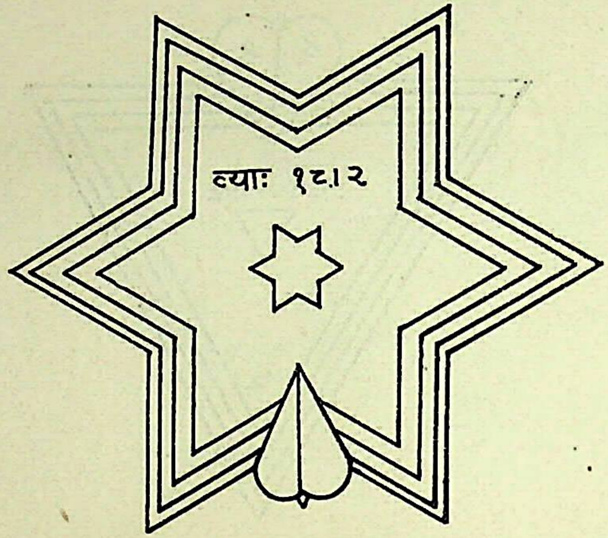


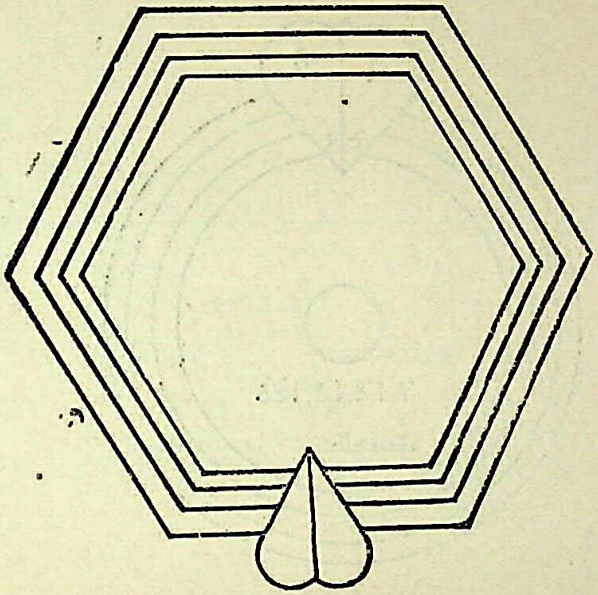

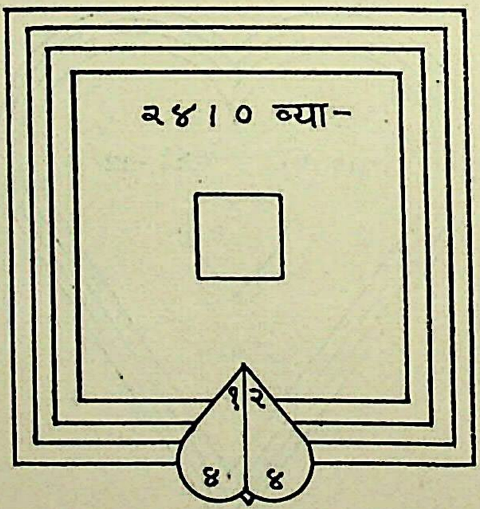


## कुंडसिद्धि-हस्तादिमानम् ।

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ह. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | १६ |
| अं. | २४ | ३४ | ४१ | ४८ | ५३ | ५८ | ६३ | ६७ | ७२ | ७५ | ९६ |
| य. | ० | ० | ५ | ० | ५ | ६ | ४ | ७ | ० | ७ | ० |
| यू. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

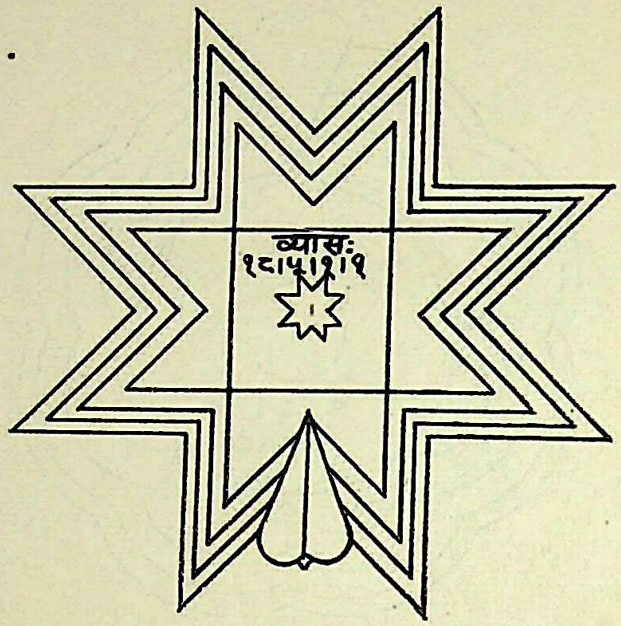


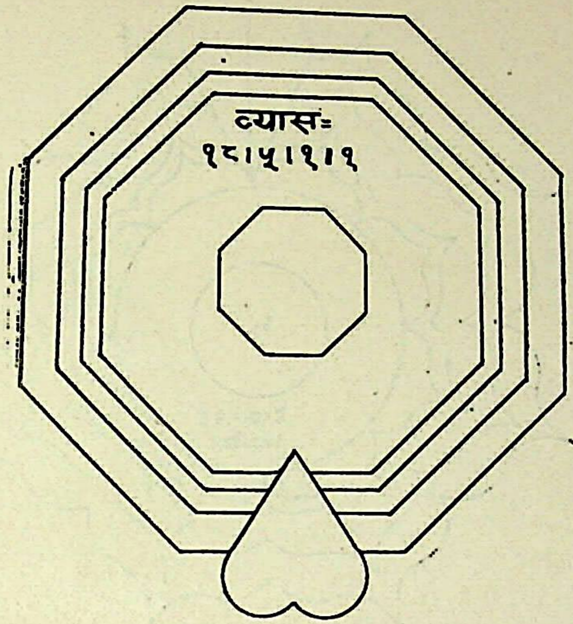


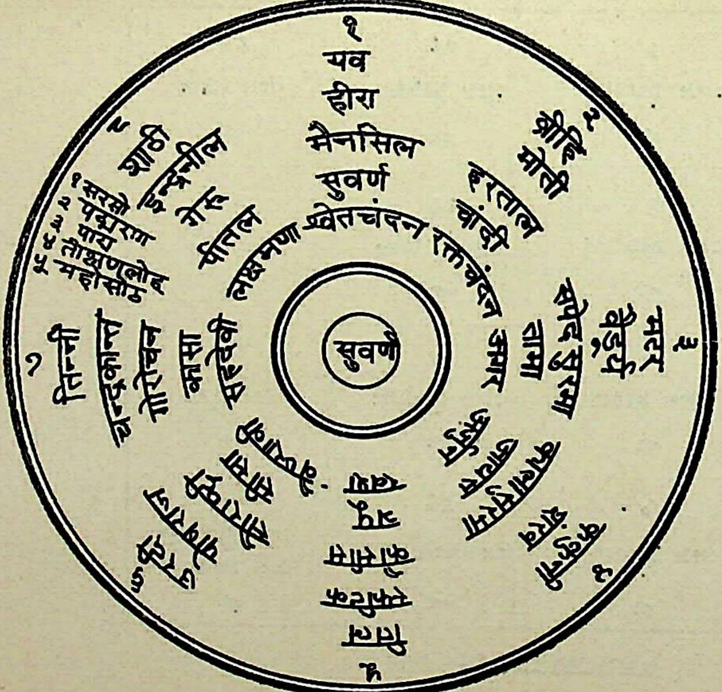


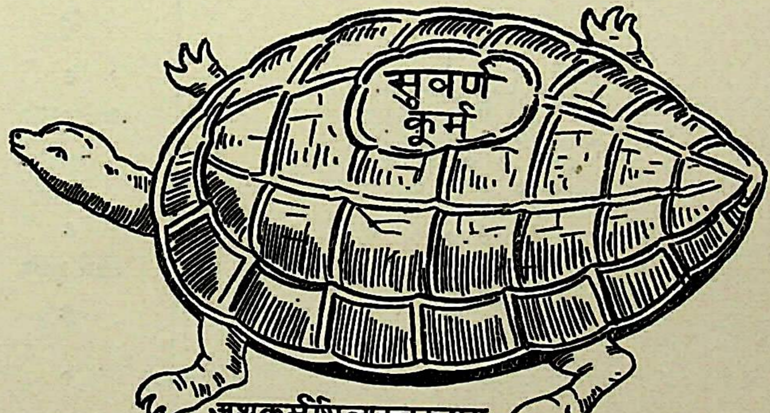


अथकूर्मशिलास्वरूपम्
१४ अङ्गुल

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## ( अथ षोडशमातृकाचक्रम् )

| | | | |
|---|---|---|---|
| ॐ आत्मनः कुल-देवतायै नमः १७ | ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३ | ॐ देवसेनायै नमः ९ | ॐ मेधायै नमः ५ |
| ॐ तुष्ट्यै नमः १६ | ॐ मातृभ्यो नमः १२ | ॐ जयायै नमः ८ | ॐ शच्यै नमः ४ |
| ॐ पुष्ट्यै नमः १५ | ॐ स्वाहायै नमः ११ | ॐ विजयायै नमः ७ | ॐ पद्मायै नमः ३ |
| ॐ धृत्यै नमः १४ | ॐ स्वधायै नमः १० | ॐ सावित्र्यै नमः ६ | ॐ गौर्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १ |

## ( अथ वसोर्द्धारा )

॥ श्रीः ॥

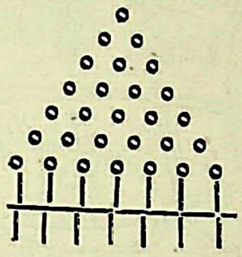



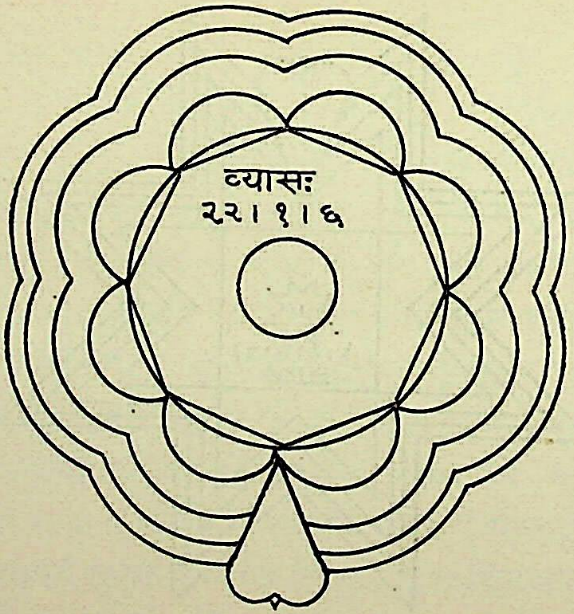


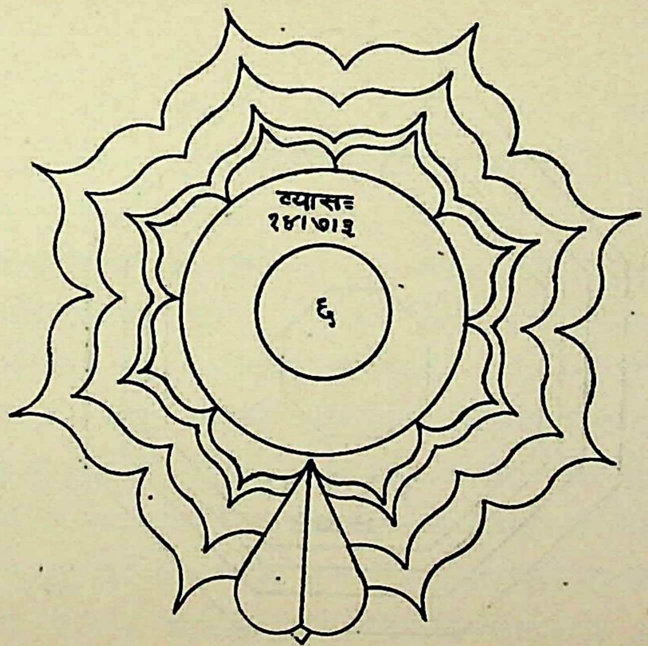


CC 0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥ साम्बं गणपतिं नत्वा विश्वेशं माधवं तथा ॥ गुरुं ज्ञानप्रदं चैव मातरं पितरं तथा ॥ १ ॥ आकरात्सारमादाय वायुनन्दन-सूरिणा । कृतो विद्वत्प्रमोदाय सुप्रतिष्ठामहोदधिः ॥ २ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रासादानां विधिं शुभाम् ॥ कृतेन येन तेषां तु प्रतिष्ठा संप्रजायते ॥ ३ ॥ ( तत्रादौ सर्वदेवप्रतिष्ठाकाल उच्यते ) मात्स्ये ॥ चैत्रे वा फाल्गुने वापि ज्येष्ठे वा माधवे तथा ॥ माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा सिते ॥ १ ॥ सौम्यायने शुभा प्रोक्ता निन्दिता दक्षिणायने ॥ रिक्तान्यतिथिषु स्यात्सा वारे भौमान्यके तथा ॥ २ ॥ या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा तस्य कीर्त्तिता ॥ आषाढे द्वे तथा मूलमुत्तरात्रयमेवं च ॥ ३ ॥ ज्येष्ठाश्रवणरोहिण्यः पूर्वाभाद्रपदा तथा ॥ हस्ताश्विनी रेवती च पुष्यो मृगशिरास्तथा ॥ ४ ॥ अनुराधा तथा स्वाती प्रतिष्ठासु प्रशस्यते ॥ चन्द्रतारा-बलोपेते पूर्वाह्णे शोभने दिने ॥ ५ ॥ शुभलग्ने शुभांशे च कर्तुर्नो निधनोदये ॥ अयने विषुवे तद्वत् षडशीति-मुखे तथा ॥ ६ ॥ सुराणां स्थापनं कार्यं विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ प्राजापत्ये तु शयनं श्वेते तूत्थापनं तथा ॥ ७ ॥ मुहूर्ते स्थापनं कुर्यात्पुनर्ब्राह्मे विचक्षणः ॥ दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्तेऽभिजिदष्टमे ॥ ८ ॥ सर्वकामसमृद्धः स्यात्सर्वो-पद्रववर्जितः ॥ चरराशिं परित्यज्य स्थिरराशिं प्रगृह्य च ॥ ९ ॥ प्रतिष्ठाङ्कारयेद्विद्वान्विष्णोर्देवस्य सर्वदा ॥ सिंहे सूर्यः शिवो द्वंद्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः ॥ १० ॥ कुंभे वेधाश्चरे क्षुद्रास्त्वङ्गदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ ( अथ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवतांतरेण कालविशेषो रत्नावल्याम् ॥ ) माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढेषु पंचसु ॥ प्रतिष्ठा शुभदा प्रोक्ता सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ १ ॥ श्रावणे च नभस्ये च लिङ्गस्थापनमुत्तमम् ॥ देव्या माघाश्विने मासेऽप्युत्तमा सर्वकामदा ॥ २ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासोऽत्र कारणम् ॥ सर्वकाले प्रकर्त्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ ३ ॥ रात्रिरूपा यतो देवी दिवारूपो महेश्वरः ॥ अतः स्वकालपूजाभिः सिद्धिदा परमेश्वरी ॥ ४ ॥ ( माधवीये मयूखे च ) मातृभैरववाराहनारासिंहत्रिविक्रमाः ॥ महिषासुरहंत्र्यश्च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥ ५ ॥ ( क्वचिन्निषेधः दक्षिणायने ) आर्द्रादिके स्वातिविरामकाले नक्षत्रवृन्दे दशके स्थितेऽर्के ॥ विवाहचौलव्रतवंधदीक्षासुरप्रतिष्ठादि न कार्यमेवेति ॥ ( लिङ्गप्रतिष्ठायां विशेषः हेमाद्रौ लक्षणसमुच्चये ) स्थापनं तु प्रकर्त्तव्यं शिशिरादावृतुत्रये ॥ प्रावृषि स्थापितं लिङ्गं भवेद्वरदयोगदम् ॥ १ ॥ हेमन्ते ज्ञानदञ्चैव शिशिरे सर्वभूतिदम् ॥ लक्ष्मीप्रदं वसन्ते च ग्रीष्मे च जयशान्तिदम् ॥ २ ॥ यतीनां सर्वकाले च लिङ्गस्यारोपणं मताभिति ॥ श्रेष्ठोत्तरे प्रतिष्ठा स्यादयने भुक्तिमिच्छताम् ॥ दक्षिणे तु मुमुक्षूणां मलमासेन सा द्वयोरित्युक्ता चाद्भुक्तिकानां दक्षिणायनेऽपि भवतीति मयूखः ॥ इति सर्वदेवप्रतिष्ठाकालः ॥

## अथ सर्वदेवप्रतिष्ठानुक्रमः ।

भूम्यादिपूजनङ्कृत्वा मण्डपङ्कारयेत्ततः ॥ ततः शरीरशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥ १ ॥ सुस्नातः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राङ्मुखीभूय यजमानः कृताह्निकः ॥ आहूय ब्राह्मणान्कुर्यात्प्रतिज्ञां विधिवत्तदा ॥ २ ॥ गणेशपूजनङ्कृत्वा ततो वरुणमर्चयेत् ॥ पुण्याहवाचनं कृत्वाऽभिषेकं कारयेत्ततः ॥ ३ ॥ गौर्यादिपूजनञ्चैव घृतमातृकपूजनम् ॥ आयुष्यमन्त्रपाठन्तु नान्दीश्राद्धमतः परम् ॥ ४ ॥ सर्वेषां वरणं कृत्वा मधुपर्केण पूजयेत् ॥ यजमानः सपत्नीको मण्डपं प्रविशेत्ततः ॥ ५ ॥ आग्नेय्याङ्कलशं धृत्वा तत्र पीठादि विन्यसेत् ॥ दिग्रक्षणं प्रोक्षणं च वास्तुपूजनमारभेत् ॥ ६ ॥ मण्डपम्पूजयेद्विद्वान्भद्रपीठञ्च पूजयेत् ॥ तस्योपरि घटं स्थाप्य सर्वलक्षणलक्षितम् ॥ ७ ॥ प्रधानस्थापनङ्कुर्यादग्न्युत्तारणपूर्वकम् ॥ ततोऽग्निं सुप्रतिष्ठाप्य ग्रहाणां स्थापनं ततः ॥ ८ ॥ ऐशान्यां रुद्रकलशं स्थापयेत्पूजयेत्ततः ॥ योगिनीक्षेत्रपालानां पूजनञ्च यथाक्रमम् ॥ ९ ॥ कुशकण्डिकां विधायादौ होमकर्म समारभेत् ॥ ततः कर्मकुटीं गत्वा हवनादिकमाचरेत् ॥ १० ॥ जलाधिवासनं कृत्वा ततोऽन्नाधिवासयेत् ॥ रथे संस्थापयेद्देवं स्नानमण्डपमानयेत् ॥ ११ ॥ ततः भद्रपीठोपरि प्राङ्मुखं देवं स्थापयेत् ॥ स्नपनं कारयेत्तत्र कृत्वा ग्रामप्रदक्षिणाम् ॥ १२ ॥ यागमण्डपमागत्य मधुपर्कात्प्रपूजयेत् ॥ शय्याधिवासनं कृत्वा प्रतिमां न्यासमाचरेत् ॥ १३ ॥ कुम्भे निद्रां प्रतिष्ठाप्य पूजां कृत्वा यथाविधि ॥ देवस्य होमः कर्त्तव्य मावर्णाभ्यर्चनं ततः ॥ १४ ॥ शान्तिकं पौष्टिकं हुत्वा परिवाराधिवासयेत् ॥ प्रासादमधिवास्यैव प्रतिष्ठाशिखरं ततः ॥ १५ ॥ ध्वजस्यारोपणङ्कार्यं प्रासादोत्सर्गमाचरेत् ॥ देवप्रतिष्ठा कर्त्तव्या परिवारांश्च स्थापयेत् ॥ १६ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्गहोमस्तु कर्त्तव्यस्ततो देवस्य प्रार्थना ॥ देवस्य पूजनं कृत्वा देवतानामनिर्णयः ॥ १७ ॥ प्रतिष्ठादेवमुद्दिश्य म०
प्र० मण्डलस्थाश्च देवताः ॥ होमं कार्य्यं चरेद्विद्वान्सर्वकल्याणहेतवे ॥ १८ ॥ पूजनं स्विष्टकृच्चैव घृतेनैव नवाहुतीः ॥
दिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्ततः क्षेत्राधिपाय च ॥ १९ ॥ पूर्णाहुतिमथो हुत्वा वसोर्धारां समाचरेत् ॥ भस्मना
॥ २ ॥ त्र्यायुषङ्कृत्वा संस्रवप्राशनादिकम् ॥ २० ॥ प्रधानपीठं शय्यादीनाचार्याय समर्पयेत् ॥ श्रेयोदानं ब्राह्मणेभ्यो
दद्यात्स्वर्णसुदक्षिणाम् ॥ २१ ॥ कारयेदभिषेकादीन् विसर्जनमतः परम् ॥ भूयसीन्दक्षिणां दद्यात्ततो ब्राह्मण-
भोजनम् ॥ २२ ॥ इति सर्वदेवप्रतिष्ठानुक्रमः ॥

## अथ कुण्डमण्डपार्थं भूम्यादिपूजनम् ।

तत्राचार्यः प्रतिष्ठायागे आचार्यादिऋत्विग्वरणम् ॥ परीक्षापूर्वकमण्डपार्थं यागोचितभूमिपरिग्रहं कृत्वा ॥ दहनखननाद्यपसारणादिशोधितां शल्यादिनिरसनपूर्वकशुद्धाभिर्मृद्भिरापूरितां दृढां भूमिं समां मुकुरजठरवत्कृत्वा तस्यां मण्डपकुण्डादिकं विदध्यात् ॥ तत्र पूर्वं समीपे गंधादिकं पूजासम्भारोप-कल्पनम् ॥ आग्नेयस्तम्भावटे सर्वदेवानां पूजनं स्वस्तिवाचनं च कृत्वा ॥ तद्यथा ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः ॥ २ ॥
शुचिः ॥ इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य ॥ हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मंगल-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मंत्रान्सुमुखश्चैकदन्तश्चेत्यादि पठेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं चिकीर्षितमण्डपकुण्डाद्यङ्गत्वेन स्वस्तिवाचनपूर्वकभूमिकूर्मानन्तवाराहपूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशपूजनं च करिष्ये ॥ स्वस्तिपुण्याहवाचनं गणेशपूजनं च कृत्वा भूमिपूजनं कुर्यात् ॥ (ध्यानम्) चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम् ॥ पद्मशंखचक्रशूलधरां प्रसन्नां नमामि इत्येवं भूमिं ध्यात्वा ॥ आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि ॥ पृथिवी ब्रह्मदत्तासि कश्यपेनाभिवन्दिता ॥ इति भूमिमावाह्य ॥ ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीम्मा हिंसीः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम् ॥ इति प्रणम्य अष्टांगार्घ्यं[1] दद्यात् ॥ ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च ॥ पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च ॥ यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया ॥ सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता ॥ गृहाणार्घ्यमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ इति भूमौ अर्घ्यं दत्त्वा ॥ ॐ भूरसि भूमिरसीति मंत्रेण ॥ ॐ भूम्यै नमः सम्पूज्य ॥ उपचारानिमाँस्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि ॥ भक्त्या

१ दध्यक्षतकुशाग्राणि क्षीरं दुर्वा तथा मधु ॥ सिद्धार्थकास्तथा तद्वदष्टांगोऽर्घः फलैः सह ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः ॥ इति पूजानिवेदनम् ॥ ॐ सपरिवारायै भूम्यै बलिं समर्पयामि ॥ न मम ॥ म०
॥ ३ ॥ इति गंधपुष्पपायसलाजासक्तुभिः सघृतैस्सदीपैर्महाबलिदानं कुर्यात् ॥ बद्धांजलिना वक्ष्यमाणश्लोकैः प्रार्थनां
कृत्वा ॥ नंदे नंदय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह ॥ जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह ॥ १ ॥ पूर्णे
गिरीशदायादे पूर्णकामं कुरुष्व मे ॥ भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मतिं मम ॥ २ ॥ सर्वबीजसमायुक्ते सर्व-
रत्नौषधीवृते ॥ रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे रम्यतामिह ॥ ३ ॥ प्रजापति सुदेवी च चतुरस्त्रे महीपति ॥ सुभगे
सुव्रते देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ॥ ४ ॥ पूजिते परमाचार्यै गंधमाल्यैरलङ्कृते ॥ भवभूतकरी देवि गृहे भार्गवि
रम्यताम् ॥ ५ ॥ अव्यक्ते चाहते पूर्णे शुभे चाङ्गिरसः सुते ॥ इच्छदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वां प्रतिष्ठापयाम्यहम् ॥ ६ ॥
देशस्वामि पुरः स्वामि गृहस्वामि परिग्रहे ॥ मनुष्यं धनहस्तश्च पशुवृद्धिकरी भव ॥ ७ ॥ इति ॥ ॐ खड्गोव्वैश्व-
देवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्द्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते
शरव्यायै व्विश्वेषान्देवानाम्पृषतः ॥ ॐ वाराहाय नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ ॐ यस्य कुर्म्मो गृहे हविस्तमग्ग्नेव्व-
र्द्धयात्त्वम् ॥ तस्मै देवाऽअधिब्ब्रुवन्नयञ्च ब्ब्रह्मणस्पतिः ॥ ॐ कूर्माय नमः इति सम्पूज्य ॥ ॐ स्योनापृथिवीति० ॥ ३ ॥
ॐ अनन्ताय नमः ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव न जानामि

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षमस्व परमेश्वरि ॥ कृतैतद्भूम्यादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आचार्याय दक्षिणाद्रव्यं दातुमहमुत्सृजे ॥ कृतैतद्भूम्यादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वंद्ये तमच्युतम् ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ इति भूम्यादिपूजनम् ॥

## अथ सूक्ष्मरीत्या मण्डपकुण्डप्रकारः ।

कृतोर्ध्वबाहोः समभूगतस्य कर्त्तुः शरांशः प्रपदोच्छ्रितस्य ॥ यो वासहस्तोस्यजिनांशकोपि स्यादङ्गुलं तत्तदिभांशका ये ॥ १ ॥ यवो यूका च लिक्षा च बालाग्रं चैवमादयः ॥ कृतमुष्टिकरो रत्निररत्निरकनिष्ठिकः ॥ २ ॥ ज्ञात्वा पूर्वं धरित्रीं दहनखननसंप्लावनैः संविशोध्य पश्चात्कृत्वा समानां मुकुरजठरवद्वाचयित्वा द्विजेन्द्रैः ॥ पुण्याहं कूर्मशेषौ क्षितिमपि कुसुमाद्यैः समाराध्य शुद्धे वारे तिथ्यां च कुर्यात्सुरपतिककुभः साधनं मण्डपार्थम् ॥ ३ ॥ उच्चां भूमिं मण्डपस्य प्रकुर्याद्धस्तोन्मानामर्धहस्तोन्मितां वा ॥ मध्ये भूमिं मण्डपेनोन्मितां च त्यक्त्वा कुर्यान्मण्डपश्चेद्द्वितीयः ॥ ४ ॥ दशसूर्यकरोन्मितोऽधमः स्याद्दिनशक्रप्रमितैः करैस्तु मध्यः ॥ धृतिभूपकरोन्मितो वरीयान्नखहस्तोप्यथ मण्डपस्तुलायाम् ॥ ५ ॥ दिगन्तराले द्विकरं भवेद्वाश्चतुष्टयं वेदगजांगुलैस्तत् ॥ विव-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्धितं मध्यवरिष्ठयोः स्याद्वेदी त्रिभागेन समाकरोच्चा ॥ ६ ॥ तुलाप्रदानेऽधममध्ययोः स्यात्सा पञ्चहस्तोत्तम केन्द्रिहस्ता ॥ ईशानभागे ग्रहवेदिका तु हस्तोन्मितोच्छ्रायवती त्रिवप्रा ॥ ७ ॥ तद्यथा ॥ द्विरङ्गुलोच्छ्रितो वप्रः प्रथमः समुदाहृतः ॥ त्र्यङ्गुलोच्छ्रायसंयुक्तं वप्रद्वयमथोपरि ॥ द्व्यङ्गुलस्तत्र विस्तारः सर्वेषां कथितो बुधैः ॥८॥ आग्नेय्यां योगिनी वेदी वास्तुवेदी च नैर्ऋते ॥ वायव्ये क्षेत्रपालानां ऐशान्ये तु नवग्रहाः ॥ ९ ॥ समात्रित्रिभागे च सूत्रं प्रदद्यादुदग्दक्षिणं चापि पूर्वापरं च ॥ ततस्त्र्यंशपूर्तौ च कोणेषु दद्यात्समस्तंम्भकान्द्वादशैवेषुहस्तान् ॥१०॥ वेद्याः कोणे हस्तिहस्तोच्चवेदस्तम्भान्दद्याद्बाह्यदिक्तः सचूडान् ॥ प्रादक्षिण्यात्पञ्चमांशं तु भूमौ दद्यादेवं षोडश- स्तम्भसंस्थाः ॥ ११ ॥ स्तम्भेषु तिर्यग्वलिका निधेयाश्चूडासु कर्णेष्वथवा बहिस्ताः ॥ पूर्वापरं दक्षिणसौम्यदि- क्स्थं कोणेन्तराकाष्ठचयं निदध्यात् ॥ १२ ॥ मध्यभागशिखरं रचयित्वा छादयेदपि कटैर्ऋजुवंशैः ॥ द्वारवर्जमिह मण्डपमेनं स्तम्भकानपि सुवस्त्रसमूहैः ॥१३॥ पूर्वादिदिक्षु रचयेदपि तोरणानि न्यग्रोधजंतुफलपिप्पलवृक्षराजैः ॥ अश्वत्थजंतुफलपर्कटिभूरिपाद्भिर्वैषामभावत इमान्यथवैककेन ॥ १४ ॥ हस्ताद्बहिर्मण्डपतः शरांगस्वरैः करै- स्तान्यधमादिकेषु ॥ दीर्घाणि च प्राहुरथायतिः स्यात्तेषां द्विहस्ताचरणप्रवृद्ध्या ॥ १५ ॥ स्तम्भार्द्धमानं फलकं तु

१ यज्ञीयवृक्षोथ वेणुर्वा क्रमुकः स्तंभकर्मणि इति याज्ञीयवृक्षाः ब्रह्मपुराणे ॥ शमीपालाशन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवाः ॥ अश्वत्थोदुम्बरो विल्वश्चन्दनः सरलस्तथा ॥ शालश्च देवदारुश्च खादिरश्चेति याज्ञिकाः ॥

CC-0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिर्यङ्नवेशविश्वप्रमितांगुलाश्च ॥ तन्मूर्ध्नि कीलाः स्वतुरीयभागैस्ततस्तु शूलाकृतयश्च ते स्युः ॥ १६ ॥ तद्वेशनं द्वित्रियुगांगुलानि शैवे तु विष्णोर्यजनेङ्गुलार्द्धैः ॥ कीलेषु शंखारिगदाम्बुजांकेष्विष्वंशरोपः किल तोरणेषु ॥ १७ ॥ उद्यत्पत्रफलातिनम्रविलसद्रम्भाभिरालिङ्गितस्तम्भोनेकदलै रसालविटपैः सर्वत्र संवेष्टितः ॥ राजच्चामरसंप्रबद्ध-मुकुरोद्यच्चाद्वितानान्वितो युक्तः पुष्पफलैः फलाय भवतां भूयान्महामण्डपः ॥ १८ ॥ ध्वजान्द्विहस्तायातिकांश्च पंचहस्तान्सुपीतारुणकृष्णनीलान् ॥ श्वेतासितश्वेतसितान्दिगीशवाहान्वहेद्दिक्करवंशशीर्षे ॥ १९ ॥ लोकेश-वर्णास्त्रयुताः पताकाः शैलेन्दुदैर्घ्यायतिकाश्च मध्ये ॥ चित्रं ध्वजं दिक्करदैर्घ्यवंशत्रिदोस्ततं प्रांतगाकिंकिणी-कम् ॥२०॥ रूपनारायणमते ब्रह्मानन्तयोर्विकल्पेन स्थापनम् ॥ श्वेतां च नवमीं पूर्वेशानयोर्मध्यतो बुधः ॥ विन्यसेत्तु पताकांश्च ध्वजांस्तानपि पूर्वतः ॥ २१ ॥ इति मण्डपप्रकारः ॥

---

१ स्यादिन्द्रः करिवाहनः कुलिशभृत्प्राच्यां पिशङ्गद्युतिस्त्वाग्नेय्यामजवाहनोऽग्निजरुचिः शक्त्या युतो हव्यवाट् ॥ याम्यां दण्डकरो यमश्च महिषारूढोऽञ्जनाभस्तथा नैर्ऋत्यां करवालभृन्निर्ऋतिजः सिंहाधिरूढोऽसितः ॥ वारुण्यां झषगो हिमद्युतिरपां नाथश्च पाशान्वितो वायव्यां मृगवाहनोऽङ्कुशकरो वायुः शुकाभः स्मृतः ॥ कौबेर्यां नरवाहनो दिशि गदापाणिर्विचित्रस्तथा ॥ रौद्र्या सवृषवाहनः शशिनिभः स्याच्छङ्करः शूलभृत् ॥ हंसस्थोऽरुणकः कमण्डलुकरः शक्रेशयोरन्तराऽनन्तोऽपां पतिरत्नसोर्घननिभस्तार्क्ष्याधिरूढोऽरिभृत् ॥ शस्त्राण्यङ्कयवाहनान्यपि परे स्वर्णादिधातुद्रवैः यद्वा चन्दनकुंकुमादिकरसैर्वा वस्त्रखण्डैः शुभैः ॥

२ दिक्षु ध्वजान्निबध्नीयाल्लोकपालसमप्रभाम् ॥ इति शारदातिलके ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ कुण्डानि ।

प्राच्याश्चतुष्कोणभगेन्दुखण्डत्रिकोणवृत्ताङ्गभुजाम्बुजानि ॥ अष्टास्त्रिशक्रेश्वरयोस्तु मध्ये वेदास्त्रिवा वृत्तमुशन्ति कुण्डम् ॥ इति नवकुण्डीपक्षः ॥ अथ पञ्चकुण्डीएककुण्डीपक्षः ॥ आशेशकुण्डैरिह पञ्चकुण्डी चैकं यदा पश्चिमसोमशैवे ॥ वेद्याः सपादेन करेण यद्वा पादान्तरेणाखिलकुण्डसंस्था ॥ वर्णपरत्वे कुण्डानि ॥ विप्राच्छ्रुत्यस्त्रं च वृत्तं च वृत्तार्द्धं त्र्यस्त्रि स्याद्वेदकोणानि वापि ॥ सर्वाण्याहुर्वृत्तरूपाणि चान्ये योन्याकाराण्यंगनानां तु तानि ॥ अथ कुण्डानां फलम् ॥ सिद्धिः पुत्राः शुभं शत्रुनाशः शांतिर्मृतिच्छिदे ॥ वृष्टिरारोग्ययुक्तं हि फलं प्राच्यादिकुण्डके इति ॥ अथाहुतिसंख्यया कुण्डस्थण्डिलप्रमाणम् ॥ शतार्धे रत्निः स्याच्छतपरिमिते रत्निविततं सहस्रे हस्तं स्यादयुतहवने हस्तयुगलम् ॥ चतुर्हस्तं लक्षे प्रयुतहवने षट्करमितं ककुद्भिर्वा कोटौ नृपकरमपि प्राहुरपरे ॥ सूक्ष्मद्रव्याहुतिसंख्यया कुण्डप्रमाणम् ॥ लक्षैकवृद्ध्या दशलक्षकान्तं करैकवृद्ध्या दशहस्तकं च ॥ कोटर्यर्धदिग्विंशांतिलक्षलक्षदले मुनीष्वंर्त्तुकृशांनुहस्तम् इति ॥ अथ हस्तादिप्रमाणम् ॥ वेदाक्षीणि २४ युगाग्नयः ३४ शाशियुगा ४१।५ न्यष्टाब्धय ४८ स्त्रीषवो ५३।५ ष्टाक्षा ५८।६ वह्निरसा ६३।४ स्वराङ्ग ६७।७ कमितानेत्रर्षयो ७२ क्षस्वराः ७५।७ ॥ अथवा केषांचिन्मते–षोडशहस्तामितं कुण्डं कोटिहोमे ९६



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंगुलम् ॥ अङ्गुल्योऽथ यवाः खंमभ्रंमिषँवः खं पंचँ षट्ँ सागँराः ॥ सप्तांभ्रं मुनँयस्त्वमी निगादिता वेदास्त्रके बाह्वः ॥ कुण्डत्रयी दक्षिणयोनिरैन्द्रयाः सौम्याग्रकास्यादितराणि पंच ॥ पश्चाद्गगानींद्रदिगग्रकाणि योनिर्नं कोणेन च योनिकुण्डे ॥ ८ ॥ इति योन्यग्रप्रमाणम् ॥ खातं क्षेत्रसमं प्राहुरन्ये तु मेखलां विना ॥ कण्ठो जिनांशमानः स्यादर्कांश इति चापरे ॥ ९ ॥ अथ मेखलाप्रमाणं फलञ्च ॥ अधमा मेखलैका स्यान्मध्यमा मेखलाद्वयम् ॥ श्रेष्ठास्तिस्रोऽथवा द्वित्रिपञ्चस्वधमतादिकम् ॥ १० ॥ अष्टधा विहितकुण्डशरांशैः संखनेद् भुवमुपर्यनलांशैः ॥ मेखला विरचयेदपि तिस्रः षड्जार्कलवविस्तृतपिण्डाः ॥ ११ ॥ आद्यापरास्तच्छरभागहीना जिनांशकण्ठा वहिरेव सर्वाः ॥ कुण्डानुकारा अपि मेखलाः स्युरर्काङ्गभागोच्चततस्तु नाभिः ॥ १२ ॥ कुण्डाकारो नाभिरम्भोजसाम्यो वाञ्जेयनेनांशहानिर्दलाग्रे ॥ शेषं क्षेत्रे वह्विवृत्तैः समेते स्युर्वैकर्णी केसराः पत्रकाणि ॥ १३ ॥ योनिर्व्यासार्द्धदीर्घा विततिगुणलवा दायताङ्घिद्विभागा ॥ तुङ्गा तावत्समन्तात्परिधिरुपरिगा तावदग्रेण रम्या ॥ १४ ॥ निम्नं कुण्डं विशन्ती बलयदलयुगेनान्विताधो विशाला ॥ मूलात्सच्छिद्रनालान्तरवटरुचिराश्वत्थपत्राकृतिः सा ॥ १५ ॥ अथार्काङ्गुलपक्षे तु मेखलानां दशाङ्गुलैः ॥ विस्तृता तिथिभिर्दीर्घाङ्गुलिभिर्योनिरिष्यते ॥ १६ ॥ अथवा मृदा सुवर्णभासा करमानं चतुरङ्गुलोच्चमल्पे ॥ हवने विदधीत वांगुलोच्चं विबुधः स्थंडिलमेव वेदकोणम् ॥ १७ ॥ इति सूक्ष्मरीत्या कुण्डमण्डपरचनाप्रकारः समाप्तः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः ।

प्रायश्चित्तपूर्वदिने घृतं प्राश्योपोष्य त्र्यवरानेकं वा पर्षत्वेनोपवेश्य कृतस्नानोऽशक्तश्चेदार्द्रवाससाङ्गं प्रोक्ष्य वाससी परिधायाचम्य बद्धशिखः कृततिलकः कुशोपग्रहः पूर्वाभिमुखः कर्तोपविश्याचम्य प्राणायामं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ तत्सदद्येत्यादिदेशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्माहं अमुकप्रतिष्ठाकर्माधिकारार्थं मत्सकलपातकनिवृत्त्यर्थं विष्णुपूजनपूर्वकं देहशुद्ध्यर्थं च प्रायश्चित्तङ्करिष्ये ॥ तत्रादौ आवाहनादिषोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा विष्णुं संपूज्य ॥ ततः क्लिन्नवासाः पर्षदं प्रदक्षिणीकृत्य हृदयेन कम्पमानः धरण्यां साष्टाङ्गं प्रणमेत् ॥ ततोः पर्षदान्पृच्छन्ति ॥ किन्ते कार्यमुपविश्याग्रतः स्थितः ॥ किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज ॥ तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः ॥ अस्माकञ्चैव सर्वेषां सत्यमेव परस्बलम् ॥ यदि त्वं रक्षसे नित्यं नियतं प्राप्स्यते भवान् ॥ यद्यागतोस्यसत्येन न त्वं शुद्ध्यसि कर्हिचित् ॥ एवं तैस्समनुज्ञातः सर्वं तु ह्युपदेशतः ॥ ब्राह्मणानामग्रे प्रार्थना ॥ समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थिता यत्कुलधूमकेतवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ १ ॥ आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ॥ समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ २ ॥ विप्रौघदर्शनात्क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः ॥ वन्दनान्मंगलावाप्तिरर्चनादाच्युतं पदम् ॥ ३ ॥ आधिव्याधिहरन्नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम् ॥ श्रीः पुष्टिकीर्त्तिदं वंदे विप्राणां पाद-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पङ्कजम् ॥ ४ ॥ इति स्तुत्वा ॥ विप्रैः किं ते कार्यं मिथ्या मावादीः सत्यमेव वदेति पृष्टः ॥ द्वादशाब्दं ३६० षडब्दं १८० त्र्यब्दं ९० सार्द्धाब्दं ४५ अब्दं ३० एते पक्षाः यथाशक्ति स्वर्णादिप्रत्याम्नायद्वारा कुर्यात् ॥ ततो गोवृषनिष्क्रयद्रव्यप्रमाणम् ॥ तत्र गोमूल्यं त्रिधा उत्तमपक्षे सुवर्ण चत्वारिंशत् माषाः ४० मध्यमपक्षे २० माषाः। अधमपक्षे १० माषाः। यत् गोमूल्यं तदेव वृषमूल्यं इत्येकपक्षः ॥ यदा षड्विंशतिमतानुसारेण तदा उत्तमे रजतं १५ माषाः। अस्य लौकिकव्यावहारिकमूल्यं १॥) मध्यमे ९ माषाः। अस्य मूल्यं ।॥=)॥ अधमे ६। माषाः। अस्य मूल्यं ॥=)॥ अधमाधमे ४॥ माषाः अस्य मूल्यं ।≡) यत् गोमूल्यं तदेव वृषमूल्यं इति द्वितीयपक्षः ॥ वस्तुतस्तु वृषमूल्यं अधिकमेव ॥ यत्कात्यायन आह ॥ द्वात्रिंशत्पणिका गावः। वृषे षट् कार्षापणमिति ॥ अतो वृषमूल्यमेकमेव वाचनिकम् ॥ एवं गोमूल्यं तु शक्त्यनुसारेण वैकल्पिकं ग्राह्यम् ॥ तृतीयपक्षे गोमूल्यं चतुःषष्टिढंबूकाः ६४ वृषमूल्यं सर्वपक्षे अष्टभिर्न्यूनं शतद्वयं ढंबूकाः १९२॥ इति सर्वपक्षः॥ गोवृषनिष्क्रयद्रव्यसंकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा( वर्मा गुप्तः दासोऽहं वा )ऽहं अमुकप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन (वा सर्वप्रायश्चित्तांगत्वेन) गोवृषयोर्निष्क्रयीभूतं सुवर्णं वा रजतं द्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ तेन श्री पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् ॥ प्रार्थना॥ गवासंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ इति संकल्पितगोवृषनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं सभ्याग्रे निधाय वदेत् ॥ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा मम

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टा-
स्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकगुरुलघुस्थूलसूक्ष्मपातकसंकरीकरणमलिनीकरणापात्रीकरण-
जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थमनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु
भवन्तः इति ॥ ( यदा पुत्रादिः प्रतिनिधिश्चेत्तदा मम पितुर्जन्मप्रभृत्यादि वदेत् ) प्रार्थना ॥ सर्वे धर्मविवेक्तारो
गोप्तारः सकला द्विजाः ॥ मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ॥ मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् ॥
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ॥ पूज्यैः कृतपवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः ॥ इति प्रार्थयित्वा ॥
मामनुगृह्णन्तु भवन्त इति प्रणमेत् ॥ ततः सभ्यैरुपदिष्टो यथाशक्ति उत्तममध्यमाधमादिपक्षाश्च विचार्या-
स्मिन्पक्षेऽयं समर्थः ॥ इति निश्चिते कर्ता ॥ ततः अमुकप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निबन्धसभ्यानुवादकानां पूजनं करिष्ये ॥
चंदनपुष्पादिभिः पुस्तके सरस्वतीपूजां सभ्यानुवादकपूजां च कृत्वा लिबन्ध( पुस्तक )पूजाङ्गत्वेन किंचिद्द्रव्यं
निधायानुवादकाय प्रभृतिरूपां दक्षिणां पापानुसारेण दद्यात् ॥ ततः सभ्याः पुस्तकवाचकपूर्वकमनुवादकस्याग्रे
कथयेयुः अनुवादकश्च कर्तारं प्रति वदेत् ॥ तद्यथा ॥ सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकः अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः तव जन्म-
प्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्ट-
भुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकगुरुलघुस्थूलसूक्ष्मपातकसंकरीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजा-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थं पर्षदुपदिष्टं अमुकप्रायश्चित्तं ( द्वादशाब्दषडब्दत्र्यब्दसार्द्धाब्दअब्दं वा ) अमुकप्रत्याम्नाय ( सुवर्ण वा रजत ) द्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितं त्वया आचरितव्यं तेन तव शुद्धिर्भविष्यति अतस्त्वं सर्वेभ्यः पातकेभ्यः कृतार्थो भाविष्यासि ( स्त्रिय उद्देशे कृतार्था ) इति त्रिरुपदिशेत् ॥ कर्ता ॐ भवदनुग्रहः इत्यङ्गीकृत्य ॥ प्रणम्य अनुवादकं विसृजेत् ॥ ( शूद्रस्त्रियौ तु स्वीकरोमि इत्युक्त्वा ) कस्यांचिद्रिक्तायां तिथौ तद्दिने कृतमाध्याह्निकः सायाह्ने गंगादौ तीर्थे गृहे वा ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं मम जन्मप्रभृत्यादि० निरासार्थेऽत्यन्तं अमुककर्माधिकारार्थं ( प्रतिष्ठा-कर्माधिकारार्थं वा यज्ञाधिकारार्थं ) श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च सभ्योपदिष्टमदः प्रायश्चित्तं प्राच्योदीच्याङ्गसहित-ममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये ॥ तथा वपनं दन्तधावनं पञ्चगव्यादिदशविधस्नानानि च करिष्ये ॥ इति संकल्प्य पुनः प्रार्थयेत् ॥ शृणु भो त्वमिदं विप्र तुल्यमादिश्यते व्रतम् ॥ तत्ते यत्नेन कर्त्तव्यमन्यथा तद्वृथा भवेत् ॥ ततः शिरसि हस्तं निधाय ( आत्मनः शुद्धिकामो वा पितॄणां तृप्तिहेतवे ॥ वपनं कारयिष्यामि तीरेऽहं तव जाह्नवि ) यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥ महापापोपपापाभ्यां केशलोमनखा द्विजाः ॥ क्षुरादिच्छिन्नसर्वाङ्गास्ते मे दोषाः पतन्त्वधः ॥ इति श्लोकद्वयं पठित्वा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिखाकक्षोपस्थवर्जंनखलोमकेशानादौ च क्रमेणोदक्संस्थं वपनम् ॥ अत्र वपनाङ्गं स्नानम् ॥ इत्युक्तं रुद्रकल्पद्रुमे ॥ क्षौरान्ते द्वादशगण्डूषान् कृत्वा ॥ दन्तकाष्ठं गृहीत्वा आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ॥ ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ इति मंत्रेणाभिमंत्रणम् ॥ ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वंꣳ. सोमो राजायमागमत् ॥ स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ॥ मुखदौर्गन्ध्यनाशाय दन्तानां च विशुद्धये ॥ ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ॥ इति मंत्रेण दन्तान्धावयित्वा काष्ठान्तरेण जिह्वामुल्लिख्य द्वादश गण्डूषान् कृत्वा

---

१ श्मश्रूपपक्षे केशांश्च वापयित्वा अथवा मामनुक्रमेणोपपक्षश्मश्रुकेशान्वापयेत् । तत्रापि दक्षिणश्मश्रूपपक्षौ वापयित्वा वामौ वाप्यौ शिरसि शिखामादिं कृत्वाऽधस्तात्सर्वतो वापयेत्सोदक्संस्थम् । यदि शूद्रविधवादीनां सशिखं वापनं तत्र गोब्रह्महत्यादिपापेष्वपि सशिखं सर्वाङ्गत्वोम्नां च तत्र प्रायश्चित्ते शिखासहितमपि विशेषवचनात् । सधवानां द्व्यङ्गुलं त्र्यङ्गुलं वा क्षुरेण केशाग्रच्छेदनं यत्र तु सभर्तृकस्त्रिया जीवत्पितृकादेश्च राजादीनामिच्छया वपनाभावः । तत्र द्विगुणं व्रतं पर्षद्दक्षिणां च द्विगुणां कृत्वा । तदुक्तं हेमाद्रिप्रायश्चित्तखण्डे । प्रेतकृत्ये राजदण्डे वपनं केशपूर्वकम् ॥ अग्निहोत्रे च तीर्थे च वपनं श्मश्रुपूर्वकम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेषु सशिखं वपनं स्मृतम् ॥ वपनाभावे द्विगुणे व्रतदक्षिणयोश्च । तत्र प्रमाणमालेपः । राजा वा राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा विशेषतः ॥ केशानां रक्षणार्थाय छेदयेदङ्गुलद्वयम् ॥ प्रमादाच्छिखावपने कुशमयशिखां ब्रह्मग्रन्थियुतां दक्षिणकर्णे निदध्यात् इति काटके ॥ शिखां छिन्दन्ति ये मोहाद्द्वेषादज्ञानतोपि वा ॥ पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः इति गृह्याग्निसागरे ॥

२ द्विजान्द्वादशाङ्गुलप्रमाणेन स्त्रीशूद्रादीन्मुष्टिप्रमाणेनापामार्गादिदंतकाष्ठेन प्राङ्मुखः सन् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलाशयं गत्वाऽप्सु निमज्य भस्मादिदशविधस्नानानि कुर्वीत ॥ तानि यथा ॥ प्रायश्चित्ताङ्गभस्मस्नानं करिष्ये ॥ तत्रादौ भस्मग्रहणम् ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ॥ इति शिरसि ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् मुखे ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः इति हृदये ॥ ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः इति गुह्ये ॥ ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ इति पादयोः ॥ ॐ इति सर्वाङ्गेषु ( पुराणोक्तमंत्रः । यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसंचयम् ॥ तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिः ) आचम्य इति भस्मस्नानम् ॥ ततः प्रायश्चित्तांगत्वेन गोमयस्नानं करिष्ये ॥ ततो गोमयग्रहणम् ॥ ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः ॥ मानो व्वीरानुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तःसदमित्वा हवामहे अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां रसं वने ॥ तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् इत्यभिमंत्र्य ॥ सूर्याय प्रदर्श्य ॥ दक्षिणहस्तेन शिरःप्रभृति नाभ्यन्तं वामहस्तेन नाभितः पादान्तं त्रिरनुलिंपेत् ॥ ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन मृत्तिकास्नानं करिष्ये ॥ ततो भूमिप्रार्थना ॥ नंदे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह ॥ जय भार्गवदायादे प्रजानां

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥९॥ जयमावह ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ॐ मावो रिषत्खनिता यस्मै चाहङ्खनामि वः ॥ द्विपाचतुष्पादस्माकꣳ सर्वमस्त्वना-
तुरम् ॥ इति खनित्वा ॥ ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनि ॥ यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः ॥ इति
मृदमादाय ॥ ॐ नमो मित्रस्य व्वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृतꣳ सपर्य्यत ॥ दूरेदृशे देव जाताय केतवे दिव-
स्पुत्राय सूर्य्यायशꣳस त ॥ इति सूर्याय प्रदर्श्य ॥ ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां
तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इत्यभिमंत्र्य ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳ
सुरे स्वाहा ( अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया पूर्वसंचितम् इत्यभिमंत्र्य ॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे इत्यनुलिप्य ) इति गोमयवदनु
लिप्य ॥ ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन शुद्धोदकस्नानं करिष्ये ॥ ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः
पुनन्तु ॥ विश्वꣳ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ इति शुद्धोदकस्नानं कुर्यात् ( विष्णुपादाग्र-
सम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि ॥ धर्मद्रवेति विख्याता पापम्मे हर जाह्नवि ॥ सरस्वत्यादिनद्यम्बु पावनं पापनाशनम् ॥ ॥९॥
शरीरस्य विशुद्ध्यर्थं स्नास्यामि व्रतसिद्धये ) ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन गोमूत्रस्नानं करिष्ये ॥ ॐ तत्सवितुरिति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( गोशरीरात्समुद्भूतं पवित्रं क्लेशनाशनम् ॥ स्नानार्थं तु प्रगृह्णामि गोमूत्रं मलनाशनम् इति स्नायात् ) ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन गोमयस्नानं करिष्ये ॥ ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः मानो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ( गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रं सर्वमङ्गलम् ॥ स्नानार्थं संस्कृतं शुद्धं पापं मे हर गोमय ) इति मंत्रेण ॥ ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन पयः स्नानं करिष्ये॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ( पयो मिष्टं पुष्टिदं च सौरभेयं मुनिर्मलम् ॥ शरीरस्य विशुद्ध्यर्थमघौघस्य प्रणाशकम् ) ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन दधिस्नानं करिष्ये ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषि तारिषत् ॥ ( दुग्धसारन्तु माङ्गल्यं चन्द्रकान्तिसमं शुभम् ॥ दधि सर्वगुणोपेतं स्नानार्थं गृह्यते मया ) ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन घृतस्नानं करिष्ये ॥ ॐ घृतंघृतपावानः पिवतव्वसांव्वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ ( पयसा मन्थितं हव्यं श्लक्ष्णं तेजोविवर्द्धनम् ॥ सर्वकल्मषनाशाय स्नास्यामि हितकाम्यया ) ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन कुशोदकस्नानं करिष्ये ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥ देवस्य त्वा० सरस्वत्यै व्वाचो
यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥ देवस्यत्वा० अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि
सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥ ॐ
आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ १ ॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते
हनः ॥ उशतीरिव मातरः ॥ २ ॥ ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथाचनः ॥ ३ ॥
ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः ॥ पवित्रेण शतायुषा ॥ पुनन्तु मा
पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा व्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ ४ ॥ ॐ अग्न ऽआयूᳬंषि पवसऽ
आसुवोर्ज्जमिषञ्च नः ॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ५ ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥ पुनन्तु
व्विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ ६ ॥ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीद्यत् ॥ अग्ने क्रत्वा क्रतूँ१
रनु ॥ ७ ॥ ॐ यत्ते पवित्रमर्च्चिष्यग्ग्नेव्विततमन्तरा ॥ ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ७ ॥ ॐ पवमानः सोऽअद्य नः
पवित्रेण विचर्षणिः ॥ यः पोता स पुनातु मा ॥ ८ ॥ उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च ॥ मां पुनीहि



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्विश्श्वतं ॥ ९ ॥ व्वैश्श्वदेवी पुनती देव्व्यागाद्यस्यामिमाबह्वयस्तन्न्वो व्वीतपृष्ठाः ॥ तया मदन्तꣳ सधमादेषु व्वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १० ॥ ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ॥ इन्द्राय पातवे सुतः ॥ ११ ॥ ( विष्णुदेहसमुत्पन्ना ब्रह्मणास्य करे धृता ॥ तत्संलग्नकुशाग्रैस्तैर्जलैः स्नास्यामि शुद्धये ॥१॥ मच्छरीरं पावयन्ती निर्मलानि जलानि वै ॥ आपः शुद्धा ब्रह्मरूपा रुद्ररूपाः समीरिताः ॥ २ ॥ मां पुनन्तु च पापेभ्यो यत्कृष्टेभ्यो द्विजोत्तम ॥ अभिषिंचामि शुद्ध्यर्थं शरीरं दुःखभाजनम् ॥ ३ ॥ ) ततो नद्यां प्रवाहाभिमुखोऽन्यत्र सूर्याभिमुखो निमज्जेत् ( अथ स्नायात् ) ततः जलमध्ये अघमर्षणं कृत्वा ॥ ॐ ऋतं च सत्यं चाभिद्धेति त्रिः पठेत् ( स्त्रीशूद्रयोरघमर्षणे तु नमो भगवते वासुदेवायेति मंत्रं वारत्रयं पठन् परमात्मानं भगवन्तं विचिन्तयन्नघमर्षणं कुर्यात् इति साम्प्रदायिकाः ) ततः स्नानाङ्गतर्पणम् ॥ ॐ भूर्देवाँस्तर्पयामि । ॐ भुवर्देवाँस्तर्पयामि । ॐ स्वर्देवाँस्तर्पयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्देवाँस्तर्पयामि ॥ ततः कंठं कृत्वा ॥ ॐ भूर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ ॐ भुवर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ ॐ स्वर्ऋषींस्तर्पयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऋषींस्तर्पयामि ॥ अपसव्यम् ॥ ॐ भूः पितॄँस्तर्पयामि ॥ ॐ भुवः पितॄँस्तर्पयामि ॥ ॐ स्वः पितॄँस्तर्पयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पितॄँस्तर्पयामि ॥ ततः सव्येन ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्तु ॥ कंठी ॥ कृष्णवैशंपायनादय ऋषयस्तृप्यन्तु ॥ अपसव्यम् ॥ कव्यवाडादयो दिव्यपितरस्तृप्यन्तु ( एतावज्जीवत्पितृकाणामपि कुर्यात् ) मृतपितृकाणान्तु अमुकगोत्रास्मत्सर्वे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्रादयस्तृप्यन्तु इति विशेषः ॥ ततः यन्मया दूषितं तोये शरीरमलसम्भवम् ॥ तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ( केचिन्नित्यविधिवत्स्नानमिच्छन्ति । केचिडेमाद्रिप्रयोगं पठन्ति ) ततः सव्यमाचम्य जलादुत्क्रम्य ॥ ॐ आपोऽ अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वᳪ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि इति वरुणाय नमः इति जपेत् ॥ ततो यथोक्तधौते वाससी यज्ञोपवीतं च परिधायाचम्य विधिवद्वर्णक्रमेण तिलकं कृत्वा ॥ यत्रैतत्स्नानं गृहे भवति तत्रैतावत्कर्म वर्ज्यम् ॥ ततः आचम्य देशकालौ संकीर्त्य अङ्गीकृतप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विष्णुपूजनपूर्वकविष्णुश्राद्धं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ शालिग्रामशिलायां श्वेतचन्द-

---

१ ब्रह्माण्डपुराणे चोक्तम् ॥ ऊर्ध्वपुण्ड्रं द्विजः कुर्यात् क्षत्रियस्तु त्रिपुण्ड्रकम् ॥ अर्द्धचन्द्रं तु वैश्यस्य वर्तुलं शूद्रजातिषु ॥

२ तत्राह यमः ॥ नित्यं नैमित्तिकं चैव क्रियामंगलकर्षणम् ॥ तीर्थाभावे तु कर्त्तव्यमुष्णोदकपरोदकैः ॥ परोदकैः शीतोदकैरित्यर्थः ॥

३ तथा गृहस्नाने न कुर्वीत मार्जनं चाघमर्षणम् ॥ नान्तरा तर्पणं कुर्यात् पश्चादाचम्य शुद्धयति ॥ गृहे स्नानं यदा कुर्याद्वस्त्रं मूर्ध्नि परित्यजेत् ॥ अधश्चाग्रेण संपीडय पाराशर्यवचो यथा ॥ पतिमतिस्त्रीविषये व्यासः ॥ कुलस्त्री सशिखं स्नायादुत्सवे सति तैलतः ॥ वारे वा पैतृके कर्म यदा कंठससंप्लवेति । ततः तीर्थात्पात्रं जलैः प्रपूर्य गृहमागत्य अयुग्मैर्द्विजैरावाहनमग्नौ करणविकिरावनेजनपिण्डदानात्तय्यांदकस्वधावाचनरहितपार्वणविष्णुश्राद्धं कुर्यात् ॥

४ ततः सर्वेष्वपि द्विजेषु विष्णोरेव पूजनं शिष्टा एवं कुर्वन्ति ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नादिभिर्विष्णुं संपूज्य ॥ ( करेण यथा द्रव्यमादायामान्नचतुष्टयनिष्क्रयभूतं दद्यात् ) देशादि स्मृत्वा विष्णुप्रीत्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्गं विष्णुश्राद्धसंपत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजनपर्य्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाविभागं विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ तेन पापापहो महाविष्णुः प्रीयताम् ॥ ततः पूर्वोच्चारित० पूर्वाङ्गगोदानमहं करिष्ये ॥ गोनिष्क्रयद्रव्यमादाय॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं प्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितं गोदानप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ प्रार्थना ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ अथ व्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा होमं करिष्ये ॥ तत्र पञ्चभूसंस्कारपूर्वकाविटनामाग्नेः प्रतिष्ठापनं करिष्ये ॥ तद्यथा ॥ रत्निमात्रस्थण्डिले कुशैः परिसमूह्य । तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य । स्फ्येनोल्लिख्य वा स्रुवमूलेन । अनामिकाङ्गुष्ठेनोद्धृत्य । जलेनाभ्युक्ष्य । ॐ अ॒ग्निन्दू॒तं पु॒रो द॑धे ह॒व्यवा॒हमुप॑ब्रुवे ॥ दे॒वाँ२ऽआसादयादि॒ह ॥ इत्यग्निं स्थापयेत् ॥ ब्रह्मवरणम् ॥ अस्मिन्व्याहृत्यादिहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ ततः कुशकाण्डिकाम् ॥ अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनं अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव ॥ प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् ॥ परिस्तरणम् ॥ आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् ॥ अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पात्रासादनम् ॥ पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनकुशाः पञ्च उपयमनकुशाः सप्त समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं मंत्रशोधितपंचगव्यं ब्रह्मकूर्चं पूर्णपात्रम् ॥ पवित्रकरणम् ॥ द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छिद्य द्वौ ग्राह्यौ त्रिस्त्याज्यः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निधाय त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणम् त्रिरुद्दिङ्गनम् प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् प्रोक्षणीजलेन यथाऽऽसादितवस्तुसेचनम् अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीर्निधाय आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः ( चरुपक्षे चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकतण्डुलप्रक्षेपः ) आज्याधिश्रयणं ( चरुं आज्यस्योत्तरतः अधिश्रयणम् ) ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम् ॥ इतरथावृत्तिः ॥ स्रुवप्रतपनं संमार्गकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमार्ज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य दक्षिणे देशे निदध्यात् ॥ आज्योद्वास्य प्रणीतापश्चिमतो निधाय ( चरुपक्षे चरुं पूर्वेणानीय प्रणीतापश्चिमतो निधाय चरोरुद्वास्य अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्याज्यस्योत्तरतो निधाय ) आज्योत्पवनम् आज्यावेक्षणम् सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् आज्यमग्नेः पश्चिमत निधाय उपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा समिधस्तिस्रः घृताक्तदक्षिणहस्तेनादाय तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत् ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय दक्षिणजान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ अत्र प्रोक्षणीपात्रे त्यागः ॥ एवं सर्वत्र ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० ॥ अनन्वारब्धः ॥ अथ व्याहृतिहोमः ॥ अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वा ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ( केचिदत्र सर्वत्र इदं महाविष्णवे पापघ्ने न मम इति त्यागं वदन्ति ) एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः ॥ सप्तविंशतिवारं कृतेऽष्टोत्तरशतमाहुतयः ॥ ततो ब्रह्मकूर्चेन पञ्चगव्यहोमः ॥ ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूयवसिनीमनवे दशस्या ॥ व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥ इदं पृथिव्यै० ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे० ॥ ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः ॥ मानो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे स्वाहा ॥ इदं रुद्राय० ॥ उदकोपस्पर्शः ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ इद-
३ मद्भ्यो० ॥ ( ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽ उपमाऽअस्य व्विष्ठाः सत-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० श्चयोनिमसंतश्च विर्वं स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥ इति केचित्पठन्ति ॥ अथ ब्रह्मकूर्चहोममूलवचनस्त्वेवमाहुति- म०
॥१३॥ चतुष्टयम् ) ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ॥ ॐ भुवः
स्वाहा इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि-
सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषांꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ॐ
सत्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ
सुहवोन ऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ-
असि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥ ॐ ये ते शतं वरुण
ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ॥ तेभिर्न्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण
पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथाव्वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं ॥१३॥
वरुणायादित्यायादितये न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ संस्रवप्राशनम् आचमनं ब्रह्मणे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णपात्रदानम् ॥ अद्य प्रायश्चित्ताङ्गहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ सुमित्रियानऽ आपऽओषधयः सन्तु इति प्रणीतोदकेन मार्जयेत् ॥ अग्नेः पश्चात्प्रणीताविमोकः ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः ॥ ततः तारकोदये व्रतग्रहणं करिष्ये ॥ हवनशेषं पञ्चगव्यं पिबेत् ॥ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ ततः प्रधानगोनिष्क्रयसंकल्पः ॥ देशादि स्मृत्वा अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसंकरीकरणमलिनीकरणअपात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पर्षदुपदिष्टं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारांगीकृतामुकप्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थं यथासंख्यापरिमितं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथायथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥ प्रार्थना ॥ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवं मे

१ एतच्च प्राशनं ग्रामाद्बहिः कार्यमिति भट्टाः ॥ कुतः ॥ व्रतं निशामुखं ग्राह्यं बहिस्तारकदर्शनमिति स्मृतिसत्संगतम् ॥ स्त्रीशूद्रयोर्होमपंचगव्यप्राशने विकल्पः । होमकरणपक्षे तौ विप्रद्वारा कारयित्वा तूष्णीं पिबतः । होमाकरणपक्षे प्राशनपक्षे तु तूष्णीं संपाद्य प्राशनं कार्यम् ॥ अस्मिन्नहनि शक्तस्तदोपवासं चरेत् ॥ अशक्तश्चेत् हविष्यान्नमश्नीयात् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्यादिहलोके परत्र च ॥ इति प्रधानसंकल्पः ॥ संकल्पितद्रव्यं अर्द्धं आचार्याय अर्द्धं सभ्येभ्यो दद्यात् ॥ ततः अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं आचीर्णस्यामुकप्रायश्चित्तस्योत्तरांगानि करिष्ये ॥ ततः पूर्ववत् व्याहृतिहोमं अष्टाविंशति कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ देशकालौ संकीर्त्य० अंगीकृतप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन व्याहृतिहोमं करिष्ये ॥ ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये० ॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इदं प्रजापतये० ॥ एवं सप्तवारं कृते २८ आहुतयः ॥ ततः अङ्गीकृतप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन विष्णुपूजनं विष्णुश्राद्धं च करिष्ये ॥ यथोपचारैः विष्णुं संपूज्य पूजनांते यथाशक्ति द्रव्यमादाय देशादि स्मृत्वा श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्गविष्णुश्राद्धसंपत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्नचतुष्टयनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाविभागं विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् ॥ ततः गोदानम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य० प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतया विहितगोदानप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ प्रार्थना ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ देशकालादि स्मृत्वा० कृतस्य सर्वप्रायश्चित्तकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं द्वादशसंख्याकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये ॥ तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथ दश दानानि ।

गोभूतिलहिरण्याज्यं वासो धान्यगुणानि च ॥ रौप्यं लवणमित्याहुः दश दानानि पण्डिताः ॥ एतत्साक्षादसम्भवे तत्तन्मौल्यं दद्यात् ॥ एतन्मौल्यासम्भवेऽपि यथाशक्ति हिरण्यं दद्यात् ॥ पृथक् पृथक् प्रयोगो वेति विचारणीयम् इति ॥ तानि दश दानानि विस्तरेण लिख्यंते ॥ देशादि स्मृत्वा अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं गोदानलभ्यफलावाप्तये प्रायश्चित्ताङ्गभूतं दशदानकर्मणि गोदानं करिष्ये ॥ प्रतिगृहीतारं ब्राह्मणं सवत्सां गां च सम्पूज्य । वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्गोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ गोपुच्छं गृहीत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ इमां गां सवत्सां रुद्रदैवताकां यथोपस्करां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदयः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ कृतैतद्गोदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं सुवर्णं सूर्यदैवतं ( वा रजतं चन्द्रदैवतम् ) यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ एवं सर्वत्र यथार्थसंकल्पं कृत्वा तत्तद्वाक्येन संकल्पयेत ॥ अथ भूमिदानम् ॥ देयद्रव्यं सम्पूज्य ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्भूमिदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं भूमिप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संकल्पः ॥ इमां निर्वर्त्तनमितां भूमिं विष्णुदैवतां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ विष्णवे भूमिं प्रतिगृह्णामि इत्युक्त्वा भूमेः प्रदक्षिणां कृत्वा प्रतिग्रहणम् ॥ प्रार्थना ॥ सर्वसस्याश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता ॥ अनन्तसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ कृतैतन्निवर्त्तनभूमिदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं सुवर्णं अग्निदैवतं यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥

## अथ तिलदानम् ॥

देयद्रव्येभ्यो नम इति संपूज्य ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन् यथाशक्तितिलदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं तिलान्प्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ द्रोणपरिमितान् इमान् तिलान्प्रजापतिदैवत्यान् तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना ॥ महर्षेर्गोत्रसम्भूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ कृतैतत्तिलदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं सुवर्णमग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥

## अथ सुवर्णदानम् ॥

ततो वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्सुवर्णदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं सुवर्णप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥ अनन्तपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः

१ तत्र दशहस्तेन दण्डेन त्रिंशद्दंडनिवर्त्तनम् ॥ इति निवर्त्तनस्वरूपम् ॥ २ द्रोण इति षोडशसेटकम् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शर्माहं निष्कपरिमितं सुवर्णमग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतत्सुवर्णदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ **अथाज्यदानम्** ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्नाज्यदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं आज्यप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम् ॥ देवानामाज्यमाहारमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं प्रस्थमितमाज्यं सोमदैवत्यं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतदाज्यदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्ति ॥ **अथ वस्त्रदानम्** ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्वस्त्रदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं वस्त्रप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ॥ देहालंकरणं वस्त्रमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं इदं वस्त्रद्वयं बृहस्पतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतद्वस्त्रदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ **अथ धान्यदानम्** ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥

१ धान्यप्रमाणम् ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुंची कुंची च चतुराढकम् ॥ चतुराढकं भवेद्द्रोणः खारीद्रोणमतः परम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अस्मिन्धान्यदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं धान्यप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् ॥ प्राणिनां जीवनं यस्मादतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं इमं सार्द्धखारीपरिमितं धान्यं विश्वेदेवदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतद्धान्यदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ अथ गुडदानम् ॥ वरणद्रव्यमादाय ॥ अस्मिन्गुडदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गुडप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः ॥ प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा ॥ तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः ॥ मम तस्मात्परां लक्ष्मीन्ददस्व गुड सर्वदा ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं पलषष्टिपरिमितं गुडममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतत् गुडदानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्ति ॥ अथ रजतदानम् ॥ अस्मिन् रजतदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं रजतप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ प्रीतिर्यत्र पितॄणाञ्च विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं निष्कत्रयपरिमितं रौप्यं रुद्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतद्रौप्यदानकर्मणः सांगता-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्ध्यर्थं हिरण्यमाग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ अथ लवणदानम् ॥
अस्मिँल्लवणदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं लवणप्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना ॥ शम्भोः प्रीतिकरं नित्यं अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं सार्द्धखारीमितं लवणं विष्णुदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ स्वस्ति ॥ कृतैतल्लवणदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इति दश दानानि ॥ ( केचित्तु ) कनकाश्व तिला गावो दासीहयमहीगृहाः ॥ कन्या च कपिला धेनुर्महादानानि वै दश इति कूर्मोक्तानि वा देयानि इति वदंति ॥ अथवा यथाशक्त्या दशदानमौल्यं देयम् ॥ तत्र संकल्पः ॥ अद्येत्यादि० गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यगुडरौप्यलवण इति दशद्रव्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय० वा यथायथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः यथाविभागं विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ निष्क्रये तु दक्षिणाभावः ॥ गोनिष्क्रयद्रव्यमेकस्मै ब्राह्मणाय दद्यान्न बहुभ्यः ॥ तदुक्तं अंगिरसा ॥ बहुभ्यो न प्रदेयानि गौर्गृहं शयनं स्त्रियम् ॥ विभक्तदक्षिणा ह्येता दातारन्तारयन्ति हि ॥ बहुभ्यः प्रत्यक्षे एकगोदानस्य प्रतिनिषिद्धत्वात् ॥ इदं च गोवृषदानमेकप्राजापत्यकृच्छ्ररूपप्रायश्चित्तदाने ज्ञेयम् ॥ दानान्ते प्रार्थना ॥ प्रायश्चित्तहरो ब्रह्मा प्रायश्चित्तहरो हरिः ॥ प्रायश्चित्तहरो रुद्रो गामेकां च ददाम्यहम् ॥ पूर्वजन्म-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहस्राणि पूर्वजन्मशतानि च ॥ तत्सर्वन्नाशमायातु गामेकान्ददतो मम ॥ धेनुके सर्वभूतानामसि त्वं पापनाशिनी ॥ पापार्णवे निमग्नानां समुद्धर नमोऽस्तु ते ॥ इमानि दश दानानि दत्तानि मलशुद्धये ॥ दानेन यज्ञपुरुषः प्रीयतान्न ममेति च ॥ एतानि दश दानानि सभामध्ये द्विजातिषु ॥ तानि देयानि दानानि तस्मात्सर्वप्रदो भव ॥ यन्मया कृतममुकप्रायश्चित्तन्तदच्छिद्रमस्तु ॥ अस्त्वच्छिद्रमिति ब्राह्मणा वदेयुः ॥ व्रतछिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ॥ सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं यस्माच्चेच्छेति वै द्विजाः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वंदे तमच्युतम् ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यन्मया दूषितं देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ॥ करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ इति प्रथमदिनकृत्यं सर्वदेवप्रतिष्ठायां प्रायश्चित्तप्रकरणं समाप्तम् ॥

## अथ पञ्चाङ्गम् ।

चन्द्रादिशुभग्रहानुकूलसमये शुभे दिने कृतनित्यक्रियो यजमानः शुभासने प्राङ्मुखोपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपवेश्य ॥ ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः ॥ इति त्रिराचम्य ॥ पवित्रधारणं कृत्वा ॥ ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः ॥ तस्यंतेपवित्र-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पतेपवित्रंपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥ ततः प्राणायामत्रयं कुर्यात् ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य ॥ तण्डुलपूरितताम्रपात्रे मृन्मये वा कुंकुमेनाष्टदलं पद्मं कृत्वा तदुपरि गोमयमयीं गौरीं फलमयं गणेशं च संस्थाप्य ॥ हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मङ्गलमंत्रान्पठेत् ॥ ॐ आनोभद्राः ऋतवो यन्तुव्विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानांभद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानांरातिरभिनोनिवर्तताम् ॥ देवानांसख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्वयानिव्विदाहूमहेव्वयंभगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्यमणंवरुणंसोमंमश्विनासरस्वतीनःसुभगामयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातुभेषजंतन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामरुतःपृश्निमातरः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० शुभंय्यावानोव्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निर्जिह्वामनवःसूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रंकर्णेभिः म०
॥१८॥ शृणुयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमि-
न्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनि-
त्वम् ॥ १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयःशान्तिः ॥ वनस्पतयःशान्ति-
र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वᳬ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतः समीहसे
ततोनोऽअभयंकुरु ॥ शन्नःकुरुप्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ सुशान्तिर्भवन्तु ॥ विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं
दण्डपाणिश्च भैरवम् ॥ वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ १ ॥ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य-
समप्रभ ॥ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २ ॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च
विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ३ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः ॥१८॥
पठेच्छृणुयादपि ॥४॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥५॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ६ ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ७ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः ॥ ९ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ॥ विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि ॥ १० ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ११ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १२ ॥ अनन्याश्चिन्तयंतो मां ये जनाः पर्युपासते ॥ तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ १३ ॥ स्मृते सकल-कल्याणभाजनं यत्र जायते ॥ पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ १४ ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रि-भुवनेश्वराः ॥ देवा दिशंतु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १५ ॥ ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ॥ ॐ उमामहे-श्वराभ्यां नमः ॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः ॥ ॐ मातापितृभ्यां नमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ कुशफलाक्षतजलद्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे ( वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते बौद्धावतारे इति काश्यां ) वा प्रजापतिक्षेत्रे भागीरथ्याः अमुकभागे ( नर्मदादिकअमुकभागे वा ) अमुकसंवत्सरे श्रीमार्तण्डे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सनवग्रहमखसप्रासादनन्दीश्वरशिवादि ( वा विष्णवादि ) मूर्तिषु देवकलासान्निध्यार्थमायुः श्रीसर्वफलाक्षय्यसुखकामः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं च शिवादि ( वा विष्णवादि वा रामचन्द्रादि ) मूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठां ( वा चलप्रतिष्ठां ) पञ्चमदिने ( वा परश्वोदिने वा श्वः वा अद्य इत्यूहाः कार्याः ) करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्यमंत्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ गणपतिपूजनम् ।

हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा गणपतिमावाहयेत् ॥ हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ॥ सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥ १ ॥ नागास्य नागहारस्त्वं गणराज चतुर्भुज ॥ भूषितः स्वायुधैर्दन्तपाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥ २ ॥ आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ॥ इहागत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे ॥ ३ ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिंर्ठ. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिंर्ठ. हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिंर्ठ. हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि ॥ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् ॥ लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काँपीलवासिनीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि ॥ २॥ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ. समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामों ३॥ प्रतिष्ठ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् ॥ ॐ भू० ग० आसनार्थे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० अक्षतान्स० ॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० ग० आचमनं स० ॥ अथवा ॥ म०
॥२०॥ ॐ भू० ग० एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि (अथ मिलितपञ्चगव्यस्नानम्) पञ्चनद्यः
सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ॥ पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं
मधु ॥ शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० पञ्चामृतस्नानं स० (अथवा पृथक् पृथक्
पंचामृतस्नानम्) ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
कापिलाक्षीरमुत्पन्नं सुरासुरप्रियं तव ॥ स्नानार्थन्तु मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भू० ग० पयः स्नानं स० ॥
ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत् ॥ पयसस्तु
समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० दधिस्नानं स० ॥ ॐ घृतं
घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसिस्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ-
उद्दिशो दिग्भ्यःस्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ॥ घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भू० ग० घृतस्नानं समर्पयामि ॥ ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ ॥२०॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० मधुस्नानं स० ॥ ॐ अपाᳬं रसमुद्वयसᳬं सूर्ये सन्तᳬं समाहितम् ॥ अपाᳬं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टं गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ इक्षुरससमुद्भूता शर्करा पुष्टिदा शुभा ॥ मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० शर्करास्नानं स० ॥ ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतयेकर्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ गंगायमुनयोश्चैव नीरं स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ भू० ग० शुद्धोदकस्नानं स० ॥ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ महानद्याः समानीतं पापारण्यदवानलम् ॥ गृहाण रुचिरं देव दत्तमाचमनीयकम् ॥ ॐ भू० ग० स्नानाङ्गमाचमनीयं स० ॥ ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ॥ देहालङ्करणं वस्त्रमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ भू० ग० वस्त्रं स० ॐ भू० ग० ॥ वस्त्रान्ते आचमनं स० ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं मया दत्तं म०
॥२१॥ गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भू० ग० यज्ञोपवीतं स० ॥ यज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ ॐ सुजातोज्योतिषासह-
शर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः ॥ व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपᳬसंव्व्ययस्वव्विभावसो ॥ नूतनैस्तन्तुभिर्युक्तंशीतातपनिवा-
रणम् ॥ देहालङ्करणन्देवं गृह्यतामुपवस्त्रकम् ॥ ॐ भू० ग० उपवस्त्रं स० ॥ आचमनं स० ॥ ॐ त्वां गन्धर्वाऽ-
अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधेसोमोराजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं
गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० गन्धं स० ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त-
ह्यवऽप्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकु-
माक्ताः सुशोभनाः ॥ अक्षतान्प्रतिगृह्णीया संकटं मे निवारय ॥ ॐ भू० ग० अक्षतान्स० ॥ ॐ ओषधीःप्रति-
मोदध्वंपुष्पवतीःप्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइवसजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि
वै प्रभो ॥ मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० पुष्पमालां समर्पयामि ॥ ॐ काण्डात्का- ॥२१॥
ण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्परि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ दूर्वाङ्कुरान्सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥ ॐ भू० ग० दूर्वाङ्कुरान्स० ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परिपातु विश्वतः ॥ नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ॥ अबीरनामकं चूर्णं गन्धचारु प्रगृह्यताम् ॥ हरिद्रे रञ्जिते देवी सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ हरिद्रयार्चिता देवी प्रीयतां परमेश्वरी ॥ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यप्रियवर्द्धनम् ॥ सिन्दूरेणार्चिता देवी प्रीयतां परमेश्वरी ॥ ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥ ॐ भू० ग० नानापरिमलद्रव्याणि स० ॥ ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान्धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० धूपं आघ्रापयामि ॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ साज्यञ्च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ॥ त्राहि मां निरयाद्घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 ॐ भू० ग० दीपं दर्शयामि ॥ हस्तप्रक्षालनम् ॥ ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्या- 
 म्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ२ अकल्पयन् ॥ शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ॥ उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं
प्रतिगृह्यताम् ॥ ध्यानम् ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥
ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ भू० ग० नैवेद्यं स० ॥ ॐ आचमनीयं स० ॥ ॐ मध्ये पानीयं स० ॥ ॐ उत्तरापोशनं
स० ॥ ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥ चन्दनं मलयोद्भूतं
कस्तूर्यादिसमन्वितम् ॥ करोद्वर्त्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भू० ग० करोद्वर्तनार्थे चन्दनं स० ॥ ॐ याः फलिनीर्या-
ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली-
दलैर्युतम् ॥ एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० ग० मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं सम० ॥ ॐ
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ स दाधारपृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥ अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ भू० ग० दक्षिणां
स० ॥ ॐ येतीर्थानिप्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ यानि कानि च 

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ ॐ भू० ग० प्रदक्षिणां स० ॥ ॐ इदर्ठं. हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दश व्वीरर्ठं. सर्व्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभय-सनि ॥ अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम् ॥ आरार्त्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ ॐ भू० ग० कर्पूरनीराजनं स० ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्मा-णि प्रथमान्यासन् ॥ तेह नाकम्महिमानꣳ सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधि-पत्यमयं समंतपर्यायै स्यात् ॥ सार्वभौमस्सार्व्वायुषांतादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे ॥ आवीक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुतव्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी-जनयन्देवऽएकꣳ ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ॐ अम्बेऽम्बिके० ॥ नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भू० ग० मंत्रपुष्पाञ्जलिं स० ॥ ( अथ विशेषार्घः ) ॥ म०
॥२३॥ जलगंधाक्षतफलपुष्पदूर्वादक्षिणा ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य अवनिकृतजानुमण्डलः ॥ ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष
त्रैलोक्यरक्षक ॥ भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ॥
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम ॥ ॐ भू० ग० विशेषार्घ्यं
स० ॥ ( प्रार्थना ) ॥ ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय
श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ भक्तार्त्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय
सुरेश्वराय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय
ते नमः ॥ नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥ विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ॥ भक्तप्रियाय देवाय
नमस्तुभ्यं विनायक ॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ॥ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ त्वां
विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ॥ विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥ इति प्रार्थना ॥ अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम ॥ इति ॥२३॥
गणेशपूजनं समाप्तम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ कलशस्थापनम् ।

( कलशलक्षणम् ) स्वर्णं वा राजतं वापि ताम्रं मृन्मयजन्तु वा ॥ अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षणसंयुतम् ॥ पञ्चाशाङ्गुलवैपुल्यमुत्सेधे षोडशाङ्गुलम् ॥ द्वादशाङ्गुलकं मूलं मुखमष्टाङ्गुलं तथा ॥ ( अथ सप्त धान्यानि ) यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गाश्चणकश्यामकाः ॥ एतानि सप्त धान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ ( अथवा ) यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च ॥ श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्त धान्यानि संविदुः ॥ ( अथ सप्त मृदः ) ॥ अश्व स्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥ ( सर्वौषधयः ) मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयरजनीद्वयम् ॥ सठीचम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ( अथ पञ्च पल्लवाः ) न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थचूतपर्कटिमेवच ( अथ पञ्च रत्नानि ) कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम् एतानि पञ्च रत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ ( प्रकारान्तरेण ) वज्रमौक्तिकवैडूर्यप्रवालं चेन्द्रनीलकम् ॥ अलाभे सर्वरत्नानां हेमं सर्वत्र योजयेत् ॥ ( अथ प्रयोगः ) ततः पालाशपर्णोपरि धान्यं प्रक्षिप्य तदुपरि कुंकुमेनाष्टदलं पद्मं कृत्वा ॥ ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ पृथिवी त्वया

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता ॥ कलशाधारभूतं हि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तᳬ राजन्पारयामसि ॥ यवोसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः ॥ प्राणिनां जीवनोपायः कलशाधः क्षिपाम्यहम् ॥ इति धान्यं विकिरेत् ॥ ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः ॥ पुनरूर्ज्जानिवर्तस्व सानः ॥ सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः ॥ कला कला हि देवानां दानवानां कला कला ॥ संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन उच्यते ॥ इति धान्योपरि कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरव्ययं ॥ प्राणिनां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम् ॥ इति कलशे जलं पूरयेत् ॥ ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वांबृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्न्यक्ष्माद्-मुच्यत ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥ इति कलशे गन्धं क्षिपेत् ॥ ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जातादेवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहᳬ शतंधामानिसप्तचं ॥ सर्वौषध्यः सुगन्धाढ्यो दिव्यवृष्टिसमुद्भवाः ॥ कलशाप्यायनकरा मङ्गलाय क्षिपाम्यहम् ॥ इति सर्वौषधीः कलशे



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षिपेत् ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ दूर्वे अमृतसंपन्ने
शतमूले शताङ्कुरे ॥ शतं मे हर पापानि शतमायुर्विवर्द्धिनि ॥ इति कलशे दुर्वाङ्कुरान्क्षिपेत् ॥ ॐ अश्वत्थेवो-
निषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥ यज्ञीयवृक्षसम्भूतान्पल्लवान्सरसाञ्छुभान् ॥
अलंकाराय पञ्चैतान्कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥ इति कलशे पंचपल्लवान्क्षिपेत् ॥ ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्नृक्षरा-
निवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः ॥ अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात् ॥ राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृत्तिकां
कलशे क्षिपेत् ॥ इति कलशे सप्तमृत्तिकां क्षिपेत् ॥ ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ इदं फलं मया सम्यक् संक्षिप्तं कलशे यतः ॥ तेनायं कलशः सम्यक्
फलदश्चास्तु सर्वदा ॥ इति कलशे पूगीफलं क्षिपेत् ॥ ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत ॥ दधद्र-
त्नानिदाशुषे ॥ रत्नगर्भा भवेद्भूमी रत्नगर्भाढ्यभूधराः ॥ कलशे रत्नगर्भा स्यात्तस्माद्रत्नान्यहं क्षिपेत् ॥
इति कलशे पञ्चरत्नानि क्षिपेत् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ॥
५ सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥ इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत् ॥ ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः ॥ व्वासोऽ अग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो ॥ शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् ॥ सुवेशधारवस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम् ॥ इति वस्त्रयुग्मेन कलशं वेष्टयेत् ॥ ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ व्वस्नेव व्विक्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳ शतक्रतो ॥ धान्यपूर्णमिदं पात्रं स्थापितं कलशे यतः ॥ तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् ॥ ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम् ॥ लक्ष्मीदं फलदं शुद्धं कलशे स्थापयाम्यहम् ॥ इति कलशे पूर्णपात्रोपरि नारिकेलं स्थापयेत् ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳस मा नऽ आयुः प्रमोषीः ॥ मकरस्थं पाशहस्तमर्णसाम्पतिमीश्वरम् ॥ आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥ इति अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि ॥ ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ॥ इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( ततः कलशे गङ्गाद्यावाहनम् ) कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः ॥ संगृह्य निर्मितो यस्मात्क-
लशस्तेन कथ्यते ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः
स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी ॥ अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥ कावेरी
कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी ॥ तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥ नदाश्च विविधा जाता नद्यः
सर्वास्तथापराः ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
आयान्तु मम कामस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे
कलशन्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिःपुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम कामस्य दुरितक्षय-
कारकाः ॥ ततो यजमानः स्वहस्ते अक्षतान्गृहीत्वा प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य-
ज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों ३ म्प्रतिष्ठ ॥ अस्यै प्राणाः
प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रति-
ष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः वरुणं सम्पूज्य ॥ अनया पूजया
वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ प्रार्थना ॥ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ॥ सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ॥ पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव ॥ ( अथ पुण्याहवाचनम् ) अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधायानन्तरं वामान्वारब्धदक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत् ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ ॐ त्रीणिपदाविचंक्रमेविष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः ॥ अतोधर्माणिधारयन् ॥ तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ इति यजमानः ॥ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति द्विजाः ॥ एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निनयेत् ॥ ( ततो ब्राह्मणानां हस्ते ) ॥ अपाम्मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानां करे न्यस्ता शिवा आपो भवन्तु ते ॥ ( यजमानः ) ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम् ॥ ( ब्राह्मणाः ) सन्तु शिवा आपः ( एवं सर्वत्र यजमानस्य वचनोत्तरं ब्राह्मणवचनम् ) ॥ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ॥ सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु

CC 0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नः ॥ ( यजमानः ) सौमनस्यमस्तु ॥ ( ब्राह्मणाः ) अस्तु सौमनस्यम् ॥ ( यजमानः ) अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशो बलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ अक्षतञ्चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतान् ॥ ( विप्राः ) अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च ॥ ( यजमानः ) गन्धाः पान्तु इति गन्धम् ॥ ( विप्राः ) सुमङ्गल्यं चास्तु ॥ ( यजमानः ) अक्षताः पान्तु ॥ ( विप्राः ) आयुष्यमस्तु ॥ ( यजमानः ) पुष्पाणि पान्तु ॥ ( विप्राः ) सौश्रियमस्तु ॥ ( यजमानः ) सफलताम्बूलानि पांतु ॥ ( विप्राः ) ऐश्वर्यारोग्यमस्तु ॥ ( यजमानः ) दक्षिणाः पान्तु ॥ ( विप्राः ) बहु देयं चास्तु ॥ ( वा बहुधनमस्तु ) ( यजमानः ) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु ॥ ( विप्राः ) तथास्तु ॥ ( यजमानः ) यत्कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ ( विप्राः ) वाच्यताम् ॥ ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्राद्दतुभिरिष्यत ॥ १ ॥ सविता त्वासवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमो व्वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥ २ ॥ नतद्रक्षांसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमजंह्येतत् ॥ योविभर्तिदाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ ३ ॥ उच्चातेजातमन्धसो

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिविसद्भूम्यादंदे ॥ उग्रꣳ शर्म्ममहिश्रवः ॥ ४ ॥ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँ२॥ऽइयक्षते ॥ ५ ॥ (ततः पुराणोक्तमंत्राः) करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चापि द्विजातयः ॥ सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ १ ॥ ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः ॥ तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः ॥ २ ॥ स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च ॥ स्वस्त्यस्त्वपादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा ॥ ३ ॥ स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥ करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे ॥ ४ ॥ लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ ॥ असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः ॥ ५ ॥ वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥ धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः ॥ ६ ॥ स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च षण्मुखः ॥ विवस्वान्भगवान्स्वस्ति करोतु तव सर्वदा ॥ ७ ॥ दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः ॥ अधस्ताद्धरणीं चासौ नागो धारयते हि यः ॥ ८ ॥ शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात् ॥ (यजमानः) व्रतजपनियमतपःस्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥ (ब्राह्मणाः) समाहितमनसः स्मः ॥ (यजमानः) प्रसीदन्तु भवन्तः ॥ (विप्राः) प्रसन्नाः स्मः ॥ (ततो दानखण्डोक्तमते तु स्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्ध्नि दूर्वया सेचनं कुर्यात् ॥ ॐ शान्तिरस्तु इत्यादि) केषांचिन्मते कलशजलं पात्रान्तरे पातयित्वा ॥ केचित्तु अक्षतान्पातयन्ति ॥ (ततो यजमानो



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रूयात् ) ॐ शान्तिरस्तु ॥ ब्राह्मणाः ( अस्त्वेवं सर्वत्र वदेत् ) ॐ शान्तिरस्तु ॥ ॐ पुष्टिरस्तु ॥ ॐ तुष्टिरस्तु ॥ ॐ वृद्धिरस्तु ॥ ॐ अविघ्नमस्तु ॥ ॐ आयुष्यमस्तु ॥ ॐ आरोग्यमस्तु ॥ ॐ शिवमस्तु ॥ ॐ शिवङ्कर्मास्तु ॥ ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ इष्टसम्पदस्तु ॥ ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु ॥ ( बहिः ) द्वितीयपात्रे ) यत्पापं रोगमशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ( अन्तः प्रथमपात्रे ) ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॥ ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु ॥ तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ तिथिकरणे समुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् ॥ ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ माहेश्वरीपुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॥ ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॥ ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ॥ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ( बहिः द्वितीयपात्रे ) ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः ॥ ॐ हताश्च परिपन्थिनः ॥ ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः ॥ शत्रवः पराभवं यान्तु ॥ ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॥ ॐ शाम्यन्तु पापानि ॥ ॐ ॐ शाम्यन्त्वीतयः ॥ ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ॥ ( अन्तः प्रथमपात्रे ) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम् ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु ॥ ॐ शिवा ऋतवः सन्तु ॥ ॐ शिवा ओषधयः सन्तु ॥ ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु ॥ ॐ शिवा अतिथयः सन्तु ॥ ॐ शिवा अग्नयः सन्तु ॥ शिवाहुतयः सन्तु ॥ ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् ॥ ॐ निकामे निंकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर-राहुकेतुसोमसहितआदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ भगवान्नारायणः प्रीयताम् ॥ ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् ॥ ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् ॥ ॐ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु ॥ ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु ॥ ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु ॥ ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ॥ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ ( विप्राः ) वाच्यताम् ॥ ॐ ब्राह्म्यं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पु-ण्याहं ब्रुवन्तु नः ( यजमानः ) भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वराशिवादिमूर्त्तीनां




CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( वा विष्णवादिमूर्तीनां वा रामचन्द्रादिमूर्तीनां ) स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ( ब्राह्मणाः ) ॐ पुण्याहम् ॥ एवं वचनं प्रतिवचनं च त्रिः पठित्वा (तथाहि) अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु (इति यजमानः) ( ॐ पुण्याहमिति ब्राह्मणाः ) ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥ पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मां ॥ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ ( यजमानः ) भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादि-मूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ( विप्राः ) ॐ कल्याणम् ॥ ॐ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्म राजन्याभ्याᳬ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु ॥ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां ऋद्धिं प्रब्रुवन्तु नः ॥ ( यजमानः ) भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ( ब्राह्मणाः ) ॐ कर्म ऋध्यताम् ॥ ॐ ॥ सत्रस्यऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवम्पृथिव्याऽ-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥ स्वस्तिस्तु याविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥ ( यज० ) भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य सग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ( ब्राह्म० ) ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ॥ हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥ ( यजमानः ) भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य सग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ( ब्राह्मणाः ) ॐ अस्तु श्रीः ॥ ॐ श्रीश्च तेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमाश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ ( ब्राह्मणाः ) ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः ॥ ॐ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरो भवन्तिमानोमध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ॥ धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥ ( ब्रा० ) ॐ अस्तु श्रीः ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यम-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीय ॥ पशूनाᳬ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ॥ भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः ॥ ॐ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो-न्विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यपिता सावस्य पिता व्वयᳬ स्याम पतयो रयीणाᳬ स्वाहा ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ॥ श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥ ( यजमानः ) ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥ ( इति ब्राह्मणाः ) ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येन व्विश्वाः परि-द्विषोवृणक्ति विन्दतेवसु ॥ ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु ॥ ( दक्षिणासंकल्पः ) ॥ कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ अथाभिषेकः अभिषेके पत्नी वामतः ॥ एकस्मिन्पात्रे वरुणोदकं गृहीत्वाऽविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वाम्रपल्लवैः सकुटुम्बं यजमानमभि-षिञ्चेयुः ॥ ( तत्र मंत्राः ) ॐ पयः पृथिव्यां० ॥ १ ॥ ॐ पञ्चनद्यः ॥ २ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भ० ॥ ३ ॥ ॐ पुनन्तुमादेव० ॥ ४ ॥ ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तु-र्यन्त्रियेदधामि वृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ५ ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेःसाम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ ६ ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनो- म०
॥३०॥ र्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यैभैषज्येनव्वीर्यायान्नाद्या-
याभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ ७ ॥ ॐ व्विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव ॥
यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ८ ॥ ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मादेवोबृहस्पतिः ॥ सचेतसोव्विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तुनः
शुभे ॥ ९ ॥ ॐ त्वंयविष्ठदाशुषोनॄँःपाहिश्रृणुधीगिरः ॥ रक्षातोकमुतत्मना ॥ १० ॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमी-
वस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारिषऽउर्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ ११ ॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्त० ॥ १२ ॥ ॐ यतो-
यतः ॥ १३ ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणः पवनश्चैव
धनाध्यक्षस्तथा शिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः
श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ बुद्धिर्लज्जा वपुः शांतिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चंतु देवपत्न्यः समा-
गताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमा भौमोबुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानव- ॥३०॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ॥ देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ केचित्तु कर्मान्ते अभिषेकं कुर्वन्ति ॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥

## ( अथ षोडशमातृकास्थापनं पूजनञ्च )

आग्नेय्यां प्रतिमास्वक्षतपुञ्जेषु प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा मातृस्थापनम् ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ( समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा ॥ त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम् ) ॐ गणपतये० ॥ १ ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ( हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ॥ लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ) ॐ गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि० ॥ २ ॥ ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्च ॥ आरोहतंव्वरुणमित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसिव्वरुणोसि ॥ ( पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम् ॥ जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ) ॐ पद्मायै नमः पद्मां० ॥ ३ ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॐ निवेशनःसङ्गमनोव्वसूनांव्विश्श्वारूपाभिचष्टे शचीभिः ॥ देवऽइंवसवितासत्यधर्म्मेन्द्रोनतंस्थौसमरेपंथीनाम् म०
॥३१॥ ( दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम् ॥ रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ) ॐ शच्यै नमः
शचीमा० ॥ ४ ॥ ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापंतिः ॥ मेधामिन्द्रंश्च व्वायुश्चं मेधान्धाता ददातु मे
स्वाहा ( विश्वेस्मिन्भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ॥ बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ) ॐ मेधायै नमः
मेधामा० ॥ ५ ॥ ॐ सविता त्त्वां सवानांᳪ सुवतामग्निर्ग्गृहपंतीनाᳪ सोमो वनस्पतींनाम् ॥ वृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रो-
ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ( जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् ॥ वेदगर्भां
यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ) ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमा० ॥ ६ ॥ ॐ व्विज्ज्यन्धनुंः कपर्द्दिनोव्विशंल्यो-
वाणंवाँ२ऽउत ॥ अनेशन्नस्यषाऽइषंवऽआभुरंस्यानिषङ्गधिः ( सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् ॥
सर्वदेवस्तुतां वंद्यां विजयां स्थापयाम्यहम् ) ॐ विजयायै नमः विजयां आ० ॥ ७ ॥ ॐ बह्वीनाम्पिताव्बहुरं
स्यपुत्राश्चिश्चाकृंणोतिसमंनावगत्यं ॥ इषुधिःसङ्काः पृतंनाश्च सर्व्वाः पृष्ठेनिनंद्धोजयतिप्प्रसूंतः ( सुरारिमाथिनीं देवीं ॥३१॥
देवानामभयप्रदाम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम् ) ॐ जयायै नमः जयामा० ॥ ८ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ इन्द्रंऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्रम्
( मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम् ॥ आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ) ॐ देवसेनायै नमः देव-
सेनामा० ॥ ९ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्व-
धायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्न्पितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् (अग्रजा सर्वदेवानाङ्कव्यार्थं
या प्रतिष्ठिता ॥ पितॄणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ) ॐ स्वधायै नमः स्वधामा० ॥ १० ॥ ॐ स्वाहा-
प्प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः ॥ पृथिव्यैस्वाहाग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहाव्वायवेस्वाहा ॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा
( हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ॥ तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ) ॐ स्वाहायै
नमः स्वाहामा० ॥ ११ ॥ ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तु ॥ व्विश्वꣳहिरिप्प्रम्प्रवहन्ति
देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वाशिवाꣳशग्ग्मामपरिदधेभद्रंवर्णपुष्यन् ॥ ( आवा-
हयाम्यहं मातॄः सकला लोकपूजिताः ॥ सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः ) ॐ मातृभ्योः नमः
मातॄः आ० ॥ १२ ॥ ॐ रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमेव्विभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेक्षितञ्चमेन्न-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र०

॥३२॥ श्वमेक्षुच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् (आवाहयेल्लोकमातॄः जयन्तीप्रमुखाः शुभाः ॥ नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोक-हितावहाः) ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातॄः आ० ॥ १३ ॥ ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतं प्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु (सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् ॥ हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्) ॐ धृत्यै नमः धृतिमा० ॥ १४ ॥ ॐ अङ्गान्न्यात्मन्न्भिषजातद-श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्सरस्वती ॥ इन्द्रस्यरूपꣳशतमानमायुश्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतन्दधानाः ॥ (पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः ॥ शाकैः फलैर्जलै रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्) ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमा० ॥ १५ ॥ ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः ॥ सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः (देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् ॥ प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्) ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिमा० ॥ १६ ॥ ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा (पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ॥ नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्) ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि ॥ १७ ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञꣳ० म० ॥३२॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ ( अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ) ॐ गणेशपूर्वकगौर्यादिकुलदेवतान्तमातरो सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ॐ गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातृभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ समख्येदेव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मामऽआयुः प्रमोषीम्मोऽअहंतवंव्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि ( गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः ॥ गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ॥ ) अनया पूजया गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातरः प्रीयन्ताम् ॥ इति षोडशमातृकापूजनम् ॥

## ( अथ सप्तघृतमातृकापूजनारम्भः )

### वसोर्धारां च कुर्यात् ।

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारंव्वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासवितापुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वा इति मंत्रेण सप्तघृतधाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात् ॥ ॐ कामंधुक्षः इत्येतावता मंत्रेणार्धभागे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० गुडेनैकीकरणम् ॥ कुंकुमादिना विन्दुकरणेनालङ्करणं प्रतिधारामेकैकदेवतामावाहयेत् ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं म०
॥३३॥ व्वाचः सत्यमसीय ॥ पशूनाᳪरूपमन्नस्यरसोयशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ ॐ श्रियै नमः श्रियमा० ॥ १ ॥
ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽ-
इषाण ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० ॥ २ ॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गै-
स्तुष्टुवाᳪसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः ॥ धृत्यै नमः धृतिमा० ॥ ३ ॥ ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु
मेधामग्निः प्प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ॐ मेधायै नमः मेधामा० ॥ ४ ॥
ॐ प्राणायस्वाहापानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहाचक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा ॥ ॐ स्वाहायै
नमः स्वाहामा० ॥ ५ ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ ॐ प्रज्ञायै
नमः प्रज्ञामा० ॥ ६ ॥ ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवति ॥ यज्ञंव्वष्टुधियाव्वसुः ॥ ॐ सरस्वत्यै
नमः सरस्वतीमा० ॥ ७ ॥ ( वा नाममंत्रेणावाहयेत् ) ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्येति ( अस्यै प्राणाः ॥३३॥
प्रतिष्ठन्तु० ) इति वसोर्द्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवन्तु ॥ सप्तघृतमातृकावसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः इति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

षोडशोपचारैर्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ अम्बेऽम्बिके० ॥ यदङ्गत्वेन भोदेव्यः पूजिता विधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥ अनया पूजया वसोर्द्धारादेवताः प्रीयन्ताम् ॥ इति सप्तघृतमातृका वसोर्द्धारा समाप्ता ॥

## ( अथायुष्यमन्त्रजपः )

ॐ आयुष्यंव्वर्चस्यꣳ० रायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इदꣳ० हिरण्यंवर्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम् ॥१॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसि नपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत् ॥ योविभर्तिदाक्षायणꣳ० हिरण्यꣳ० सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ २ ॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳ० शतानीकायसुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामिशतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ ( यद्वायुष्यं चिरन्देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु ॥ ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥ दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ॥ अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ २ ॥ सप्तानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च ॥ अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥ ३ ॥ ) कृतैतदायुष्यमंत्रजपकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं आयुष्यमंत्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥ इत्यायुष्यमंत्रजपः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## ( अथ साङ्कल्पेन विधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः )

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ १ ॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितमह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ २॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ३ ॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ४ ॥ ( अथासनदानम् ) ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥ १ ॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः ॥ २ ॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥ ३ ॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा

१ टि०-भविष्यपुराणे ॥ सव्येन सर्वं कार्यम् ॥ ऋजव एव कुशाः तिलार्थे यवा दातव्याः ॥ पिण्डनिर्वपणं कुर्यान्न वा कुर्यान्नराधिप ॥ वृद्धिश्राद्धे महाबाहो कुलधर्मानवेक्ष्य हि ॥ अनस्मच्छब्दशब्दानामरूपाणामगोत्रिणाम् ॥ अनाम्नामतिलाद्यैश्च नान्दीश्राद्धे च सव्यवत् ॥




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥ ४ ॥ ( ततो विश्वेदेवादिभ्यो गन्धादिदानम् ) ॥ गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलपूगीफलवस्त्रयज्ञोपवीतानि दद्यात् ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ १ ॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ २ ॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ३ ॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ४ ॥ ( ततो युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयदानम् ) ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ १ ॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवःस्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रय० ॥ २ ॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्नानिष्क्रयभूतं द्रव्यं० ॥ ३ ॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ४ ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥१॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् ॥२॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥३॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥४॥ ॐ शिवा आपः सन्तु ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ( 'अघोराः पितरः सन्तु' इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यादिति केचित् आचारपरिप्राप्तानि ) ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहु देयं च नोऽस्तु अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ सन्त्वेताः सत्या आशिषः इति ब्राह्मणाः ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ १ ॥ ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ २ ॥ ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुव :स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ३ ॥ ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ४ ॥ 'ततो वक्ष्यमाण-मन्त्रौ पठेदर्घदानं कृत्वा' इति केचित् ॥ ( अन्यथा तु पाठमात्रम् ) ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँऽइयक्षते ॥ १ ॥ ॐ इडामग्नेपुरुदꣳसꣳसनिङ्गोः शश्वत्तमꣳहवमानायसाध ॥ स्यान्नः सूनुस्तनयो-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विजावाग्नेसातैं सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २ ॥ अनेन नान्दीश्राद्धं संपन्नम् ॥ सुसम्पन्नमिति ब्राह्मणाः ॥ तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्तां वृद्धिः ॥ ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ व्वाजेव्वाजेवतव्वाजिनोनोधनेषुविप्राऽअमृताऽ ऋतज्ञाः ॥ अस्यमध्वःपिबतमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः ॥ इति देवविसर्जनम् ॥ ॐ आमाव्वाजस्य-प्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृथिवीव्विश्वरूपे ॥ आमागन्तांपितरामातराचामासोमोऽअमृतत्त्वेनगम्यात् ॥ इति पितृविसर्जनम् ॥ इति नान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥

## ( अथाचार्यादिवरणम् )

ततः प्राङ्मुखो यजमानः उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य गंधादिभिः संपूज्य ॥ वरणद्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्येत्यादि० अमुकगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माहं अमुकगोत्रममुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजस-नेयमध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां स्थिर-प्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीत्याचार्यः ॥ प्रार्थना ॥ अचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ १ ॥ अद्य पूर्वोच्चारित० अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति ब्रह्मा वदेत् ॥ प्रार्थना ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ २ ॥
 अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि० ॥
प्रार्थना ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृताम्वर ॥ वितते मम यज्ञेऽस्मिन्सदस्यो भव सुव्रत ॥ अस्मिन्कर्मणि
एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि० ॥ प्रार्थना ॥
वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुरासुरैः ॥ निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामहं गणपं वृणे ॥ ४ ॥ अस्मिन्कर्मणि
एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि० ॥ प्रार्थना ॥ भगवन्सर्व-
धर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण ॥ वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ॥ ५ ॥ अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्र-
त्रावमुकशर्माणौ युग्मऋग्वेदिनौ पूर्वद्वारि सूक्तपाठार्थं जपार्थं च युवां वृणे ॥ वृतौ स्वः ॥ प्रार्थना ॥ ऋग्वेदः
पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः ॥ अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ७ ॥ अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरण
द्रव्यैः अमुकगोत्रावमुकशर्माणौ युग्मयजुर्वेदिनौ दक्षिणद्वारि सूक्तपाठार्थं जपार्थं च युवां वृणे ॥ वृतौ स्वः ॥
प्रार्थना ॥ कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः ॥ काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ९ ॥
अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रावमुकशर्माणौ युग्मसामवेदिनौ पश्चिमद्वारि सूक्तपाठार्थञ्जपार्थञ्च 
युवां वृणे ॥ वृतौ स्वः ॥ प्रार्थना ॥ सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः शक्रदैवतः ॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ११ ॥ अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं युग्माथर्ववेदिनौ उत्तरद्वारि सूक्तपाठार्थं जपार्थश्च युवां वृणे ॥ वृतौ स्वः ॥ प्रार्थना ॥ बृहन्नेत्रो अथर्ववेदो ह्यनुष्टुपूरुद्रदैवतः ॥ वैशंपायन विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ १३ ॥ अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोस्मि ॥ एवं यथाशक्ति ऋत्विजो वृणुयात् ॥ प्रार्थना ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण ॥ वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वम्मे मखे भव ॥ १८ ॥ ( अथवा एकतन्त्रेण सर्वाणि वरणानि कृत्वा ॥ ॐ अद्येत्यादि० अस्मिन्कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रानमुकामुकशर्मणो ब्राह्मणानाचार्यादीन्युष्मानहं वृणे ॥ वृताः स्मः ) ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ इति सर्वे ब्राह्मणाः पठेयुः ॥ अथ यजमानः करसम्पुटं कृत्वा सर्वान् ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ अस्मिन्कर्मणि ये ये तु वृता गुरुमुखादयः ॥ सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम् ॥ १ ॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ॥ सुप्रसन्नैः प्रकर्त्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥ यथाविहितं कर्म कुरुध्वम् ( इति यजमानः ) यथाज्ञानं करवामः इति ब्राह्मणा वदेयुः ॥ ( इत्येकतंत्रपक्षे पृथक्तु ) यथाविहितं कर्म कुरु ॥ ( इति यजमानः ) ब्रा० यथाज्ञानं करवाणि ॥ इति आचार्यादिवरणम् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ मधुपर्कादिपूजनम् ॥

तद्यथा ॥ ततो आचार्यादीनेकतन्त्रेणासनेषु प्राङ्मुखानुपवेश्य ॥ यजमानः स्वयं च उदङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य ॥ ( कृताञ्जलिपुटः यजमानः ) ॐ साधु भवन्तः आसतां अर्चयिष्यामो भवतः ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ अर्चय ॥ ऋत्विक्संख्यया विष्टरान्गृहीत्वा ॥ ( आचार्यः ) ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः ॥ ( यजमानः ) विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ ( ब्राह्मणाः ) ॐ विष्टराः प्रतिगृह्णीमः ॥ ततो यजमानहस्ताद्विष्टरं गृहीत्वा ॥ ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ॥ इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥ इति मंत्रेण ब्राह्मणाः प्रत्येकं विष्टरं उदगग्रं स्वासनतले स्थापयेयुः ॥ ततो यजमानः पाद्यपात्रमादाय ॥ ( आचार्यः ) ॐ पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि ॥ ( यजमानः ) पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ ( ब्रा० ) पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः ॥ ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥ इति मंत्रेण प्रथमं दक्षिणचरणं ततो वामचरणं च क्रमेण प्रक्षालयेत् ॥ ततः पूर्ववद्विष्टरान्गृहीत्वा पूर्ववत् मंत्रं पठित्वा स्वस्वचरणयोरधस्तादुत्तराग्रं दद्युः ॥ ( तत आचार्यः ) अर्घाः अर्घाः अर्घाः ॥ ( यजमानः ) अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ ( ब्राह्मणाः ) अर्घान्प्रति गृह्णीमः ॥ ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नुवानि इति मंत्रेणार्घपात्रं गृहीत्वा ॥ शिरसाभिवन्द्य ॥ ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ॥ अरिष्टास्माकं वीरा मापरासेचिमत्पयः ॥ इति पठनैशान्यां त्यजेत् ॥ ततो यजमानः आचमनीयपात्र-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मादाय ॥ ( आचार्यः ) आचमनीयानि आचमनीयानि आचमनीयानि ॥ ( ततो यजमानः ) आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ ( ब्रा० ) आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः ॥ ततो यजमानहस्तादाचमनीयपात्रं गृहीत्वा ॥ ॐ आमागन्यशसा सꣳसृज वर्चसा तम्मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥ इति मन्त्रेण सकृदाचामेत् द्विः तूष्णीम् ॥ ततो यजमानः कांस्यपात्रे दधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादाय ॥ ( तत आचार्यः ) मधुपर्काः मधुपर्काः मधुपर्काः ॥ ( यजमानः ) ॐ मधुपर्काः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ ( ब्रा० ) मधुपर्कान् प्रतिगृह्णीमः ॥ यजमानहस्तस्थमेव तत्पात्रमुद्घाट्य ॥ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ॥ इति मंत्रेणावीक्ष्य ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ इति मंत्रेण गृहीत्वा सव्ये पाणौ निधाय ॥ दक्षिणानामिकया ॐ नमः स्यावास्यायान्नशने यत्त ऽआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ॥ इति मन्त्रेण प्रादक्षिण्येन मधुपर्कं सकृदालोड्य किञ्चिद् भूमौ क्षिप्त्वा पुनरेव द्विवारं अनेन मंत्रेणालोड्य भूमौ निःक्षिपेत् ॥ ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥ इति मंत्रेणानामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिः प्राश्य प्रतिप्राशने चैतन्मंत्रपाठः ॥ शेषमसञ्चरदेशे धारयेत् ॥ तत आचम्याङ्गानि स्पृशेत् ॥ ॐ वाङ्मऽ-

टि० १ पलमेकं घृतञ्चैव द्विपलं दधि चोच्यते ॥ पलमेकं मधु कुर्यान्मधुपर्कविधिः स्मृता ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आस्येऽस्तु ॥ इति कराग्रेण मुखालम्भनम् ॥ ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इति दक्षिणवामनासारन्ध्रद्वये ॥ ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु इति दक्षिणोत्तरचक्षुषी ॥ ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु इति दक्षिणवामकर्णयोः ॥ ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु इति दक्षवामबाह्वोः ॥ ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु इति युगपदूरू ॥ ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ इति शिरःप्रभृति सर्वाङ्गानि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभ्याचामेत् ॥ ततो गावः गावः गावः इति यजमानेनोक्ते ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाᳬ स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ॥ प्रनुवोचञ्चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ठ मम चामुष्य यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः ॥ उत्सृजत तृणान्यत्तु ॥ ( इत्युच्चैर्ब्रूयात् ) ॥

## ( अथ मधुपर्काङ्गगोदानम् )

कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ( अथवा एकतन्त्रेण ) कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमानि गोनिष्क्रयद्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ( अथ प्रार्थना ) ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः ॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः ॥ देवानां च पितॄणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥ २ ॥ येषां देहे स्थिता वेदाः



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पावयन्ति जगत्त्रयम् ॥ रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ येषां वाक्योदयेनैव शुद्ध्यन्ति मलिनो जनाः ॥ ४ ॥ पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥ सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ ५ ॥ श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा ॥ यद्वाक्यामृत-संसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः ॥ ६ ॥ अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाश्रिताः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्ता मंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥ ७ ॥ यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ॥ ८ ॥ देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ अदुष्टभाषणा नित्यं मा सन्तु परनिन्दकाः ॥ ९ ॥ ममापि नियमा ह्येता भवन्तु भवतामपि ॥ पुनराचार्यं पृथक्त्वेन प्रार्थयेत् ॥ मंत्रमूर्तिर्भवान्नाथ संसारोच्छेदकारक ॥ साङ्गं कर्म यथा मे स्यात्तथा कुरु हि भूसुर ॥ १ ॥ संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः ॥ प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति ॥ २ ॥ इति प्रार्थना ॥ ततो यजमानहस्ते आचार्यो रक्षाबन्धनं तथा शिरसि कुंकुमेन तिलकं कुर्यात् ॥ ततो द्वौ मंत्रौ क्रमेण पठनीयौ ॥ तद्यथा ॥ ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्यꣳ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ इति रक्षाबन्धनम् ॥ ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः० इति तिलकम् ॥ तत उत्थाय सम्भारान्गृहीत्वा सुवासिनीब्रह्मणानग्रतः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृत्वा सतूर्यघोषः सपरिकरः पंचपूर्णकुम्भो गणपतिवरुणमातृकापीठं वसोर्द्धारापीठं च ब्राह्मणानां हस्ते यजमानःस्वहस्ते गणपतिं गृहीत्वा भद्रं कर्णेभिः इति मंत्रेण महामण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य मण्डपस्य पश्चिमद्वारमागत्य पाणिभ्यां चार्घपात्रमादाय शान्तिपाठः ॥ ऋचं वाचं पठेत् ( ततः पृथ्वीं ध्यात्वा ) पृथ्वीं चतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम् ॥ पद्मशंखचक्रशूलकरां विहसितां सुप्रसन्नां गोरूपधरां सवत्सां वसुंधरां ध्यात्वा ॥ आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि ॥ पृथ्वि त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता ॥ इति ध्यानम् ॥ ॐ स्योनापृथिवीति पुष्पादिना सम्पूज्य ॥ अष्टांगार्घ्यं[१] दद्यात् ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयेति अर्घ्यं दत्वा प्रार्थयेत् ॥ उद्धृतासि वराहेण विष्णुना शतबाहुना ॥ दंष्ट्राग्रे लीलया देवि यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम् ॥ १ ॥ ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च ॥ पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च ॥ २ ॥ यमेन पूजिता देवि धर्मवृद्धिजिगीषया ॥ सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता ॥ ३ ॥ इति प्रार्थना ॥ ततो मण्डपपश्चिमद्वारेण प्रथमदक्षिणपादं दत्त्वा प्रविशेत् ॥ गणपत्यादिपीठान् मण्डपाग्नेयकोणे योगिनीसमीपे स्थापयेत् ( वा ईशानकोणे स्थापयेत् ) होमद्रव्यप्रवेशः पूर्वद्वारेण ॥ दानद्रव्यप्रवेशः दक्षिणद्वारेण ॥ प्रतिष्ठासम्भारान् उत्तरद्वारेण प्रवेशयेत् ॥ ततः आचार्यः ऋत्विग्भिः सह स्वस्वस्थाने उपविशेत् ॥ आचार्यः आचम्य प्राणाना-

१ आपः क्षीरकुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा ॥ यवाः सिद्धार्थकाश्चैव अर्घोऽष्टाङ्गः प्रकीर्त्तितः ॥



CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि यजमानेन वृतोऽहं आचार्यकर्म करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन शरीरशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तजपं च करिष्यामि (ततः सहस्रशीर्षादिषोडश मन्त्रान्पठेत् ) तत आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपान्गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ ( तत्र मंत्राः ) ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥ १ ॥ रक्षोहणो वो व्वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनो वनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोवस्तृणामि वैष्णवान्रक्षोहणौ वां व्वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां व्वलगहनौ पर्य्यूहामि वैष्णवी व्वैष्णवमसि व्वैष्णवास्थ ॥ २ ॥ रक्षसाम्भागोसि निरस्तꣳ रक्षꣳऽइदमहꣳ रक्षोभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षो वबाधऽइदमहꣳ रक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां व्वायोव्वेस्तोकानामग्निराज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम् ॥ ३ ॥ रक्षोहा व्विश्वचर्षणीरभियोनिमयोहते ॥ द्रोणेसधस्थमासदत् ॥ ४ ॥ ( यदत्र संस्थितं भूतं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ १ ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ २ ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारंभे ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ॥ स्थानादस्माद् व्रजंत्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ॥ ४ ॥ भूतानि राक्षसा वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन ॥ ते सर्वेप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम् ॥ ५ ॥ इति मंत्रेण तिष्ठन्पूर्वादिदिक्षु विदिक्षु ऊर्ध्वाऽधः विकिरेत् ॥ उपविश्योदकोपस्पर्शः ॥ देवाः आयान्तु यातुधानाः अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्वेति रक्षां कृत्वा पंचगव्येन कुशैर्मण्डपभूमिं यज्ञसम्भारांश्च प्रोक्षयेत् ॥ ( ततः पञ्चगव्यकरणम् ) ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ( गवामङ्गसमुद्भूतं गंगादिसलिलैस्समम् ॥ गोमूत्रं परमं शुद्धं सर्वशुद्धिकरं वृणे ) इति गोमूत्रं गृहीत्वा ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ( अग्रमग्रचरन्तीनामोषधीनां रसं वने ॥ तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ) इति गोमयं गृहीत्वा ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ( अलक्ष्मीहरणं नित्यं सौभाग्यस्य विवर्द्धनम् ॥ क्षीरं माङ्गल्यदं शुभ्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ) इति दुग्धं गृहीत्वा ॥ ॐ दधिक्राव्णो० ( धेनुदुग्धसमुद्भूतं शुद्धं सर्वजनप्रियम् ॥ दधि मङ्गलमायु-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ) इति दधि गृहीत्वा ॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि ॥ प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि (या लक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थं सर्वगात्रेष्ववस्थितम् ॥ तत्सर्वं शमयत्वाज्यं लक्ष्मीः पुष्टिश्च वर्द्धतु) इति आज्यं गृहीत्वा ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् (विरिञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठीनिसर्गज ॥ नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव ) इति कुशोदकं गृहीत्वा ॥ ॐ इति यज्ञकाष्ठेनालोड्य ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ १ ॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥ २ ॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥ ३ ॥ ( ॐ अपवित्रः पवित्रो वा० ) इति मण्डपादि प्रोक्षयेत् ॥ ततः कृताञ्जलिः स्वस्तिनऽइन्द्रो० इति मंत्रं द्विवारं पठेत् ॥ केचित्तु अत्रैव भूमौ प्रादेशं कृत्वा देवा आयान्त्वित्यादि ॥ ततः मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम् ॥ केचित् मण्डपपूजनमत्रापि कुर्वन्ति तदन्ते वास्तुपूजनम् ॥

## अथ वास्तुपूजनप्रयोगः ।

मण्डपनैर्ऋत्यकोणे चतुःषष्टिपदं वास्तुमण्डलं रचितं तत्समीपे प्राङ्मुखोदङ्मुखो वा उपविश्याचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वर-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिवादिमूर्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपाङ्गवास्तुपूजनं करिष्ये ॥ ततो वास्तुवेदिचतुष्कोणेषु लोहशङ्कुचतुष्टयमाग्नेयादिप्रदक्षिणक्रमेण रोपयेत् ॥ ( तत्र रोपणमंत्रः ) विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ॥ मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥ इति मंत्रेण चतुःकोणेषु रोपणम् ॥ ततः शङ्कूनाम्पार्श्वे रोपणक्रमेण सदीपदधिमाषबलिदानम् ॥ ( तत्र मंत्रः ) ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ॥ बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ इत्याग्नेय्याम् ॥ १ ॥ ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः ॥ बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम् ॥ इति नैर्ऋत्याम् ॥ २ ॥ ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः ॥ बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ इति वायव्याम् ॥ ३ ॥ ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ॥ बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः ॥ इत्यैशान्याम् ॥ ४ ॥ ततो वास्तुपीठे कुङ्कुमादिना कनकशलाकया रजतपुटकेन नव रेखाः कार्याः ॥ प्रथमं प्रागन्ता नव रेखाः ॥ ॐ द्यौः शान्तिः वा श्रीश्च ते० ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी० ॥ १ ॥ ॐ शञ्चं मेमयंश्चमेप्प्रियञ्चमेनुकामश्चमे कामश्चमेसौमनसश्चमेभगश्चमेद्द्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्रेयश्चमेव्वसीयश्चमेयशश्चमेयज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ यशोवत्यै नमः यशोवती० ॥ २ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ॥ ॐ कान्तायै नमः कान्तामा०



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ ३ ॥ ॐ आच्छच्छन्दं ÷ प्रच्छच्छन्दं ÷ संयच्छन्दोंव्वियच्छन्दोंवृहच्छन्दोंरथन्तरञ्छन्दोंनिकायश्छन्दों व्वि-
वृधश्छन्दोगिरश्छन्दोभ्भ्रजश्छन्दं ÷ स ऊ स्तुप्छन्दोंनुष्टुप्छन्द ऽएवश्छन्दोव्वरिवश्छन्दोव्वयश्छन्दोंव्वयस्कृच्छन्दो
व्विष्पर्द्धाश्छन्दोंविशालञ्छन्दश्छदिश्छन्दोंदूरोहणञ्छन्दस्तन्द्रञ्छन्दोंऽअङ्काङ्कञ्छन्दं ÷ ॥ ॐसुप्रियायै नमः सुप्रि-
यामा० ॥ ४ ॥ ॐ अन्तश्चरतिरोचनास्यप्राणादपानती ॥ व्व्यख्यन्महिषोदिवम् ॥ ॐविमलायै० विमलामा०
॥ ५ ॥ ॐमनसः काममाकूतिं० ॥ ॐ श्रियै० श्रियं० ॥ ६ ॥ ॐ व्वित्तञ्चमेवेद्यञ्चमेभूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमे-
सुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्चमे मतिश्चमेसुमतिश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ सुभगायै० सुभ-
गामा० ॥ ७ ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ÷ ॥ ॐ सुमत्यै० सुमतिमा० ॥ ८ ॥
ॐ इडामग्नेपुरुदंसꣳ० सनिङ्गोः शश्वत्तमꣳ० हवमानायसाध ॥ स्यान्नः ÷ सूनुस्तनयोव्विजावाग्नेसातेसुमतिर्भू-
त्वस्मे ॥ ॐ इडायै० इडामा० ॥ ९ ॥ तत उदगन्ताः नव रेखाः ॥ ॐ धान्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्त्वोदाना-
यत्वा व्व्यानायत्वा ॥ दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः ÷ सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना
चक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि ॥ ॐ धान्यायै० धान्या० ॥ १ ॥ ॐ प्राणश्चमेपानश्चमेव्व्यानश्चमेसुश्चमे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेवाक्चमेमनश्चमेचक्षुश्चमेश्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमेबलञ्चमेयज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ प्राणायै० प्राणामा० ॥ २ ॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मी० ॥ ॐ विशालायै० विशालामा० ॥ ३ ॥ ॐ परिनोरुद्रस्यहेतिर्व्वृणक्तुपरित्त्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्ष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥ ॐ स्थिरायै० स्थिरामा० ॥ ४ ॥ ॐ आनोभद्राः० ॥ ॐ भद्रायै नमः भद्रामा० ॥ ५ ॥ ॐ व्वाजायस्वाहाप्प्रसवायस्वाहापिजायस्वाहाक्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाहर्प्पतयेस्वाहाह्नेमुग्धायस्वाहामुग्धायव्वैनर्ठ०शिनायस्वाहाव्विनर्ठ०शिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्मित्रायंयन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्वावृष्ट्यैत्वाप्प्रजानान्त्वाधिपत्याय ॥ ॐ जयायै० जयां० ॥ ६ ॥ ॐ इन्द्रस्यव्वृष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳬशर्द्धऽउग्ग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ ॐ निशायै० निशां० ॥७॥ ॐ अग्निर्ज्योति० ॥ ॐ विरजायै विरजां० ॥८॥ ॐ समक्ख्येदेव्या० ॥ ॐ विभवायै० विभवां० ॥ ९ ॥ रेखादेवताभ्यो नमः गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति समंत्रकरेखादेवतापूजनं समाप्तम् ॥

( अथवा नाममंत्रेण रेखादेवताः पूजयेत् )



CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## ( अथ शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतावाहनं पूजनं च )

ईशानपददक्षिणार्द्धे वास्तोः शिरसि रक्तं ॥ ॐ नमः॑शम्भवाय॑ च मयोभवाय॑ च नमः॑शंकराय॑ च मयस्कराय॑ च नमः॑ शिवाय॑ च शिवत॑राय च ॥ ॐ भू० शिखिने नमः शिखिनमा० ॥ १ ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे दक्षिणनेत्रे पर्ज्जन्यं पीतम् ॥ ॐ शन्नोव्वात॑ःपवता॒ᳪशन्नस्तपतु मूर्य्यः ॥ शन्नःकनिक्रदद्देवःपर्ज्जन्योऽ-अभिवर्षतु ॥ ॐ भू० पर्ज्जन्याय० पर्ज्जन्यमा० ॥ २ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणश्रोत्रे जयन्तं पीतं ॥ ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥ ॐ भू० जयन्ताय० जयन्तं० ॥ ३ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणांसे कुलिशायुधं पीतम् ॥ ॐ सयोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबव्वृत्रहाशूरव्विद्वान् ॥ जहिशत्रूँ ? रपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहिव्विश्वतोनः॥ ॐ भू० कुलिशायुधाय० कुलिशायुधमा० ॥ ४ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणबाहौ सूर्यं रक्तम् ॥ ॐ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृत-
८ म्मर्त्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ॐ भू० सूर्याय० सूर्यमा ॥ ५ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० दक्षिणबाहौ सत्यं श्वेतम् ॥ ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति म०
॥४३॥ श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ॐ भू० सत्याय० सत्यमा० ॥ ६ ॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे दक्षिणकूर्परे भृशं कृष्णम् ॥
ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः ॥ विशस्त्वासर्व्वावाञ्छन्तुमात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ ॐ भू०
भृशाय नमः भृशमा० ॥ ७ ॥ तद्दक्षिणाग्नेयपदार्धे दक्षिणप्रबाहौ आकाशं कृष्णम् ॥ ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती ॥ तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ ॐ भू० आकाशाय नमः आकाशमा० ॥ ८ ॥ तत्पश्चिमार्द्धे दक्षिणप्रबाहौ
वायुं धूम्रं ॥ ॐ व्वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥ ॐ भू० वायवे०
वायुमा ॥ ९ ॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे दक्षिणमणिबन्धे पूषाणं रक्तम् ॥ ॐ पूषन्तवव्व्रतेव्वयन्नरिष्येम कदाचन ॥
स्तोस्तारस्तऽइहस्मसि ॥ ॐ भू० पूष्णे० पूषाणं० ॥ १० ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्वे वितथं श्वेतम् ॥ ॐ
तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्विततठं० सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीर्वासस्तनुते-
सिमस्मै ॥ ॐ भू० वितथाय० वितथमा० ॥ ११ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्वे गृहक्षतं पीतम् ॥ ॐ अक्षन्नमीमद- ॥४३॥
न्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ ॐ भू० गृहक्षताय०

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गृहक्षताम० ॥ १२ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणोरौ यमं कृष्णम् ॥ ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाध-र्मायस्वाहाधर्मःपित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यममा० ॥ १३ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणजानौ गन्धर्वं रक्तम् ॥ ॐगन्धर्व्वस्त्वा-व्विश्वावसुः परिदधातुव्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणोव्विश्वस्या-रिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ मित्रावरुणौत्वोत्तरतःपरिधत्तांध्रुवेणधर्मणाविश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्य-परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ ॐ भू०गन्धर्वाय०गन्धर्वमा० ॥१४॥तत्पश्चिमसार्द्धपदे दक्षिणजंघायां भृंगराजं कृष्णम् ॥ॐ सौरीवलाकाशार्गःसृंजयःशयाण्डकस्तेमैत्राः सरस्वत्यैशारिपुरुषवाक्श्वाविद्भौमीशार्दूलोवृकः पृदाकुस्तेमन्यवेसरस्वते शुकःपुरुषवाक् ॥ॐभू०भृङ्गराजाय०भृङ्गराजं०॥१५॥तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपदार्धे दक्षिणस्फिचि मृगं पीतम् ॥ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाःपरावतऽआजगन्थापरस्याः ॥ सृकठं० सठं० शायंपविमिन्द्रतिग्मंव्विशत्रून्ताड्ढिमृधोनुदस्व ॥ ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥ १६ ॥ तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपश्चिमार्धे पितॄन् रक्तम् ॥ ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधी-महि ॥ उशन्नुशतऽआवहपितॄन्हविषेऽअत्तवे ॥ ॐ भू० पितृभ्यो० पितॄना० ॥ १७ ॥ तदुत्तरे सार्द्धपदे वामस्फिचि दौवारिकं रक्तम् ॥ ॐ द्वेविरूपेचरतः स्वर्थैऽअन्यान्यांव्वत्समुपधापयेते ॥ हरिरन्यस्यांभवतिस्वधावाञ्छुक्रोऽअन्य-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्यांदद्दशेसुवर्च्चाः ॥ ॐ भू० दौवारिकाय० दौवारिकमा० ॥ १८ ॥ तदुत्तरपदद्वये वामजंघायां सुग्रीवं शुक्लम् ॥
ॐ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठादिर्वठं० रुद्राऽउपश्रिताः ॥ तेषांॐसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ॐ भू० सुग्रीवाय०
सुग्रीवमा० ॥ १९ ॥ तदुत्तरपदद्वये वामजानुप्रदेशे पुष्पदन्तं रक्तम् ॥ ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवोनमो-
नमोव्व्रातेभ्योव्व्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्विरूपेभ्योव्विश्वरूपेभ्यश्चवोनमः ॥
ॐ भू० पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तमावाहयामि ॥ २० ॥ तदुत्तरपदद्वये वामोरौ वरुणं श्वेतम् ॥ ॐ इमम्मे-
व्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ २१ ॥ तदुत्तरपदद्वये वामपार्श्वे
असुरं पीतम् ॥ ॐ यमाश्विनानमुचेरासुरादधिसरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ॥ इमन्तठं० शुक्रंमधुमन्तमिन्दुठं०सोमठं०
राजानमिह भक्षयामि ॥ ॐ भू० असुराय० असुरमा० ॥ २२ ॥ तदुत्तरसार्द्धपदे वामपार्श्वे शेषं कृष्णम् ॥
ॐ याऽइषवोयातुधानानांयेवाव्वनस्पतीँरनु ॥ येवावटेषुशेरतेतेभ्यःसर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० शेषाय०
शेषमा० ॥ २३ ॥ तदुत्तरवायव्यपदार्धे पापं पीतम् ॥ ॐ एतत्तेरुद्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि ॥ अवततधन्वा-
पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिंठं० सन्नः शिवोतीहि ॥ ॐ भू० पापाय० पापं० ॥ २४ ॥ तत्प्राक्पदार्द्धे वामबाहौ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगं रक्तम् ॥ ॐ द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रनीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चना-
ममत् ॥ ॐ भू० रोगाय० रोगमा० ॥ २५ ॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे वामबाहौ अहिर्बुध्न्यं रक्तम्० ॥ ॐ अहिरिव भोगैः
पर्य्येतिबाहुञ्ज्यायाहेतिम्परिवाधमानः ॥ हस्तघ्नोव्विश्वाव्वयुनानिव्विद्वान्पुमान्पुमांᳬसम्परिपातुव्विश्वतः ॥
ॐ भू० अहिर्बुध्न्याय० अहिर्बुध्न्यमा० ॥ २६ ॥ तत्प्राक्पदद्वये वामकूर्परे मुख्यं रक्तम् ॥ ॐ अवतत्य धनुष्ट्वᳬ
सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥ ॐ भू० मुख्याय० मुख्यमा० ॥ २७ ॥
तत्प्राक्पदद्वये वामबाहौ भल्लाटं कृष्णं० ॥ ॐ इमारुद्रायतवसे कपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ॥ यथाशम-
सद्द्विपदेचतुष्पदेव्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ॐ भू० भल्लाटाय० भल्लाटं० ॥ २८ ॥ तत्प्राक्पदद्वये वाम-
बाहौ सोमं श्वेतम् ॥ ॐ व्वयᳬ सोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भू० सोमाय०
सोममा० ॥ २९ ॥ तत्प्राक्पदद्वये वामांसे सर्प्पं कृष्णं ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे
ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ सर्पाय० सर्पं० ॥ ३० ॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे वामश्रोत्रे अदितिं पीतम् ॥
ॐ अदितिर्द्यौ० ॥ ॐ भू० अदितये० अदितिमा० ॥ ३१ ॥ तत्प्राक् ईशानपदार्धे वामनेत्रे दितिं पीतम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्याऽएत ॥ मयिवः कामधरणम्भूयात् ॥ ॐ भू० दितये० दितिं ॥ ३२ ॥ ततो म०
॥४८॥ मध्यपदेषु ईशानपदोत्तरार्द्धे अपः श्वेतः ॥ ॐ आपो हिष्ठा० ॥ ॐ भू० अद्भ्यो नमः अपः आवा० ॥ ३३ ॥
ततः ईशानपददक्षिणार्द्धे आपवत्सं श्वेतं ॥ ॐ आतेव्वत्सोमनोजमत्परमाच्चित्सधस्थात् ॥ अग्नेत्वां-
कामयागिरा ॥ ॐ भू० आपवत्साय० आपवत्समा० ॥ ३४ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये अर्य्यमाणं कृष्णम् ॥
ॐ यद्द्यसूरऽउदितेनागामित्रोऽअर्य्यमा ॥ सुवातिसविताभगः ॥ ॐ भू० अर्य्यम्णे नमः अर्य्यमाणं० ॥ ३५ ॥
तद्दक्षिणाग्नेयपदार्द्धे सावित्रं रक्तं ॥ ॐ हस्तऽआधायसविताविभ्रदभ्रिं० हिरण्मयीम् ॥ आग्नेर्ज्योतिर्न्निचाय्य-
पृथिव्याऽअद्ध्याभरदानुष्टुभेनच्छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥ ॐ भू० सावित्राय० सावित्रं० ॥ ३६ ॥ आग्नेयपदपश्चिमार्द्धे
सवितारं रक्तम् ॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ॐ भू० सवित्रे नमः
सवितारम् ॥ ३७ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये विवस्वन्तं श्वेतम् ॥ ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व ॥ श्रदस्मै
नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्दादम्पतीव्वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधाव्विश्वाहारपऽएधते ॥४८॥
गृहे ॥ ॐ भू० विवस्वते० विवस्वन्तं० ॥ ३८ ॥ तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपदार्द्धे विबुधाधिपं रक्तम् ॥ ॐ सर्वोषधिसूरिम्मे-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घवाव्वसुपतेव्वसुंदावन् ॥ युयोध्ध्यस्मद्वेषाᳪंसि व्विश्वकर्म्मणे स्वाहा ॥ ॐ भू० विबुधाधिपाय० विबुधाधिपमा० ॥३९॥ ततो नैर्ऋत्योत्तरार्द्धे जयन्तं रक्तं ॥ ॐ अषाढंय्युत्सुपृतनासुपप्प्रिᳪं स्वर्षामप्सांव्वृजनस्यगोपाम् ॥ भरेषुजाᳪं सुक्षितिर्ठ० सुश्रवसञ्जयन्तन्त्वामनुमद्देमसोम ॥ ॐ भू० जयन्ताय० जयन्तमा० ॥ ४० ॥ तदुत्तरपदद्वये जठरवामभागे मित्रं श्वेतम् ॥ ॐ मित्रोनऽएहिसुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविशदक्षिणमुशन्नुशन्तᳪंस्योनꣳस्योनम् ॥ स्वानभ्राजाङ्गारेवम्भारेहस्तसुहस्तकृशानवेतेवः सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वम्मावोदभन् ॥ ॐ भू० मित्राय० मित्रमा० ॥ ४१ ॥ तदुत्तरे वायव्यपदार्द्धे वामहस्ते राजयक्ष्माणं रक्तम् ॥ ॐ नाशयित्रीवलासस्यार्शसऽउपचितामसि ॥ अथोशतस्ययक्ष्माणाम्पाकारोरसिनाशनी ॥ ॐ भू० राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्माणं० ॥ ४२ ॥ तद्वायव्यपूर्वार्द्धे वामहस्ते रुद्रं रक्तम् ॥ ॐ अवरुद्रमदीमह्यवदेवंत्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥ ॐ भू० रुद्राय० रुद्रं० ॥ ४३ ॥ तत्पूर्वपदद्वये वामहस्ततले पृथ्वीधरं रक्तम् ॥ ॐ स्योनापृथि० ॥ ॐ भू० पृथ्वीधराय० पृथ्वीधरम् ॥ ४४ ॥ ततो मध्यपदचतुष्के हृदये ब्रह्माणं पीतं रक्तं वा ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योनिमसंतश्चाव्विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० ॥ ४५ ॥ ततो मण्डलाद्बहिः ईशानादिकोणेषु चरक्यादि स्थापयेत् ॥ ईशाने चरकीं धूम्रां ॥ ॐ यन्तेदेवीनिर्ऋतिराबबन्धपाशङ्ग्रीवास्वविचृत्यम् ॥ तन्तेव्विष्याम्म्यायुषोनमद्ध्यादथैतम्पितुमद्धिप्प्रसूतः ॥ नमोभूत्यैयेदंचकार ॥ ॐ भू० चरक्यै० चरकीमा० ॥ १ ॥ आग्नेय्यां विदारीं रक्तां ॥ ॐ अक्षराजायकितवंकृतायादिनवदर्शन्त्रेतायैकल्पिनन्द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दायसभास्थाणुम्मृत्यवेगोव्व्यच्छमंतकायगोघातंक्षुधेयोगांव्विकृन्तन्तंभिक्षमाणऽ उपतिष्ठंतिदुष्कृतायचरकाचार्यंपाप्मनेशैलगम् ॥ ॐ भू० विदार्य्यै० विदारीमा० ॥ २ ॥ ततो नैर्ऋत्यां पूतनां पीतां ॥ ॐ इन्द्रस्यक्रोडोदित्यैपाजस्यन्दिशांजत्रवोदित्यैभसञ्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीततानभऽउदर्य्येणचक्रवाकौमतंस्नाभ्यान्दिवंव्वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्नावल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीह्रदान्कुक्षिभ्यांᳬसमुद्रमुदरेणवैश्वानरंभस्मना ॥ ॐ भू० पूतनायै० पूतनामा० ॥ ३ ॥ ततो वायव्यां पापराक्षसीं कृष्णां ॥ ॐ यस्यास्तेघोरऽआसंजुहोम्येषाम्बन्धानामवसर्जनाय ॥ यन्त्वाजनोभूमिरितिप्रमन्दतेनिर्ऋतिन्त्वाहंपरिवेदव्विश्वतः ॥ ॐ पापराक्षस्यै० पापराक्षसीमा० ॥ ४ ॥ ततः पूर्वादिदिक्षु स्कन्दादीन्स्थापयेत् ॥ पूर्वे स्कन्दं



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्तम् ॥ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्तन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यम्महि-
जातन्तेऽअर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्दाय नमः स्कन्दं० ॥ १ ॥ ततो दक्षिणस्यां अर्यमाणं कृष्णम् ॥ ॐ यदद्यसूरऽउदिते-
नागामित्रोऽअर्यमा ॥ सुवातिसविताभगः ॥ ॐ भू० अर्यम्णे० अर्यमाणम् ॥ २ ॥ ततः पश्चिमे जृम्भकं रक्तम् ॥
ॐ हिङ्काराय स्वाहाहिङ्कृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहावक्रन्दायस्वाहाप्प्रोथतेस्वाहाप्रप्प्रोथायस्वाहागन्धायस्वाहाघ्रातायस्वाहानिविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहासन्दितायस्वाहाव्वल्गतेस्वाहासीनायस्वाहाशयानायस्वाहास्वपतेस्वाहाजाग्रतेस्वाहाकूजतेस्वाहाप्प्रबुद्धायस्वाहाव्विजृम्भमाणायस्वाहाव्विचृत्तायस्वाहासꣳहानायस्वाहोपस्थितायस्वाहायनायस्वाहाप्रायणायस्वाहा ॥ ॐ भू० जृम्भकाय० जृम्भकमा० ॥ ३ ॥ तत उत्तरे पिलिपिच्छं पीतम् ॥ ॐ कास्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः किꣳस्विदासीद्बृहद्वयः ॥ कास्विदासीत्पिलिप्पिला कास्विदासीत्पिशङ्गिला ॥ ॐ भू० पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छं० ॥ ४ ॥ ततः पूर्वादिदिक्षु इन्द्रादीन्दश दिक्पालानावाहयेत् ॥ पूर्वे इन्द्रं पीतम् ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥
ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रं० ॥ १ ॥ आग्नेय्यां अग्निं रक्तम् ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्याव्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० सीष्ठाः ॥ यजिंष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषां ᳪ सिप्प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ भू० अग्नये० अग्निं० ॥ २ ॥ म०
॥४७॥ याम्ये यमं कृष्णम् ॥ ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय०
यममावा० ॥ ३ ॥ नैऋत्ये निर्ऋतिं नीलम् ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥
अन्न्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिं० ॥ ४ ॥ पश्चिमे वरुणं श्वेतम् ॥
ॐ तत्वायामि० ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ ५ ॥ वायव्ये वायुं धूम्रं ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳪ०
संहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ व्वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादायस्वयूयम्पातस्वस्तिभिःसदानः ॥ ॐ भू० वायवे०
वायुम् ॥ ६ ॥ उत्तरे सोमं श्वेतं पीतं वा ॥ ॐ वयᳪ०सोमव्रते० ॥ ॐ भू० सोमाय० सोमं० ॥ ७ ॥ ऐशान्यां
ईशानं श्वेतम् ॥ ॐ तमीशानं० ॥ ॐ भू० ईशानाय० ईशानं० ॥ ८ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ब्रह्माणं श्वेतं
रक्तं वा ॥ ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः ॥ यःशᳪ०सतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽ
अस्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥ ९ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये अनन्तं कृष्णं० ॥ ॐ ॥४७॥
स्योनापृथि० ॥ ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तं० ॥ १० ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैर्वा सम्पूज्य ॥ तदुत्तरे ताम्रकलशं स्थापनविधिना पूर्ववत्संस्थाप्य सम्पूज्य ॥ तस्योपरि सुवर्णमयीं वास्तुप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय ॥ अथाग्न्युत्तारणविधिः ॥ देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं अस्यां वास्तुमूर्त्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मूर्तिं पात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि जलधारां पातयेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ समुद्रस्यत्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवोभव ॥ १ ॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्ने-परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवोभव ॥ २ ॥ ॐ उपज्ज्मन्नुपवेतसेवतरनदीष्ष्वा ॥ अग्नेपित्तमपा-मसिमण्डूकिताभिरागहिसेमन्नोयज्ञम्पावकवर्ण्णर्ठ० शिवङ्कृधि ॥ ३ ॥ अपामिदन्न्ययनर्ठ० समुद्रस्यनिवेशनम् ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवोभव ॥ ४ ॥ अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेवजिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षिच ॥ ५ ॥ सनः पावकदीदिवोग्नेदेवाँ २ ॥ ऽइहावह ॥ उपयज्ञर्ठ० हविश्चनः ॥ ६ ॥ पावकया-यश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउषसोनभानुना ॥ तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥ ७ ॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वार्चिषे ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवोभव ॥ ८ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नृषदे॒ व्वेड॑प्सुषदे॒ व्वेड्बर्हिषदे॒ व्वेड्वनसदे॒ व्वेड्स्वर्विदे॒ व्वेट् ॥ ९ ॥ येदे॒वादे॒वानाँय्यज्ञियायज्ञियानाᳬंसंवत्सरीणमुपभाग-
मासते ॥ अहुतादो हविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ॥ १० ॥ येदे॒वादे॒वेष्ष्वधिदे॒वत्त्वमायन्येब्रह्मणः
पुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऽऋतेपवतेधामकिञ्चननतेदि॒वोनपृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥ ११ ॥ प्राणदाऽअपानदाव्व्या-
नदाव्वर्चोदाव्वरिवोदाः ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यंᳬं शिवोभव ॥१२॥ एवमग्न्युत्तारणं
कृत्वा ॥ ततो मूर्तिं हस्तेन स्पृश्य प्राणप्रातिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोहं अस्य
वास्तुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोहं अस्य वास्तुमूर्तेः जीव इह
स्थितः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोहं अस्य वास्तुमूर्त्तेः वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्रा-
णपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ॐ मनोजूति० ॥ ( अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु० )
इति वास्तुपुरुष प्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ पञ्चामृतेन संस्नाप्य कलशोपरि स्थापयेत् ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी-
ह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ( आगच्छ भगवन्वा-
स्तो सर्वदेवैरधिष्ठितः ॥ भगवन्कुरु कल्याणं यज्ञेस्मिन्सन्निधो भव ) ॐ भू० वास्तुपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ वास्तो-
ष्पतये नमः इति पञ्चोपचारैःषोडशोपचारैर्वा सम्पूज्य अर्घ्यं दद्यात् ॥ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तद्विनार्चनं सिद्ध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः ॥ अयोने भगवन्भर्ग ललाटस्वेदसम्भव ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तोः स्वामिन्नमोऽस्तु ते ॥ इत्यर्घ्यं दत्वा पायसबलिदानं कुर्यात् ॥ ॐ शिखिने एष पायसबलिर्न मम ॥ एवं प्रयोगेण सर्वेभ्यो बलीन्दद्यात् ॥ ॐ पर्जन्याय० ॥ २ ॥ ॐ जयन्ताय० ॥ ३ ॥ ॐ कुलिशायुधाय० ॥ ४ ॥ ॐ सूर्याय० ॥ ५ ॥ ॐ सत्याय० ॥ ६ ॥ ॐ भृशाय० ॥ ७ ॥ ॐ आकाशाय० ॥ ८ ॥ ॐ वायवे० ॥ ९ ॥ ॐ पूष्णे० ॥ १० ॥ ॐ वितथाय० ॥ ११ ॥ ॐ गृहक्षताय० ॥ १२ ॥ ॐ यमाय० ॥ १३ ॥ ॐ गन्धर्वाय० ॥ १४ ॥ ॐ भृङ्गराजाय० ॥ १५ ॥ ॐ मृगाय० ॥ १६ ॥ ॐ पितृभ्यो० ॥ १७ ॥ ॐ दौवारिकाय० ॥ १८ ॥ ॐ सुग्रीवाय० ॥ १९ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय० ॥ २० ॥ ॐ वरुणाय० ॥ २१ ॥ ॐ असुराय० ॥ २२ ॥ ॐ शेषाय० ॥ २३ ॥ ॐ पापाय० ॥ २४ ॥ ॐ रोगाय० ॥ २५ ॥ ॐ अहये० ॥ २६ ॥ ॐ मुख्याय० ॥ २७ ॥ ॐ भल्लाटाय० ॥ २८ ॥ ॐ सोमाय० ॥ २९ ॥ ॐ नागाय० ॥ ३० ॥ ॐ आदितये० ॥ ३१ ॥ ॐ दितये० ॥ ३२ ॥ ॐ अद्भ्यो० ॥ ३३ ॥ ॐ आपवत्साय० ॥ ३४ ॥ ॐ अर्यम्णे ॥ ३५ ॥ ॐ सावित्राय० ॥ ३६ ॥ ॐ सवित्रे० ॥ ३७ ॥ ॐ विवस्वते० ॥ ३८ ॥ ॐ विबुधाधिपाय० ॥ ३९ ॥ ॐ जयन्ताय० ॥ ४० ॥ ॐ मित्राय० ॥ ४१ ॥ ॐ राजयक्ष्मणे० ॥ ४२ ॥ ॐ रुद्राय० ॥ ४३ ॥ ॐ पृथ्वीधराय० ॥ ४४ ॥ ॐ ब्रह्मणे० ॥ ४५ ॥ ततः चरक्यादिभ्यो दिक्पालेभ्यश्च दधिमाषबलीन्दद्यात् ॥ ॐ चरक्यै एष दधिमाषबलिर्न मम ॥ एवं क्रमेण सर्वेभ्यः ॥ ॐ विदार्यै० ॥ २ ॥ ॐ पूतनायै० ॥ ३ ॥ ॐ पापराक्षस्यै० ॥ ४ ॥ ॐ स्कन्दाय० ॥ १ ॥ ॐ अर्यम्णे ॥ २ ॥ ॐ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जृम्भकाय० ॥ ३ ॥ ॐ पिलिपिच्छाय० ॥ ४ ॥ ॐ इन्द्राय० ॥ १ ॥ ॐ अग्नये० ॥ २ ॥ ॐ यमाय० ॥ ३ ॥ ॐ निर्ऋतये० ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय० ॥ ५ ॥ ॐ वायवे० ॥ ६ ॥ ॐ कुबेराय० ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय० ॥ ८ ॥ ॐ ब्रह्मणे० ॥ ९ ॥ ॐ अनन्ताय० ॥ १० ॥ ततः प्रधानवास्तुपुरुषाय बलिं दद्यात् ॥ नानापक्वान्नसंयुक्तं नानागन्धसमन्वितम् ॥ बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम ॥ प्रार्थना ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ १ ॥ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव ॥ शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥ २ ॥ इत्युक्त्वा वास्तुपुरुषाय नारिकेलं ससुवर्णं समर्प्य प्रणमेत् ॥ ततः पावमानेन रक्षोघ्नेन च सूक्तेन त्रिसूत्र्या मण्डपं वेष्टयेत् ॥

## अथ रक्षोघ्नसूक्तम् ॥

कृणुष्वपाजः प्प्रसितिन्नपृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ऽइभेन ॥ तृष्वीमनुप्रसितिन्द्रूणानोस्तासि विद्ध्यरक्षसस्तापिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृशधृषता शोशुचानः ॥ तपूंष्यग्ग्ने जुह्वा पतङ्गानसंन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पशो व्विसृजतूर्णितमो भवा पायुर्व्विशोऽअस्याऽअदब्धः ॥ यो नो दूरेऽअघ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शꣳ सो योऽअन्त्यग्ग्नेमाकिंष्टेव्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्न्यमित्राँ२ऽओषतातिग्ग्महेते ॥
योनोऽअरातिꣳ समिधानचक्रेनीचातन्धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वोभवप्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्वदैव्या-
न्न्यग्ग्ने ॥ अवस्थिरातनुहियातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहिशत्रून् ॥ अग्ग्नेष्ट्वातेजसासादयामि ॥ ५ ॥ ॐ
पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाः ॥ पवित्रेणशतायुषा ॥ पुनन्तुमापितामहाः
पुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषाविश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १ ॥ अग्ग्नऽआयूꣳषिपवसऽआसुवोर्ज्जमिषञ्चनः ॥
आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ॥ २ ॥ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः ॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥ ३ ॥
पवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अग्ग्नेक्क्रत्वाक्रतूँरनु ॥ ४ ॥ यत्तेपवित्रमर्च्चिष्यग्ग्ने व्विततमन्तरा ॥ ब्रह्मतेन
पुनातुमा ॥ ५ ॥ पवमानः सोऽअद्यनः पवित्रेणव्विचर्षणिः ॥ यः पोतासपुनातुमा ॥ ६ ॥ उभाभ्यान्देवसवितः
पवित्रेणसवेन च ॥ माम्पुनीहिव्विश्वतः ॥ ७ ॥ व्वैश्वदेवीपुनतीदेव्व्यागाद्यस्यामिमाबह्व्यस्तन्न्वोव्वीतपृष्ठाः ॥
तयामदन्तः सधमादेषुव्वयꣳ स्यामपतयोरयीणाम् ॥ ८ ॥ इति पावमानसूक्तम् वास्तुपूजनं द्वितीयदिनकृत्यं
च समाप्तम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ मण्डपपूजनम् ।



आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं करिष्यमाणसनवग्रहमखसप्रासाद-सनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपाधिष्ठितस्तम्भादिदेवतानामावाहनं पूजनञ्च करिष्ये ॥ ततो मध्यवेदीशानस्तम्भे रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् ॥ एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहादौ हंसादिरूढत्रिदशैकवेद्यः॥ श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ हंसपृष्ठसमारूढ देवतागणपूजित ॥ ईशकोणास्थितं स्तम्भमलङ्कुरु जगत्पते ॥ आवाहयाम्यहं देवं देवेशं च प्रजापतिम् ॥ अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषाञ्च पितामहम् ॥ विश्वरूपं निराधारं निरालम्बं निरामयम् ॥ आगच्छ देवदेवेश स्तम्भेऽस्मिन्सान्निधो भव ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि ॥ ततो गंधादिभिः सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥ विद्याधाराय वेदाय ज्ञानगम्याय सूरये ॥ कमण्डल्वक्षमालास्रुक्स्रुवहस्ताय ते नमः ॥ प्रार्थना ॥ कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्मुख ॥ जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ॐ सावित्र्यै० ॥ ॐ वास्तुदेवतायै० ॥ ॐ ब्राह्म्यै० ॥ ॐ गंगायै० ॥ इमाः सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् ॥

॥५०॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महावेद्यां तमीशाने ऋजुं वसुकरात्मकम् ॥ सर्वविघ्नविनाशार्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुणऽऊतये-तिष्ठादेवोनसविता ॥ ऊर्द्ध्वोव्वाजस्यसनितायदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥ ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ अथ शाखाबन्धनानि पूजयेत् ॥ नमोऽस्तु शाखाबन्धाय सुदृढाय महात्मने ॥ महामण्डपरक्षार्थं नतयः सन्तु मे सदा ॥ ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥ अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदीशकोणस्थितस्त-म्भाधिष्ठातृदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ १ ॥ ततो मध्यवेद्याग्नेयकोणस्तम्भे कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत् ॥ आवाहयेत्तं गरुडोपरि स्थितं रमार्धदेहं सुरराजवन्दितम् ॥ केशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम् ॥ पद्मनाभं हृषीकेशं कंसचाणूरमर्दनम् ॥ आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सान्निधो भव ॥ ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पांसुरे स्वाहा ॥ विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ विष्णवे० विष्णुमावाहयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य नमस्कारः ॥ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ नमस्ते सर्वलोकात्मन्विष्णवे ते नमो नमः ॥ प्रार्थना देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो ॥ पाहि दुःखांबुधेरस्मान्भक्तानुग्रहकारक ॥ ॐ लक्ष्म्यै० ॥ आदित्यायै० ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैष्णव्यै० ॥ वसुदायै० ॥ संपूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ महावेद्याश्चाग्निकोणे सुदृढं वस्त्रशोभितम् ॥ सर्वकार्य-
प्रसिद्ध्यर्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ नागमात्रे० ॥ ॐ आयङ्गौः ॥
नमोऽस्तु बालिकायै त्वं शाखोद्बंधनधारिणी ॥ एनं महामण्डपन्तु रक्ष देवि निरन्तरम् ॥ ॐ यतोयतः ॥ २ ॥
महावेद्या नैर्ऋत्यकोणे स्तम्भं श्वेतं शंकरं पूजयेत् ॥ एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौले वृषभाधिरूढ ॥
देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ गंगाधर महादेव पार्वतीप्राणवल्लभ ॥ आगच्छ भगवन्नीश
स्तम्भेऽस्मिन्सान्निधो भव ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ शम्भो
इहागच्छेह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुं० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ वृषवाहनाय देवाय पार्वतीपतये नमः ॥ वरदायार्द्ध-
कायाय नमश्चन्द्रार्द्धमौलिने ॥ प्रार्थना ॥ पञ्चवक्त्र वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव ॥ चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो
भव ॥ ॐ गौर्य्यै नमः ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै० ॥ ॐ शोभनायै० ॥ ॐ भद्रायै० ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽ-
ऊषुण० ॥ वेद्यास्तु नैर्ऋत्यकोणे शोभनं वसनान्वितम् ॥ प्रतिष्ठाकार्यशुभदं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥ स्तम्भशिरसि ॥
ॐ नागमात्रे० ॥ ॐ आयङ्गौः ॥ उद्बन्धन नमस्तेऽस्तु मण्डपं रक्ष मेऽधुना ॥ अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो
भव ॥ ॐ यतोयतः ॥ ३ ॥ महावेद्या वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् ॥ एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्रनेत्र
त्रिदशैकराज ॥ शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ शचीपते महाबाहो सर्वाभरणभूषित ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगच्छ भगवन्निंद्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० ॥
सम्पूज्य नमस्कारः ॥ पुरन्दर नमस्तेऽस्तु वज्रहस्त नमोऽस्तु ते ॥ शचीपते नमस्तुभ्यं नमस्ते मेघवाहन ॥ प्रार्थना ॥
देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो ॥ वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव ॥ ॐ इन्द्राण्यै० ॥ ॐ आनन्दायै० ॥
ॐ विभूत्यै० ॥ ॐ अदित्यै ॥ सम्पूज्य स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ वेद्या वायव्यकोणे तु चतुरस्त्रं
विभूषितम् ॥ देवानां रक्षणार्थाय स्तम्भ आलभ्यते मया ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥ ॐ आयङ्गौः ॥
तिर्यक्काष्ठयुते देवि रज्जुपाशयुते सदा ॥ महामण्डपरक्षार्थमर्चयिष्यामि त्वां मुदा ॥ ॐ यतोयतः ॥ ४ ॥ ततो
बाह्ये ईशानादारभ्य द्वादशस्तम्भान्पूजयेत् ॥ ईशाने रक्तस्तम्भे सूर्यम् ॥ आवाहयेत्तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं
द्युमणिं ग्रहेशम् ॥ सिन्दूरवर्णं प्रतिभावभासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धिहेतोः ॥ सप्तहस्त महाबाहो सप्तश्वेताश्ववाहन ॥
आगच्छ भगवन्भानो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंञ्च ॥
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ सूर्येहागच्छेह तिष्ठ सूर्याय० सूर्यमा० ॥ सम्पूज्य
नमस्कारः ॥ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ॥ त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिञ्चि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नारायणशङ्करात्मने ॥ प्रार्थना ॥ पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल ॥ क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते ॥ ॐ सौर्य्यै० ॥ ॐ भूत्यै० ॥ ॐ सावित्र्यै० ॥ ॐ मङ्गलायै० सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ मण्डपस्येशानभागे सुदृढं पञ्चहस्तकम् ॥ महामण्डपरक्षार्थं स्तम्भमालभते स्वयम् ॥ ५ ॥ ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशम् ॥ आवाहये तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम् ॥ विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या ॥ लम्बोदर महाकाय गजवक्त्र चतुर्भुज ॥ आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपते इहागच्छेह तिष्ठ गणपतये नमः ॥ गणपतिमा० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥ प्रार्थना ॥ लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रिय ॥ गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराजं प्रसीद मे ॥ ॐ सरस्वत्यै० ॥ ॐ विघ्नहराय० ॥ ॐ जयायै० ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भं आलभेत ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऊषुण० ॥ मण्डपेशानपूर्वयोरन्तराले सुलक्षणम् ॥ महामण्डपशोभार्थं स्तम्भञ्चैव स्पृशाम्यहम् ॥ ६ ॥ पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम् ॥ एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र ॥ विशालवक्षस्थल रौद्ररूप गृहाण पूजां

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भगवन्नमस्ते ॥ चित्रगुप्तादिसंयुक्त दण्डमुद्गरधारक ॥ आगच्छ भगवन्धर्म स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥ यमेहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः ॥ यमम्० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्ड-हस्त नमोऽस्तु ते ॥ प्रार्थना ॥ धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम ॥ रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय ॥ ॐ सन्ध्यायै० ॥ ॐ आज्ञन्यै० ॥ ॐ क्रूरायै० ॥ ॐ नियन्त्र्यै० ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ मण्डप-स्याग्नेयकोणे पूर्वयोरन्तरे स्थितम् ॥ मण्डपस्याविनाशार्थं स्तम्भञ्चैवालभाम्यहम् ॥ आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम् ॥ एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म ॥ नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ अशीविषसमोपेत नागकन्याविराजित ॥ आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० नागराजेहा-गच्छेह तिष्ठ नागराजाय० ॥ नागराजं० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमः खेटकहस्तेभ्यो त्रिभोगेभ्यो नमो नमः ॥ नमो भीषणदेवेभ्यः खड्गधृग्भ्यो नमो नमः ॥ प्रार्थना ॥ खड्गखेटधराः सर्प्पाः फणामण्डलमण्डिताः ॥ एकभोगाः साक्षश्रोत्राः वरदाः सन्तु मे सदा ॥ ॐ मध्यमसन्ध्यायै० ॥ ॐ धरायै० ॥ ॐ पद्मायै० ॥ ॐ महापद्मायै० ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ मण्डपस्याग्नेयकोणे दिव्यं वस्त्रादिभूषितम् ॥ प्रतिष्ठाकार्य-
सिद्ध्यर्थं स्तम्भमालभते स्वयम् ॥ ८ ॥ अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे स्कन्दं० ॥ आवाहयामि देवेशं षण्मुखं
कृत्तिकासुतम् ॥ रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनासमन्वितम् ॥ मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्मचारिणम् ॥ आगच्छ
भगवन्स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य
पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽ अर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्देहागच्छेह तिष्ठ स्कन्दाय० ॥ स्कन्दं० ॥
सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥ नमः स्कन्दाय शैवाय घण्टाकुक्कुटधारिणे ॥ पताकाशक्तिहस्ताय षण्मुखाय च ते
नमः ॥ प्रार्थना ॥ मयूरवाहन स्कन्द गौरीसुत षडानन ॥ कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ॥ ॐ पश्चिम-
संध्यायै० ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ अग्निदक्षिणयोर्मध्ये सुपुष्पादिविभूषितम् ॥
सुकाष्ठनिर्मितं स्तम्भमालभामि शुभाप्तये ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम् ॥ आवाहयामि देवेशं
भूतानां देहधारिणम् ॥ सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥ ध्वजहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तरचारिणम् ॥
आगच्छ भगवन्वायो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियु-
त्वान्सोमपीतये ॥ ॐ भू० वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे० वायुं० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमो धरणिपृष्ठस्थ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समीरण नमोस्तु ते ॥ धूम्रवर्ण नमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन्नमोऽस्तु ते ॥ प्रार्थना ॥ धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण ॥ दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद ॥ ॐ वायव्यै० ॐ गायत्र्यै० ॥ ॐ मध्यमसन्ध्यायै० ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भ-मालभेत ॥ ॐ ऊर्ध्वऽऊषुण० ॥ निर्ऋतिदक्षिणयोर्मध्ये स्वक्षं यज्ञीयकाष्ठजम् ॥ शान्तिपुष्टिकरं रम्यं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥ १० ॥ नैर्ऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम् ॥ आवाहयामि देवेशं शशाङ्कं रजनी-पतिम् ॥ क्षीरोदधिसमुद्भूतं हरमौलिविभूषणम् ॥ सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यप्रीतिकारकम् ॥ औषध्या नि-करं सर्वसोमं कन्दर्पवर्धनम् ॥ आगच्छ भगवन्सोम स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ अप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवावाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भू० सोमेहागच्छेह तिष्ठ सोमाय० सोमं० ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥ अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन ॥ श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तु ते ॥ प्रार्थना ॥ अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर ॥ अश्वारूढ गदाहस्त वरं देहि वरप्रद ॥ ॐ सावित्र्यै० ॥ ॐ अमृतकलायै० ॥ ॐ पश्चिमसंध्यायै० ॥ संपूज्य ॥ स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्ध्वऽऊषुण० ॥ नैर्ऋत्यकोणभूमौ तु सरलं कार्यसाधकम् ॥ मनोहरं सौम्यरूपं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥११॥ नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम् ॥ आवाहयामि देवेशं सलिलस्याधिपं प्रभुम् ॥ शङ्खपाशधरं सौम्यं वरुणम्मंभसां पतिम् ॥ कुम्भीरथसमारूढं मणिरत्न-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० समन्वितम् ॥ आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन्सान्निधो भव ॥ ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय ॥ म०
॥९४॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० वरुणेहागच्छेह तिष्ठ वरुणाय० वरुणमा० ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥ वरुणाय
नमस्तेऽस्तु नमः स्फाटिकदीप्तये ॥ नमस्ते श्वेतहाराय जलेशाय नमो नमः ॥ प्रार्थना ॥ शङ्खस्फाटिकवर्णाभ
श्वेतहाराम्बरावृत ॥ पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ॥ ॐ वारुण्यै० ॥ ॐ पाशधारिण्यै० ॥ ॐ वृहत्यै० ॥
सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत ॥ ॐ ऊर्द्धऊषुण० ॥ प्रत्यक्स्थं विश्वरूपस्त्वं विश्वकर्मविनिर्मितम् ॥ सुराणामर्चनविधौ
स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥ १२ ॥ पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून् ॥ आवाहयामि देवेशान्वसूनष्टौ
महाबलान् ॥ सौम्यमूर्तिधरान्देवान्दिव्यायुधकरान्वितान् ॥ शुद्धस्फाटिकसंकाशान्नानावस्त्रविराजितान् ॥
आवाहयामि स्तम्भेऽस्मिन्वसूनष्टौ सुखावहान् ॥ ॐ व्वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वासञ्जानाथान्द्यावापृथिवी
मित्रावरुणौ त्वावृष्ट्यावताम् ॥ व्व्यन्तु व्वयोक्तᳯठ०रिहाणामरुताम्पृषतीर्ग्गच्छ व्वशापृश्निर्भूत्वा दिवङ्गच्छ
ततो नो व्वृष्टिमावह ॥ चक्षुष्पाऽअग्नेसि चक्षुर्म्मे पाहि ॥ ॐ भू० वसव इहागच्छतेह तिष्ठत वसुभ्यो० वसूना० ॥
सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥ नमस्करोमि देवेशान्नानावस्त्रविराजितान् ॥ शुद्धस्फाटिकसंकाशान्दिव्यायुधधरान्वसून् ॥ ॥९४॥
प्रार्थना ॥ दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमालाविभूषिताः ॥ वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ विनतायै० ॥ ॐ अणिमायै० ॥ ॐ भूत्यै० ॥ ॐ गरिमायै० ॥ संपूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ उर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ वायुप्रत्यङ्गमध्यगतं सर्वकार्यार्थसाधकम् ॥ सकलानन्दकं भव्यं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥ १३ ॥ वायव्ये पीतस्तम्भे धनदं० ॥ आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् ॥ महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ॥ दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम् ॥ आगच्छ यक्षराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो ऽअर्व्वन्तमा-शुर्ठ० सोमो व्वीरङ्कर्म्मण्यन्ददाति ॥ सादन्यं व्विदत्थ्यर्ठ० सभेयम्पितृश्रवणं य्यो ददाशदस्म्मै ॥ ॐ भू० धनदेहागच्छेह तिष्ठ धनदाय० धनद० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ यक्षराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग ॥ पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापाणे नमोऽस्तु ते ॥ प्रार्थना ॥ दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर ॥ उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद ॥ ॐ आदित्यायै० ॥ ॐ लघिमायै० ॥ ॐ सिनीवाल्यै० ॥ सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ वायुकोणस्थितं दिव्यं पञ्चहस्तप्रमाणकम् ॥ ममाध्वरत्राणकरं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥ १४ ॥ उत्तरवायव्ययोरन्तराले पीतस्तम्भे गुरुं ॥ आवाहयामि देवेशं गुरुं त्रिदशपूजितम् ॥ हेमगोरोचनावर्णं पीन-स्कन्धं सुवक्षसम् ॥ शङ्खं च कलशञ्चैव पाणिभ्यां हेमविभ्रमम् ॥ ॐ बृहस्पतेऽ अतियदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ भू० बृहस्पते इहागच्छेह तिष्ठ ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बृहस्पतये० बृहस्पतिमा० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तु ते ॥ पूजितोऽसि यथा-
शक्त्या दण्डहस्त बृहस्पते ॥ क्रूरग्रहाभिभूतस्य शान्तिं देवगुरो कुरु ॥ ॐ पौर्णमास्यै० ॥ ॐ सावित्र्यै० ॥
सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ वायव्योत्तरयोर्मध्ये भूषितं गुरुदैवतम् ॥ मत्सुसत्राविघ्नकरं
स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥ १९ ॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणं० ॥ आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माण-
मीश्वरम् ॥ मूर्तामूर्त्तकरं देवं सर्वकर्तारमीश्वरम् ॥ त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम् ॥ आगच्छ
विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥ ॐ व्विश्वकर्म्मन्न्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ॥ तस्म्मै
व्विशः समनमन्तपूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत् ॥ ॐ भू० विश्वकर्मन्निहागच्छेह तिष्ठ विश्वकर्मणे नमः
विश्वकर्माणं० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम् ॥ त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं महा-
बलपराक्रमम् ॥ प्रार्थना ॥ प्रसीद विश्वकर्मस्त्वं शिल्पशास्त्रविशारद ॥ सदण्डपाणे द्विभुज तेजोमूर्तिधर प्रभो ॥
ॐ सिनीवाल्यै० ॥ ॐ सावित्र्यै० ॥ ॐ वास्तुदेवतायै० ॥ सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्वऽऊषुण० ॥ सोमे-
श्वीशानयोर्मध्ये सर्वत्राणकरम्परम् ॥ सुगन्धाद्यार्चितममुं स्तम्भमेवालभाम्यहम् ॥ १६ ॥ इति षोडशस्तम्भपूजा ॥
स्तम्भशिरासि वलिकासु ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥ सर्वेषां नागराजानां पातालतलवासिनाम् ॥ नागमातर आयान्तु

॥८९॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवन्तु सगणाः स्थिराः ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ इति सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमोऽस्तु वलिकाबन्ध सुदृढ त्वं शुभाप्तिदम् ॥ एनं महामण्डपन्तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् ॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥ प्रार्थना ॥ शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे ॥ पूजाङ्गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि ॥ ततो भूमिस्पर्शः ॥ ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवींयच्छ पृथिवीन्दृंह पृथिवीम्माहिंसीः ॥ भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात् ॥ भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिङ्गृहीत्वा ॥ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥ ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय इति पुष्पाञ्जलिं मण्डपभूमौ विकिरेत् ॥ ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वे तोरणद्वारसमीपमागत्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य अस्मिन्प्रतिष्ठाकर्माणि पूर्वादितोरणपूजाङ्करिष्ये ॥ मौलीबन्धनम् ॥ सुदृढं तोरणं पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम् ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥ ॐ भू० ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः ॥ इति गन्धादिना सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ इन्द्रराहुभ्यां० ॥ ॐ धात्रे० ॥ ॐ भगबृहस्पतिभ्यां० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 



सदा ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥ तत्रैकं कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ कलशोपरि ॐ ध्रुवाय नमः ॥ ॐ अध्वराय नमः ॥ ॐ मध्ये मेधापतये नमः ॥ सम्पूज्य ॥ ततो दक्षिणे गत्वा आचम्य मौलीबन्धनम् ॥ औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ॥ रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ॥ ॐ इषे त्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्प्यायद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ भू० सुभद्रतोरणाय नमः सुभद्रतोरणमा० ॥ विकटतोरणाय० ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ सूर्यपूषाभ्यां० सूर्यपूषाणौ० ॥ मध्ये मित्राय० ॥ ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥ तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॐ पर्जन्याय नमः ॥ ॐ अशोकाय० ॥ मध्ये ॐ धरायै० इति सम्पूज्य ॥ पश्चिमे गत्वा आचम्य ॥ मौलीबन्धनम् ॥ प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभम् ॥ रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोतासत्सि बर्हिषि ॥ ॐ सुभीमतोरणाय नमः ॥

१ धूम्रवर्णम् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुकर्मतोरणाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ अर्यमशुक्राभ्यां नमः अर्यमशुक्रौ० ॥ मध्ये ॐ अंशवे नमः अंशुम्० ॥ ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां० विवस्वद्बुधौ० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥ तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॐ अनिलाय० ॥ ॐ अनलाय० ॥ मध्ये ॐ वाक्पतये नमः ॥ सम्पूज्य ॥ तत उत्तरे गत्वा ॥ आचम्य ॥ मौलीबन्धनम् ॥ न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम् ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ ॐ सुहोत्रतोरणाय० ॥ ॐ सुप्रभतोरणाय० ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ त्वष्टृसोमाभ्यां० ॐ सवितृकेतुभ्यां० ॐ विष्णुशनिभ्यां नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव ॥ तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॐ प्रत्यूषाय० ॥ ॐ प्रभासाय० ॥ मध्ये ॐ विघ्नेशाय० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः ॥ ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा ॥ ४ ॥ इति तोरणपूजा ॥ ततो मण्डपद्वारपूजा ॥ पूर्वे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन्प्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपस्य पूर्वादिद्वारपूजाङ्करिष्ये ॥ आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वारकृपाधिप ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋग्वेदाधिपते नामान्सुशोभन नमोऽस्तु ते ॥ द्वौ कलशौ पार्श्वयोः स्थापयेत् ॥ प्रथमदक्षिणकलशोपरि ॥
ॐ प्रशान्ताय० ॥ द्वितीयोत्तर( वाम )कलशोपरि ॥ ॐ शिशिराय० ॥ ततो मध्ये तृतीयप्रथमस्थापित-
कलशोपरि ॥ ॐ ऐरावताय० ॥ गंधादिना सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम् ॥ सरत्नं
स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम् ॥ ॐ द्वारश्रियै नमः इति ऊर्ध्वम् ॥ अधः देहल्यै नमः ॥ दक्षिणशाखायाम् ॥
ॐ गणेशाय नमः ॥ वामशाखायाम् ॥ ॐ स्कन्दाय नमः ॥ द्वारकलशयोः ॥ ॐ गंगायै नमः ॥ ॐ यमुनायै० ॥
सम्पूज्य ॥ ऋग्वेदिनौ पूजयामि ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥
कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ ॥ मध्ये कलशोपरि ॥
एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते ॥
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा
धात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्राय नमः इंद्रमा० ॥ सम्पूज्य ॥ पीतध्वजपताकामालभ्य जपेत ॥ ॐ आशुः शिशानो
वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्सा-
कमिन्द्रः ॥ इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम् ॥ आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्वजपताकयोर्मध्ये ॥ ॐ हेतुकाराय नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ इंद्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ॥ शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम ॥ १ ॥ ततो अग्निकोणमागत्य ॥ आचम्य ॥ कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॐ पुण्डरीकाय नमः ॥ ॐ अमृताय नमः ॥ सम्पूज्य ( नमस्कारः ) ॥ एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्यैरभितोऽभिजुष्टः ॥ तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते ॥ प्रार्थना ॥ सप्तार्चिषं च बिभ्राणमक्षमालां कमण्डलुम् ॥ ज्वालमालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम् ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देवपायुभिर्मघोनोरक्ष तन्वश्च वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते ॥ ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमा० सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम् ॥ स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे ॥ ॐ अग्निन्दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ऽआसा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दयादिह ॥ ध्वजपताकयोः ॐ कुमुदाय नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ॥ धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम् ॥ २॥ दक्षिणे गत्वा आचम्य ॥ द्वारकलशौ स्थापयेत् ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥ नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च ॥ यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे ॥ ततः कलशोपरि ॥ ॐ पर्जन्याय नमः ॥ ॐ अशोकाय नमः ॥ मध्यकलशे ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम् ॥ सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम् ॥ ततो द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः ॥ अधः ॐ देहल्यै नमः ॥ द्वारशाखयोः ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ द्वारकलशयोः ॐ गोदावर्य्यै नमः ॥ ॐ कृष्णायै नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक ॥ शिवाज्ञयाऽपिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह ॥ ततो यजुर्वेदिनौ पूजयेत् ॥ ॐ इषेत्वोर्जेत्वा० ॥ ततो मध्यकलशोपरि ॥ एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानन्द-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ कृष्णवर्णां पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा ॥ अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे ॥ ॐ यमाय त्वा० ॥ इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम् ॥ यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर ॥ ध्वजपताके सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः ॥ धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये गत्वा आचम्य ॥ कलशं संस्थाप्य ॥ निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ कलशोपरि ॐ कुमुदाय नमः ॥ ॐ दुर्ज्जयाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ कलशे ॥ एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसंघैः ॥ ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेन स्येत्या मन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्म

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिंक्षसातंऽइत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु ॥ ॐ भू० निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं० आवाहयामि ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ पताकानिर्ऋतिश्चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा ॥ पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ॥ ॐ अशुन्वन्तम० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकयोः ॐ कुमुदाय नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः ॥ करे खड्गधरो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ॥ ४ ॥ पश्चिमे गत्वा ॥ आचम्य ॥ ततः कलशौ संस्थाप्य संपूज्य ॥ नमस्कारः ॥ नमोऽस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वाराश्रिताय च ॥ सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक ॥ कलशोपरि ॥ ॐ भूतसञ्जीवनाय० ॥ ॐ अमृताय० ॥ मध्यकलशे ॥ ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय० ॥ द्वारोर्ध्वे द्वारश्रियै० ॥ अधः देहल्यै० ॥ द्वारशाखयोः ॥ ॐ नन्दिन्यै० ॥ ॐ चण्डायै० द्वारकलशयोः ॥ ॐ रेवायै० ॥ ॐ ताप्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ ततः सामवेदिनौ पूजयेत् ॥ ॐ अग्नऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ इति सम्पूज्य ॥ मध्यकलशे ॥ एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः ॥ विद्याधरेन्द्रामरगीय-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेड-
मानो वरुणेहबोध्युरुशꣳस समानऽ आयुः प्रमोषीः ॥ ॐ भूः वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ॥ वरुणाय
साङ्गाय सपरिवाराय नमः इति सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम् ॥
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथा-
वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पति-
रीश्वरः ॥ शमन्नयाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं देव गृहाण जलधीश्वर ॥
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्त-
बलिं समर्पयामि ॥ भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टि-
कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजलानामाधिपतये न मम ॥ ५ ॥
वायव्ये गत्वा ॥ आचम्य ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ कलशे ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ॐ सिद्धार्थाय नमः ॥ गंधा-
दिभिः सम्पूज्य ॥ कलशोपरि एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसंघैः ॥ प्राणाधिपः कालकवेः
सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ व्वायोऽ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भू० वायवे नमः वायुं० संपूज्य ॥ ध्वजपताका-
मालभ्य ॥ पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा ॥ आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च ॥ ॐ व्वायो येते
सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवहः
प्रभुः ॥ तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च ॥ ततो बलिदानम् ॥ माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण
भो ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं
दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो वरुण साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः मम सकुटुम्बस्य सपरि-
वारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन
नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम ॥ ६ ॥ उत्तरे गत्वा ॥ आचम्य ॥ द्वारकलशौ संस्थाप्य
संपूज्य नमस्कारः ॥ नमस्ते दिव्यरूप त्वमथर्वाधिपते प्रभो ॥ कलावाधिपतिर्नाम्ना मङ्गलश्चोत्तरानन ॥ कलशोपरि ॥
ॐ धनदाय नमः ॥ ॐ श्रीप्रदाय नमः ॥ मध्यकलशे ॥ सार्वभौमदिग्गजाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै
नमः ॥ अधः ॐ देहल्यै नमः ॥ द्वारशाखयोः ॥ महाकालाय नमः ॥ ॐ भृङ्गिणे नमः ॥ द्वारकलशयोः ॐ नर्मदायै
नमः ॥ ॐ ताप्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ अथर्वाणौ पूजयेत् ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शँ॑ध्योरभिस्त्रवन्तु नः ॥ मध्यकलशे ॥ एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम् ॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ वयꣳ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भू० सोमाय नमः सोम० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजापताकामालभ्य ॥ हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम् ॥ कुबेराय लभाम्येव पूजयेच सदार्थिना ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ सम्पूज्य ॥ प्रार्थना ॥ गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः ॥ नक्षत्राधिपतिः सोम स्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपतये प्रीयतां न मम ॥ ७ ॥ ईशाने गत्वा ॥ आचम्य ॥ कलशं संस्थाप्य कलशे ॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः ॥ ॐ मङ्गलाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ पुनः कलशोपरि ॥ एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् ॥ लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

११ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिंन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहे व्वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० स्वस्तयै ॥ ॐ भू० ईशानाय नमः ईशानं० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां म०
॥६१॥ गन्धभूषिताम् ॥ आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ॥ ॐ तमीशानं० ॥ सम्पूज्य ॥ प्रार्थना ॥ सर्वाधिपो
महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः ॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं
देव गृहाणेशान शङ्कर ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय
सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो ईशान बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य
आयुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन ईशानः
साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां नमम ॥ ८ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये गत्वा आचम्य ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य
कलशे ॥ एह्येहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः
सततं शिवाय ॥ ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः ॥ यश्शंस०संतस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्र-
ज्येष्ठाऽअस्म्माँऽअवन्तुदेवाः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ पद्मवर्णां
पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा ॥ आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्वीसीं- ॥६१॥
मतःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥ सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्तिवेदव्यासपितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो ब्रह्मन् मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां नमम ॥ ९ ॥ नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये गत्वा ॥ आचम्य ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नमः सम्पूज्य ॥ पुनः कलशोपरि ॥ एह्येहि पातालधरामरेन्द्रनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ॥ यक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनि ॥ यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ भू० अनन्ताय नमः ॥ अनन्तं० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥ मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णं ध्वजन्तथा ॥ आलभामि ह्यनन्ताय धरिणीधारिणे नमः ॥ ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम् ॥ स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्त पन्नग ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्त-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 बलिं समर्पयामि ॥ भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिबारस्यायुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता 
 तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां नमम ॥ १० ॥ पुनः ईशाने गत्वा आचम्य महाध्वजपूजनम् ॥ ( अत्युच्चदण्डं दशहस्तदीर्घं षोडशहस्तदीर्घं वा महाध्वजं विचित्रवर्णं प्रान्तःकिंकिण्यादियुतं त्रिहस्तविस्तृतं सप्तहस्तदीर्घं वा पञ्चहस्ताविस्तृतं दशहस्तदीर्घं कृत्वा प्रयोगपारिजाते ) ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्जोषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्च्यन्तां जोगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ वंशे ॥ ॐ किन्नरेभ्यो नमः ॥ ॐ पन्नगेभ्यो नमः सम्पूज्य आलभेत् ॥ इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम् ॥ महाध्वजश्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ॥ अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशक ॥ महा-मण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने ॥ ॐ इन्द्रस्य वृष्णो व्वरुणस्य राज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳬशर्द्धऽउग्रम् ॥ महाम्म-नसाम्भुवनच्च्यवानां घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम् ॥ ( महामण्डपमध्ये तु 
स्थाने महामण्डपेशाने इत्यूहः कार्यः ) ततो सप्तदशषोडशावलिकासु ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ वंशेषु किन्न-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेभ्यो नमः ॥ मण्डपपृष्ठदेशे पन्नगेभ्यो नमः सम्पूज्य ॥ ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वेशानसमीपे किञ्चिद्भूमिं गोमयेनोपलिप्य तत्राष्टदलं विरच्य तत्राष्टदलेषु ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपति० सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ॥ ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ॥ सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालगणैः सह ॥ रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः ॥ ततः अक्षतपुञ्जेषु पूर्वादिक्रमेण ॥ ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः स्थावरानावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः चरानावाहयामि ॥ ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ ३ ॥ ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा० ॥ ४ ॥ ॐ शिवाय नमः शिवमा० ॥ ५ ॥ ॐ देवेभ्यो नमः देवानावा० ॥ ६ ॥ ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावा० ॥ ७ ॥ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावा० ॥ ८ ॥ ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षानावा० ॥ ९ ॥ ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावा० ॥ १० ॥ ॐ पन्नगेभ्यो नमः पन्नगाना० ॥ ११ ॥ ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावा० ॥ १२ ॥ ॐ मनुष्येभ्यो नमः मनुष्यानावा० ॥ १३ ॥ ॐ देवमातृभ्यो नमः देवमातॄः आ० ॥ १४ ॥ सम्पूज्य ॥ इन्द्रादिलोकपालेभ्यो घृतौदनबलिदानम् ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्यो दिगीशमातृगणक्षेत्रपालादिभ्यो बलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा ॥ नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह ॥ जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावह ॥ १ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णे गिरीशदायादे पूर्णकर्म कुरुष्व माम् ॥ भद्रे काश्यपिदायादे कुरु भद्रां मतिं मम ॥ २ ॥ सर्वबीजौषधीयुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते ॥ रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे नन्दतामिह ॥ ३ ॥ प्रजापतिसुते देवि चतुरस्रे महीयसि ॥ सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ॥ पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते ॥ ४ ॥ भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम् ॥ अव्यये चाक्षते पूर्णे मुनेराङ्गिरसः सुते ॥ ५ ॥ मनुष्यधेनुहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरी भव ॥ इति पुष्पाञ्जलिः ॥ एवं आग्नेयादिलोकपालानां बलिदानम् ॥ ततः ईशान्यां वंशपात्रादौ सार्वभौतिकं माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ अस्मिन्प्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपपूजाङ्गविहितं मातृगणक्षेत्रपालप्रीतये भूतप्रेतपिशाचादिनिवृत्त्यर्थं सार्व-भौतिकबलिप्रदानं करिष्ये ॥ नूतनवंशसूर्पे पुष्कलमात्रमाषभक्तबलिं कृत्वा ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ इतिमन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० ॥ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः ॥ सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ १ ॥ नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्वनक्षत्रैः परिवारितः ॥ स्थानश्चैव पितॄणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥ ये केचिदिह यज्ञेस्मिन्नागता बलिकांक्षिणः ॥ तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥ ३ ॥ बलिं गृह्णन्त्विमं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ ४ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचा मातरो नगाः ॥ शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः ॥ ५ ॥ जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा आद्या विद्याधरा नराः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ६ ॥ सौम्या भवन्तु ते तृप्त्या देवासुरगणास्तथा ॥ ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम् ॥ ७ ॥ अनेन सार्वभौतिकबलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयताम् ॥ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य मण्डपं प्रविशेत् ॥ इति मण्डपपूजा समाप्ता ॥

## ( अथ सर्वतो लिङ्गतो मण्डलं देवतास्थापनं च )

प्रागुदीच्यां गता रेखा कुर्यादेकोनविंशतिः ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतपञ्चभिः कृष्णशृंखला ॥ १ ॥ नीलैकादश वल्ली तु भद्रं रक्तं पदैर्नव ॥ चतुर्विंशत्सिता वापी परिधिः पीतविंशतिः ॥ २ ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठै रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ परिध्या वेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वं रजस्तमः ॥ ३ ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान्ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ( अथ लिङ्गतोभद्रम् ) ॥ रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्गसमुद्भवे ॥ कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतास्त्रिपदैः कृष्णशृंखलाः ॥ १ ॥ वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ॥ भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥ २ ॥ शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात्पञ्चपदां सिताम् ॥ पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥ ३ ॥ शिरसि

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रृंखलायाश्च कुर्यात्पीतं पदत्रयम् ॥ लिङ्गानां स्कन्धतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णकाः ॥ ४ ॥ परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृतः ॥ पदैस्तु नवभिः पश्चाद्रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ ५ ॥ इति लिङ्गतोभद्रकारिका समाप्ता ॥ तत्र पञ्चवर्णान्युक्तानि पञ्चरात्रे ॥ रजांसि पञ्च वर्णानि मण्डलार्थं हि कारयेत् ॥ शालितण्डुलचूर्णेन शुक्लं वा यवसम्भवम् ॥ १ ॥ रक्तं कुसुम्भसिन्दूरगैरिकादिसमुद्भवम् ॥ हरितालोद्भवं पीतं रजनीसम्भवं क्वचित् ॥ २ ॥ कृष्णं दग्धैर्यवैः कार्यं हरितं बिल्वचूर्णकम् ॥ कारयेत्सर्वधान्यैर्वा वर्णकैरुपशोभितम् ॥ ३ ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं करिष्यमाणसनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वराशिवादिमूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि सर्वतोभद्रतथालिङ्गतोभद्रमण्डले वेदोक्तपुराणोक्तमंत्रैर्ब्रह्मादिषट्पञ्चाशद्देवता ततो लिङ्गतोभद्रदेवताआवाहनं पूजनं च करिष्ये ॥ हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा ब्रह्मादिदेवानावाहयेत् ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽ आवः ॥ सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ( ऐह्येहि धातस्तु समस्तसृष्टेः पद्मोद्भवः पद्मसुखः प्रदातः ॥ सुरासुरैर्वन्दितपादपद्म यज्ञे ममास्मिन्कुरु सन्निधानं ) ॥ मध्ये ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ १ ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ ( कुबेरं गुह्यकाध्यक्षं सुरासुरनमस्कृतम् ॥ धनदं




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिविकारूढं चिन्तयामि सदा प्रियम् ) उत्तरे वाप्यां ॐ भू० सोमाय० सोमं० ॥ २ ॥ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थु-षस्पतिंन्धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषानो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ( आवाहयाम्यहं देवं ईशानं च वरप्रदम् ॥ सर्वलोकप्रपूज्यं त्वां ईशानं पूजयाम्यहम् ) ईशान्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० ईशानाय० ईशानं० ॥ ३ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ( आवाहयाम्यहं देवं महेन्द्रञ्च महाप्रभुम् ॥ पीतवर्णं गजारूढं वज्रपाणिं सुरेश्वरम् ॥ ) पूर्वे वाप्यां ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥ ४ ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ ( अथाग्निमूर्तिं ध्यायामि सर्वाभीष्टफलप्रदाम् ॥ एकाजिह्वां द्विशीर्षाञ्च जटामुकुटमण्डिताम् ॥ ) आग्नेय्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥ ५ ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ( आवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम् ॥ ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् ) दक्षिणे वाप्यां ॐ भू० यमाय० यममा० ॥ ६ ॥ ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य ॥ अन्न्यम-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० स्म्मादिंच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ( आवाहयाम्यहं देवं निर्ऋतिं श्वेतरूपिणम् ॥ लम्बकेशं म०
॥६५॥ विरूपाक्षं खड्गपाणिं दुरासदम् ॥ ) नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥ ७ ॥ ॐ तत्वायामि
ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳस समानऽआयुः
प्रमोषीः ( आवाहयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम् ॥ रक्ताम्बरधरं देवं रक्तमालाविभूषितम् ) पश्चिमे वाप्यां
ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ ८ ॥ ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ व्वायोऽ
अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ( अहमावाहयिष्यामि वायुं सर्वत्र व्यापिनम् ॥ ऊर्द्ध्वकेशं
विरूपाक्षं सर्वचैतन्यरूपिणम् ) वायव्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० वायवे० वायुं० ॥ ९ ॥ ॐ व्वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा
दित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथान्द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् ॥ व्यन्तु व्वयोक्तꣳ रिहाणा मरुताम्पृषती
र्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्वा दिवङ्गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह ॥ चक्षुष्पाऽ अग्नेसि चक्षुर्म्मे पाहि ॥ ( धरो
ध्रुवश्च रोमश्च आपश्चैव नलोनलः ॥ प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोष्टौ प्रकीर्तिताः ) ॥ वायुसोममध्ये भद्रे ॐ भू०
अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूना० ॥ १० ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॥६५॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोथ रैवतः ॥ हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥ सविता च जयन्तश्च पिनाकी रुद्र एव च ॥ ) सोमेशानयोर्मध्ये एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादश रुद्राना० ॥ ११ ॥ ॐ यज्ञो देवाना-म्प्रत्त्येति सुम्म्नमादित्त्यासो भवता मृडयन्तः ॥ आवोर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्याद्द्ठ० होश्चिद्याव्वरिवो वित्तरासत् ( धाता मित्रो यमश्चेन्द्रो वरुणः सूर्य एव च ॥ भगो विवस्वान्पुरुषः सविता विष्णुरेव च ॥ त्वष्टेति द्वादशादित्यान् पूजयामि यथाविधि ) ईशानपूर्वयोर्मध्ये ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्याना० ॥ १२ ॥ याबाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ( रूपेणा प्रतिमौ देवौ सूर्यस्य तनयावुभौ ॥ वड़वागर्भसम्भूतौ मंडले विशतावुभौ ) इन्द्राग्नयोर्मध्ये भद्रे ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ १३ ॥ ॐ व्विश्श्वेदेवासऽआगत श्रृणुताम्मऽ इमठ० हवम् ॥ एदम्बर्हिर्निषीदत ॥ उपयाम गृहीतोसि व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ( ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामलौ धूम्रलोचनौ ॥ पुरूरवार्द्रवश्चैव विश्वेदेवा इमे दश ) अग्नियममध्ये भद्रे ॐ भू० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान्देवा-नावा० ॥ १४ ॥ अभित्यन्देवठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्च्चामि सत्यसवठ० रत्नधामभिप्रियम्मतिङ्कविम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ऊर्द्ध्वांयस्यामंतिर्भाऽअदिंद्युतत्सवींमनिहिरंण्यपाणिरामिमीत सुक्रतुंःकृपास्वंः ॥ प्प्रजाभ्यंस्त्वा प्रजास्त्वां नुप्प्राणंन्तु म०
॥६६॥ प्प्रजास्त्वमंनुप्प्राणिंहि ॥ ( अहमावाहयिष्यामि सप्त यक्षान्महाबलान् ॥ पुण्यरूपान्पुण्यजनान्पुण्यकर्मरतान्सदा )
यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षानावा० ॥ १५ ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० ॥ ( आवाहयाम्यहं
देवान्भूतान्नागान्महाबलान् ॥ सर्पराजान्महाकायान्मणिमण्डलभूषितान् ) निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे ॐ भू०
अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागानावा० ॥ १६ ॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधांमाग्निर्गंन्धर्व्वस्तस्यौषंधयोप्सरसो मुदो
नामं ॥ सनंऽइदम्ब्रह्मं क्षत्रम्पांतु तस्मै स्वाहा व्वाट्ताभ्यः स्वाहां ( आवाहयामि गन्धर्वान्साप्सरान्गीततत्परान् ॥
हाहाहूहूश्चैवमाद्यान्गन्धर्वाप्सरसस्तथा ) वरुणवायुमध्ये भद्रे गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आवा० ॥ १७ ॥
ॐ यदक्रंन्दः प्प्रथमञ्जायंमानऽ उद्यन्त्संमुद्राद्दुत वा पुरींषात् ॥ श्येनस्यं पक्षा हंरिणस्यं बाहूउंपस्तुत्यम्महिं जातन्तें
ऽअर्व्वन् ॥ ( एह्येहि षण्मुख सुरेश्वर तारकारे श्रीनीलकण्ठवरवाहन शक्तिपाणे ॥ अंकारकोटर सुरेश्वरपूज्यमान
सान्निध्यमत्र कुरु ब्रह्मकुबेरमध्ये ॥ ) ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥ १८ ॥ ॐ आशुः
शिशांनो वृषभो न भीमो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दंनोनिमिषऽ एंकवीरः शतठं० सेनांऽ अजत्सा ॥६६॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमिन्द्रं ॥ ( आवाहयाम्यहं देवं वृषभं सर्वपूजितम् ॥ महादेवासने मुख्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ) स्कन्दादुत्तरे ॐ भू० वृषभाय० वृषभमा० ॥ १९ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्याऽ उन्नयामि ॥ समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ( आवाहयामि तं शूलं शस्त्रराजं महोज्ज्वलम् ॥ दुष्टारिघातने दक्षं शिवबाहुविराजितम् ) वृषभोत्तरे ॐ भू० शूलाय० शूलमा० ॥ २० ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि ॥ समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ( नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम् ) शूलादुत्तरे ॐ भू० महाकालाय० महाकालमा० ॥ २१ ॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यंहाः० हाः ॥ ( आवाहयामि तान्देवान्कैलासाधिपपार्षदान् ॥ दक्षादिप्रमुखान्सप्त गणाञ्जीवसुखावहान् ) ब्रह्मेशानयोर्मध्ये शृंखलायां ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानावाहयामि ॥ २२ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ( आगच्छ कोकिले दुर्गे सिंहारूढे महाभुजे ॥ विंध्याचलकृतावासे मण्डले त्वं समाविश )
१२ ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥ २३ ॥ ॐ इदं विष्णु० ( आवाहयाम्यहं देवं श्रीविष्णुं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमलापतिम् ॥ जगच्चक्षुं विश्वजन्मास्थितिसंहारकारकम् ) दुर्गापूर्वे ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ॥ २४ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ( कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति ॥ तिष्ठत्युदीच्यां दिश्यर्कछविमावाहये स्वधाम् ) ब्रह्माग्न्योर्मध्ये श्रृंखलायां स्वधायै० स्वधामा० ॥ २५ ॥ ॐ परम्मृत्योऽअनुपरेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽ इतरो देवयानात् ॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान् ॥ ( इहोपहूतो भगवान्मृत्युः शामित्रकर्मणि ॥ न कश्चिन्म्रियते तावद्यावदास्त इहान्तकः ) ब्रह्मयममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना० ॥ २६ ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ( एकदन्तं महाकायं पद्मकाञ्चनसन्निभम् ॥ लम्बोदरं विशालाक्षं बन्देहं गणनायकम् ) ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये श्रृंखलायां ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा० ॥ २७ ॥ ॐ आपो हिष्ठा० ( स्वच्छाः पवित्रा जनशुद्धिबीजा यादोभिरत्यन्तभयङ्कराश्च ॥ कुर्वन्तु सान्निध्यमथाम्बुवेगात्सर्वस्य विश्वस्य च जीवरूपाः ॥ ) ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू० अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि ॥ २८ ॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथादिवोव्विमहसः ॥ ससुगोपातमोजनः ( आगच्छ त्वं महादेव मृगारूढ प्रभञ्जन ॥ यज्ञसंरक्षणा-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्थाय मण्डले त्वं स्थिरो भव ॥ ) ब्रह्मवायुमध्ये शृंखलायां मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवा० ॥ २९ ॥ ॐ स्योना पृथिवी० ( एह्येहि वसुधे देवि शैलजीवनकानने ॥ ब्रह्मणः पादमूले तु सान्निध्यं कुरु मे सदा ) ब्रह्मणः पादमूले ॐ भू० पृथिव्यै नमः पृथिवीमा० ॥ ३० ॥ ॐ इमम्मे वरुण० ( गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ॥ नर्मदा सिन्धुकावेरी सान्निध्यं कुर्वतामिह ) ब्रह्मणः पादमूले पृथिव्या उत्तरे ॐ भू० गंगादिनदीभ्यो नमः गंगादिनदीः आ० ॥ ३१ ॥ ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहि स्वाहा मारुतोसि मरुतांङ्गणः ॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहि स्वाहा वस्यूरसि दुवस्वां-ञ्छम्भूर्म्मयोभूरभिमांव्वाहि स्वाहा ॥ ( क्षारेक्षुरसमद्योक्षन्घृतोदक्षीरकोदकौ ॥ दधिमण्डोदशुद्धोदौ सप्तैतान्स्थाप-याम्यहम्) ब्रह्मणः पादमूले गंगोत्तरे ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि ॥ ३२ ॥ ॐ प्रपर्व्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचंइयानाः ॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः ॥ विष्णोर्विक्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्रान्तमसि व्विष्णोः क्रान्तमसि ( सुमेरुं सुंदराकारं प्रकाशं सूर्यसन्निभम् ॥ पर्वतानां मुख्यराजा पूजां मे प्रतिगृह्यताम् ) कर्णिकापरिधौ ॐ भू० मेरवे नमः मेरुमा० ॥ ३३ ॥ अथ सोमादिक्रमेण सत्वबाह्यपरिधौ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ गणानान्त्वा० ॥ ( निषिक्ता कुमुदाक्षस्य नाम्ना कौमोदकी गदा ॥ शान्तिदा स्मरणादेव तस्यै तुभ्यं नमो नमः ) ॐ भू० गदायै नमः ॥ गदामावाहयामि ॥ ३४ ॥ ईशाने ॥ ॐ त्रिꣳशद्धाम व्विराजति व्वाक्पतङ्गाय धीयते ॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः ( महायोगीन्द्रहस्तस्य शङ्करस्य प्रियङ्कर ॥ त्रिशूल त्वमिहागच्छ पूजेयम्प्रातिगृह्यताम् ) ॐ भू० त्रिशूलाय० त्रिशूलमा० ॥ ३५ ॥ पूर्वे ॥ ॐ महाँ इन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु ॥ हन्तु पाप्मानं य्योस्मान्द्वेष्टि ॥ उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा ( तप्तकाञ्चनवर्णाभं वज्रं वै शस्त्रनायकम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्गृहाणेमां नमोस्तु ते ) ॐ भू० वज्राय नमः वज्रमा० ॥ ३६ ॥ आग्नेये ॥ ॐ व्वसु च मे व्वसातिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेर्थश्च मऽएमश्चमऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ( सर्वदैत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे ॥ सर्वसत्वहिते शक्ते शान्तिं यच्छ नमोऽस्तु ते ) ॐ भू० शक्तये० शक्तिमा० ॥ ३७ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत ॥ मयि वः कामधरणम्भूयात् ( धर्मराजस्य हस्तस्य यमस्य च सदा प्रिय ॥ दण्डायुध नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धिप्रदो भव ) ॐ भू० दण्डाय० दण्डमा० ॥ ३८ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्षसामिन्द्राय शूकरः सिꣳहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै व्विश्वेषान्देवानाम्पृषतः (नीलजीमूतसंकाश तीक्ष्णदंष्ट्र कृशोदर ॥ खड्गराज नमस्तुभ्यं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ) ॐ भू० खड्गाय० खड्गमा० ॥ ३९ ॥ पश्चिमे ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथाव्वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम (देवासि वरुणास्त्रं त्वं दैत्यवंशविदारणम् ॥ पाश मां समरे रक्ष रज्जुराज नमोऽस्तु ते ) ॐ भू० पाशाय० पाशमा० ॥ ४० ॥ वायुकोणे ॥ ॐ अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेदाभ्यश्चमेधिपतिश्च-मऽउपाꣳशुश्चमेन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमेप्रतिप्प्रस्थानश्श्चमेशुक्रश्चमेमन्थी-चमेषज्ञेनकल्पन्ताम् ( गजघ्नं वरवीरघ्नं परसैन्यापहारकम् ॥ गणेशस्य प्रियन्तस्यामङ्कुशाय नमो नमः ) ॐ भू० अङ्कुशाय० अङ्कुशमा० ॥ ४१ ॥ तद्बाह्ये रजपरिधौ सोमादिक्रमेण ॥ उत्तरे ॥ ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमी-दसदन्म्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ( गौतमः सर्वभूतानां ऋषीणाञ्च महाप्रियः ॥ श्रोत्रिणां कर्मणाञ्च त्वं सम्प्रदायप्रवर्त्तकः ) ॐ भू० गौतमाय० गौतमं० ॥ ४२ ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ अयन्दक्षिणा व्विश्वकर्म्मा तस्य मनो व्वैश्वकर्म्मणङ्ग्रीष्म्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्ग्रैष्म्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० पञ्चदशाद्बृहद्भरद्द्वाजऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्त्वया मनो गृह्णामि प्प्रजाभ्यः ( भरद्वाज नमस्तुभ्यं सदा म०
॥६९॥ ध्यानपरायणः ॥ महाजटिलधर्मात्मा पापं हरतु मे सदा) ॐ भू० भरद्वाजाय० भरद्वाजं० ॥४३॥ पूर्वे ॥ ॐ इदमु-
त्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳ सौवꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳश एकविꣳशा-
द्वैराजं व्विश्वामित्रऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्त्वया श्श्रोत्रङ्गृह्णामि प्प्रजाभ्यः ( विश्वामित्र नमस्तुभ्यं
वलिं मखमहाव्रतम् ॥ अध्यक्षीकृतगायत्रीं तपोरूपेण संस्थितः ) ॐ भू० विश्वामित्राय० विश्वामित्रमा० ॥ ४४ ॥
आग्नेय्याम् ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥
( कश्यपः सर्वलोकेषु सर्वलोकेषु संस्थितः ॥ नराणां पापनाशाय ऋषिरूपेण तिष्ठति ) ॐ भू०
कश्यपाय० कश्यपमा० ॥ ४५ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ अयम्पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं व्वर्षा
श्च्चाक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्याऽऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं
ज्जमदग्निर्ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्प्रजाभ्यः ॥ ( जमदग्निर्महातेजा तपसा ॥६९॥
ज्वलितप्रभः ॥ लोकेषु सर्वसिद्ध्यर्थं सर्वपापनिवर्तकः ) ॐ भू० जमदग्नये० जमदग्निं० ॥ ४६ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ अयम्पुरो भुवस्तस्य प्प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्प्राणाय नो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्र्यङ्गायत्रादुपाᳫंशुरुपाᳫंशोस्त्रिवृत्तिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठ ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्वया प्प्राणङ्गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ( नमस्तुभ्यं वशिष्ठाय लोकानां वरदाय च ॥ सर्वपापप्रणाशाय सूर्यान्वयहितैषिणे ) ॐ भू० वसिष्ठाय० वसिष्ठमा० ॥४७॥ पश्चिमे ॥ ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं य्यथाभागमावृषायद्ध्वम् ॥ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ ( अत्रये च नमस्तुभ्यं सर्वभूतहितैषिणे ॥ तमोरूपाय सत्याय ब्रह्मणेऽमिततेजसे ) ॥ ॐ भू० अत्रये० अत्रिमा० ॥ ४८ ॥ वायव्याम् ॥ ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ॥ नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ( अरुन्धति नमस्तुभ्यं महापापप्रणाशिनि ॥ पतिव्रतानां सर्वासां धर्मशीलप्रवर्तके ) ॐ भू० अरुन्धत्यै० अरुन्धतीमा० ॥ ४९ ॥ तद्बाह्ये तमःपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ॥ पूर्वे ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासि घर्म्मायदीष्ष्व ॥ ( वज्रहस्तां विशालाक्षीं वृत्रासुरहतां शुभाम् ॥ ऐरावतसमारूढां ऐन्द्रीमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमा० ॥ ५० ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ( मयूरवाहनां देवीं षण्मुखां शक्तिसंयुताम् ॥ तारकासुरसंहंत्रीं कौमारीं पूजयाम्यहम् ) ॐ भू०

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कौमार्य्यै नमः कौमारीमा० ॥ ५१ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ इन्द्राषाहिधियेषितोव्विप्रजूतः सुतावतः ॥ उपब्रह्माणिव्वा-
ग्घतः ( हंसारूढां प्रसन्नास्यां स्वायुधां वेदपारगाम् ॥ सत्यलोकस्थितां देवीं ब्राह्मीमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू०
ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमा० ॥ ५२ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः
( हिरण्याक्षहतां क्रुद्धां दंष्ट्रोध्कृतवसुन्धराम् ॥ अचिन्त्यकायां दुर्धर्षां वाराहीं पूजयाम्यहम् ) ॐ भू० वाराह्यै
नमः वाराहीमा० ॥ ५३ ॥ पश्चिमे ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ( चण्डमुण्डहतां देवीं खड्गखट्वाङ्गभूषिताम् ॥
रक्तबीजवधासक्तां चामुण्डां पूजयाम्यहम् ) ॐ भू० चामुण्डायै० चामुण्डां० ॥ ५४ ॥ वायव्ये ॥ ॐ आप्यायस्व
समेतु ते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ( शङ्खचक्रगदापद्मैः शोभितां गरुडासनाम् ॥
अतसीपुष्पसङ्काशां वैष्णवीं पूजयाम्यहम् ) ॐ भू० वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं० ॥ ५५ ॥ उत्तरे ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा
तनूरघोरा पापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ( वृषारूढां पञ्चवक्त्रां त्रिशूलवर-
धारिणीम् ॥ कैलाशसंस्थितां देवीं पूजयामि महेश्वरीम् ) ॐ भू० माहेश्वर्य्यै० माहेश्वरीं० ॥ ५६ ॥ ईशान्याम् ॥
ॐ समख्ये देव्या धियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ माम्नऽआयुः प्रमोषीम्मोऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्द्दर्शि ( चतुर्भुजां त्रिनेत्राञ्च सर्वाभरणभूषिताम् ॥ आवाहयामि देवेशीं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ) ॐ भू० वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि ॥ ६७ ॥ इति सर्वतोभद्रदेवताः ॥

## अथ लिङ्गतोभद्रदेवताविशेषाः ॥

तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण ॥ पूर्वे ॥ ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽआव्व्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः ॥ ॐ भू० असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवमा० ॥१॥ आग्नेय्यां ॥ ॐ श्वित्रऽआदित्यानामुष्ट्रोघृणीवान्वार्ध्रीनसस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरूरौद्रः क्क्वयिः कुटरुर्दात्यौ हस्ते व्वाजिनाङ्कामायपिकः ॥ ॐ भू० रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवमा० ॥ २ ॥ दक्षिणस्याम् ॥ ॐ उग्रँ ल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्व्रत्त्येन रुद्रन्दौव्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भू० चण्डभैरवाय० चण्डभैरवमा० ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवो दित्यैभसज्जीमूतान्न्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीतता नभंऽउदर्य्येण चक्रवाकौ मतस्न्नाभ्यान्दिवं व्वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा व्वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हि-राभिः स्रवन्तीर्हृदाकुक्षिभ्याᳪ समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरम्भस्मना ॥ ॐ भू० क्रोधभैरवाय० क्रोधभैरवं० ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॥ ॐ उन्नतऽऋषभोव्वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा व्वाजिनः कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ ॐ भू० उन्मत्तभैरवाय० उन्मत्तभैरवमा० ॥ ५ ॥ वायव्याम् ॥ ॐ काण्डिरासि समुद्रस्यत्त्वा क्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० कपालभैरवाय० कपालभैरवमा० ॥ ६ ॥ उत्तरे ॥ ॐ उग्रश्च भीमश्चध्वान्तश्च धुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभि-युग्वाचंविक्षिपः स्वाहा ॥ ॐ भू० भीषणभैरवाय० ॥ भीषणभैरवमा० ॥ ७ ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ॐ भू० संहारभैरवाय० संहारभैरवमा० ॥ ८ ॥ तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण ॥ पूर्वे ॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ ॐ भू०



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवाय नमः भवमा० ॥ ९ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ अग्निरठं० हृदयेनाशनिठं० हृदयाग्ग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं व्यक्ना ॥ शर्व्वम्मतस्न्नाभ्यामीशानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्ग्रन्देवम्वनिष्ठुना व्वशिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ ॐ भू० सर्वाय० सर्वं० ॥ १० ॥ दाक्षिणे ॥ ॐ उग्ग्रं ल्लोहितेन० ॥ ॐ भू० पशुपतये० पशुपतिमा० ॥ ११ ॥ नैऋत्याम् ॥ ॐ तमीशानं० ॥ ॐ भू० ईशानाय० ईशानं० ॥ १२ ॥ पश्चिमे ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽ-इषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ भू० रुद्राय नमः रुद्रमा० ॥ १३ ॥ वायव्यां० ॥ ॐ उग्रश्च भीमश्च० ॥ ॐ भू० उग्राय० उग्रं० ॥ १४ ॥ उत्तरे ॥ ॐ व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात् ॥ तमेव व्विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था व्विद्यतेयनाय ॥ ॐ भू० भीमाय नमः भीममा० ॥ १५ ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ मानो महान्तमुतमानोऽ अर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमान ऽउक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमा-तरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥ ॐ भू० महते० महान्तं० ॥ १६ ॥ तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण ॥ पूर्वे ॥ ॐ स्योना पृथिविनो० ॥ ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तं० ॥ १७ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ देहि मे ददामि ते निमे धेहि निते दधे ॥ निहारञ्च हरासि मे निहारन्निहराणि ते स्वाहा ॥ ॐ भू० वासुकये नमः वासुकिं० ॥ १८ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो म०
॥७२॥ नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ ॐ भू० तक्षकाय० तक्षकमा० ॥ १९ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ
पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधाकालकादार्व्वाघाटस्ते व्वनस्पतीनाङ्कृकवाकुः सावित्रीहठ०सो व्वातस्य नाक्रो
मकरः कुलीपयस्ते कूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः ॥ ॐ भू० कुलिशाय० कुलिशं० ॥ २० ॥ पश्चिमे ॥ ॐ सोमाय
कुलुङ्गऽ आरण्योजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रौष्टामायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वोन्न्यङ्कुः कक्कटस्ते नुमत्यै
प्प्रतिश्रुत्कायैचक्रवाकः ॥ ॐ भू० कर्कोटकाय० कर्कोटकं० ॥ २१ ॥ वायव्याम् ॥ ॐ अग्निर्ऋषिःपवमानःपाञ्चज-
न्न्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागयम् ॥ उपयामगृहीतोस्यग्ग्नयेत्वाव्वर्च्चसऽएषतेयोनिरग्ग्नयेत्वाव्वर्च्चसे ॥ ॐ
शङ्खपालाय० शङ्खपालं० ॥ २२ ॥ उत्तरे ॥ ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो व्वयन्ति ॥
अश्विना यज्ञठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्यन् ॥ ॐ भू० कम्बलाय० कम्बलमा० ॥ २३ ॥ ॥७२॥
ईशान्याम् ॥ ॐ अश्श्वस्तूपरोगोमृगस्तेप्प्राजापत्याःकृष्णग्ग्रीवाऽआग्ग्नेयोररराटेपुरस्तात्सारस्वतीमेष्ष्यधस्ता-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्न्वोराश्श्विनावधोरांमौबाह्वोः सौमापौष्णः श्यामोनाभ्यांᳩ सौर्य्ययामौश्श्वेतश्चंकृष्णश्चंपार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ-
लोमशसंक्थौसक्थ्योर्व्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्रायस्वपस्यायव्वेह द्वैष्णवो व्वांमनः ॥ ॐ भू० अश्वतराय०
अश्वतरं० ॥ २४ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो० ॥ ॐ भू० शूलाय०
शूलं० ॥ २५ ॥ इंद्राग्निमध्ये ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चं प्राणश्च
मुखांदग्निरंजायत ॥ ॐ भू० चन्द्रमौलिने नमः चन्द्रमौलिनमा० ॥ २६ ॥ अग्नियमयोर्मध्ये ॥ ॐ चन्द्रमाऽ
अप्स्वन्तरा सुपर्ण्णो धावते दिवि ॥ रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरुस्पृहᳩ० हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ॐ भू० चन्द्रमसे नमः
चन्द्रमसमा० ॥ २७ ॥ यमनिर्ऋतिमध्ये ॥ ॐ आशुः शिशानो० ॥ ॐ भू० वृषभध्वजाय० वृषभध्वजमा०
॥ २८ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ सुगावोदेवाःसदनाऽअकर्म्मयऽआजग्मेदᳩ० सवनञ्जुषाणाः ॥ भरमाणा-
व्वहमानाहवीᳩष्यस्मेधत्तव्वसवोव्वसूनिस्वाहा ॥ ॐ भू० त्रिलोचनाय० त्रिलोचनमा० ॥ २९ ॥ वरुण-
वायुमध्ये ॥ ॐ रुद्राः सᳩ० सृज्ज्य पृथिवीम्बृहतिः ज्ज्योतिःसमीधिरे ॥ तेषाम्भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥
१३ ॐ भू० शक्तिधराय० शक्तिधरमा० ॥ ३० ॥ वायुसोममध्ये ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजा० ॥ महेश्वराय० महेश्वरं० ॥ ३१ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोमेशानयोर्मध्ये ॥ ॐ यावाङ्कशामधुमत्याश्विनासूनृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ ॐ भू० शूलपाणये० शूलपाणिमा० ॥ ३२ ॥ इति लिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा कुर्यात् ॥ ततः सर्वतो वा लिंगतोभद्रोपरि मध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि स्वर्णमयीं प्रधानप्रतिमां पूर्ववदग्न्युत्तारणपूर्वकं स्थापयेत् ॥ आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ पूजितोऽसि मया देव कुर्वन्तु मम मङ्गलम् ॥ अस्य यज्ञस्य संसिद्ध्यै क्षमध्वमनयार्चया ॥ इति प्रधानपूजनम् ॥ ततोऽग्निस्थापनम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं अस्मिन्सनवग्रहमखसप्रासाद-सनन्दीश्वरशिवादिमूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये ॥ ततोऽहतवस्त्राच्छादिते ब्रह्मणोऽरणिप्रदानं कुर्यात् ॥ नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मानुष्ठानार्थं स्मार्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्येताम् ॥ इयमधरा ॥ इयमुत्तरा ॥ ततोयज्ञमानः तौ स्मार्ता ग्निसाधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण इदं चात्रं इदमोबलीं इदं नेत्रं इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण ततो यजमानः इमानि श्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णामि । पत्नी तु यजमानहस्तादधरारणिमंके निदधाति ॥ यजमानोऽप्यङ्के उत्तरारणिं निदधाति ॥ उभावप्यरण्योः पूजां कुरुतः ॥ युवाभ्यां अरणीभ्यां नमः इति सम्पूज्य ॥ ततः कुंडं वस्त्रेणाच्छाद्य मंथनं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ प्राग्ग्रीवामुत्तरलोमकृष्णाजिनं कम्बलोपरि आस्तीर्य तत्रो-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दग्ग्रामधरारणिं निधाय तत्पूर्वं उत्तरारणिं च ॥ अधरारण्यामुक्तप्रदेशे प्रमंथमूलं निधाय चात्राग्रे चोवलीमुदगग्रां च नेत्रेण चात्रं त्रिर्वेष्टयित्वा गाढं (दृढं) धृत्वा पश्चिमाभिमुखोपविष्टया पत्न्या मंथयेत् ॥ यावदग्नेरुत्पत्तिः ॥ पत्न्या मंथनासामर्थ्ये अन्ये ब्राह्मणाः शुचयो मथ्नन्ति ॥ एवं यजमानासामर्थ्ये अन्यो यंत्रं धारयति ॥ ततो जातमग्निं मृन्मये पात्रे शुष्कगोमयचूर्णं नारिकेलजटां च स्थापयित्वा तस्मिन्पात्रे अग्निमाहृत्य वेणुनलिकया प्रज्वालयेत् ॥ ततः कुंडे उपरि मेखलायां श्वेतवर्णं विष्णुं पूजयेत् ॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम् ॥ समूंढमस्य पांᳬसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥ १ ॥ ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् ॥ ॐ ब्रह्मंयज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचों व्वेनऽआंवः ॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअंस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च व्विवंः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ २ ॥ तत अधोमेखलायां कृष्णवर्णं नमस्ते रुद्रेति रुद्रं पूजयेत् ॥ ॐ नमंस्ते रुद्रमन्यवंऽ उतोतऽ इषंवे नमंः ॥ बाहुभ्यांमुत ते नमंः ॥ ॐ भू० रुद्राय नमः रुद्रमावा० ॥ ३ ॥ ॐ अम्बेऽ अम्बिके इति योन्यां रक्तवर्णां गौरीं पूजयेत् ॥ ॐ अम्बेऽ आम्बिकेऽम्बांलिके न मां नयति कश्चन ॥ ससंस्त्यश्वकः सुभंद्रिकां काम्पीलवासिनींम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ भू० गौर्य्यै नमः गौरीमावा० ॥ ४ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपाश्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ कंठं पूजयेत् ॥ ५ ॥ ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् ॥ तस्मै विशः समनमन्तपूर्व्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ ॐ भू० विश्वकर्म्मणे० विश्वकर्म्माणं० ॥ ६ ॥

## अथ पंचभूसंस्काराः ॥

दर्भैः परिसमुह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य ॥ गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य ॥ स्फ्येन खादिरस्रुवमूलेन वा उल्लिख्य ॥ उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यामृदमुद्धृत्य ॥ उदकेनाभ्युक्ष्य ॥ ॐ अग्निन्दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ऽ आसादयादिह ॥ ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽ अस्य ॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ ऽआविवेश ॥ ( अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ) इत्यग्निस्थापनम् ॥ ततः कुण्डात्प्रागुत्तरे वस्तुतः वायव्ये पूर्वोक्तकलशस्थापनविधिना शांतिकलशं संस्थाप्य तस्योपरि ब्रह्माणमभ्यर्च्य देवब्रह्मन्नेति प्रार्थनां कृत्वा ॥ ( एवं प्रतिकुंडेषु ॥७४॥

CC-0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वशाखोक्तमार्गेण कलशान्प्रतिष्ठापयेत् वा यजमानशाखोक्तेन प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथ मंडपस्येशानदिग्भागे ग्रहवेद्यां वस्त्रं प्रसार्य ग्रहाणां स्थापनम् ॥ तत्र क्रमः ॥ ईशाने मण्डलं कृत्वा ग्रहाणां स्थापनं ततः ॥ वृत्तमण्डलमादित्यं अर्द्धचन्द्रं निशाकरम् ॥ त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधश्च धनुषाकृतिम् ॥ गुरुमष्टदलं प्रोक्तं चतुष्कोणं च भार्गवम् ॥ नराकृतिं शनिं विन्द्याद्राहुं च मकराकृतिम् ॥ केतुं खड्ग-समं ज्ञेयं ग्रहमण्डलके शुभे ॥ प्रकारान्तरम् ॥ वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्त्रं निशाकरम् ॥ त्रिकोणं मङ्गलञ्चैव बुधं वै बाणसन्निभम् ॥ गुरवे पट्टिशाकारम्पश्चकोणम्भृगुस्तथा ॥ मन्दं च धनुषाकारं सूर्पाकारं तु राहवे ॥ केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु ॥ शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यौ उदङ्मुखौ ॥ प्रत्यङ्मुखौ शनीसोमौ शेषा दक्षिणतो मुखाः ॥ मध्ये तु भास्करं विंद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे ॥ दक्षिणे लोहितं विंद्याद्बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥ उत्तरेण गुरुं विंद्यात्पूर्वेणैव तु भार्गवम् ॥ पश्चिमे तु शनिं विन्द्याद्राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥ पश्चिमोत्तरतः केतुं इत्येषा ग्रहसंस्थितिः ॥ आदित्याभिमुखास्सर्वे साधिप्रत्यधिदेवताः ॥ अधिदेवतादक्षिणे वामे प्रत्यधिदेवताः ॥ अरुणौ सूर्यभौमौ च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥ हरिद्वर्णो बुधश्चैव पीतवर्णो गुरुस्तथा ॥ कृष्ण-वर्णौ शनीराहुकेतवस्तु तथैव च ॥ अथ सूर्याद्यावाहनम् ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्म-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० त्स्वैश्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ( जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ॥ प्र०
॥७९॥ तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ) ॐ भूः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳ
सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ
एषवोमी राजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणानाꣳ राजा ( दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ॥ ज्योत्स्नापतिं निशानाथं
सोममावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० सोमाय० सोमं० ॥ २ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥
अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ( धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजसमप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् )
ॐ भू० भौमाय० भौमं० ॥ ३ ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽ
अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ( प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ॥ सौम्यं सौम्यगुणोपेतं
बुधमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० बुधाय० बुधमा० ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतेऽ अतियदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ( देवानां च मुनीनाञ्च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ॥ वन्द्यभूतं त्रि-
लोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० बृहस्पतये० बृहस्पतिमा० ॥५॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः ॥७९॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनं सत्यमिन्द्रियं विपानंꣳ शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ( हिमकुन्द-
मृणालाभं दैत्यानाम्परमं गुरुम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० शुक्राय० शुक्रमा० ॥ ६ ॥
ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ ( नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्र-
जम् ॥ छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० शनैश्चराय० शनैश्चरमा० ॥ ७ ॥ ॐ कयानश्चित्रऽ
आभुवदूतीसदा वृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठया वृता ॥ ( अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भ-
सम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० राहवे० राहुमा० ॥ ८ ॥ ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽ अपेशसे ॥
समुषद्भिरजायथाः ॥ ( पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥ रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् )
ॐ भू० केतवे० केतुमा० ॥ अथाधिदेवताग्रहदक्षिणपार्श्वे स्थापनम् ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ( पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम् ॥ आवाहयामीश्वरन्तं
खट्वाङ्गवरधारिणम् ) ॐ भू० ईश्वराय० ईश्वरमा० ॥ १ ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्व्वलोकम्मऽ इषाण ॥ ( हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० उमायै० उमामा० ॥ २ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातन्तेऽ अर्वन् ॥ ( रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् ॥ षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥ ३ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि व्विष्णवेत्वा ( देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् ॥ चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥ ४ ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्व्योतिव्व्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः ॥ सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ( कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्महस्तं चतुर्मुखम् ॥ वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥ ५ ॥ ॐ सजोषाऽ इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब व्वृत्रहा शूर विद्वान् ॥ जहि शत्रूँरपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहि व्विश्वतो नः ॥ ( देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् ॥ वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० इन्द्राय०



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रमा० ॥ ६ ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ( धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम् ॥ रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० यमाय नमः यममावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽ उन्नयामि ॥ समापोऽ अद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ ( अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिनेदिने ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० कालाय० कालमा० ॥ ८ ॥ ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥ ( धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम् ॥ आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ) ॐ भू० चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तमा० ॥ ९ ॥

## अथ प्रत्यधिदेवताग्रहवामपार्श्वे स्थापनम् ।

ॐ अग्निन्दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँऽ आसादयादिह ॥ ( रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ॥ वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥ १ ॥ ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ ( आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकराः शुभाः ॥ औषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम् ) ॐ भू० अद्भ्यो नमः अपः आ० ॥ २ ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यच्छानः शर्म सप्रथाः (शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम् ॥ सर्वसस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्) ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमावा० ॥३॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाᳫंसुरे स्वाहा ॥ (शंखचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम् ॥ किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥४॥ ॐ इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽ एतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ (ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् ॥ वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमा० ॥५॥ ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः ॥ पूषासि घर्म्मायदीष्व ॥ (प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् ॥ नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० इन्द्राण्यै० इन्द्राणीमा० ॥ ६ ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यपितासावस्यपिताव्वयᳫं स्याम पतयो रयीणाᳫं स्वाहा ॥ (आवाहयाम्यहं देवं देवेशं च प्रजापतिम् ॥ अनेकव्रतकर्त्तारं सर्वेषाञ्च पितामहम् ) ॐ भू० प्रजापतये० प्रजापतिमा० ॥ ७ ॥ ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ (अनन्ताद्यान्महाकायान्नानामणिविराजितान् ॥ आवाहयाम्यहं सर्प्पान्फणान्सप्तक-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मण्डितान् ) ॐ भू० सर्पेभ्यो सर्पाना० ॥ ८ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽ आवः ॥ सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ( हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् ॥ आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ) ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥ ९ ॥ ततो विनायकादिपञ्चलोकपालदेवताः वास्तोष्पतिक्षेत्रपालसहिताः ग्रहाणामुत्तरे सूर्योत्तरे वा स्थापयेत् ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ( लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ॥ आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ) ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा० ॥ १ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ॥ ( पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ॥ नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥ २ ॥ ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥ ( आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम् ॥ सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ) ॐ भू० वायवे० वायुं० ॥ ३ ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ( अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यान्तरस्थितम् ॥ आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ) ॐ भू० आकाशाय० आकाशं० ॥ ४ ॥ ॐ यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तया यज्ञं मिंमिक्षताम् ॥ ( देवतानाञ्च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ ॥ आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ) ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ आवा० ॥ ५ ॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः ॥ यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥ ( वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरत प्रभुम् ॥ आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ) ॐ भू० वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिमा० ॥ ६ ॥ ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यम्वैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ ( भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् ॥ आवाहयेत्क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ) ॐ भू० क्षेत्राधिपतये० क्षेत्राधिपतिमा० ॥ ७ ॥

## अथ मण्डलाद्वाह्ये दशादिक्पालानावाहयेत् ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ( इन्द्रं सुरपतिं श्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् ॥ आवाहयेद्यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ) ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥ १ ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्राता तोकस्य





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते ॥ (त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥ २ ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ( महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० यमाय० यममा० ॥ ३ ॥ ॐ असुन्न्वंतमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ( सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् ॥ आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम् ) ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥ ४ ॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समानऽ आयुः प्रमोषीः ( शुद्धस्फटिकसङ्काशं जलेशं यादसाम्पतिम् ॥ आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ) ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ ५ ॥ ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्॥ वायोऽअस्मिन्सवनेमादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिःसदानः ( मनोजवं महातेजं सर्वान्तश्चारिणं शुभम् ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ) ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥ ६ ॥ ॐ वयर्ठ० सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ( आवाहयामि देवेशं धनदं



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० यक्षपूजितम् ॥ महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम् ) ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥ ७ ॥ ॐ तमीशानं म०
॥७९॥ जगतस्तस्थुषस्पतिंन्धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषानो यथा व्वेदसामसंद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः
स्वस्तये ( सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् ॥ आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ) ॐ भू०
ईशानाय० ईशानमा० ॥ ८ ॥ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसयोषाः ॥ यःशर्ठ० सतेस्तुवतेधायि-
पज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तुदेवाः ( पद्मयोनिं चतुर्मूर्त्तिं वेदगर्भं पितामहम् ॥ आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धि-
हेतवे ) पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ ९ ॥ ॐ स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेशनि ॥
यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः ( अनन्तं सर्वनागानामाधिपं विश्वरूपिणम् ॥ जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापया-
म्यहम् ) निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा० ॥ १० ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-
र्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामोँ३प्रतिष्ठ ॥ ( अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु
अस्यैः प्राणा क्षरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ) ॐ भू० सूर्यादिअनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः ॥७९॥
वरदाः भवन्तु ॥ ॐ सूर्यादिअनन्तदेवताभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यन्तो विप्राय मतिम् ॥ तेषां ७ विशि प्रियाणां वोहमिषमूर्जं ७ समग्रभमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ( ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ) ततो ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं असंख्याकरुद्रांश्चावाहयेत् ॥ ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधिभूम्याम् ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ असंख्याकरुद्रेभ्यो नमः असंख्याकरुद्रानावाहयामि ॥ इति सम्पूज्य ॥

## ( अथाग्नेय्यां वेद्यां योगिनीं पूजयेत )

वेद्युपरि वस्त्रं प्रसार्य पूर्वापरायता दक्षिणोत्तरायताश्च नव रेखाःकार्याः॥ एवं कृते चतुःषष्टिकोष्ठानि भवन्ति तस्योपरि त्रीणि त्रिकोणानि कृत्वा त्रिषु त्रिकोणेषु क्रमेण दाक्षिणत आरभ्योदगन्ता कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि महाकालीं महालक्ष्मीं महासरस्वतीं च पूजयेत् ॥ ततः चतुःषष्टिपदेषु प्रतिकोष्ठे चित्रविचित्रतण्डुलैः त्रिकोणं कृत्वा चतुःषष्टियोगिनीःप्रागन्ता उदगन्ता वा पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्मा सपत्नीकोहं अस्मिन्प्रतिष्ठाख्ये कर्माणि महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीपूजनपूर्वकदिव्यादि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चतुःषष्टियोगिनीनां स्थापनं पूजनं च करिष्ये ॥ ततो योगिनीविद्यो परि पूर्वतः उदग्गन्ता स्थापनविधिना त्रीन्क-
लशान्स्थापयेत् ॥ तस्योपरि अग्न्युत्तारणपूर्वकं स्वर्णमयीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रतिमां स्थापयेत् ॥
तत्र मंत्राः ॥ ॐअम्बेऽअम्बिके० । ( खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः शंखं संदधतीं करैस्त्रिन-
यनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं
मधुं कैटभम् ) ॐ भू० महाकाल्यै० महाकालीमा० ॥ १ ॥ तदुत्तरे ॥ ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्च० ॥ ( अक्षस्रक्परशुं
गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिंश्च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च
दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजास्थिताम् ) ॐ भू० महालक्ष्म्यै० महाल-
क्ष्मीं०॥२॥तदुत्तरे ॥ ॐपावकानः सरस्वती० । ( घंटाशूलहलानि शंखमुशले चक्रं धनुःसायकं हस्ताब्जैर्दधतीं
घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे
शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ) ॐ भू० महासरस्वत्यै० महासरस्वतीमा० ॥ ३ ॥ ततः चतुःषष्टियोगिनीः प्रागन्ता
वा आवाहयेत् तत्रावाहनमंत्राः ॥ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिंन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे व्वयम् ॥ पूषानोयथा-
व्वेदसामसंद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ( आवाहयामि तान्देवीन्दिव्यानाम्नेति विश्रुताम् ॥ यजमानहि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तार्थाय कोष्ठे चाद्ये प्रपूजयेत् ) ॐ भू० दिव्ययोगिन्यै० दिव्ययोगिनीमा० ॥ १ ॥ ॐ आब्रह्मन्न्ब्राह्मणो ब्ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्न्यः शूर इषव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामेनः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्च्यन्तान्जोगक्षेमो नः कल्प्पताम् ( आवाहयामि तांदेवीम्महाशब्देतीविश्रुताम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदां पूज्यां कोष्ठे चैव द्वितीयके ) ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनीमा० ॥ २ ॥ ॐ महाँ२ऽ इन्द्रो व्वज्ज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु ॥ हन्तु पाप्मानं य्योस्म्मान्द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा (आवाहयामि तांदेवीं सिद्धिपूर्वेति विश्रुताम् ॥ महासिद्धिकरांदेवीम्पूज्यां कोष्ठे तृतीयके) ॐ भू० सिद्धियोगिन्यै० सिद्धियोगिनीमा० ॥ ३ ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निर क्रमी दस दन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्च प्रयत्स्वः ॥ ( आवाहयामि तान्देवीम्माहेश्वरीति वा स्वयम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ) ॐ माहेश्वर्य्यै० माहेश्वरीं ॥ ४ ॥ ॐ आदित्यङ्गर्भ-

१ टि० गणेश्वरीति पाठान्तरम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्पयंसासमंङ्गिसहस्रस्यप्प्रतिमांव्विश्वरूपम् ॥ परिवृङ्ग्धिहरसामाभिमंधस्थाः शतायुषङ्कृणुहि चीयमानः (आवाहयामि तान्देवीम्प्रेताक्षीनामविश्रुताम् ॥ महाभयहरीन्देवीं पूजयेत्पञ्चमे दले) ॐ भू० प्रेताक्ष्यै० प्रेताक्षीमा० ॥ ५ ॥ ॐ स्वर्णघर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्ज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्य्यः स्वाहा (आवाहयामि तान्देवीं डाकिनीनामविश्रुताम् ॥ सर्वरोगहरान्देवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्) ॥ ॐ भू० डाकिन्यै नमः डाकिनीमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (आवाहयामि तान्देवीं कालीं किलवलप्रदाम् ॥ प्रसन्नां सर्वकाले च पूजयेत्सप्तमे दले) ॐ भू० काल्यै नमः कालीमावा० ॥ ७ ॥ ॐ भायैदार्व्वाहारम्प्रभायाऽ अग्न्येधम्ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्प्रकरितारꣳ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऋत्यैव्वधायोपमन्थितारम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम् (आवाहयामि तान्देवीङ्कालरात्रीतिविश्रुताम् ॥ सर्वदा सुखदान्देवीङ्कोष्ठे वाष्टमिते

१ टि० दाहिनीनामिति पाठान्तरम् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा ) ॐ भू० कालरात्र्यै नमः कालरात्रीमा० ॥ ८ ॥ इति प्रथमाष्टकपंक्तिः ॥ जिह्वा मे भद्रं व्वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामं ÷ ॥ मोदाः प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मे सहं ÷ ( आवाहयामि तान्देवीन्निशाकरीति विश्रुताम् ॥ यजमानहितार्थाय पूजयेत्प्रथमे दले ) ॐ भू० निशाकर्यै० निशाकरीमा० ॥ १ ॥ ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहावक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ( आवाहयामि तान्देवीं हुङ्कारीनामविश्रुताम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ) ॐ भू० हुङ्कार्यै० हुङ्कारीमा० ॥ २ ॥ ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे श्वमेधश्च मे पृथिवी च मेदितिश्च मेदितिश्च मे द्यौश्च मेङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ( आवाहयामि तान्देवीं सिद्धिवैतालिकां शुभाम् ॥ यज्ञसिद्धिकरान्देवीम्पूजयेत्तां तृतीयके ) ॐ भू० सिद्धिवैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकामा० ॥ ३ ॥ ॐ पूषन्तव व्व्रते व्वयन्न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोता-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रस्त्ऽइहस्म्मंसि ( आवाहयामि तान्देवीं ह्रींकारीनामविश्रुताम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ) ॐ
भू० ह्रींकार्य्यै नमः ह्रींकारीमा० ॥ ४ ॥ ॐ व्वेद्याव्वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम् ॥ यूपेनयूपऽआप्प्यते प्प्र-
णीतोऽआग्निरग्निना ( आवाहयामि तान्देवीं नामतो भूतडामराम् ॥ भूतरक्षाकरीन्देवीम्पूजयेत्पञ्चमे दले )
ॐ भू० भूतडामरायै० भूतडामरामा० ॥ ५ ॥ ॐ अयमग्निः सहस्रिणोव्वाजस्यशतिनस्प्पतिः ॥ मूर्द्धा-
कवीरयीणाम् ( आवाहयामि तान्देवीमूर्ध्वकेशीतिविश्रुताम् ॥ सर्वशत्रुविनाशाय षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू०
ऊर्ध्वकेश्यै नमः ऊर्ध्वकेशीमा० ॥ ६ ॥ ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ( आवाहयामि
तान्देवीम्विरूपाक्षीतिविश्रुताम् ॥ यजमानहितार्थाय पूजयेत्सप्तमे दले ) ॐ भू० विरूपाक्ष्यै० विरूपाक्षीमा०
॥ ७ ॥ ॐ समायसमसूमर्थव्वेभ्योवतोका ँ संव्वत्सराय पर्य्यायिणीम्परिवत्सरायाविंजातामिदावत्सरायातीत्वरी-
मिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं व्वत्सराय व्विजर्जरा ँ संव्वत्सराय पलिक्क्नीमृभुभ्योजिनसन्धर्ठ० साद्ध्येभ्यश्च्च-
र्म्मम्म्नम् ( आवाहयामि तान्देवीं शुष्काङ्गीं नामतः शुभाम् ॥ सर्वकार्य्यकरान्देवीङ्कोष्ठे चैव तथाष्टमे ) ॐ
भू० शुष्काङ्ग्यै० शुष्काङ्गीमा० ॥ ८ ॥ इति द्वितीयाष्टकपङ्क्तिः ॥ ॐ आसिंषमोऽअस्यादित्योऽअव्वन्नासित्रितो-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुह्येनव्व्रतेन ॥ असिसोमेनसमयाव्विपृक्तऽआहुस्तेत्रीणिदिविबन्धनानि (आवाहयामि तान्देवीं सुप्रीतान्नरभोजनीम् ॥ सुमुखे यजमानस्य पूजयेत्प्रथमे दले ) ॐ भू० नरभोजन्यै० नरभोजनीमा० ॥ १ ॥ ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि ॥ द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् (आवाहयामि तान्देवीम्फेत्कारीन्नामतो मताम् ॥ यज्ञे विघ्नहरा देवी पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ) ॐ भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीमा० ॥ २ ॥ ॐ अग्ने बृहन्नुषसा मूर्द्ध्वोऽअस्थान्निर्ज्जगन्वान्तमसो ज्ज्योतिषागात् ॥ अग्निर्भानुनारुशता स्वङ्गऽआजातो व्विश्वासद्मान्यप्राः (आवाहयामि तान्देवीम्वीरभद्रेति विश्रुताम् ॥ वीरभद्रकरीन्देवीम्पूजयेच्च तृतीयके ) ॐ भू० वीरभद्रायै० वीरभद्रामा० ॥ ३ ॥ ॐ भगप्प्रणेतर्भगसत्त्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः ॥ भगप्प्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्प्रन्नृभिर्न्नृवन्तः स्याम (आवाहयामि तान्देवीन्धूम्राक्षीन्धूम्रलोचनाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ) ॐ भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षीं० ॥ ४ ॥ ॐ सुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृते शिरो गायत्त्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥ स्तोमऽआत्त्माछन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषि नाम ॥ साम ते तनूर्व्वामदेव्व्यं य्यज्ञायज्ञियम्पुच्छान्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत (आवाहयामि तान्देवीं सुपूज्याङ्कलहप्रियाम् ॥ यज्ञदोषहरान्देवीम्पूजयेत्पञ्चमे दले )

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॐ भू० कलहप्रियायै० कलहप्रियामा० ॥ ५ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः म०
॥८३॥ स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त
पितरः पितरः शुन्धध्वम् ( आवाहयामि तान्देवीं राक्षसीं राक्षसप्रियाम् ॥ रक्षार्थं यजमानस्य षष्ठे कोष्ठे
प्रपूजयेत् ) ॐ भू० राक्षस्यै० राक्षसीं० ॥ ६ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽ
ऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ( आवाहयामि तान्देवीं रक्ताक्षीं
घोरपूर्वकाम् ॥ महाभयहरान्देवीम्पूजयेत्सप्तमे दले ) ॐ भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्ताक्षीमा० ॥७॥ ॐ व्वरुणः प्राविता
भुवन्मित्रो व्विश्वाभिरूतिभिः ॥ करतान्नः सुराधसः ( आवाहयामि तान्देवीम्विशालाक्षीति विश्रुताम् ॥
विशालां सर्वकार्येषु कोष्ठे चैव तथाष्टके ) ॐ भू० विशालाक्ष्यै० विशालाक्षीं० ॥ ८ ॥ इति तृतीयाष्टकपंक्तिः ॥
ॐ हꣳ० सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽ ऋतजाऽ
अद्रिजाऽ ऋतम्बृहत् ( आवाहयामि तान्देवीं कौमारीं चैव विश्रुताम् ॥ वरपुष्टिकरान्देवीम्पूजयेत्प्रथमे दले )
ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥ १ ॥ ॐ सुसन्दृशन्त्वा व्वयमघवन्वन्दिषीमहि ॥ प्रनूनम्पूर्णवन्धुरस्तुतो ॥८३॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्गासि वशाँ२ऽ अनुयोजान्विन्द्रते हरीं ( आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना चण्डीं च विश्रुताम् ॥ अभयां सर्वभक्तानाम्पूजयेद्वितये दले ) ॐ भू० चण्डयै० चण्डीमा० ॥ २ ॥ ॐ प्रतिपदासि प्प्रतिपदें त्वानुपदस्यनुपदें त्वा सम्पदासि सम्पदें त्वा तेजोसि तेजसे त्वा ( आवाहयामि तान्देवीं वाराहीनामविश्रुताम् ॥ पुत्रपौत्रसुखार्थाय पूजयेत्तान्तृतीयके ) ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ३ ॥ ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मादिन्तमः तन्देवेभ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेभ्योयेषाम्भागस्थस्वाहा ॥ ( आवाहयामि तान्देवीं मुण्डधारिणिविश्रुताम् ॥ सर्वशत्रुविनाशाय तुर्ये कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० मुण्डधारिण्यै० मुण्डधारिणीमा० ॥ ४ ॥ ॐ देवीर्द्वारोऽअश्विनाभिषजेन्द्रेसरस्वती ॥ प्राणन्नवीर्य्यन्नसिद्वारोदधुरिन्द्रियंव्वसुवनेव्वसुधेयस्यव्यन्तुयज ( आवाहयामि तान्देवीम्भैरवीम्भैरवप्रियाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूजयेत्पञ्चमे दले ) ॐ भू० भैरव्यै० भैरवीमा० ॥ ५ ॥ ॐ देवीजोष्ट्रीसरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्द्धयन् ॥ श्रोत्रन्नकर्ण्णयोर्य्यशोजोष्ट्रीभ्यान्दधुरिन्द्रियंव्वसुवनेव्वसुधेयस्यव्यन्तुयज ( आवाहयामि तान्देवीम्वीराम्वीरबलप्रदाम् ॥ वीरपुष्टिकरीन्देवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० वीरायै० वीरामा० ॥ ६ ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्ज्येन

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥८४॥ तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेभिषिञ्चामि ( आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना चैव भयङ्करीम् ॥ अभयां सर्वभक्तानां पूजयेत्सप्तमे दले ) ॐ भू० भयङ्कर्यै० भयङ्करीमा० ॥ ७ ॥ ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चसिदाशुषे ॥ उपोपेन्नुमघवन्भूयऽइन्नुतेदानन्देवस्यपृच्यते ॥ ( आवाहयामि तान्देवीम्वज्रणीम्वज्रधारिणीम् ॥ इन्द्रप्रियाम्महादेवीम्पूजयेदष्टमे दले ) ॐ भू० वज्रधारिण्यै० वज्रधारिणीमा० ॥ ८ ॥ इति चतुर्थाष्टकपङ्क्तिः ॥ ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः ( आवाहयामि तान्देवीङ्क्रोधानाम्नेतिविश्रुताम् ॥ वैरिणामुपरि क्रुद्धाम्पूजयेत्प्रथमे दले ) ॐ भू० क्रोधायै० क्रोधामा० ॥ १ ॥ ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वाव्वायवस्थदेवोवः सविताप्रार्प्पयतुश्श्रेष्ठतमायकर्म्मणऽआप्यायद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेनऽईशतमाघशᳬसो० सोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्य्यजमानस्यपशून्पाहि ( आवाहयामि तान्देवीन्दुर्मुखां सुमुखाप्रियाम् ॥ सर्वविघ्नहरां देवीम्पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ) ॐ भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखीमा० ॥ २ ॥ ॐ देवींद्यावापृथिवीमखस्यवामद्यशिरोराध्यासन्देवयजने पृथिव्याः ॥ मखायत्वामखस्यत्वा- ॥८४॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीर्ष्णो ( आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना वै प्रेतवाहिनीम् ॥ सर्वरोगहरान्देवीम्पूज्या कोष्ठे तृतीयके ) ॐ भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीं० ॥ ३ ॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ( आवाहयामि तान्देवीङ्कर्कां नाम नामतो मताम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ) ॐ भू० कर्कायै नमः कर्कामा० ॥ ४ ॥ ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु ( आवाहयामि तां देवींदीर्घलम्बोष्ठपूर्विकाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या सा पञ्चमे दले ) ॐ भू० दीर्घलम्बोष्ठ्यै० दीर्घलम्बोष्ठीमा० ॥ ५ ॥ ॐ अग्निश्चमे घर्म्मश्चमे० ( आवाहयामि तान्देवीम्मालिनीङ्गणशालिनीम् ॥ रूपलावण्यसंयुक्तां षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० मालिन्यै० मालिनीमा० ॥ ६ ॥ ॐ बह्वीनाम्पिताब्बहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्य ॥ इषुधिः सङ्काः पृतनाश्चसर्व्वाः पृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः ( आवाहयामि तान्देवीं योगिनीम्मन्त्रपूर्विकाम् ॥ सिद्ध्यर्थं मन्त्रबीजानाम्पूजयेत्सप्तमे दले ) ॐ भू० मन्त्रयोगिन्यै० मन्त्रयोगिनीमा० ॥ ७ ॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ( आवाहयामि तान्देवीं-

१५ कालाग्निमग्निमोहिनीम् ॥ सुखहर्षप्रदान्देवीम्पूज्या सा चाष्टमे दले ) ॐ भू० कालाग्निमोहिन्यै० कालाग्नि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोहिनीमा० ॥ ८ ॥ इति पञ्चमाष्टकपङ्क्तिः ॥ ॐ ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्वञ्चमे-नमित्रञ्चमेभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ( आवाहयामि तान्देवीम्मोहिनीम्विश्व-मोहिनीम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या तु प्रथमे दले ) ॐ भू० मोहिन्यै० मोहिनीमा० ॥ १ ॥ ॐ तेऽआचरन्तीस-मनेवयोषामातेवपुत्रम्बिभृतामुपस्थे ॥ अपशत्रून्विध्यताᳬसम्विदानेऽआर्त्नीऽइमेविष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥ ( आवाहयामि तान्देवीञ्चक्रानामेतिविश्श्रुताम् ॥ नित्यं शत्रुगणे चक्राम्पूजयेत्तां द्वितीयके ) ॐ भू० चक्रायै० चक्रामा० ॥ २ ॥ ॐ वेद्यावेदिः समाप्यतेवर्हिषावर्हिरिन्द्रियम् ॥ यूपेनयूपऽआप्यतेप्रणीतोऽअग्नि-रग्निना ( आवाहयामि तान्देवीङ्कुण्डलिनीनामतो मताम् ॥ शोभिते कुण्डले यस्या पूज्या कोष्ठे तृतीयके ) ॐ भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलिनीमा० ॥ ३ ॥ ॐ पावकानःसरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवति ॥ यज्ञम्वष्टुधियावसुः ( आवाहयामि तान्देवीम्वालुकां सूक्ष्मरूपिणीम् ॥ सुखदान्धनदान्देवीन्तुर्ये कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० वालुकायै० वालुकामा० ॥ ४ ॥ ॐ अस्कन्नमद्यदेवेभ्यऽआज्यᳬ सम्भ्रियासमङ्घ्रिणाव्विष्णोमात्वावक्रमिषंव्वसुमतीमग्ने-तेच्छायामुपस्थेषंव्विष्णोस्स्थानमसीतऽइन्द्रोव्वीर्य्यमकृणोदूर्द्ध्वोध्वरऽआस्थात् ॥ ( आवाहयामि तान्देवीङ्कौबेरी-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नामतो मताम् ॥ धनधान्यप्रदा देवी सम्पूज्या पञ्चमे दले ) ॐ भू० कौबेर्यै० कौबेरीमा० ॥ ५ ॥ ॐ तेऽआचरन्ती-समनेवयोषांमातेवपुत्रम्बिभृतासुपस्थे ॥ अपशत्रून्विन्ध्यताᳬं संविदानेऽआर्त्नीऽइमेव्विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ( आवाहयामि तान्देवीं यमदूतीति विश्रुताम् ॥ यजमानसुखार्थाय षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० यमदूत्यै० यमदूतीमा० ॥ ६ ॥ ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंयज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ( आवाहयामि तान्देवीं शुभाम्वापि करालिनीम् ॥ ऋत्विजां क्षेमकामाय पूजयेत्सप्तमे दले ) ॐ भू० करालिन्यै० करालिनी० ॥७॥ ॐ उपयाम गृहीतोसि सावित्रोसि चनोधाश्चनोधाऽअसि चनोमयिधेहि ॥ जिन्वयज्ञञ्जिन्वयज्ञपतिम्भगाय देवाय त्वा सवित्रे ( आवाहयामि तान्देवीङ्कौशिकीनामतो मताम् ॥ षष्ठिचत्वारिके स्थाने पूजयेदष्टमे दले ) ॐ भू० कौशिक्यै० कौशिकीमा० ॥ ८ ॥ इति षष्ठाष्टकपङ्क्तिः ॥ ॐ आप्यायस्व समेतुते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ ( आवाहयामि तान्देवीं यक्षिणीं यक्षवल्लभाम् ॥ अबलाञ्च महाकायाम्पूजयेत्प्रथमे दले ) ॐ भू० यक्षिण्यै० यक्षिणीमा० ॥ १ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽ उन्नयामि ॥ समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ( आवाहयामि तान्देवीम्पञ्चाशत्स्थानसंस्थिताम् ॥ भक्षिणीनाम या प्रोक्ता पूज्या कोष्ठे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० द्वितीयके ) ॐ भू० भक्षिण्यै० भक्षिणीमा० ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिव म०
॥८६॥ बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो
मुक्षीय मामुतः ॥ ( आवाहयामि तान्देवीङ्कौमारीङ्कामरूपिणीम् ॥ पुत्रकामसमृद्ध्यर्थं पूज्या कोष्ठे तृतीयके )
ॐ भू० कौमार्य्यै० कौमारीमा० ॥ ३ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥
इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्व्वलोकम्मऽ इषाण ॥ ( आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना या मन्त्रवाहिनी ॥
मन्त्राणि सकलार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ) ॐ भू० मन्त्रवाहिन्यै० मन्त्रवाहिनीमा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णोरराट-
मसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ व्वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ( आवाहयामि
तान्देवीम्विशालाम्विश्वतोमुखाम् ॥ उपरागाय विश्वेषां पूजयेत्पञ्चमे दले ) ॐ भू० विशालायै० विशालामा०
॥ ५ ॥ ॐ ब्राह्मणमद्यव्विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयठं सुधातुदक्षिणाम् ॥ अस्मद्राता देवत्रागच्छतप्प्रदा- ॥८६॥
तारमाविशत ( आवाहयामि तान्देवीङ्कार्मुकीनामविश्रुताम् ॥ उपरागाय विश्वेषां षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् )

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ भू० कार्मुक्यै० कार्मुकीमा० ॥ ६ ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ( आवाहयामि तान्देवीं व्याघ्रीनामेति विश्रुताम् ॥ यजमान-हितार्थाय पूजिता सप्तमे दले ) ॐ भू० व्याघ्र्यै नमः व्याघ्रीमावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽ एकादश च मऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽ एकविꣳशतिश्च मऽ एकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मऽ एकत्रिꣳशच्च मऽ एकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (आवाहयामि तान्देवीम्महा-पूर्वान्तु राक्षसीम् ॥ रक्षोभयहरान्देवीम्पूजयेदष्टमे दले ) ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीमा० ॥ ८ ॥ इति सप्तमाष्टकपङ्क्तिः ॥ ॐ प्रेताजयतानरऽ इन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु ॥ उग्रा वः सन्तु बाहवो नाधृष्या यथासथ

१ टि० या व्याघ्रं वा ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना या प्रेतभक्षिणी ॥ सर्वरोगहरान्देवीम्पूजयेत्प्रथमे दले ) ॐ भू० प्रेतभक्षिण्यै० प्रेतभक्षिणीमा० ॥ १ ॥ ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽ अधिभूम्याम् ॥ तेषांꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ( आवाहयामि तान्देवीन्धूर्जटां जटिलां सदा ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ) ॐ भू० धूर्जट्यै० धूर्जटीं० ॥ २ ॥ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रञ्चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥ स्तोमऽआत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम ॥ साम ते तनूर्व्वामदेव्व्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्त्मान्दिवं गच्छस्वःपत ( आवाहयामि तान्देवीम्विकटान्नामतो मताम् ॥ सर्वदोषेषु विकटा पूज्या कोष्ठे तृतीयके ) ॐ भू० विकटायै० विकटामा० ॥ ३ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ( आवाहयामि तान्देवीं षष्ठिस्थाने स्थितां शुभाम् ॥ घोररूपां महाकायां तूर्यकोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपामा० ॥ ४ ॥ ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्यशिरोराद्ध्यासन्देव-यजने पृथिव्व्याः ॥ मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ( आवाहयामि तान्देवीं सकपालिकपालिकाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूजयेत्पञ्चमे दले ) ॐ भू० कपालिकायै० कपालिकामा० ॥ ५ ॥ ॐ इदम्विष्णु० ( आवाहयामि



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तान्देवीं निकलासकलां शुभाम् ॥ सकलाभीष्टदां देवीं षष्ठकोष्ठे प्रपूजयेत् ) ॐ भू० निकलायै० निकलामा० ॥ ६ ॥
ॐ व्वृषणंऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषणंऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि व्वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा व्वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ( आवाहयामि तान्देवीममलाम्बलसंयुताम् ॥ यज्ञेस्मिन्निर्मलां स्थाप्या पूज्या सा सप्तमे दले ) ॐ भू० अमलायै० अमलामा० ॥ ७ ॥ ॐ भायैदार्व्वाहार-म्प्रभायाऽअग्न्येधम्व्रध्नस्यंव्विष्टपायाभिषेक्तारंव्वर्षिष्ठायनाकायपरिवेष्टारन्देवलोकायपेशितारम्मनुष्यलोकायप्प्र-करितारꣳ०सर्व्वेभ्योलोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यैव्वधायोपमन्थितारम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम् ॥ ( आवाहयामि तान्देवीं सर्वदा सर्वसिद्धिदाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठेऽष्टमे दले ) ॐ भू० सिद्धिप्रदायै० सिद्धिप्रदामा० ॥ ८ ॥ इति अष्टमाष्टकपंक्तिः ॥ ईशाने जयायै० जयां० ॥ पूर्वे विजयायै० विजयामा० ॥ आग्नेये अजितायै० अजितामा० ॥ दक्षिणे अपराजितायै० अपराजितामा० ॥ नैर्ऋत्ये क्षेमकर्त्र्यै० क्षेमकर्त्रीमा० ॥ पश्चिमे लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा० ॥ वायव्ये वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ उत्तरे पार्वत्यै० पार्वतीमा० ॥ ॐ मनोजूतिर्जुष-तामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ० समिमन्दधातु ॥ व्विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोꣳ प्प्रतिष्ठ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादिचतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ततः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ इति योगिनीपूजनं समाप्तम् ॥

## ( अथ अजरादिक्षेत्रपालपूजनम् । )

आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं सनवग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां ( विष्णवादि वा रामचन्द्रादिमूर्तीनां ) स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि अजरादिपावनपर्यन्तानां क्षेत्रपालानामावाहनं पूजनं च करिष्ये ॥ ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्याᳬरक्षाᳬस्यपहᳬस्यग्ने ॥ ताभ्याम्पतेम सुकृतामुलोकंय्यत्रऋषयोजग्मुः प्रथमजाःपुराणाः ( एह्येहि सर्वामररक्षक त्वं सः क्षेत्रपालः प्रथमो मतो यः ॥ तं क्षेत्ररक्षाकरमुख्यपूज्यं समाह्वये त्वाजरनामधेयम् ) ॐ भू० अजराय नमः अजरामावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ प्रथमावाᳬसरथिना सुवर्णादेवौ पश्यन्तौ भुवनानि व्विश्वा ॥ अपिप्प्रयश्चोदनावाम्मिमानाहोतारा ज्ज्योतिः प्रदिशादिशन्ता ( एह्येहि सद्व्यापितसर्वलोक व्यापश्चयं रक्षति जीवलोकम् ॥ सद्व्यापकाख्याय महाभुजाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० व्यापकाख्याय० व्यापकाख्यं० ॥ २ ॥ ॐ इन्द्रस्य व्वज्रोसि



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मित्त्राव्वरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्राशिषायुनज्मि ॥ अव्व्यथायै त्वा स्वधायै त्वा रिष्टोऽ अर्ज्जुनो मरुतां-
म्प्रसवेनजयापाम मनसा समिन्द्रियेण ( एह्येहि विघ्नान्हि विनाशय त्वं रक्षाङ्कुरुष्वाखिलभूतयेभ्यः ॥
सदीन्द्रचौराह्वयकाय तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० इन्द्रचौराय० इन्द्रचौरमा० ॥ ३ ॥
ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणं व्वज्रव्वाहुं व्वसिष्ठासोऽ अव्भ्यर्च्चन्त्यर्कैः ॥ सनस्तुतो व्वीरवद्धातुगोमद्यूयम्पात स्वस्तिभिः
सदा नः ( एह्येहि वृत्रासुरनाशनाय महाभयायासुरघातिने च ॥ सदिन्द्रमूर्ते स्फुरदाह्वयाय सत्क्षेत्रपालाधिपते
नमस्ते ) ॐ भू० इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्तिं० ॥ ४ ॥ ॐ उक्षा समुद्रोऽ अरुणः सुपर्ण्णः पूर्व्वस्य योनिम्पितुरा-
विवेश ॥ मद्ध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्म्मा व्विचक्रमे रजसस्प्पात्त्यन्तौ ( एह्येहि सर्व्वामरवंदितांघ्रे दैवीकृपा-
लोचनवर्द्धिताय ॥ कठोरशब्दाखिलभीतिकर्त्रे उक्षाभिधानाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० उक्षाभिधाय० उक्षाभि-
धमा० ॥ ५ ॥ ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा व्वयम् ॥ अग्निर्म्मा तस्मादेनसो व्विश्श्वान्मुञ्चत्वंहसः
( एह्येहि कूष्माण्ड महानुभाव रक्षोगणान्नाशय नाशय त्वम् ॥ क्षेत्रेशमार्य्यादिमहाभयेभ्यः त्रायस्व त्रायस्व
विभो नमस्ते ) ॐ भू० कूष्माण्डाय० कूष्माण्डमा० ॥ ६ ॥ ॐ सनऽइन्द्रायज्ज्यवे व्वरुणाय मरुद्भ्यः ॥ व्वरिवो-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० वित्परिस्रव ( एह्येहि विख्यातयशोधिपुञ्ज विवेकविद्याविनयाधिवास ॥ क्षेत्राधिपं विघ्नविनाशशीलं महानुभावं वरुणं म०
॥८९॥ प्रणौमि ) ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥७॥ ॐ ब्बाहू मे बलमिन्द्रियᳬहस्तौ मे कर्म्म व्वीर्य्यम् ॥ आत्मा क्षत्रमुरो
ममं ॥ (एह्येहि बौद्धादिमतापहारीन्हराशु वन्दीजनबन्धनानि ॥ तं बाहुकाख्यं बटुबुद्धिपुञ्जं क्षेत्राधिप त्वां भगवन्न-
मामि ) ॐ भू० बाहुकाख्याय० बाहुकाख्यं० ॥ ८ ॥ ॐ मुञ्चन्तुमाशपथ्याद्थोंव्वरुण्यादुत । अथोयमस्यपड्वी-
शात्सर्व्वस्म्माद्देवकिल्विषात् ( एह्येहि वैकुण्ठपदाब्जभृङ्ग विवेकविद्याविनयाम्बुराशे ॥ विमुक्तसंज्ञाय वराय
तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० विमुक्ताय० विमुक्तमा० ॥ ९ ॥ ॐ कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजी-
विषेच्छतᳬसमाः ॥ एवन्त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ( एह्येहि लीलालय लिप्तकाय कस्तूरिकाच-
न्दनचर्चिताय ॥ लक्ष्मीपते लोलविलोचनाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥ ॐ
सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतोययोरोजसास्कभितारजांᳬसिव्वीर्य्येभिर्व्वीरत-
माशविष्ठा ॥ यापत्यैतेऽअप्रतीतासहोभिर्व्विष्णूऽअगन्वरुणापूर्व्वहूतौ ( एह्येहि लीलाकसुनामधेय लोकाधिना-
थैरभिपूजितस्त्वम् ॥ लूतादिविस्फोटकभीतिहंत्रे लीलाकसंज्ञाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० लीलालोकाय० लीलालोक- ॥८९॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मा० ॥ ११ ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ( एह्येहि दीर्घास्य कठोरनेत्रत्रयेण विद्रावितभूतजाल ॥ महोग्रदंष्ट्राविकरालधाम्ने सदैकदंष्ट्राय नमो नमस्ते ) ॐ भू० एकदंष्ट्राय० एकदंष्ट्रमा० ॥ १२ ॥ ॐ अश्वेभ्योहस्तिपञ्चवायाश्वयम्पुष्ट्यैगोपालंव्वीर्य्यायाविपालन्तेजसेजपालमिरायैकीनाशङ्कीलालायसुराकारम्भद्द्रायगृहपथश्रेयसेवित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ( एह्येहि शक्रस्य सुवाहनाय चतुर्महादन्तविराजिताय ॥ ऐरावताख्याय रिपुप्रहर्त्रे सत्क्षेत्रपालाय नमो नमस्ते) ॐ भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यं० ॥१३॥ ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मनैनुबभ्रूणामहठं०शतंधामानिसप्तच ( एह्येह्यनाचाररतान्हराशु त्वामोषधीघ्नं प्रणमामि सिद्ध्यै ॥ सदौषधीवीर्यहराय तस्मै महौषधीघ्नाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० ओषधीघ्नाय० ओषधीघ्नं० ॥ १४ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ( एह्येहि विद्याधर बुद्धिदातः सद्बाणवाणासनहस्तयुग्मः ॥ करालदोर्दण्डविद्याधतारिन्तं बन्धनाख्यं प्रणतोऽ हमस्मि । ) ॐ भू० बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यं० ॥ १५ ॥ ॐ देवसवितःप्रसुव यज्ञम्प्रसुव यज्ञपतिम्भगाय ॥ दिव्व्यो गन्धर्व्वः केतपूःकेतन्नः पुनातु व्वाचस्पतिर्व्वाचन्नः स्वदतु ( एह्येहि दीर्घास्य

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कठोरनेत्र दोर्दण्डसंत्रासितदैत्यवृन्द ॥ मम दुःखदारिद्र्यविनाशनाय आदिव्यकायाय नमो नमस्ते ) ॐ भू०
दिव्यकायाय० दिव्यकायं० ॥ १६ ॥ ॐ सीसेनतन्त्रम्मनसामनीषिणंऽऊर्णासूत्रेणंकवयोंव्वयन्ति ॥ अश्विनांय-
ज्ञर्ठ० संवितासरस्वतीन्द्रस्यरूपंव्वरुणोभिषज्ज्यन् ( एह्येहि कस्तूरिविलिप्तकाय दोर्दण्डाविद्रावितकोटिदैत्य ॥
काश्मीरशत्कंबलशोभिताय शत्कंबलाख्याय नमो नमस्ते ) ॐ भू० कंबलाख्याय० कम्बलाख्यं० ॥ १७ ॥ ॐ
आशुःशिशानो व्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतर्ठ० सेनाऽ
अजयत्साकमिन्द्रः ( एह्येहि शूराधिपगीतकीर्ते संक्षोभय त्वं विघ्नान्हि शीघ्रम् ॥ क्षुद्रारिपुञ्जक्षयकाय तस्मै
संक्षोभणाख्याय नमो नमस्ते ) ॐ भू० क्षोभणाख्याय० क्षोभणाख्यं० ॥ १८ ॥ ॐ इमर्ठ० साहस्रर्ठ० शतधार
मुत्सं व्व्यच्च्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये ॥ घृतन्दुहानामदितिञ्जनायाग्ग्ने मा हिर्ठ०सीः परमेव्व्योमन् ॥ गवयमार-
ण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्न्वो निषीद ॥ गवयन्ते शुगृच्छतु यन्द्विष्ष्मस्तन्ते शु गृच्छतु ( स्वरावविद्रा-
वितसर्वभूत कांतारनानापशुपालकाय ॥ गोतुल्यरूपाय गरिष्ठधाम्ने क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० गवे०
गवां० ॥ १९ ॥ ॐ कुम्भो व्वनिष्ठुर्ज्जनिताशचीभिर्य्यस्मिन्नग्ग्रेयोन्न्याङ्गर्भोऽअन्तः ॥ प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽ-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्सौंदुहेनकुम्भीस्वधाम्पितृभ्यं ॥ ( घोरारवाघर्घरितस्वराय घोरास्यदंष्ट्राय करालधाम्ने ॥ क्षेत्राधिनाथाय घंटा-
भिधाय महानुभावाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० घंटाभिधाय० घंटाभिधमा० ॥२०॥ ॐ आक्रन्दयबलमोजोनऽआधा-
निष्टनिहिदुरितावाधमानः ॥ अपंप्रोथदुन्दुभेदुच्छुनांऽइतऽइन्द्रस्यमुष्टिरसिवीडयस्व (एह्येहि पाथोनिधिमन्दिराय
विशालनेत्राय वरिष्ठधाम्ने ॥ नागाधिनाथाय विरोधहन्त्रे व्यालाभिधानाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० व्यालाय० व्या-
लमा० ॥ २१ ॥ ॐ इन्द्रायाहितूतुंजानऽउपब्रह्माणिहरिवः ॥ सुतेदधिष्वनश्चनः ॥ ( एह्येहि वीराधिपबान्दितांघ्रे
सूक्ष्मातिसूक्ष्मस्वकरूपधर्त्रे ॥ अरिष्टहर्त्रे परमाणुनाम्ने ह्यणुस्वरूपाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० अणुस्वरूपाय० अणु-
स्वरूपमा० ॥ २२ ॥ ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरासुपर्णोधावतेदिवि ॥ रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरुस्पृहंहरिरेतिकनिक्रदत्
( प्रचण्डभुजदण्डाय ह्यतिक्रान्तेन्दुकान्तये ॥ चन्द्रवारुणसंज्ञाय क्षेत्राधिपतये नमः ) ॐ भू० चन्द्रवारुणाय०
चन्द्रवारुणमा० ॥ २३ ॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनङ्घोषायभषमन्तायबहुवादिनमनन्तायमूकं० शब्दायादुम्बरा
घातम्महसेवीणावादङ्क्रोशायतूणवध्मवरस्परायशङ्खध्मंवनायवनपमन्यतोरण्यायदावपम्(फेत्कारविद्रावित-
१६ सर्वभूतं पापघ्नकायं हनुउग्रदेहम् ॥ देवं फटाटोपसुनामधेयं क्षेत्राधिनाथं शिरसा नमामि ) ॐ भू०

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० फटाटोपाय० फटाटोपमा० ॥ २४ ॥ ॐ उग्ग्रँ लोहितेन मित्त्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्प्रक्रीडेन मरुतो म०
॥९१॥ बलेन साद्ध्यान्प्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यक्कृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः
पुरीतत् ( स्फुरज्जटाजूटविराजिताय जाड्यान्धकाराय शरीरधाम्ने ॥ जगज्जनानन्दकराय तस्मै जटालसंज्ञाय
नमो नमस्ते ) ॐ भू० जटालाय० जटालमा० ॥ २५ ॥ ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीद्यत् ॥ अग्ग्ने
क्रत्वाक्रतूँ१रनु ( कृपाकटाक्षयुक्ताय कर्णकुण्डलशोभिने ॥ कुठारपाणये क्षेत्रस्वामिने क्रतवे नमः ) ॐ भू०
क्रतवे० क्रतुं० ॥ २६ ॥ ॐ आजिघ्रकलशं० ( घंटारवध्वस्तदिगन्तभीतिघोरास्यसंदर्घरितस्वरं च ॥ घण्टेश्वरं
पापविनाशकत्वं क्षेत्राधिनाथं भगवन्तमीडे ) ॐ भू० घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरमा० ॥ २७ ॥ ॐ व्वायो
शुक्रोऽ अयामि ते मद्ध्वोऽअग्ग्रन्दिविष्टिषु ॥ आयाहि सोमपीतये स्प्पार्हो देवनियुत्वता ॥ ( एह्येहि वीरेन्द्र
सुबान्दितांघ्रे विख्यातनाम्ने विततोग्रधाम्ने ॥ वामप्रियायाथ विनोदकर्त्रे विटंकसंज्ञाय नमो नमस्ते ) ॐ भू०
विटंकाय० विटंकमा० ॥ २८ ॥ ॐ दैव्व्याहोताराऽऊर्द्ध्वमद्ध्वरन्नोग्ग्नेर्ज्जिह्वामभिगृणीतम् ॥ कृणुतन्नः स्विष्टिम्
( एह्येहि नानामणिसंयुताय मारीगणाक्षाय मनोहराय ॥ मुनीन्द्रवन्द्याय च मोहहर्त्रे नमोस्तु तस्मै मणिमन्दिराय ) ॥९१॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ भू० मणिमतये० मणिमतिमा० ॥ २९ ॥ ॐ त्रीणितऽआहुर्द्दिविबन्धनानित्रीण्यप्सुत्रीण्यन्तः समुद्रे ॥ उतेवम्मेव्वरुणश्छन्त्स्यर्व्वन्यत्रातऽआहुः परमञ्जनित्रम् ( एह्येहि गौरीप्रियकारिकाय गणेश विघ्नौघविनाशकारिन् ॥ गानप्रियायाथ गुहाग्रहाय गणौघबन्धाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० गणबन्धाय० गणबन्धमा० ॥ ३० ॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनङ्घोषायभषमन्तायबहुवादिनमनन्तायमूकठं०शब्दायादुम्बराघातम्महसेव्वीणावादङ्क्रोशाय तूणवध्ममवरस्थरायशंखध्मंव्वनायव्वनपमन्यतोरण्यायदावयम् ॥ ( प्रचण्डकोदण्डलसत्कराय करालरूपाय कुमारकाय ॥ कादम्बरीपानरताय तस्मै सत्डामराख्याय नमो नमस्ते ) ॐ भू० डामराय० डामर० ॥ ३१ ॥ ॐ शुद्धबालःसर्व्वशुद्धबालोमणिबालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥ ( एह्येहि ढंकारचक्रप्रियाय भयापहाराय निवाशिने च ॥ कुमारमित्राय विराजिताय सद्ढुण्ढिकर्णाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० ढुण्ढिकर्णाय० ढुण्ढिकर्णमा० ॥ ३२ ॥ व्वनस्पतेव्वीड्वङ्गोहिभूयाऽअस्मत्सखाप्प्रतरणःसुवीरः ॥ गोभिः सन्नद्धोऽअसिव्वीडयस्वास्थातातेजयतुजेत्वानि ( स्वस्थानसंस्थाय सुवेषकाय सुरारिहंत्रे च गरिष्ठधाम्ने ॥ नेत्रार्चिषा दीपितवासधाम्ने नमो नमस्ते स्थविराभिधाय ) ॐ भू० स्थविराय०

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थविरमा० ॥ ३३ ॥ सुपर्णव्वस्तेमृगोऽअस्यादन्तोगोभिः सन्नद्धापततिप्प्रसूता ॥ यत्रानरः सञ्चव्विचद्द्वन्तितत्रा-
स्म्मब्भ्यामिषवः शर्म्मंयर्ठ०सन् ( विशालदंष्ट्राविकरालरूपं दन्तप्रभालुन्नमहान्धकार ॥ दारिद्र्यकान्तारसुधूमकेतो
नमोस्तु ते दन्तुरनामधेयम् ) ॐ भू० दन्तुराय० दन्तुरमा० ॥ ३४ ॥ ॐ अग्ग्नेऽअच्छाव्वदेहनः प्प्रतिनः
सुमनाभव ॥ प्रनोयच्छसहस्रजित्वर्ठ०हिधनदाऽअसिस्वाहा ( एह्येहि धर्मात्मजतुल्यरूप धराधिनाथस्तुतविक्रम
प्रभो ॥ धनप्रदायाथ धुरन्धराय धनेशसंज्ञाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥ ३५ ॥ ॐ
भद्रंकर्णेभिः शृणु० ॥ ( एह्येहि नानाविधविक्रमस्त्वं सुरेन्द्रनागाधिपगीतकीर्ते ॥ नारायणाख्यानरताय
तस्मै संनागकर्णाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥ ३६ ॥ ॐ बाहूमेबलमिन्द्रियर्ठ०
हस्तौमेकर्म्मव्वीर्य्यम् ॥ आत्क्माक्षत्रमुरोमम ( एह्येहि मारीगणनाशनाय मुनिप्रबन्धाय मनोहराय ॥
दुःखप्रहर्त्रे च खलौघहर्त्रे महाभुजायाथ नमो नमस्ते ) ॐ भू० मारीगणाय० मारीगणमा० ॥ ३७ ॥ ॐ
अपाम्फेनेन नमुचेः शिरऽ इन्द्रोदवर्त्तयः ॥ व्विश्वायदजयस्पृधः ( एह्येहि फेत्कार महानुभाव दारिद्र्यदुःखौ-
घविनाशकारिन् ॥ येनप्रभायप्रभवे सुराणां फेत्कारसंज्ञाय नमो नमस्ते ) ॐ फेत्काराय० फेत्कारमा० ॥ ३८ ॥

CC-0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ इदᳬहविः प्रजननम्मेऽअस्तुदशव्वीरᳬसर्व्वगणᳬस्वस्तये ॥ आत्मसनिप्रजासनिंपशुसनिंलोकसन्न्य-
भयसनिं ॥ अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरेतोऽ अस्म्मासुधत्त ( एह्येहि चातुर्थ्यसमुद्रमूर्त्ते चञ्चत्करास्फा-
लनशोभिताङ्ग ॥ सुतप्तकार्तस्वरभास्वराङ्ग तं चीकराख्यम्भगवन्तमीडे ) ॐ भू० चीकराय० चीकरमा० ॥ ३९ ॥
ॐ षाव्व्याग्घ्रंव्विषूचिकोभौव्वृकञ्चरक्षति ॥ श्येनम्पतत्रिणᳬसिᳬहᳬसेमम्पात्वᳬहसः ( सिंहाकृतिं
तिग्मकरालदंष्ट्रं नखायुधं भीतिकरं गजानाम् ॥ नागेन्द्रनीराजितपादपद्मं क्षेत्राधिपं सिंहवरं नमामि ) ॐ भू०
सिंहाकृतये० सिंहाकृतिमा० ॥ ४० ॥ ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽ आजगन्थापरस्याः ॥ सृकᳬ
सᳬशायपविमिन्द्रतिग्मंव्विशत्रून्ताढिव्विमृधोनुदस्व ( एह्येहि मारीगणनाशनाय महेशपादार्चनतत्पराय ॥
मदप्रमत्तौघमदप्रहर्त्रे मृगाभिधानाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥ ४१ ॥ ॐ इन्दुर्दक्षःश्येनऽऋता-
वाहिरण्यपक्षः शकुनोभुरण्युः ॥ महान्त्सधस्त्थेध्रुवऽआनिषत्तोऽनमस्तेऽअस्तुमामाहिᳬसीः ( एह्येहि पाथोधि-
विलासकर्त्रे रुद्राक्षमालाविलसद्गलाय ॥ यक्षप्रभामण्डितभूतलाय यक्ष्माभिधानाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० यक्ष्म-
प्रियाय० यक्ष्मप्रियमा० ॥ ४२ ॥ ॐ जीमूतस्येव भवतिप्रतीकंय्वद्वर्म्मीयातिं समदामुपस्थे ॥ अनाविद्धयातन्न्वा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥९३॥ जयत्वर्ठ० सत्वाव्वर्म्मणोमहिमापिपर्त्तु ( एह्येहि कारुण्यसुधासमुद्र स्वकीयभासा हतचन्द्रकान्ते ॥ मेघाख्यकं-
वाहननामधेयं क्षेत्राधिनाथप्रवरं नमामि ) ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥ ४३ ॥ ॐ तीव्रान्घोषांन्क्कृ-
ण्वतेव्वृषपाणयोश्श्वारथेंभिःसहव्वाजयंन्तः ॥ अवक्रामन्तःप्प्रपदैरमित्रांन्क्षिणन्तिशत्रूँ १ रनपव्व्ययन्तः(एह्येहि
तीक्ष्णोष्ठ्र महानुभाव जयाप्रसूत प्रतिमोग्रतेजः ॥ नानाविभूषारुचिराय तस्मै तीक्ष्णोष्ठ्रसंज्ञाय नमो नमस्ते )
ॐ भू० तीक्ष्णोष्ठ्राय० तीक्ष्णोष्ठ्रमा० ॥ ४४ ॥ ॐ व्वायुष्ट्वांपचतैरंवत्वासितग्ग्रीवश्श्छागैर्न्यग्ग्रोधंश्चमसैः शल्मलि-
र्व्वृद्ध्यां ॥ एषस्यरात्थ्योव्वृषापड्भिश्चतुर्ब्भिरेदगन्ब्रह्माकृष्णश्चनोवतुनमोग्नये ( एह्येहि रातिव्रजनाशनाय खड्गोग्र-
धाराक्षतदुर्जनाय ॥ अग्निस्वरूपाय गुणैकधाम्नेऽनलाभिधानाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० अनलाय० अनलं० ॥ ४५ ॥
ॐ अदित्यास्त्वापृष्ठेसादयाम्म्यन्तरिक्षस्यधर्त्रींव्विष्टम्भनीन्दिशामधिपत्नीम्भुवनानाम् ॥ ऊर्म्मिर्द्रप्सोऽअपामसि
व्विश्श्वकर्म्मातऽऋषिरश्विनाध्वर्य्यूसादयतामिहत्वा ( एह्येहि कोटीन्दुसमप्रभाय शुद्धाम्बराकल्पविराजिताय ॥
शरीरसामर्थ्ययुताय तस्मै तच्छुक्लतुण्डाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० शुक्लतुण्डाय० शुक्लतुण्डं० ॥ ४६ ॥ ॐ द्यौस्ते
पृथिव्व्यन्तरिक्षंव्वायुश्छिद्रंपृणातुते ॥ सूर्य्यस्तेनक्षत्रैः सहलोकङ्कृणोतुसाधुया ( एह्येहि सुधालाप संसारभय- ॥९३॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हारक ॥ सुखप्रदाय भक्तानां क्षेत्रपालाय ते नमः ) ॐ भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षं० ॥ ४७ ॥ ॐ सम्बर्हिरं-क्ताᳬं हविषाघृतेनसमादित्यैर्व्वसुभिः सम्मरुद्भिः ॥ समिन्द्रोव्विश्वेदेवेभिरक्तान्दिव्यन्नभोगच्छतुयत्स्वाहा ( एह्येहि बन्दीगणबन्धमोचनं बुद्धिप्रदं बाहुबलप्रकाशम् ॥ बोधप्रदं वर्वरकाभिधानं क्षेत्राधिनाथं शिरसा नमामि ) ॐ भू० वर्वरकाय० वर्वरकं० ॥ ४८ ॥ ॐ पवमानः सोऽअद्यनः पवित्रेणव्विचर्षणिः ॥ यः पोतासपुनातुमा ( एह्येहि राकापतितुल्यवक्त्रः स्वएवसम्पूरितदिक्तटाय ॥ पूतात्मने सत्यवनाभिधाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ) ॐ भू० पावनाय नमः पावनमावाहयामि ॥ ४९ ॥ ॐ मनोजूति० इति अजरादिपावनान्ताः क्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ॐ अजरादिपावनान्तक्षेत्रपालेभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥ नव कोष्ठानि कृत्वा मध्ये कोष्ठे पावनं पूजयेत् ॥ दिक्षु विदिक्षु अष्टसु कोष्ठेषु पञ्चकोणं कृत्वा मध्ये वृत्तं पूर्वादिक्रमेण अजरादिस्थापनं मध्ये पावनमिति क्रमः ॥ इति क्षेत्रपालपूजनं समाप्तम् ॥

## अथ कुशकण्डिकाप्रारम्भः ।

अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् ( परिस्तरणम् )

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् ( पात्रासादनम् ) अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि त्रीणि पवित्रे द्वे प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली चरुस्थाली सम्मार्जनकुशाः पञ्च उपयमनकुशाः सप्त समिधस्तिस्रः स्रुक् स्रुवः आज्यम् तण्डुलाः पूर्णपात्रम् उपकल्पनीयानि द्रव्याणि तत्रैव निधाय ( पवित्रकरणम् ) द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छित्त्वा द्वौ ग्राह्यौ त्रिः त्याज्यः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् । प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणम् दक्षिणहस्तेन त्रिरुद्दिंगनम् ॥ प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थाल्यादिप्रोक्षणम् असञ्चरदेशे धारयेत् आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकतण्डुलप्रक्षेपः अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मा आज्यमधिश्रयति चरुं स्वयं आज्यस्योत्तरतः श्रपयेत् ॥ ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम् ॥ इतरथावृत्तिः ॥ अर्द्धश्रिते चरौ स्रुक्स्रुवं प्रतप्य सम्मार्गकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मार्ज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य संमार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः पुनः प्रतप्य अग्नेर्दक्षिणतो निधाय आज्यमग्नेरवतार्य चरुपूर्वेणानीय प्रणीतापश्चिमतो निधाय चरोरुद्वास्याग्नेरुत्तरतरे वाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतः निधाय आज्योत्पवनम् आज्यावेक्ष्य अपद्रव्यतन्निरसनम् पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् ॥९४॥ आज्यमग्नेः पश्चिमतो निधाय उपयमनकुशान्वामहस्तेनादाय तिष्ठन्समिधोभ्याधाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तूष्णीं घृताक्तसमिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत् ॥ उपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय दक्षिणजान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्राघारादारभ्य तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ इत्याज्यभागौ ॥ हस्ते जलाक्षतं गृहीत्वा ॥ इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यः मया परित्यक्तानि न मम यथादैवतानि संतु ॥

## अथ ग्रहादिहोमः ।

तत्र तावत् गणपतये ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ॥ इदं गणपतये न मम ॥ ॐ अम्बेऽम्बिके० स्वाहा ॥ इदं अम्बिकायै न मम ॥ ततो ग्रहादित्रिमध्वक्तसमित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा० स्वाहा ॥ इदं सूर्य्याय० ॥ १ ॥ ॐ इमन्देवा० स्वाहा ॥ इदं

---

टि० १ ततो गणपतये प्रथमाहुतिर्दद्यात् ॥ तथा च हेमाद्रौ–गणाधिपतये देया अम्बिकायै घृताहुतिः ॥ अन्यथा विफलं कर्म भवतीह न संशयः ॥ २ ग्रहसमिधः–अर्कः पलाशः खदिरः अपामार्गोऽथ पिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाः कुशाश्च समिधो नव ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० चन्द्रमसे० ॥ २ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा० स्वाहा ॥ इदं भौमाय० ॥ ३ ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० स्वाहा ॥ इदं बुधाय० ॥ ४ ॥ म०
॥९५॥ ॐ बृहस्पते० स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये० ॥ ५ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो० स्वाहा ॥ इदं शुक्राय० ॥ ६ ॥ ॐ शन्नोदेवी० स्वाहा ॥ इदं शनैश्चराय० ॥ ७ ॥ ॐ कयानश्चित्र० स्वाहा ॥ इदं राहवे० ॥ ८ ॥ ॐ केतुं कृण्वन्ति० स्वाहा ॥ इदं केतवे० ॥ ९ ॥ इति नवग्रहाणां होमः ॥ अथाधिदेवताहोमः ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० स्वाहा ॥ इदमीश्वराय० ॥ १० ॥ ॐ श्रीश्चते० स्वाहा ॥ इदं उमायै० ॥ ११ ॥ ॐ यदक्रन्दः० स्वाहा ॥ इदं स्कन्दाय० ॥ १२ ॥ ॐ विष्णोरराट० स्वाहा ॥ इदं विष्णवे० ॥ १३ ॥ ॐ सजोषा इन्द्र० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय० ॥ १४ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं० स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥ १५ ॥ ॐ यमायत्वाङ्गिर० स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥ १६ ॥ ॐ कार्षिरसि० स्वाहा ॥ इदं कालाय ॥१७॥ ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥ इदं चित्रगुप्ताय० ॥१८॥ अथ प्रत्यधिदेवताहोमः ॥ ॐ अग्निन्दूतं० स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥१९॥ ॐ आपोहिष्ठा० स्वाहा ॥ इदमद्भ्यो० ॥२०॥ ॐ स्योनापृथिवि० स्वाहा ॥ इदं पृथिव्यै० ॥ २१ ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० स्वाहा ॥ इदं विष्णवे० ॥ २२ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्र० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय ॥२३॥ ॐ अदित्यै रास्ना० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राण्यै० ॥२४॥ ॐ प्रजापतये० स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये० ॥ २५ ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० स्वाहा ॥ इदं सर्पेभ्यो० ॥ २६ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं० स्वाहा ॥ ॥९५॥
इदं ब्रह्मणे० ॥ २७ ॥ अथ पञ्चलोकपालहोमः ॥ ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ॥ इदं गणपतये० ॥ २८ ॥ ॐ अम्बेऽ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अम्बिके० स्वाहा ॥ इदं अम्बिकायै० ॥ २९ ॥ ॐ वायोयेते० स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥ ३० ॥ ॐ घृतं घृतपावानः० स्वाहा ॥ इदमाकाशाय० ॥ ३१ ॥ ॐ यावाङ्कशा० स्वाहा ॥ इदमश्विभ्यां० ॥ ३२ ॥ ॐ वास्तोष्पते० स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये ॥ ३३ ॥ ॐ नहिस्पसम० स्वाहा ॥ इदं क्षेत्रपालाय० ॥ ३४ ॥ अथ दशदिक्पालहोमः ॥ ॐ त्रातारमिन्द्र० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय० ॥ ३५ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ३६ ॥ ॐ यमायत्वा० स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥ ३७ ॥ ॐ अशुन्वन्तम० स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये० ॥ ३८ ॥ ॐ तत्त्वायामि० स्वाहा ॥ इदं वरुणाय० ॥ ३९ ॥ ॐ आनो नियुद्भिः० स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥ ४० ॥ ॐ वयठं०सोम० स्वाहा ॥ इदं सोमाय० ॥ ४१ ॥ ॐ तमीशानं० स्वाहा ॥ इदमीशानाय० ॥ ४२ ॥ ॐ अस्मेरुद्रा० स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥ ४३ ॥ ॐ स्योनापृथिवि० स्वाहा ॥ इदं अनन्ताय० ॥ ४४ ॥

## अथ वास्तुमंडलहवनं नाममंत्रेण वा वेदोक्तमंत्रेण तत्र नाममंत्राः ।

ॐ शिखिने स्वाहा ॥ इदं शिखिने० ॥ १ ॥ ॐ पर्जन्याय स्वाहा ॥ इदं पर्जन्याय० ॥ २ ॥ ॐ जयन्ताय स्वाहा ॥ इदं जयन्ताय० ॥ ३ ॥ ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा ॥ इदं कुलिशायुधाय० ॥ ४ ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ इदं सूर्याय० ॥ ५ ॥ ॐ सत्याय स्वाहा ॥ इदं सत्याय० ॥ ६ ॥ ॐ भृशाय स्वाहा ॥ इदं भृशाय० ॥ ७ ॥ ॐ आका-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शाय स्वाहा ॥ इदं आकाशाय० ॥ ८ ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥९॥ ॐ पूष्णे स्वाहा ॥ इदं पूष्णे ॥१०॥
ॐ वितथाय स्वाहा ॥ इदं वितथाय० ॥ ११ ॥ ॐ गृहक्षताय स्वाहा ॥ इदं गृहक्षताय० ॥ १२ ॥ ॐ यमाय
स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥ १३ ॥ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ इदं गन्धर्वाय० ॥ १४ ॥ ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा ॥ इदं
भृङ्गराजाय० ॥ १५ ॥ ॐ मृगाय स्वाहा ॥ इदं मृगाय० ॥ १६ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वाहा ॥ इदं पितृभ्यो० ॥ १७ ॥
ॐ दौवारिकाय स्वाहा ॥ इदं दौवारिकाय० ॥ १८ ॥ ॐ सुग्रीवाय स्वाहा ॥ इदं सुग्रीवाय ॥ १९ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय
स्वाहा ॥ इदं पुष्पदन्ताय० ॥ २० ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ इदं वरुणाय० ॥ २१ ॥ ॐ असुराय स्वाहा ॥ इदं
असुराय० ॥ २२ ॥ ॐ शेषाय स्वाहा ॥ इदं शेषाय० ॥ २३ ॥ ॐ पापाय स्वाहा ॥ इदं पापाय० ॥ २४ ॥ ॐ
रोगाय स्वाहा ॥ इदं रोगाय० ॥ २५ ॥ ॐ सर्पाय स्वाहा ॥ इदं सर्पाय० ॥ २६ ॥ ॐ मुख्याय स्वाहा ॥ इदं
मुख्याय० ॥ २७ ॥ ॐ भल्लाटाय स्वाहा ॥ इदं भल्लाटाय० ॥ २८ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय० ॥ २९ ॥
ॐ सर्प्पेभ्यः स्वाहा ॥ इदं सर्प्पेभ्यो० ॥ ३० ॥ ॐ अदितये स्वाहा ॥ इदमदितये० ॥ ३१ ॥ ॐ दितये स्वाहा ॥
इदं दितये० ॥ ३२ ॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भ्यो० ॥ ३३ ॥ ॐ सावित्राय स्वाहा ॥ इदं सावित्राय० ॥ ३४ ॥
ॐ जयाय स्वाहा ॥ इदं जयाय० ॥ ३५ ॥ ॐ रुद्राय स्वाहा ॥ इदं रुद्राय० ॥ ३६ ॥ ॐ अर्य्यम्णे स्वाहा ॥
इदं अर्य्यम्णे० ॥ ३७ ॥ ॐ सवित्रे स्वाहा ॥ इदं सवित्रे० ॥ ३८ ॥ ॐ विवस्वते स्वाहा ॥ इदं विवस्वते० ॥ ३९ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा ॥ इदं विबुधाधिपाय० ॥ ४० ॥ ॐ मित्राय स्वाहा ॥ इदं मित्राय० ॥ ४१ ॥ ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा ॥ इदं राजयक्ष्मणे० ॥ ४२ ॥ ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा ॥ इदं पृथ्वीधराय० ॥४३॥ ॐ आपवत्साय स्वाहा ॥ इदं आपवत्साय० ॥४४॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥४५॥ ॐ चरक्यै स्वाहा ॥ इदं चरक्यै० ॥४६॥ ॐ विदार्य्यै स्वाहा ॥ इदं विदार्य्यै० ॥ ४७ ॥ ॐ पूतनायै स्वाहा ॥ इदं पूतनायै० ॥ ४८ ॥ ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा ॥ इदं पापराक्षस्यै० ॥ ४९ ॥ ॐ स्कन्दाय स्वाहा ॥ इदं स्कन्दाय ॥ ५० ॥ ॐ अर्यम्णे स्वाहा ॥ इदं अर्यम्णे० ॥ ५१ ॥ ॐ जृम्भकाय स्वाहा ॥ इदं जृम्भकाय० ॥ ५२ ॥ ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा ॥ इदं पिलिपिच्छाय० ॥ ५३ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय० ॥ ५४ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ५५ ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥ ५६ ॥ ॐ निर्ऋतये स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये० ॥ ५७ ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ इदं वरुणय० ॥ ५८ ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे ॥ ५९ ॥ ॐ कुबेराय स्वाहा ॥ इदं कुबेराय० ॥ ६० ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ इदं ईशानाय० ॥ ६१ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥ ६२ ॥ ॐ अनन्ताय स्वाहा ॥ इदं अनन्ताय० ॥ ६३ ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः ॥ यत्त्वेमहे प्प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शश्वतुष्पदे स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये० ॥ १ ॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतरणोनऽ एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो ॥ अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शश्वतुष्पदे स्वाहा ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० इदं वास्तोष्पतये० ॥ २ ॥ ॐ वास्तोष्पते शग्मयासꣳ सदाते सक्षीमहिरण्यया गातुमत्या ॥ पाहि क्षेमऽ उत म०
॥९७॥ योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये० ॥ ३ ॥ ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा-
रूपाण्याविशन् ॥ सखासुशेवऽएधि नः स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये० ॥ ४ ॥ सप्तविंशतिप्रतिमन्त्राहुतिकृते
अष्टोत्तरशतं भवति ॥ ततः पञ्च बिल्वाहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणाꣳ सत्रꣳ
सोम्यानाद्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा शन्नो भव द्विपदे शश्चतुष्पदे स्वाहा ॥ इदं वास्तो-
ष्पतये० ॥ ५ ॥ इति वास्तुहोमः ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु
रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा ॥ ६ ॥ इत्यघोराहुतिः ॥ १०८ ॥

## अथ योगिनीहोमः ।

दिव्ययोगिन्यै स्वाहा ॥ इदं दिव्ययोगिन्यै० ॥ १ ॥ ॐ महायोगिन्यै स्वाहा ॥ इदं महा० ॥ २ ॥ ॐ
सिद्धयोगिन्यै स्वाहा ॥ इदं सिद्धयोगि० ॥ ३ ॥ ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा ॥ इदं माहेश्वर्यै० ॥ ४ ॥ ॐ प्रेताक्ष्यै स्वाहा ॥
इदं प्रेताक्ष्यै० ॥ ५ ॥ ॐ डाकिन्यै स्वाहा ॥ इदं डाकिन्यै० ॥ ६ ॥ ॐ काल्यै स्वाहा ॥ इदं काल्यै० ॥ ७ ॥ ॐ
कालरात्र्यै स्वाहा इदं कालरात्र्यै० ॥ ८ ॥ ॐ निशाकर्यै स्वाहा ॥ इदं निशाकर्यै० ॥ ९ ॥ ॐ हुंकार्यै स्वाहा ॥ ॥९७॥
इदं हुंकार्यै० ॥१०॥ ॐ सिद्धिवेताल्यै स्वाहा ॥ इदं सिद्धिवेताल्यै० ॥११॥ ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा ॥ इदं ह्रींकार्यै ॥ १२॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ भूतडामर्यै स्वाहा ॥ इदं भूतडामर्यै० ॥ १३ ॥ ॐ ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा ॥ इदं ऊर्ध्वकेश्यै० ॥ १४ ॥ ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा ॥ इदं विरूपाक्ष्यै० ॥ १५ ॥ ॐ शुष्कांग्यै स्वाहा ॥ इदं शुष्कांग्यै० ॥ १६ ॥ ॐ नरभोजनायै स्वाहा ॥ इदं नरभोजनायै० ॥१७॥ ॐ फूत्कार्यै स्वाहा ॥ इदं फूत्कार्य्यै० ॥१८॥ ॐ वीरभद्रायै स्वाहा ॥ इदं वीरभद्रायै० ॥१९॥ ॐ धूम्राक्ष्यै स्वाहा ॥ इदं धूम्राक्ष्यै० ॥ २० ॥ ॐ कलहप्रियायै स्वाहा ॥ इदं कलहप्रियायै० ॥ २१ ॥ ॐ राक्षस्यै स्वाहा ॥ इदं राक्षस्यै० ॥ २२ ॥ ॐ घोररक्ताक्ष्यै स्वाहा ॥ इदं घोररक्ताक्ष्यै० ॥ २३ ॥ ॐ विशालाक्ष्यै स्वाहा ॥ इदं विशालाक्ष्यै० ॥ २४ ॥ ॐ कौमार्यै स्वाहा ॥ इदं कौमार्यै० ॥ २५ ॥ ॐ चण्डयै स्वाहा ॥ इदं चण्डयै० ॥ २६ ॥ ॐ वाराह्यै स्वाहा ॥ इदं वाराह्यै० ॥ २७ ॥ ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा ॥ इदं मुंडधारिण्यै० ॥ २८ ॥ ॐ भैरव्यै स्वाहा ॥ इदं भैरव्यै० ॥ २९ ॥ ॐ वीरायै स्वाहा ॥ इदं वीरायै० ॥३०॥ ॐ भयङ्कर्यै स्वाहा ॥ इदं भयङ्कर्यै० ॥ ३१ ॥ ॐ वज्रधारिण्यै स्वाहा ॥ इदं वज्रधारिण्यै० ॥ ३२ ॥ ॐ क्रोधायै स्वाहा ॥ इदं क्रोधायै० ॥ ३३ ॥ ॐ दुर्मुख्यै स्वाहा ॥ इदं दुर्मुख्यै० ॥ ३४ ॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा ॥ इदं प्रेतवाहिन्यै० ॥ ३५ ॥ ॐ कर्कायै स्वाहा ॥ इदं कर्कायै० ॥३६॥ ॐ दीर्घलम्बोष्ठयै स्वाहा ॥ इदं दीर्घलम्बोष्ठयै० ॥३७॥ ॐ मालिन्यै स्वाहा ॥ इदं मालिन्यै० ॥३८॥ ॐ मंत्रयोगिन्यै स्वाहा ॥ इदं मंत्रयोगिन्यै० ॥ ३९ ॥ ॐ कालाग्न्यै स्वाहा ॥ इदं कालाग्न्यै० ॥ ४० ॥ ॐ मोहिन्यै स्वाहा ॥ इदं मोहिन्यै० ॥ ४१ ॥ ॐ चक्रायै स्वाहा ॥ इदं चक्रायै० ॥ ४२ ॥ ॐ कुण्डलिन्यै स्वाहा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इदं कुण्डलिन्यै० ॥ ४३ ॥ ॐ बालुकायै स्वाहा ॥ इदं बालुकायै० ॥४४॥ ॐ कौबेर्य्यै स्वाहा ॥ इदं कौबेर्य्यै० ॥४५॥ ॐ यमदूत्यै स्वाहा ॥ इदं यमदूत्यै० ॥ ४६ ॥ ॐ करालिन्यै स्वाहा ॥ इदं करालिन्यै० ॥ ४७ ॥ ॐ कौशिकायै स्वाहा ॥ इदं कौशिकायै० ॥ ४८ ॥ ॐ यक्षिण्यै स्वाहा ॥ इदं यक्षिण्यै० ॥ ४९ ॥ ॐ भक्षिण्यै स्वाहा ॥ इदं भक्षिण्यै० ॥५०॥ ॐ कौमार्य्यै स्वाहा ॥ इदं कौमार्य्यै० ॥ ५१ ॥ ॐ मन्त्रवाहिन्यै स्वाहा ॥ इदं मंत्रवाहिन्यै० ॥५२॥ ॐ विशालायै स्वाहा ॥ इदं विशालायै० ॥ ५३ ॥ ॐ कार्मुक्यै स्वाहा ॥ इदं कार्मुक्यै० ॥ ५४ ॥ ॐ व्याग्घ्यै स्वाहा ॥ इदं व्याग्घ्यै० ॥ ५५ ॥ ॐ महाराक्षस्यै स्वाहा ॥ इदं महाराक्षस्यै० ॥ ५६ ॥ ॐ प्रेतभक्षिण्यै स्वाहा ॥ इदं प्रेतभक्षिण्यै० ॥ ५७ ॥ ॐ धूर्जट्यै स्वाहा ॥ इदं धूर्जट्यै० ॥ ५८ ॥ ॐ विकटायै स्वाहा ॥ इदं विकटायै० ॥५९॥ ॐ घोररूपायै स्वाहा ॥ इदं घोररूपायै० ॥ ६० ॥ ॐ कपालिकायै स्वाहा ॥ इदं कपालिकायै० ॥ ६१ ॥ ॐ निकलायै स्वाहा ॥ इदं निकलायै ॥ ६२ ॥ ॐ अमलायै स्वाहा ॥ इदं अमलायै० ॥ ६३ ॥ ॐ सिद्धिप्रदायै स्वाहा ॥ इदं सिद्धिप्रदायै० ॥ ६४ ॥ इति नाममंत्रेण वा वेदोक्तमंत्रेण पूर्वोक्तरीत्या कुर्यात् ॥

## अथ क्षेत्रपालानां नाममंत्रेण वेदोक्तमंत्रेण वा होमः ।

ॐ अजराय स्वाहा ॥ इदं अजराय० ॥ १ ॥ ॐ व्यापकाय स्वाहा ॥ इदं व्यापकाय० ॥ २॥ ॐ इन्द्रचौराय

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वाहा ॥ इदं इन्द्रचौराय० ॥ ३ ॥ ॐ इन्द्रमूर्त्तये स्वाहा ॥ इदं इन्द्रमूर्तये० ॥ ४ ॥ ॐ उक्षाभिधाय स्वाहा ॥ इदं उक्षाभिधाय० ॥ ५ ॥ ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा ॥ इदं कूष्माण्डाय० ॥ ६ ॥ ॐ वारुणाय स्वाहा ॥ इदं वारुणाय० ॥ ७ ॥ ॐ बाहुकाख्याय स्वाहा ॥ इदं बाहुकाख्याय० ॥ ८ ॥ ॐ विमुक्ताय स्वाहा ॥ इदं विमुक्ताय० ॥ ९ ॥ ॐ लिप्तकाय स्वाहा ॥ इदं लिप्तकाय० ॥ १० ॥ ॐ लीलाकाय स्वाहा ॥ इदं लीलाकाय० ॥ ११ ॥ ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा ॥ इदं एकदंष्ट्राय० ॥ १२ ॥ ॐ ऐरावताख्याय स्वाहा ॥ इदं ऐरावताख्याय० ॥ १३ ॥ ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा ॥ इदं ओषधीघ्नाय० ॥ १४ ॥ ॐ बन्धनाख्याय स्वाहा ॥ इदं बन्धनाख्याय० ॥ १५ ॥ ॐ दिव्यकायाय स्वाहा ॥ इदं दिव्यकायाय० ॥ १६ ॥ ॐ कम्बलाख्याय स्वाहा ॥ इदं कम्बलाख्याय० ॥ १७ ॥ ॐ क्षोभणाय स्वाहा ॥ इदं क्षोभणाय० ॥ १८ ॥ ॐ गवये स्वाहा ॥ इदं गवये० ॥ १९ ॥ ॐ घंटाभिधाय स्वाहा ॥ इदं घंटाभिधाय० ॥ २० ॥ ॐ व्यालाय स्वाहा ॥ इदं व्यालाय० ॥ २१ ॥ ॐ अणुस्वरूपाय स्वाहा ॥ इदं अणुस्वरूपाय० ॥ २२ ॥ ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा ॥ इदं चन्द्रवारुणाय० ॥ २३ ॥ ॐ फटाटोपाय स्वाहा ॥ इदं फटाटोपाय० ॥ २४ ॥ ॐ जटालाय स्वाहा ॥ इदं जटालाय० ॥ २५ ॥ ॐ क्रतवे स्वाहा ॥ इदं क्रतवे० ॥ २६ ॥ ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा ॥ इदं घण्टेश्वराय० ॥ २७ ॥ ॐ विटंकाय स्वाहा ॥ इदं विटंकाय० ॥ २८ ॥ ॐ मणिमतये स्वाहा ॥ इदं मणिमतये० ॥ २९ ॥ ॐ गणबन्धाय स्वाहा ॥ इदं गणबन्धाय० ॥ ३० ॥ ॐ डामराय स्वाहा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० इदं डामराय० ॥३१॥ ढुण्ढिकर्णाय स्वाहा ॥ इदं ढुण्ढिकर्णाय० ॥३२॥ ॐ स्थविराय स्वाहा ॥ इदं स्थविराय० ॥३३॥ म०
॥९९॥ ॐ दन्तुराय स्वाहा ॥ इदं दन्तुराय० ॥ ३४ ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥ इदं धनदाय० ॥३५॥ ॐ नागकर्णाय स्वाहा ॥ इदं नागकर्णाय० ॥ ३६ ॥ ॐ मारीगणाय स्वाहा ॥ इदं मारीगणाय० ॥ ३७ ॥ ॐ फेत्काराय स्वाहा ॥ इदं फेत्काराय० ॥ ३८ ॥ ॐ चीकराय स्वाहा ॥ इदं चीकराय० ॥ ३९ ॥ ॐ सिंहाकृतये स्वाहा ॥ इदं सिंहाकृतये० ॥ ४० ॥ ॐ मृगाय स्वाहा ॥ इदं मृगाय० ॥ ४१ ॥ ॐ यक्ष्मप्रियाय स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मप्रियाय० ॥ ४२ ॥ ॐ मेघवाहनाय स्वाहा ॥ इदं मेघवाहनाय० ॥ ४३ ॥ ॐ तीक्ष्णोष्ट्राय स्वाहा ॥ इदं तीक्ष्णोष्ट्राय० ॥ ४४ ॥ ॐ अनलाय स्वाहा ॥ इदं अनलाय० ॥ ४५ ॥ ॐ शुक्लतुण्डाय स्वाहा ॥ इदं शुक्लतुण्डाय० ॥ ४६ ॥ ॐ अन्तारिक्षाय स्वाहा ॥ इदमन्तरिक्षाय० ॥ ४७ ॥ ॐ वर्वरकाय स्वाहा ॥ इदं वर्वरकाय० ॥ ४८ ॥ ॐ पावनाय स्वाहा ॥ इदं पावनाय० ॥ ४९ ॥ इति क्षेत्रपालहोमः ॥

## अथ प्रधानहोमः ।

( शिवस्य ) ॐ नमः॑ शम्भवाय॑ च मयोभवाय॑ च नमः॑ शङ्कराय॑ च मयस्कराय॑ च नमः॑ शिवाय॑ च शिवतराय च स्वाहा ॥ १०८ ॥ इदं शिवाय० । ( विष्णोः ) ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य ॥९९॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाꣳसुरे स्वाहा ॥ १०८ ॥ इदं विष्णवे० ॥ ( सूर्यस्य ) ॐ आकृष्णे० स्वाहा ॥ १०८ ॥ इदं सूर्याय० ॥ ( गणपतेः ) ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ॥ १०८ ॥ ( देव्यास्तु ) अम्बेऽअम्बिके० स्वाहा ॥ १०८ ॥ ( वृषभध्वजस्य ) ॐ आशुः शिशान० स्वाहा ॥ १०८ ॥ ( गरुडस्य ) ॐ सुपर्णोसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद ॥ भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसादिशऽ उद्दृꣳह स्वाहा ॥ १०८ ॥ इदं गरुडाय० ॥ वा नाममंत्रेण प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ इति प्रधानहोमः ॥

## अथ कर्मकुटीकर्म ।

तत्राचार्यो यजमान ऋत्विक्सुवासिनीसहितस्तूर्यघोषेण शिल्पिशालां गत्वा देवस्याग्रे कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य मनोजूतिरिति प्रतिष्ठां कृत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तद्यथा ॥ काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी ॥ शालिग्रामः सगोकर्णः नर्मदा च सरस्वती ॥ १ ॥ गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ॥ वृषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा ॥ २ ॥ आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी ॥ नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥ ३ ॥ आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ॥ प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥ ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरजू गण्डकी तथा ॥ ४ ॥ एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः ॥ तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥ ५ ॥ इति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीर्थान्यावाह्य सम्पूज्य ततः कुम्भस्य चतुर्दिक्षु विदिक्षु च इन्द्राय नमः अग्नये नमः यमाय नमः निर्ऋतये नमः वरुणाय नमः वायवे नमः कुबेराय नमः ईशानाय नमः इत्यष्टलोकपालान्गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ ततः प्रतिमादिषु न्यूनातिरिक्तपाषाणदोषोपशमनार्थं प्रतिमायोग्यं स्थण्डिलं कृत्वा पञ्चभूसंस्कारांश्च कृत्वा तत्राग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं प्रतिमानिर्माणे प्राणिवधादि-दोषनिरासार्थं दुर्निमित्तोपशमनाय घृतेन तिलैर्वा देवनाममंत्रेण होमं करिष्ये ॥ ततो ब्रह्मोपवेशनादिआघारावाज्य-भागौ हुत्वा देवमंत्रेणाज्याहुतिशतद्वयं तिलैर्वा हुत्वा ॥ तत्र मंत्राः ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्तेऽअन्य-ऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतें ब्रवीमिमानं॑ प्रजाᳫंरीरिषोमोतव्वीरान्स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॥ १०८ ॥ पूजास्विष्टं नवाहुत्यं पूर्णाहुतिं च हुत्वा देवं प्रार्थयेत् ॥ त्वयि सम्पूजयामीशं नारायणमनामयम् ॥ हरितः सर्वदोषैस्त्वं ऋद्धियुक्तो सदा भव ॥ इति प्रार्थ्य ॥ प्रतिमां कुशैः संमार्ज्य मध्वाज्याभ्यंगेन देवस्य व्रण-भंगः कार्यः ॥ ततो मृदा गोमयगोमूत्रभस्मना क्षीरेण च पृथक् पृथक् शुद्धोदकसहितेन स्नात्वा गंधादिभिः सम्पूज्य सुवर्णपात्रे रजतपात्रे वा मधुसर्पिषी कृत्वा सुवर्णशलाकया नेत्रे आपूर्य नेत्रावरणं कृत्वा ॥ स्थापित-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुम्भोदकेन शिल्पिदेवं संस्नाप्य यजमानाय दापयेत् ॥ ततो यजमानः शिल्पिवर्गं वस्त्रालङ्कारादिभिः सन्तोष्य प्रतिमां गृहीत्वा आचार्यं प्रार्थयेत् ॥ भो गुरो प्रतिमां सावयवां निरीक्षस्व ॥ आचार्यो हि प्रतिमां सावयवां निरीक्षेत् ॥ ततो देवस्य दक्षिणहस्ते सितोर्णादिसूत्रं आचार्यवितस्तिमात्रं दोरकं मूलमंत्रेण बध्नीयात् ॥

## अथ जलाधिवासः ।

तत आचार्यः ऋत्विग्भिः सह शंखतूर्यादिवेदध्वनिसुवासिनीभिः मंगलगीतैः शिल्पिस्थानात्सवस्त्रां प्रतिमां रथे आरोपयति ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ रथे तिष्ठन्नयति व्वाजिनंः पुरो यत्र यत्र कामयंते सुखारथिः ॥ अभीशूनां महिमानं पनायत मनंः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयंः ॥ इति मंत्रेण रथे आरोप्य शनैः शनैः जलाधिवासस्थाने गच्छेत् ॥ ततो जलसमीपे मूर्त्तिमवस्थाप्य तस्याग्रे पुण्याहवाचनं कृत्वा ॥ ततो जले पंचगव्यं प्रक्षिप्य देवं मूलमंत्रेण जलेऽधिवासयेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य सग्रहमखसप्रासादसनन्दीश्वरशिवादिमूर्तीनां अचलप्रतिष्ठाकर्मणि गणेशपूजनपूर्वकं जलमातृजीवमातृयोगिनीक्षेत्रपालजलवरुणपूजनं च करिष्ये ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ॐ भू० गणपतये नमः इति सम्पूज्य ॥ सिद्धिबुद्धिसहिताय गणाधीशाय इदं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ अथ जलमातॄः जले पूजयेत् ॥ ॐ मत्स्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ कच्छप्यै० ॥ २ ॥ ॐ कूर्म्यै० ॥ ३ ॥ ॐ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० वाराह्यै० ॥ ४ ॥ ॐ दर्दुर्य्यै० ॥ ५ ॥ ॐ शिशुमार्य्यै० ॥ ६ ॥ ॐ ईश्वर्य्यै० ॥ ७ ॥ इति नाममंत्रेण सम्पूज्य ॥ अथ मं०
॥१०१॥ जीवमातृः अक्षतपुंजेषु पूजयेत् ॥ ॐ मत्स्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ कूर्म्यै० ॥ २ ॥ ॐ गोधायै० ॥ ३ ॥ ॐ मकर्य्यै० ॥ ४ ॥
ॐ डुण्डुभ्यै० ॥ ५ ॥ ॐ दर्दुर्य्यै० ॥ ६ ॥ ॐ जल्यै० ॥ ७ ॥ इति सम्पूज्य ॥ ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः इति
जले योगिनीं पूजयेत् ॥ ततो वायव्यां क्षेत्रपालपूजनं अक्षतपुंजोपरि ॥ ॐक्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि ॥
मा त्वां हिᳫंसीन्मा मां हिᳫंसीः ॥ ॐ भू० क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य ॥ ततः सदीपदधिमाषभक्तबलिं
दद्यात् ॥ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबलपराक्रम ॥ क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृह्ण नमो नमः ॥ अथ जलपूजनम् ॥
अद्भ्यो नमः ॥ सप्तसागरेभ्यो नमः ॥ मानसादिसप्तसरोभ्यो नमः ॥ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः ॥ ॐ गंगादिमहा-
नदीभ्यो नमः ॥ इति गंधाक्षतान् जले क्षिपेत् ॥ ततो वरुणपूजा ॥ तत्त्वायामि० ॥ ॐ भू० वरुणाय नमः इति
सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततः पञ्चामृतं गृहीत्वा ॐ पञ्चनद्येति मंत्रेण जले क्षिपेत् ॥ जलस्थितं देवं प्रार्थ-
येत् ॥ जलाधिवासितो देव मम भाग्योदयं कुरु ॥ त्वदधिष्ठानसंयोग्यं त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर ॥ तत आचार्याय
सहिरण्यां गां दद्यात् ॥ मुहूर्तमात्रं जलेऽधिवासयेत् ॥ अथवा सप्तपञ्चत्रिरात्रं चैकरात्रं वा अधिवासयेत् ॥ ततो ॥१०१॥
घटिकाद्वयानन्तरं जलान्निष्कास्य ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽ इन्द्र-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घ्राशुर्भवासर्चा ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ॥ उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यमङ्गलं कुरु ॥ इति उत्थाप्य देवं महामण्डपप्रादक्षिण्येन यागमण्डपमानयेत् ॥ ततो यागमण्डपनैर्ऋत्यां देवमन्नाधिवासयेत् ॥ ततो भूमौ प्रशस्तधान्यं विकीर्य तस्योपरि वस्त्रं प्रसार्य ॐ धान्यमसि धेनुहि देवान्प्राणायत्वोदानायत्वाव्यानायत्वादीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥ इति देवं स्वापयेत् । देवोपरि वस्त्रमाच्छाद्य तस्योपरि प्रचुरधान्यं विकिरेत् गंधाक्षतकुशांश्च क्षिपेत् ॥ इति धान्याधिवासः ॥ अथ गुरुस्नानमण्डपे ॐ नमो नारायणायेति मंत्रेण पञ्चगव्येन वेदिकात्रयं च संप्रोक्ष्य ॥ तत्र दक्षिणवेदिकायामक्षतैः स्वस्तिकं रचयित्वा तस्योपरि भद्रपीठं निधाय ॥ प्रथमवेदिकायाः पश्चाद्द्वारिपूर्णान्सपल्लवान् षट् कलशान् क्रमेण मृत्तिका १ पञ्चपल्लववृक्षीयत्वक्कषाय २ गोमूत्र ३ गोमय ४ भस्म ५ गंधोदकैः ६ प्रपूर्य ॥ अपरान् ५ गंधजलेनापूर्योदक्संस्थं पंक्तिरूपेणासादयेत् ॥ तत्रांत्यः स्थपतिकलशः एवं १२ ॥ तदुत्तरमध्यवेदिपश्चिमे एकादश कलशाः ॥ क्रमेण पूर्ववन्मृत्तिकादि क्षिपेत् ॥ तदुत्तरतृतीयवेद्यास्तु परितोऽष्टौ कलशान्पूर्वादिक्रमेण ॥ क्षारोदक १ क्षीर २ दधि ३ सर्पिः ४ इक्षुरस ५ सुरा ६ स्वादुक ७ गर्भोदकयुतान् ८ ॥ हिरण्यगर्भाद्यैरष्टभिर्मंत्रैर्विन्यसेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥ १ ॥ उपयामगृहीतोसिप्प्रजापतये म०
॥१०२॥ त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिः सूर्य्यस्ते महिमा ॥ यस्तेहन्त्संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते व्वायावन्तरिक्षे
महिमा सम्बभूव यस्ते दिवि सूर्य्ये महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः
॥ २ ॥ यः प्प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ॥ यऽ ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा व्विधेम ॥ ३ ॥ उपयाम गृहीतोसि प्प्रजापतये त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ॥ यस्ते
रात्रौ संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते पृथिव्व्यामग्नौ महिमा सम्बभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा
सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ युञ्जन्ति ब्ब्रध्नमरुषञ्चरन्तम्परितस्थुषः ॥
रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ५ ॥ युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी व्विपक्षसा रथे ॥ शोणाधृष्णूनृवाहसा ॥ ६ ॥
यद्वातोऽ अपो अगनीगन्प्प्रियामिन्द्रस्य तन्न्वम् ॥ एतꣳ स्तोतरनेन पथा पुनरश्श्वमावर्त्तयासिनः ॥ ७ ॥
व्वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण च्छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन च्छन्दसादित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन ॥१०२॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

च्छन्दसा ॥ भूर्भुवः स्वर्लोंजी३ञ्छाची३न्यव्व्येगव्व्यंऽ एतदन्नमत्त देवाऽ एतदन्नं मद्धिप्रजापते ॥ ८ ॥ ततः तृतीयवेद्याः पश्चिमभागे दिक्कलशाः ॥ मृत्तिका १ गोमय २ गोमूत्र ३ भस्म ४ मिलितपंचगव्य ५ पंचसु क्रमेण दुग्ध १ दधि २ आज्य ३ मधु ४ शर्करा ५ एवं दश कलशाः स्थाप्याः तत्पश्चिमपंक्तौ दश १० शुद्धजलकलशाः स्थाप्याः । तत्पश्चिमतः पञ्चत्रिंशत्कलशानासादयेत् तेषु कलशेषु क्रमेण पञ्चसु पंचामृतानि ५ पञ्चसु जलम् ५ पञ्चसु कषायः ५ दशसु क्रमात् पुष्प १ फल २ सौवर्ण ३ गोशृङ्गोदक ४ धान्य ५ सहस्रछिद्र ६ सर्वौषधी ७ पञ्चपल्लव ८ दूर्वा ९ नवरत्न १० युताः कार्याः ॥ अवशिष्टेषु दशसु शुद्धजलमापूर्य क्रमेण दश पल्लवान्क्षिपेत् ॥ कदम्ब १ शाल्मली २ जम्बू ३ अशोक ४ प्लक्ष ५ उदुम्बर ६ वट ७ बिल्व ८ नाग० ९ पलाश १० ततो आजिघ्रकलशमिति स्थापनविधिना संस्थाप्य लोकपालानावाह्य ॥ ततोऽन्यान्यपि वस्तूनि उद्वर्त्तनादिद्रव्याण्यासाद्य ॥ तद्यथा ॥ सूक्ष्मवस्त्रं सुगंधितैलं यवचूर्णं गोधूमचूर्णं तण्डुलचूर्णं मसूरचूर्णं जटामासीचूर्णं बिल्वचूर्णं आमलकचूर्णं तत्पश्चात् चत्वारः शुद्धजलकलशाः स्थाप्याः ॥ ततो प्रथमवेद्या अन्त्यस्थपतिकलशं गृहीत्वा देवस्याग्रे कृत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ काशी कुशस्थली मायावन्त्ययोध्या मधोः पुरी ॥ शालिग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती ॥ १ ॥ तीर्थान्येतानि कुम्भेस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥ झषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा ॥ २ ॥ आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी ॥ नीलोत्पल-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥ ३ ॥ आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ॥ प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥ ४ ॥ ऊर्मिला चंद्रभागा च सरयू गंडकी तथा ॥ जम्बुका च शतद्रुश्च कलिका सुप्रभा तथा ॥ ५ ॥ वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥ गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त्तमार्जनी ॥ ६ ॥ कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी ॥ विटंका प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता ॥ ७ ॥ करतोया वेत्रवती देविका वेणुका च या ॥ आत्रेयगंगा वैतरणी काश्मिरी ह्लादिनी च या ॥ ८ ॥ प्लाविनी च सवित्रा सा कल्माषा शंसिनी तथा ॥ वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा ॥ ९ ॥ ताम्रा चैव त्रिसंध्या च तथा मन्दाकिनी परा ॥ तैलकाद्री च पारा च दुन्दुभिर्नकुली तथा ॥ १० ॥ नीलगंधा च गोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा ॥ अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा ॥ ११ ॥ आषाढी डिंडिभारत्नं भारभूतं बलाकुलम् ॥ हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यमकेश्वरम् ॥ १२॥ श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम् ॥ आम्रातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च ॥ १३ ॥ केदारमुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च ॥ गयां चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा ॥ १४ ॥ विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीममष्टकम् ॥ वस्त्रापदं रुद्रकोटिं अविमुक्तं महालयम् ॥ १५ ॥ गोकर्णं भद्रकर्णं च हेमासंस्थानमष्टमम् ॥ छागलाद्यन्द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम् ॥ १६ ॥ कालञ्जरवनं चैव देवदारुवनं तथा ॥ शंकुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम् ॥ १७ ॥ एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः ॥ तानि सर्वाणि कुम्भेस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥ १८ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इति तीर्थान्यावाह्य ॥ कलशस्य मुखे विष्णुरित्यभिमंत्र्य ॥ देवदानवेति संप्रार्थ्य ॥ ततो देवं स्नापयेत् ॥ तत आचार्यः मंडपाद्बहिर्निर्गत्य दिक्षु विदिक्षु दशादिक्पालेभ्यः सिद्धार्थकघृतपायसैः त्र्यम्बकं यजामहे इति मंत्रावृत्त्या पूर्वादिक्रमेण बलिं दद्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वे । इन्द्राय साङ्गाय इमं बलिं समर्पयामि । भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ १ ॥ आग्नेय्यां । अग्नये सांगाय इमं बलिं सम० ॥ भो अग्ने दिशं र० यजमान० ॥ अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ॥ २ ॥ दक्षिणे । यमाय सांगाय इमं बलिं स० ॥ भो यम दिशं० । यजमान० ॥ अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॥ निर्ऋतये सांगाय इमं० ॥ भो निर्ऋते दिशं० । यजमा० ॥ अनेन बलिदानेन० ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॥ वरुणाय० ॥ भो वरुण दिशं० यजमान० ॥ ५ ॥ वायव्यां ॥ वायवे सांगाय इमं बलिं० ॥ भो वायो दिशं० यजमान० अनेन० ॥ ६ ॥ उत्तरे । सोमाय सांगाय इमं० ॥ भो सोम दिशं० यजमानस्याभ्युदयं कुरु ॥ अनेन बलिदानेन० ॥ ७ ॥ ईशाने ॥ ईशानाय सांगाय इमं बलिं स० ॥ भो ईशान दिशं रक्ष० यजमानस्या० ॥ अनेन बलि० ॥ ८ ॥ आचम्य देवसमीपमागत्य ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमित्याद्यैर्दशभिर्मंत्रैर्मण्डपान्तर्दिक्षु विदिक्षु रक्षां कृत्वा देवस्य पुरतश्चतुरो ब्राह्मणानुपवेश्य पुण्याहं वाचयित्वा ॥ तद्यथा ॥ भो ब्राह्मणाः स्नपनकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ पुण्याहम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः ॥ १ ॥ भो ब्राह्मणाः स्नपनकर्मणः कल्याणं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ कल्याणम् ॥ ॐ यथेमां वाचं क० ॥ २ ॥ भो ब्राह्मणाः स्नपनकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ कर्म ऋध्यताम् ॥ ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्य० ॥ ३ ॥ भो ब्राह्मणाः स्नपनकर्मणे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ आयुष्मते स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रो० ॥ ४ ॥ भो ब्राह्मणाः स्नपनकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ अस्तु श्रीः ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च० ॥ ५ ॥ कृतस्य बौधायनोक्तपुण्याहवाचनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ततो देवं स्नपयेत् । तद्यथा ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम् ॥ अपाᳫं रेताᳫंसि जिन्वति ॥ इति मृत्कलशेन ॥ १ ॥ ॐ यज्ञा यज्ञावोऽ अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ॥ प्रप्प्रवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मि-त्रन्नशᳫं०सिषम् ॥ २ ॥ इति कषायोदकेन ॥ गायत्र्या गोमूत्रेण ॥ ३ ॥ ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति गोमयोदकेन ॥ ४ ॥ ॐ मानस्तोके-तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः ॥ मानो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥ इति भस्मोदकेन ॥ ५ ॥ ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ इति गंधोदकेन ॥ ६ ॥ ततः पंचकलशैः पंचदैवत्यैः स्नापयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ नमः



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ इति प्रथमेन ॥ १ ॥ ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽ ऋतजाऽ अद्रिजाऽ ऋतम्बृहत् ॥ इति द्वितीयेन ॥ २ ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ इति तृतीयेन ॥ ३ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ इति चतुर्थेन ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽ आवः ॥ सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ इति पञ्चमेन ॥ ५ ॥ एवं संस्नाप्य ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥ इति मंत्रेण दूर्वाक्षतासितपुष्पैः देवं सम्पूज्य पीतवस्त्रेणाच्छाद्य ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० इति उत्थाप्य ॥ भद्रं कर्णेभिरिति द्वितीयवेद्यां भद्रपीठोपरि प्राङ्मुखं देवं निधाय ॥ आचार्यः उदङ्मुखो भूत्वा रक्तसूत्रेण लिङ्गमावेष्ट्य ॥ ततो रजतपात्रमादाय तत्पात्रे मधु घृतं च कृत्वा मधुव्वातेति तेजोसीति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 चाभिमंत्रयेत् ॥ ततो मधुघृताक्तया सुवर्णशलाकया प्रतिमायां मुखं लिङ्गं ऊर्ध्वाधः पद्म पुटकद्वयं नेत्राणि च 
 कल्पयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः इत्यर्धर्चेन ॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योति-
रिति च नेत्रद्वयं कल्पयित्वा ॥ ॐ आकृष्णेनेति मंत्रेण ऊर्ध्वाधः पृथक् पृथक् पद्मपुटकद्वयं कल्पयित्वा
नेत्रत्रिभागेन नेत्रमध्ये वर्तुलां कनीनिकां कुर्यात् ॥ अत्र नेत्रोन्मीलनसमये मुहूर्तमात्रं घटीद्वयं देवस्य पुरतो
न कोपि तिष्ठेत् ॥ प्रथमं सुवर्णं पायसं भक्ष्यभोज्यमादर्शं फलं च शीघ्रं दर्शयेत् ॥ एवं कृते सौम्या शुभा
दृष्टिर्भवति ॥ ततः शिल्पिशस्त्रेण रेखामुल्लिखेत् ॥ ततो गुरुर्मधुसर्पिर्भ्यामभ्यज्य ॥ ॐ इमम्मे व्वरुण
श्रुधीहव मद्याच मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ इति मंत्रेणाभ्युक्ष्य पुनर्मृदादिएकादशकलशोदकेन शिल्पिशस्त्र-
दोषनिवृत्त्यर्थं स्नापयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मृत्तिकाक० ॥ १ ॥ यज्ञायज्ञावोऽअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ॥
प्रप्प्रवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशर्ठ०सिषम् ॥ इति कषायोदकेन ॥ २ ॥ गायत्र्या गोमूत्रेण ॥ ३ ॥
गंधद्वारामिति गोमयोदकेन ॥ ४ ॥ ॐ प्रसद्य भस्मनेति भस्मोदकेन ॥ ५ ॥ गंधद्वारामिति गंधोदकेन ॥ ६ ॥
अपरान्पंचकलशान्पंचदैवत्यैः ॥ ॐ नमः शम्भवाय० ॥ १ ॥ ॐ हर्ठ० सः ॥ २ ॥ ॐ यातेरुद्र० ॥ ३ ॥ 
ॐ विष्णोरराट०॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ॥ ५ ॥ ततः सुवर्णशलाकारजतपुटकभक्ष्यभोज्यस्नानवस्त्रादि प्रतिमाकर्त्रे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिल्पिने वा गुरवे दद्यात् ॥ सहिरण्यां गां च गुरवे दद्यात् ॥ ततः ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पतेति देवमुत्थाप्य ॐ भद्रंकर्णेभिरिति तृतीयवेद्यां भद्रपीठोपरि प्राङ्मुखं देवं निधाय ॥ समुद्रज्येष्ठा इत्यादिचतुर्भिः लौकिक-कलशैः देवं स्नापयेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायंत्यनिविशमानाः ॥ इन्द्रो यावज्री वृषभो रराद्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ १ ॥ याऽ आपो दिव्याऽ उत वा स्रवन्ति खनित्रिमाऽ उत वा याः स्वयंजाः ॥ समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ताऽ आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ २ ॥ यासां राजा व्वरुणो याति मध्ये सत्यानृतेऽ अवपश्यं जनानाम् ॥ मधुश्च्युतः शुचयो याः पावकास्ताऽ आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ३ ॥ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा या सूर्यं मदन्ति ॥ वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ताऽ आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ४ ॥ इति संस्नाप्य कुंकुमपुष्पदूर्वाक्षतैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ तद्यथा ॥ नमस्तेर्चे सुरेशान प्रकृते विश्वकर्मणः ॥ प्रभाविताशेषजगद्धात्रि तुभ्यं नमो नमः ॥ १ ॥ त्वयि सम्पूजयामीशं नारा-यणमनामयम् ॥ हरिताशेषदोषैश्च ऋद्धियुक्ता सदा भवेत् ॥ २ ॥ सर्वसत्त्वमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम् ॥ त्वामेवालंकरिष्यामि त्वं वंद्यो भव ते नमः ॥ ३ ॥ इति प्रार्थना ॥ ततः चतुर्भिः शुद्धकलशैः देवं स्नापयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ इदमापः प्रवहतावद्यञ्चमलञ्चयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्च शेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसः

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पवमानश्चमुञ्चतु ॥ १ ॥ ॐ आपोदेवीः प्रतिगृब्भ्णीत भस्मैतत्स्योनेकृणुध्वᳯं सुरभाऽउलोके ॥ तस्मैनमन्ता-
॥१०६॥ ञ्जनयः सुपत्नीर्म्मातेव पुत्रम्बिभृताप्स्वेनत् ॥ २ ॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्यु-
राचके ॥ ३ ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशᳯं
समानऽआयुः प्प्रमोषीः ॥ ४ ॥ ( ततो अष्टपलमृत्तिकाकलशेन ) ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः
पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाᳯं रेताᳯंसि जिन्वति ॥ १ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ देवस्य त्वा सवितुः
प्प्रसवेश्विनोर्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् ॥ २ ॥ ( ततः सप्तपलगोमयकलशेन ) ॐ गन्धद्वारां
दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ३ ॥ ( ततः शुद्धोद-
केन ) ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽ ऋतसदन
मसि व्वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ॥ ४ ॥ ( ततो द्वादशपलगोमूत्रकलशेन ) ॐ तत्सवितुरिति० ॥ ५ ॥ ( ततः
शुद्धोदकेन ) ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्ता नऽ ऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ ६ ॥ ( ततो मुष्टिसम्मितभस्म- ॥१०६॥
कलशोदकेन ) ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने ॥ सᳯंसृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान्पुनरासदः ॥७॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः ॥ उशतीरिव मातरः ॥ ८ ॥ ( ततः त्रिपल-सम्मितमिलितपंचगव्यकलशेन ) ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ ९ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ देवीरापोऽ अपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्यऽ इन्द्रियावान्म-दिन्तमः ॥ तन्देवेभ्यो देवऽ त्रादत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा ॥ १० ॥ ( ततः षोडशपलक्षीरकुम्भेन ) ॐ आप्यायस्व समेतुते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ ११ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथाचनः ॥ १२ ॥ ( ततो विंशतिपलदधिकुंभेन ) ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयूꣳषि तारिषत् ॥ १३ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा बन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳस मानऽ आयुः प्प्रमोषीः ॥ १४ ॥ ( ततः सप्तपलघृतकुम्भेन ) ॐ घृतवतीभुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ॥ द्यावापृथिवी व्वरुणस्य धर्म्मणाविष्कभितेऽ अजरे भूरिरेतसा ॥ १५ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ देवस्य त्वा ॥ १६ ॥ ( ततः त्रिपलमधुकुम्भेन ) ॐ मधुव्वाताऋतायते० ॥ १७ ॥ ( ततः शुद्धो-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० दकेन ) ॐ आपोऽअस्मान्मातरं÷ शुन्धयन्तु घृतेनं नो घृतप्वं÷ पुनन्तु ॥ विश्वर्ठ० हिरिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदि- म०
॥१०७॥ दांभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ १८ ॥ ( ततः त्रिपलशर्कराकुंभेन ) ॐ अपाꣳ रंसमुद्वयसर्ठ० सूर्ये सन्तर्ठ० समाहिं-
तम् ॥ अपाꣳ रसस्य यो रसस्तम्वो गृह्णाम्युत्तममुंपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा
जुष्टतमम् ॥ १९ ॥ ( ततः शुद्धोदकेन ) ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतं÷ श्येताक्ष्यो
रुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णायामा अवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥ ( पुनः पयःकलशेन ) ॐ पयः पृथिव्यां०
॥ १ ॥ ॐ देवस्य त्वा० शुद्धोदकेन ॥ २ ॥ ( दधिकुंभेन ) ॐ दधिक्राव्ण० ॥ ३ ॥ आपोहिष्ठा० शुद्धोदकेन ॥ ४ ॥
( घृतकुंभेन ) ॐ घृतम्मिमिक्षे० ॥ ५ ॥ ॐ योवः शिवतमो० इतिशुद्धोदकेन ॥ ६ ॥ ( मधुकुंभेन ) ॐ मधु-
व्वाता० ॥ ७ ॥ ॐ तस्माऽअरङ्गमाममवेति शुद्धोदकेन ॥ ८ ॥ ( शर्कराकुम्भेन ) ॐ अपाꣳ रसेति ॥ ९ ॥
ॐ आपोऽअस्मान्० इति शुद्धोदकेन ॥ १० ॥ ततः ( पंचकषायकलशेन ) ॐ यज्ञायज्ञावोऽ अग्नये गिरागिराच
दक्षसे ॥ ॥ प्रप्प्रंवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशर्ठ०शिषम् ॥ १५ ॥ ( ततो वस्त्रेण संमार्ज्य सुगन्धतैलेनाभ्यज्य ) ॥१०७॥
ॐ द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ॥ पूतं पवित्रेणेवाज्यमापं÷ शुन्धयन्तु मैनंसः ॥ इति सुगन्धि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलेन प्रक्षाल्य ॥ ( यवशालीगोधूममसूराबिल्वचूर्णैरुद्वर्त्य ) ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ( आमलकचूर्णेन यक्षकर्दमेन चानुलिंपेत् ) ॐ अꣳशुनाते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ( ततो जटामांस्यनुलिप्य ) ॐ मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥ इति शुद्धजलेन प्रक्षाल्य ॥ ( ततोसितपुष्पोदकेन ) ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ १ ॥ ( अथाष्टफलोदकेन ) ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ २ ॥ ( हिरण्योदकेन ) ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्त-ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥ ( गोशृङ्गोदकेन ) ॐ हविष्मतीरिमाऽ आपो हविष्माँऽआविवासति ॥ हविष्मान्देवो अध्वरो हविष्मा २ँ॥ ऽअस्तु सूर्यः ॥ ४ ॥ ( सप्तधान्योदकेन ) ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा ॥ दीर्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्देवो

१ टि० यक्षकर्दमस्तु ॥ कस्तूरिकाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुंकुमस्य च ॥ चंदनस्य त्रयो भागाः शशिनस्त्वेक एव हि ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वं॑ सवि॒ता हिर॑ण्यपाणि॒ः प्राति॑गृभ्णा॒त्वच्छि॑द्रेण पा॒णिना॒ चक्षु॑षे त्वा म॒हीना॒म्पयो॑सि ॥ ५ ॥ (सहस्रधाराकलशेन)
ॐ स॒हस्रा॑णि सह॒स्रशो॑ बा॒ह्वोस्तव॑ हे॒तय॑ः ॥ ता॒सामीशा॑नो भगवः परा॒चीना॒मुखा॑कृधि ॥ ६ ॥ (सर्वौषधीकलशेन)
ॐ या॒ऽ ओष॑धी॒ः पूर्वा॑ जा॒ता दे॒वेभ्या॑स्त्रियु॒गम्पु॒रा ॥ मनै॑नुबभ्रूणा॑महठं॰ शतन्धामा॑नि स॒प्त च॑ ॥ ७ ॥ (पञ्चपल्लवोदकेन) ॐ अ॒श्वत्थेवो॑ नि॒षद॑नम्प॒र्णे वो॑ वस॒तिष्कृ॒ता ॥ गो॒भाज॒ऽ इत्कि॑ला॑ सथ॒ यत्स॒नव॑थ॒ पूरु॑षम् ॥ ८ ॥
(दूर्वोदकेन) ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती परु॑षः परुषस्परि॑ ॥ ए॒वा नो॑ दूर्वे॒ प्रत॑नु स॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च ॥ ९ ॥
(नवरत्नोदकेन) ॐ अ॒ष्टौ व्य॑ख्यत्क॒कुभ॑ः पृथि॒व्या स्त्रीधन्व॒योज॑ना स॒प्त सिन्धू॑न् ॥ हि॒र॒ण्या॒क्षः स॑वि॒ता दे॒वऽ
आगा॒द्दध॒द्रत्ना॑ दा॒शुषे॒ वार्या॑णि ॥ १० ॥ (ततः केचित्तु तीर्थोदकेन) ॐ ये ती॒र्था॒नि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒का ह॑स्ता नि॒षङ्गिण॑ः ॥ तेषा॑ठं॰ सहस्रयोज॒नेव॒धन्वा॑नितन्मासि ॥ ११ ॥ (पुनः अष्टभिः कलशैः पूर्वअष्टदिक्षु कल्पितैः देवं स्नापयेत्)
(तत्र क्षारोदकेन) ॐ कया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑व दू॒ती स॒दा वृ॒धः सखा॑ ॥ कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥ १ ॥ (क्षीरकुंभोदकेन)
ॐ आप्यायस्वेति ॥ २ ॥ (दधिकुंभोदकेन) ॐ दधिक्राव्ण॰ इति ॥ ३ ॥ (घृतकुंभोदकेन) ॐ घृतम्मिमिक्षे॰
॥ ४ ॥ (इक्षुरसकुंभेन) ॐ अपाठं॰ रसेति ॥ ५ ॥ (सुरोदककुंभेन) ॐ दे॒वं ब॒र्हिः सर॑स्वती सुदे॒वमिन्द्रे॑ऽ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अश्विना ॥ तेजो न चक्षुरक्ष्योर्वर्हिषा दधुरिन्द्रियं व्वंसुवनैवसुधे यस्य व्यन्तु यज ॥ ६ ॥ ( पूर्वोदककुंभेन ) ॐ कांडात्काण्डात्० ॥ ७ ॥ ( दर्भोदककुंभेन ) ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति ॥ अपाᳬ रसेन व्वरुणेन साम्ने इन्द्रᳬ श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥ ८ ॥ ( ततो दशभिः कलशैर्लोकपालपल्लवयुतैः क्रमेण स्नापयेत् ) ॥ ( कदंबपल्लवोदकेन ) ॐ त्रातारमिन्द्रेति० ॥ १ ॥ ( शाल्मलीपल्लवोदकेन ) ॐ त्वन्नोऽ अग्ने० ॥ २ ॥ ( जंबूपल्लवोदकेन ) ॐ यमाय त्वांगिरस्वते० ॥ ३ ॥ ( अशोकपल्लवोदकेन ) ॐ असुन्वन्तम० ॥ ४ ॥ ( प्लक्षपल्लवोदकेन ) ॐ तत्त्वायामि० ॥ ५ ॥ ( उदुम्बरपल्लवोदकेन ) ॐ वायो ये ते० ॥ ६ ॥ ( वटपल्लवोदकेन ) ॐ वयᳬ सोम० ॥ ७ ॥ ( बिल्वपल्लवोदकेन ) ॐ तमीशानं० ॥ ८ ॥ ( नागपल्लवोदकेन ) ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० ॥ ९ ॥ ( पलाशपल्लवोदकेन ) ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ॥ १० ॥ ततः सुमङ्गलघोषैः पुरुषसूक्तेन विष्णवे रुद्रसूक्तेन शिवस्य इमं मे वरुणेति तीर्थोदकेन देवं स्नापयित्वा सुगन्धिना सितवस्त्रेण परिमृज्य ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽ एकः ॥ इति मंत्रेण सकलीकृत्य देवमावाहयेत् ॥ एह्येहि भगवन्विष्णो लोकानुग्रहकाम्यया ॥

१ केचित्तु स्वादिष्टयेति स्वादूदककुंभेन ॥ २ केचित्तु गर्भोदकेन ( नारिकेलजलेन ) याः फलिनीति ॥ ३ देवताङ्गे षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकलीकृतः ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० यज्ञभागं गृहाणेमं वासुदेव नमोस्तु ते ( देवभेदेन मंत्रोहः कर्तव्यः ) इत्यावाह्य ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं म०
॥१०९॥ सुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म मावह इति मंत्रेण हिरण्यपात्रेण पाद्यं अर्घ्यं च
दद्यात् ॥ ततो विभ्राडित्याचमनं । ॐ व्विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविर्हुतम् ॥ व्वातजूतो
जोऽअभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥ त्र्यंबकमिति चंदनम् । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि-
म्पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ उपवीतं वेदाहमेतामिति मंत्रेण ॥ ॐ वेदाहमेतं
पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात् ॥ तमेव व्विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय ॥ युवा-
सुवासेति वस्त्रम् ॐ युवासुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तन्धीरासः कवयऽउन्न-
यन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ सुजातो ज्योतिषेत्युपवस्त्रम् ॥ ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथ-
मासदत्स्वः ॥ व्वासोऽ अग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो ॥ ओषधीरिति पुष्पम् ॥ ओषधीः प्रतिमोद-
ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ ब्राह्मणोस्येति धूपम् ॥ ॐ ब्राह्मणोस्य ॥१०९॥
मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रोऽ अजायत ॥ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरेति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दीपम् ॥ ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ॥ रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरुस्पृहहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत् ॥
नाभ्याऽ आसीदिति नैवेद्यम् ॥ ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्यां भूमिर्दिशः
श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ॥ आचमनम् ॥ करोद्वर्तनम् ॥ यत्पुरुषेणेति पूगीफलताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा
देवा यज्ञमतन्वत ॥ व्वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः
समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥
इदꣳ हविरिति कर्पूरनीराजनं कृत्वा ॥ ॐ इदꣳ हविः प्रजननम्मेऽ अस्तु दशव्वीरꣳ सर्व्वगणꣳ स्वस्तये ॥
आत्मसनिप्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि ॥ अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतोऽ अस्मासु
धत्त ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्तेति पुष्पाञ्जलिम् ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ विष्णोः पुरुषसूक्तेन ॥ लिंगे तु रुद्राध्यायेन वा नमस्ते
रुद्रेति १६ मंत्रैः स्तुत्वा स्नानवस्त्रनैवेद्यादिकं शिल्पिने दद्यात् ॥ एतत्संक्षेपतः प्रोक्तं स्नानकर्म जगत्पते ॥
एतद्वै साधकः कृत्वा सर्वान्कामान्समश्नुते ॥ इति देवस्नपनविधिः ॥ ततः । उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपप्प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽ इन्द्र प्राशूर्भवासचा ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ॥ उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यमङ्गलङ्कुरु ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ संसारे त्यज निद्रां जगत्पते ॥ साधवः संप्रतीक्षंते त्वद्दर्शनमहोत्सवाः ॥ इत्युत्थाप्य रथमारोपयेत् ॥ ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः ॥ अभीशूनाम्महिमानम्पनायत मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः ॥ ततो जयशब्दैर्वेदध्वनिभिः सुवासिनीमंगलगीतैः मृदङ्गादिघोषैः ग्रामप्रादक्षिण्येन प्रासादप्रादक्षिण्येनानीय यागमण्डपपश्चिमद्वारि ॥ ॐ आकृष्णेनेति मंत्रेण प्रवेश्य तदनन्तरं मध्यवेद्याः पश्चिमभागस्थितपीठे पूर्वाभिमुखं प्रत्यङ्मुखं वा देवं निधाय मधुपर्कपूजनङ्कुर्यात् ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अस्मिन् शिवादिमूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि मधुपर्केणार्चयिष्ये ॥ ॐ पुरुषऽ एवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति इति पाद्यम् ॥ ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारिषऽ ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ इति मधुपर्कं दद्यात् ॥ ततो मंडपमध्यवेद्याम् ॥ सर्वतोभद्रे धान्यपुञ्जोपरि सारकाष्ठभूतां प्राक्शिरां

॥११०॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुपट्टां शय्यां निधाय तदुपरि चन्द्रकालिका शुभ्रास्तरणासुपधानद्वयवतीमास्तीर्य तत्राक्षतैः स्वस्तिकमालिख्य प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य पुष्पाणि च प्रक्षिप्य शय्यायाः परितः पूर्वादिदिक्षु एता देवताः पूजयेत्—

( शिवप्रतिष्ठायाम् )

पूर्वे । ॐ शर्वाय नमः १
दक्षिणे । ॐ पशुपतये नमः २
पश्चिमे । ॐ उग्राय नमः ३
उत्तरे । ॐ रुद्राय नमः ४
आग्नेये । ॐ भवाय नमः ५
निर्ऋते । ॐ ईश्वराय नमः ६
वायव्याम् । ॐ महादेवाय नमः ७
ईशान्याम् । ॐ भीमाय नमः ८

इति सम्पूज्य त्रिः परिक्रमेत् ॥

( विष्णुप्रतिष्ठायाम् )

पूर्वे । ॐ विष्णवे नमः १
दक्षिणे । ॐ मधुसूदनाय नमः २
पश्चिमे । ॐ त्रिविक्रमाय नमः ३
उत्तरे । ॐ वामनाय नमः ४
आग्नेये । ॐ श्रीधराय नमः ५
निर्ऋते । ॐ हृषीकेशाय नमः ६
वायव्ये । ॐ पद्मनाभाय नमः ७
ईशाने । ॐ दामोदराय नमः ८

इति सम्पूज्य त्रिःपरिक्रमेत् ॥

( शिवप्रतिष्ठायाम् )

ततः शय्यायां मूलमंत्रेण प्राक्शिरसं देवं निवेशयेत् ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ वा ।ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च इति निवेशयेत् ॥

( विष्णुप्रतिष्ठायाम् )

ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति वा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पांसुरे स्वाहा इति निवेशयेत् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 ॐ विश्वतंश्चक्षुरुत विश्वतों मुखो विश्वतों बाहुरुत विश्वतंस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमंति सम्पतं- 
 त्रैर्द्यावाभूमींजनयंन्देवऽएकः ॥ इति मंत्रेण शिवविष्णू पट्टदुकूलैः विचित्रैः कार्पासनिर्मितैर्वा देवमाच्छाद्य देवस्य
शिरोदेशे भूमावेव निद्राकलशं प्रतिष्ठापयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ आपोंदेवीः प्प्रतिंगृभ्णीतभस्मैतत्स्योनेकृंणुध्वठं०
सुरभाऽउंलोके ॥ तस्मैनमन्ताञ्जनंयः सुपत्नींमांतेवंपुत्रम्बिभृताप्स्वेनत् ॥ ॐ आपोंऽअस्मान्मातरंः शुन्धयन्तुघृते-
नंनोघृतप्वंः पुनन्तु ॥ विश्वठं० हिरिप्प्रम्प्रवहंन्तिदेवीरुदिदांभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ दीक्षातपसोंस्तनूरंसितान्त्वा-
शिवाॐ शग्माम्परिंदधेभद्रं व्वर्णम्पुष्यंन् ॥ इति प्रतिष्ठापयेत् ॥ ॐ आप्यांयस्वसमेंतुतेव्विश्वतंः सोमवृष्ण्यंम् ॥
भवाव्वाजंस्यसङ्गथे ॥ इति देवं मधुसर्पिभ्यांमभ्यज्य ॥ ॐ यातेंरुद्रशिवातनूरघोरापांपकाशिनी ॥ तयांनस्तन्वा-
शन्तंमयागिरिंशन्ताभिचांकशीहि ॥ इति देवं तैलसर्षपचूर्णैरुपलिंपेत् ॥ ततो गन्धपुष्पाद्यैर्देवमर्चयेत् ॥ ॐ
बृहंस्पतेपरिंदीयारथेंनरक्षोहामित्राँ २ ऽअपबाधंमानः ॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधाजयंन्नस्माकंमेध्यवितारथांनाम् ॥
इति सितं परिधानं दद्यात् ॥ ततो व्विश्वतश्चक्षुरिति मंत्रेण देवस्य पादनाभिवक्षःशिरःसु आलम्भनं कुर्यात् ॥ 
तत्र मंत्रः ॥ ॐ व्विश्वतंश्चक्षुरुतव्विश्वतोंमुखोविश्वतोंबाहुरुतव्विश्वतंस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमंतिसम्पतंत्रैर्द्यावा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूमींजनयन्देवऽएकः ॥ ततो देवस्य पुरतः पादुकापार्श्वयोः शांतिकुम्भौ दक्षिणपार्श्वे छत्रं व्यजनं चामरं आदर्शमासनं घण्टां भक्ष्यभोज्यजलपात्रादिकं च पुरतः स्थापयेत् ॥ ततो भस्मना दर्भतिलैर्देवस्य समन्ताद्रक्षार्थं त्रिर्भ्रामयेत् ॥ ततो मण्डपाद्बहिर्गत्वा दशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात् । भूतेभ्यश्च त्र्यम्बकमिति मंत्रेण दद्यात् ॥ पूर्वदिग्वासिभ्यो दिक्पतिर्दिग्भूताधिपातिदिग्रुद्रदिङ्मातृदिक्क्षेत्रपालेभ्यो नमः इत्येवं प्रतिदिशं दत्त्वा ॥ आचम्य होमं कुर्यात् ॐ पराय शिवात्मने स्वाहा ( विष्णु० ॐ पराय विष्णवात्मने स्वाहा ) (ॐ पराय सूर्यात्मने स्वाहा ) ( ॐ पराय गणेशात्मने स्वाहा)।( ॐ परायाम्बिकात्मने स्वाहा )। (ॐ पराय नन्दिनात्मने स्वाहा )। (ॐ पराय हनुमदात्मने स्वाहा )। ( पराय गरुडात्मने स्वाहा )इत्यादि ऊहाः कार्याः ॥ इति अष्टोत्तरशतं हुत्वा ॥ प्रतिमायां न्यासं कुर्यात् ॥ शिवादिमूर्तिषु वक्ष्यमाणक्रमेण ॥ तद्यथा—

अ पादयोः ।
उ हृदये ।
म ललाटे ।
इति प्रणवन्यासः ॥ १ ॥
भूः पादयोः ।
भुवः हृदये ।
स्वर्ललाटे ।
इति व्याहृतिन्यासः ॥ २ ॥
अ तालुके ।
आ मुखे ।
इ दक्षिणनेत्रे ।
ई वामनेत्रे ।
उ दक्षिणकर्णे ।
ऊ वामकर्णे ।
ऋ दक्षिणगंडे ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॠ वामगंडे ।
ऌ दक्षिणनासापुटे ।
ॡ वामनासापुटे ।
ए ऊर्ध्वोष्ठे ।
ऐ अधरोष्ठे ।
ओ ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।
औ अधरदन्तपंक्तौ ।
अं ललाटे ।
अः जिह्वायाम् ।
य त्वचि ।
र चक्षुषोः ।
ल नासिकायाम् ।
व दशनेषु ।
श श्रोत्रयोः ।
ष उदरे ।
स कटौ ।
ह हृदये ।
क्ष नाभ्याम् ।
ल लिङ्गे ।
पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ ।
तं थं दं धं नं वामबाहौ ।
टं ठं डं ढं णं दक्षिणजंघायाम् ।
चं छं जं झं ञं वामजंघायाम् ।
कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु ।
इति मातृकान्यासः ॥ ३ ॥
रविचंद्राभ्यां नेत्रयोः ।
भौमाय हृदये ।
बुधाय स्कन्धे ।
बृहस्पतये जिह्वायाम् ।
शुक्राय लिङ्गे ।
शनैश्चराय ललाटे ।
राहवे पादयोः ।
केतवे केशेषु ।
इति ग्रहन्यासः ॥ ४ ॥
रोहिणीभ्यो हृदये ।
मृगाशिरसे शिरसि ।
आर्द्रायै केशेषु ।
पुनर्वसवे ललाटे ।
पुष्याय मुखे ।





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आश्लेषाभ्यो नासापुटयोः ।
मघाभ्यो दन्तेषु ।
पूर्वाफाल्गुनीभ्यो दक्षिणकर्णे ।
उत्तराफाल्गुनीभ्यो वामकर्णे ।
हस्ताय हस्तयोः ।
चित्रायै दक्षिणभुजे ।
स्वात्यै वामभुजे ।
विशाखाअनुराधाभ्यो दक्षिणवाम-
स्तनयोः ।
ज्येष्ठाभ्यो दक्षिणकुक्षौ ।
मूलाय वामकुक्षौ ।
पूर्वाषाढाभ्यः कटिपार्श्वयोः ।
उत्तराषाढाभ्यो लिङ्गे ।
श्रवणधनिष्ठाभ्यो वृषणयोः ।
शतभिषजेभ्यो नेत्रे ।
पूर्वाभाद्रपदोत्तराभाद्रपदाभ्यो ऊर्वोः
रेवत्यश्विनीभ्यो जंघयोः ।
भरणीकृत्तिकाभ्यः पादयोः ।
इति नक्षत्रन्यासः ॥ ५ ॥
ध्रुवाय नाभ्याम् ।
सप्तर्षिभ्यः कण्ठे ।
मातृमण्डलाय कटिदेशे ।
विष्णुपदेभ्यः पादयोः ।
नागवीथ्यै अंगवीथ्यै वनमालायाम् ।
ताराभ्यो रोमकूपेषु ।
अगस्त्याय कौस्तुभे ।
इति तारान्यासः ॥ ६ ॥
चैत्राय शिरसि ॥ वैशाखाय मुखे ॥
ज्येष्ठाय हृदये ॥ आषाढाय श्रावणाय
स्तनयोः ॥ भाद्रपदाय उदरे ॥ आ-
श्विनाय कट्याम् ॥ कार्तिकाय मार्ग-
शीर्षाय ऊर्वोः ॥ पौषाय माघाय
जंघयोः ॥ फाल्गुनाय पादयोः ॥
इति मासन्यासः ॥ ७ ॥
संवत्सराय परिवत्सराय इडावत्स-
राय वत्सराय इति दक्षिणोर्ध्वात्प्रा-
दक्षिण्येन चतुर्बाहुषु ।
पर्वतेभ्यो नमः संधिषु ।
ऋतुभ्यो नमः लिङ्गे ।
अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिषु ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षणाय लवाय काष्ठायै रोमसु ।
कृताय मुखे । त्रेतायै हृदये ।
द्वापराय नितम्बे ।
कलियुगाय पादयोः ।
मन्वन्तरेभ्यो बाह्वोः ।
पराय परार्धाय जंघयोः ।
महाकल्पायशरीरे ।
उदगयनाय दक्षिणायनाय पादयोः ।
विषुवते सर्वाङ्गुलिषु ।
इति कलान्यासः ॥ ८ ॥
ब्राह्मणाय मुखे । क्षत्रियाय बाह्वोः ।
वैश्याय ऊर्वोः । शूद्राय पादयोः ।
संकरजेभ्यः पादाग्रे । अनुलोमजेभ्यः
सर्वाङ्गसंधिषु ।
गोभ्यो मुखे । अजाविकेभ्यो हस्तयोः ।
ग्राम्यारण्यपशुभ्यः सर्वत्र ॥
इति वर्णन्यासः ॥ ९ ॥
मेघेभ्यः केशेषु ।
अभ्रेभ्यो रोमसु ।
नदीभ्यः सर्वगात्रेषु ।
समुद्रेभ्यः कुक्षिदेशे ।
इति तोयन्यासः ॥ १० ॥
ऋग्वेदाय शिरसि ।
यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे ।
सामवेदाय वामभुजे ।
सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये ।
इतिहासपुराणेभ्यो जंघयोः
अथर्वाङ्गिरोभ्यो नाभौ ।
कल्पसूत्रेभ्यः पादयोः ।
व्याकरणाय वक्त्रे । तर्केभ्यः कण्ठे ।
मीमांसायै निरुक्ताय हृदये ।
छन्दोज्योतिःशास्त्रेभ्यो नेत्रयोः ।
गीतभूतशास्त्रेभ्यः श्रोत्रयोः ।
आयुर्वेदाय दक्षिणभुजे ।
धनुर्वेदाय वामभुजे ।
योगशास्त्रेभ्यः हृदये ॥
नीतिशास्त्रेभ्यः पादयोः ।
वस्यतंत्राय ओष्ठयोः ।
इति विद्यान्यासः ॥ ११ ॥





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिवे मूर्ध्नि । सूर्यचन्द्रलोकाय नेत्रयोः। अनिललोकाय घ्राणे। व्योम्ने नाभ्याम् । समुद्रेभ्यो बस्तिदेशे । पृथिव्यै पादयोः ।
इति वैराजन्यासः ॥ १२ ॥
हिरण्यगर्भाय शिरसि ।
कृष्णाय केशेषु । रुद्राय ललाटे ।
यमाय भ्रूकुट्याम्। अश्विभ्यां कर्णयोः। वैश्वानराय मुखे । महद्भ्यो घ्राणे । वसुभ्यः कण्ठे । रुद्रेभ्यो दन्तेषु । सरस्वत्यै जिह्वायाम्। इन्द्राय दक्षिण-भुजे । बलये वामभुजे । प्रह्लादाय दक्षिणस्तने । विश्वकर्मणे वामस्तने

नारदाय दक्षिणकुक्षौ ।
अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ ।
वरुणाय हस्तयोः ।
मित्राय पादयोः ।
विश्वेभ्यो देवेभ्यो ऊरुमध्ये ।
पितृभ्यो जानुमध्ये ।
यक्षेभ्यो जंघयोः ।
राक्षसेभ्यो गुल्फयोः।
पिशाचेभ्यो दक्षिणपादे ।
आसुरेभ्यो वामपादे ।
विद्याधरेभ्यः पादयोः ।
ग्रहेभ्यः पादतलयोः ।
गुह्यकेभ्यो गुदे ।

पूतनादिभ्यो नखेषु ।
गंधर्वेभ्यो ओष्ठयोः ।
कार्तिकेयाय गणेशाय कटिपार्श्वयोः॥
इति देवयोनिन्यासः ॥ १३ ॥
मत्स्याय मूर्ध्नि । कूर्माय पादयोः ।
नृसिंहाय ललाटे। वराहाय जंघयोः।
वामनाय मुखे ।
परशुरामाय हृदि ।
रामाय बाहुषु ।
कृष्णाय नाभ्याम् ।
बुद्धाय बुद्धौ ।
कल्किने जान्वोः ।
केशवाय शिरसि ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नारायणाय मुखे ।
माधवाय ग्रीवायाम् ।
गोविन्दाय बाह्वोः ।
विष्णवे हृदये ।
मधुसूदनाय पृष्ठे ।
त्रिविक्रमाय कट्याम् ।
वामनाय जठरे ।
श्रीधराय हृषीकेशाय जंघयोः ।
पद्मनाभाय गुल्फयोः ।
दामोदराय पादयोः ।
इति मूर्त्तिन्यासः ॥ १४ ॥
अश्वमेधाय मूर्ध्नि ।
नरमेधाय ललाटे ।
राजसूयाय मुखे ।
गोसवाय कण्ठे ।
द्वादशाय हृदि ।
आधीनेभ्यो नाभौ ।
सर्वजितेभ्यो दक्षिणकट्याम् ।
सर्वमेधाय वामकट्याम् ।
अग्निष्टोमाय लिङ्गे ।
अतिरात्राय वृषणयोः ।
आप्तोर्यामाय ऊर्वोः ।
षोडशिने जान्वोः ।
उतथ्याय दक्षिणजंघायाम् ।
वाजपेयाय वामजंघायाम् ।
अत्यग्निष्टोमाय दक्षिणबाहौ ।
चतुर्मास्याय वामबाहौ ।
सौत्रामणये हस्तेषु ।
पश्विष्टिभ्यो अंगुलीषु ।
दर्शपौर्णमासाभ्यां नेत्रयोः ।
सर्वेष्टिभ्यो रोमकूपेषु ।
स्वाहाकाराय वषट्काराय स्तनयोः ।
पञ्चमहायज्ञेभ्यः पादाङ्गुलीषु ।
आहवनीयाय मुखे ।
दक्षिणाग्नये हृदये ।
गार्हपत्याय नाभौ । वेद्यै उदरे ।
प्रवर्ग्याय भूषणेषु । सवनेभ्यः पादयोः ।
एधोभ्यो बाहुषु । दर्भेभ्यः केशेषु
इति क्रतुन्यासः ॥ १५ ॥

॥११४॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ मूलमंत्रन्यासः ।

आयुधन्यासः शक्तिन्यासः अंगन्यासः । इति साधारणं सर्वत्र॥

ततो अंगन्यासः ।

हृदयं हृदये । शिरः शिरसि । शिखा शिखायाम् । कवचं सर्वत्र । नेत्रयोर्नेत्रं । करयोरस्त्रम् दक्षिण-वामस्तनयोः । श्रीवत्साय उरसि । कौस्तुभाय कण्ठे वनमालायै । इति अंगन्यासः

(शिवप्रतिष्ठायाम्) आयुधन्यासः ।

वज्राय शिरसि ।
शक्तये मस्तके ।
दण्डाय दक्षिणभुजे ।
खड्गाय वामभुजे ।
पाशाय जठरे ।
अंकुशाय पृष्ठे ।
ध्वजाय नाभ्याम् ।
त्रिशूलाय लिङ्गे वृषणे च ।
चक्राय जंघयोर्जानुनी च ।
पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च ।

इत्यायुधन्यासः ।

शिवस्य शक्तिन्यासः ।

वामायै ललाटे ।
ज्येष्ठायै मुखे ।
रुद्राण्यै गुह्ये ।
काल्यै कण्ठे ।
कलविकरणायै दन्तेषु ।
बलायै हृदये ।
बलप्रमथनायै जठरे ।
सर्वभूतदमनायै नाभौ ।
उन्मनायै सर्वाङ्गेषु ।

इति शक्तिन्यासः ।

( अथ विष्णुप्रतिष्ठायाम् ) मूल-मंत्रन्यासः ।

धर्माय मूर्ध्नि ।
ज्ञानाय हृदये ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैराग्याय गुह्ये ।
ऐश्वर्याय पादयोः ।
( अथायुधन्यासः )
खड्गाय शिरसि ।
शार्ङ्गाय मस्तके ।
मुशलाय दक्षिणभुजे ।
हलाय वामभुजे ।
चक्राय नाभ्यां जठरे पृष्ठे च ।
शंखाय लिङ्गे वृषणे च ।
गदायै जंघयोर्जानुनी च ।
पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च इति ।

अथ विष्णुशक्तिन्यासः ।

लक्ष्म्यै ललाटे ।
सरस्वत्यै मुखे ।
रत्यै गुह्ये ।
प्रीत्यै कंठे ।
कीर्त्यै दिक्षु विदिक्षु च ।
शान्त्यै हृदि ।
तुष्ट्यै जठरे ।
पुष्ट्यै सर्वत्र ।
इति शक्तिन्यासः ।

( अथ सूर्यप्रातिष्ठायाम् ) आयुधन्यासः शिववत् ।

( अथ शक्तिन्यासविशेषः तद्यथा )
दीप्तायै ललाटे ।
सूक्ष्मायै मुखे ।
विजयायै गुह्ये ।
भद्रायै कण्ठे ।
आविर्भूतायै दन्तपंक्तिषु ।
विमलायै हृदये ।
अघोरायै नाभौ ।
विद्युतायै उदरे ।
सर्वतोमुख्यै सर्वाङ्गेषु ।
इति शक्तिन्यासः ।

सूर्यस्याङ्गन्यासः ।

ॐ सत्याय नमो घृणये सूर्याय दिव्याय ब्रह्मणे शिरसे स्वाहा ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ नमः सूर्यायादित्याय विष्णवे शिखायै वषट् ।
ॐ नमो घृणये सूर्यायादित्याय रुद्राय कवचाय हुं ।
ॐ नमो घृणये सूर्यायादित्यायाग्नये नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ नमो घृणये सूर्यायादित्याय सर्वायास्त्राय फट् ।

अथ सूर्यस्य मूलमंत्रन्यासः ।

ॐ पादयोः । नं जान्वोः । मों गुह्ये । भं नाभौ । गं हृदये । वं कंठे । तें मुं खे । सूं नेत्रयोः । यीं भाले । यं मूर्ध्नि । नं दक्षिणपार्श्वे । मं वामपार्श्वे ॥

प्राणप्रतिष्ठा सर्वदेववत् ॥

( सूर्यस्य गायत्रीन्यासः )

तत्पादाङ्गुष्ठयोः । सं गुल्फयोः । विं जंघयोः । तुं जान्वोः । वं ऊर्वोः । रें गुदे । णिं वृषणे । यं कंठे । भं नाभौ । गौं जठरे । दें स्तनयोः । वं हृदि । स्यं कंठे । धीं वक्रे । मं तालुदेशे । हिं नासिकाग्रे । धिं चक्षुषोः । यों भ्रूमध्ये । यों ललाटे । नः पूर्वे । प्रं दक्षिणे । चों पश्चिमे । दं उत्तरे । यां मूर्ध्नि । त् सर्वत्र । तत्सवितुर्हृदि । वरेण्यं शिरसि । भर्गो देवस्य धीमहि कवचे । धियो यो नः नेत्रयोः । प्रचोदयादस्त्रे ।

इति सूर्यस्य गायत्रीन्यासः ॥

( गणपतेः आयुधन्यासः )

बीजपूराय शिरसि ।
गदायै मस्तके ।
त्रिशूलाय दक्षभुजे ।
धनुषे वामभुजे
चक्राय नाभ्याम् ।
कमलाय जठरे ।
पाशाय पृष्ठे ।
उत्पलाय लिङ्गे वृषणे च ।
बाणाय जंघयोः ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्कुशाय जानुनी ।
विषाणाय गुल्फयोः ।
रत्नकलशाय पादयोः ।

गणेशस्य शक्तिन्यासः ।

तीव्रायै ललाटे ।
ज्वालिन्यै मुखे ।
नंदायै गुह्ये ।
गदायै कंठे ।
कामरूपिण्यै दन्तेषु ।
उग्रायै हृदये ।
तेजोवत्यै नाभौ ।
सत्यायै उदरे ।
सर्वविघ्नविनाशायै सर्वाङ्गेषु इति ।

अथाङ्गन्यासः ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गां हृदयाय नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गीं शिरसे स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गूं शिखायै वषट् ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गैं कवचाय हुं ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षट् बीजस्य गः अस्त्राय फट् ॥ इति ॥

मूलमंत्रन्यासः ।

ॐ हृदयं हृदये । शिरः शिरसि । शिखा शिखायां । कवचं सर्वत्र । नेत्रं नेत्रयोः । अस्त्रं करयोः ।
मुक्ताहाराय दक्षिणस्तने ।
श्रीवत्साय वामस्तने ।
कौस्तुभाय उरसि ।
वनमालायै कण्ठे ।
इति गणेशस्य० शक्तिन्यासः ॥

अथ देव्या आयुधन्यासः ।

त्रिशूलाय० शिरसि ।
खड्गाय० मस्तके ।
चक्राय० दक्षभुजे ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाणाय० वामभुजे।
शक्त्यै० नाभौ।
खेटकाय० गुह्ये।
चापाय० जंघयोः।
पाशाय० जानुनोः।
अङ्कुशाय० गुल्फयोः।
परशवे० पादयोः ॥ इति ॥

## देव्याः शक्तिन्यासः।

प्रभायै० ललाटे।
उमायै० मुखे।
जयायै० गुह्ये।
सूक्ष्म्यै० कण्ठे।
विशुद्धायै० दंतेषु।
नंदिन्यै० हृदये।
सुप्रभायै० नाभौ।
विजयायै० उदरे।
सर्वसिद्धिप्रदायिन्यै सर्वाङ्गेषु।

॥ इति ॥

## अथ देव्या अङ्गन्यासः।

ॐ ह्रां दुर्गायै हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं दुर्गायै शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं दुर्गायै शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं दुर्गायै कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं दुर्गायै नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः दुर्गायै अस्त्राय फट्।

॥ इति ॥

## अथ देव्या मूलमंत्रन्यासः।

ॐ मूर्ध्नि। ऐं मुखे।
ह्रीं कण्ठे। क्लीं हृदि।
चां दक्षिणपार्श्वे।
मुं वाम पार्श्वे।
डां नाभौ। यैं गुह्ये।
विं गुल्फयोः ॥ च्चें पादयोः ॥
इति देव्या मूलमंत्रन्यासः।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ प्रतिमायां जीवन्यासः ।

ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छंदांसि चैतन्यं देवता प्राणप्रतिष्ठायां जीवन्यासे विनियोगः ॥

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥

ॐ ऋग्यजुःसामछंदोभ्यो नमः मुखे ॥

ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदये ॥

ॐ आं वीजाय नमो गुह्ये ॥

ॐ क्रौं शक्तयै नमः पादयोः ॥

ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः ॥

ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा ॥

ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् ॥

ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुं ॥

ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादानविहरणोत्सर्गानंदात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अं मनोबुद्धि अहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः
अमुकदेवस्य प्राण इह प्राणाः ॥
पुनः ॐ आं ह्रीं० अमुकदेवस्य जीव इह स्थितः ॥

ॐ आं ह्रीं० अमुकदेवस्य सर्वेन्द्रियाणि ॥

ॐ आं ह्रीं० अमुकदेवस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन
चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ततः प्रतिमायाः हृद्यङ्गुष्ठं दत्वा जपेत् ।

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च ॥
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ इति ॥

## अथ जीवन्यासे तत्त्वन्यासः ।

ॐ मं जीवात्मने नमः । ॐ भं प्राणात्मने नमः ।
ॐ बं बुद्ध्यात्मने नमः । ॐ फं मनस्तत्त्वात्मने नमः ।
ॐ नं अहंकारात्मने नमः शिरसि ॥
ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः वक्त्रे ॥
ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने नमः हृदये ॥
ॐ थं रसतन्मात्रात्मने नमः अंसयोः ॥
ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने नमश्चक्षुषोः ॥
ॐ णं जिह्वात्मने नमः श्रोत्रयोः ॥
ॐ ढं त्वगात्मने नमः त्वचि ॥
ॐ डं चक्षुरात्मने नमः चक्षुषोः ॥
ॐ ठं जिह्वात्मने नमः जिह्वायाम् ॥
ॐ टं घ्राणात्मने नमः घ्राणे ॥
ॐ ञं वागात्मने नमः वाचि ॥
ॐ झं पाण्यात्मने नमः पाण्योः ॥
ॐ जं पादात्मने नमः पादयोः ॥
ॐ छं पाय्वात्मने नमः पायौ ॥
ॐ चं उपस्थात्मने नमः उपस्थे ॥
ॐ ङं पृथिव्यात्मने नमः पादयोः ॥
ॐ घं आप्वात्मने नमः वस्तौ ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ गं तेजात्मने नमः हृदये ॥
ॐ खं प्राणात्मने नमः प्राणे ॥
ॐ कं आकाशात्मने नमः शिरसि ॥
ॐ शं पुण्डरीकाक्षाय नमः हृदि ॥
ॐ षं सूर्याय मण्डलात्मने नमः कण्ठे ॥
ॐ सं सोमात्मने नमः स्तनमध्ये ॥
ॐ रं धस्थात्मने स्तनयोः ॥

ततः ॐ वं वीजं स्वाभिमतमूर्त्या स्वमंत्रेण संयोज्य ॥

ॐ पुरुषात्मने नमः ।

पुरुषभावनीयं ध्यात्वा स्वमंत्रेण संयोज्य ॥

ॐ तत्पुरुषात्मने नमः ॥ पुरुषभावमानीय ध्यात्वा ॥
ॐ पं परमात्मने नमः । इति सर्वसाक्षिणं भावयित्वा ॥
ॐ गं सर्वात्मने नमः । इति सर्वतोमुखम् ॥
ॐ वं अनुग्रहात्मने नमः । अनुग्रहकरणम् ॥
ॐ सं सर्वात्मने नमः । इति सर्वसंभूतिकरणम् ॥
ॐ लं सर्वसंहरणात्मने नमः । इति संहरणात्मकम् ॥
ॐ क्षं कोपात्मने नमः । इति सर्वसंयमकारकम् ॥

इति ध्यात्वा न्यसेत् ।

( न्यासे कृते तत्त्वत्रयहोमः तद्यथा– )

ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा ।
ॐ आत्मतत्त्वाधिपतये ब्रह्मणे स्वाहा ॥
ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा ।
ॐ विद्यातत्त्वाधिपतये विष्णवे स्वाहा ॥
ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥
ॐ शिवतत्त्वाधिपतये रुद्राय स्वाहा ॥

इति तत्त्वेभ्यो हुत्वा न्यसेत् ।




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ आत्मतत्त्वाय नमः पादयोः ।
ॐ विद्यातत्त्वाय नमः हृदि ।
ॐ शिवतत्त्वाय नमः शिरसि ।
इति त्रितत्त्वन्यासः ।
ॐ पृथिवीतत्त्वात्मने नमः पादयोः ।
ॐ अप्तत्त्वामने नमः वस्तौ ।
ॐ तेजस्तत्त्वात्मने नमः हृदये ।
ॐ वायुतत्त्वात्मने नमः घ्राणे ।
ॐ आकाशतत्त्वात्मने नमः शिरसि ।
ॐ गंधतत्त्वात्मने नमः पादयोः ।
ॐ रसतत्त्वात्मने नमः शिरसि ।
ॐ घ्राणतत्त्वात्मने नमः घ्राणे ।
ॐ जिह्वातत्त्वात्मने नमः जिह्वायाम् ।
ॐ चक्षुस्तत्त्वात्मने नमः चक्षुषोः ।
ॐ त्वक्तत्त्वात्मने नमः त्वचि ॥
ॐ श्रोत्रतत्त्वात्मने नमः कर्णयोः ॥
ॐ पायुतत्त्वात्मने नमः पायौ ।
ॐ उपस्थतत्त्वात्मने नमः उपस्थे ।
ॐ हस्ततत्त्वात्मने नमः हस्तयोः ।
ॐ पादतत्त्वात्मने नमः पादयोः ।
ॐ वाक्तत्त्वात्मने नमः वाचि ।
ॐ मनस्तत्त्वात्मने नमः मनसि ।
ॐ बुद्धितत्त्वात्मने नमः बुद्धौ ।
ॐ अहंकारतत्त्वात्मने नमः अहंकारे ।
ॐ सत्त्वाय नमः । ॐ रजसे नमः ।
ॐ तमसे नमः ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ पुरुषतत्त्वाय नमः हृदये।
ॐ रागतत्त्वाय नमः। तत्रैव ॐ विद्यातत्त्वाय नमः।
ॐ नीतितत्वाय नमः।
ॐ तर्कतत्त्वाय नमः। ॐ कालतत्त्वाय नमः।
ॐ मायातत्त्वाय नमः। ॐ ईश्वरतत्त्वाय नमः।
ॐ सदाशिवतत्त्वाय नमः।
ॐ शक्तितत्त्वाय नमः।
ॐ शिवतत्त्वाय नमः। इति बीजन्यासः।

इति षोडशन्यासः।

( अथ शिवस्य पंचब्रह्मन्यासः अन्येषां न तद्यथा- )

अङ्गुष्ठयोरीशानं। तर्जन्योस्तत्पुरुषम्।
मध्यमयोरघोरम्। अनामिकयोर्वामदेवम्।
कनिष्ठिकयोः सद्योजातं। ततः कनिष्ठिकयोर्हृदयम्।
अनामिकयोः शिरः। मध्यमयोः शिखां।
तर्ज्जन्योः कवचम्। अङ्गुष्ठयोरस्त्रं विन्यस्य
परेण तेजसा संयोज्य हं इति कवचेनावगुण्ठ्य
सर्वकर्मसु नियोजयेत्॥ आचमनं सर्वत्र॥
इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा लिङ्गमुद्रां बद्ध्वा
ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधि-
पतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम्।

इति मंत्रेणेशानमुष्टिं बध्नीयात्।

ततः अङ्गुष्ठाग्रेण रुद्रमुद्रया मूर्ध्नि।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ इति तर्ज्जन्यंगुष्ठयोगात्
तत्पुरुषं मुखे॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽ अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ इति मध्यमांगुष्ठयोगेन हृद्यघोरम् ॥ ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। इत्यंगुष्ठानामिकयोगेन गुह्ये ॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवेभवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ इति कनिष्ठिकाङ्गुष्ठयोगेन पादावारभ्य मस्तकान्तम् ॥ यावन्मूर्ति व्यापकत्वेन ब्रह्म न्यसेत् ॥ ततः ईशानः सर्वविद्यानामिति शशिनमुपरि तन्मूर्ध्नि । ईश्वरः सर्वभूतानामिति कल्पितं चन्द्रोभयदलं पूर्वमूर्ध्नि । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिरिति हृष्टां दक्षिणमूर्ध्नि । शिवो मे अस्तु इति मरीच्यामुत्तरमूर्ध्नि । सदाशिवों इति ज्वालिनीं पश्चिममूर्ध्नि । तत्पुरुषाय विद्महे नम इति पूर्ववक्त्रे शांतिम्। महादेवाय धीमहि इति दक्षिणवक्त्रे विद्याम् । तन्नो रुद्र इत्युत्तरवक्त्रे प्रतिष्ठाम्। प्रचोदयादिति पश्चिमवक्त्रे धृतिम्॥ इति तत्पुरुषस्य कलाचतुष्टयन्यासः ॥ ततो अघोरेभ्यो नम इति तमासुरासि ॥ अथ घोरेभ्यो मोहायै नम इति ग्रीवायाम् । घोरेभ्योः क्षमायै इति स्कन्धयोः । घोरतरेभ्यो निद्रायै नम इति नाभौ । सर्वेभ्यः सर्वव्याध्यै नम इति कुक्षौ । सर्वशर्वेभ्यः मृत्यवे इति पृष्ठे । नमस्ते अस्तु क्षुधायै नम इति वचासि ॥ रुद्ररूपेभ्यः तृषायै नम इति उरासि । इत्यष्टावघोरन्यासाः ॥ ॐ वामदेवाय नम इति रजां गुदे । ज्येष्ठायै नम इति रक्षां लिङ्गे ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठाय नम इति रतिं दक्षिणोरसि ॥ रुद्राय नमः इति कामां वामोरसि । कालाय नम इति दक्षिणजानौ । कलविकरणाय नम इति संजीविन्यै वामजानौ । बलविकरणाय नम इति क्रियायै दक्षिणजंघायाम् । बलाय नमो वृद्ध्यै वामजंघायाम् । बलविकरणाय नमः छायायै दक्षिणस्फिचि । बलप्रमथनाय धात्रीं वामस्फिचि ॥ सर्वभूतदमनाय नम इति भ्रामणीं कट्याम् । मनसे नमः इति शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे । उन्मनाय नम इति ज्वरां वामपार्श्वे ॥ इति त्रयोदशकलान्यासः ॥ सद्योजातं प्रपद्यामि नम इति सिद्धिं दक्षिणपादे । सद्योजाताय नम इति ऋद्धिं वामपादे । भवे नम इति जयां दक्षिणपाणौ । अभवे नम इति लक्ष्मीं वामपाणौ । नातिभवे मेधां नासायाम् । भवस्व मां नम इति कांतिं शिरसि । भवाय नम इति स्वधां दक्षिणबाहौ । उद्भवाय नम इति प्रभवां वामबाहौ ॥ इति सद्योजाताष्टकम् ॥ ततो देवं हंसं सम्पाद्य हंसंहंसेति हृदयादिन्यासं कुर्यात् ॥ हंसंहंसेति हृदयाय नमः । हंसंहंसेति शिरसे स्वाहा । ॐ हंसंहंसेति शिखायै वषट् । ॐ हंसंहंसेति कवचाय हुम् ॥ ॐ हंसंहंसेति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ हंसंहंसेति अस्त्राय फट् ॥ इति शिवस्य न्यासः ॥

## अथ द्वादशाक्षरशिवस्य न्यासः ।

तद्यथा ॥ ॐ पादयोः । न जानुनी । मो गुह्ये । भ नाभौ । ग हृदये । व कंठे । ते मुखे । शि नेत्रयोः । वा ललाटे । य शिरसि । न दक्षिणपार्श्वे । मः वामपार्श्वे । इति ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ द्वादशाक्षरनारायणस्य न्यासः ।

ॐ केशवाय नमः शिरसि । ॐ नं नारायणाय नमो मुखे । ॐ मों माधवाय नमः इति ग्रीवायाम् । ॐ भं गोविन्दाय नमः इति कंठे । ॐ गं विष्णवे नमः इति पृष्ठे । ॐ वं मधुसूदनाय नम इति कुक्षौ । ॐ तें त्रिविक्रमाय नम इति कट्याम् । ॐ वां वामनाय नम इति जंघयोः । ॐ सुं श्रीधराय नमः इति गुह्ये । ॐ दें हृषीकेशाय नमः इति गुल्फे । ॐ वां पद्मनाभाय नमः इति वामपादे । ॐ यं दामोदराय नमः इति दक्षिणपादे ॥ इति नारायणद्वादशाक्षरन्यासः ॥ ॐ हुं हृदयाय नमः हृदये । ॐ विष्णवे नमः शिरसि । ॐ ब्रह्मणे नमः शिखायाम् । ॐ माधवाय नमः कवचे । ॐ चाक्रिणे नमः नेत्रयोः । ॐ चाक्रिणे नमः अस्त्राय फट् । अस्त्रं हस्तयोः । शंभवे नमः गायत्र्यै नमः । दक्षिणनेत्रे ॥ विजयाय नमः । सावित्र्यै नमः । वामनेत्रे ॥ चक्रिणे नमः । चक्रनेत्राय नमः । पिंगलास्त्रं सर्वदिक्षु ॥ इत्यष्टांगविष्णुमंत्रन्यासः ॥

## अथ पुरुषसूक्तन्यासः ।

२१ सहस्रशीर्षेति पादयोः ॥ १ ॥ पुरुष एवेति जंघयोः ॥ २ ॥ एतावानस्येति जान्वोः ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्व-
इत्यूर्वोः ॥ ४ ॥ ततो विराडिति वृषणे ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञादिति कट्याम् ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचेति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाभ्याम् ॥ ७ ॥ तस्मादश्वा इति हृदि ॥ ८ ॥ तं यज्ञमिति स्तनयोः ॥ ९ ॥ यत्पुरुषमिति बाह्वोः ॥ १० ॥ ब्राह्मणो-स्येति मुखे ॥ ११ ॥ चंद्रमा मनस इति चक्षुषोः ॥ १२ ॥ नाभ्या आसीदिति कर्णयोः ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेणेति भ्रुवोः ॥ १४ ॥ सप्तास्येति भाले ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमिति शिरसि ॥ १६ ॥ इति पुरुषसूक्तन्यासः ॥

## अथ उत्तरनारायणन्यासः ।

अद्भ्यः संभृतं इति हृदये ॥ १ ॥ वेदाहमिति शिरसि ॥ २ ॥ प्रजापतिरिति शिखायाम् ॥ ३ ॥ यो देवेभ्य इति कवचे ॥ ४ ॥ रुचम्ब्राह्ममिति नेत्रयोः ॥ ५ ॥ श्रीश्च ते इत्यस्त्रम् ॥ ६ ॥ इति उत्तरनारायणन्यासः ॥

## अथ मंत्रन्यासः ।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् इति पादयोः ॥ १ ॥ ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा व्वायवस्त्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मामावस्तेनऽईशत माघशंर्ठ० सो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ इति गुल्फयोः ॥ २ ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि इति जंघयोः ॥ ३ ॥ ॐ शन्नो-




CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ इति जान्वोः ॥ ४ ॥ ॐ सुपर्णोसिगरुत्माँस्त्रिवृत्ते
शिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥ स्तोमऽआत्माछन्दाᳫंस्यङ्गानियजूᳫंषिनाम ॥ सामतेतनूर्व्वामदेव्यं
यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः ॥ सुपर्णोऽसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत ॥ इति ऊर्वोः ॥ ५ ॥ ॐ स्वस्तिन-
ऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ इति जठरे ॥
॥ ६ ॥ ॐ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमध्यारीरिषता-
युर्गन्तोः ॥७॥ इति हृदये॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामु-
म्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ इति कंठे ॥८॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳫं हवेहवेसुहवᳫं शूरमिन्द्रम् ॥
ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रᳫंस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ इति वक्त्रे ॥ ९ ॥ ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्ध-
नम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ इति नेत्रयोः ॥ १० ॥ ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्यावैश्-
श्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कविᳫं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः ॥ इति मूर्ध्नि ॥ ११ ॥
( इति न्यासं कृत्वा शय्यायाः शिरःप्रदेशे निद्राकलशं स्थापयित्वा तस्मिन्कलशे निद्रामावाहयेत् ) तद्यथा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निद्रां भगवतीं देवीं विष्णोरतुलतेजसाम् ॥ परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहम् ॥ मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीम् ॥ विरूपाक्षि शिवे शांते आगच्छ त्वं तु मोहिनी ॥ १ ॥ वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बरविभूषिते ॥ आगच्छ सहसाजस्रं सुप्तसंसारमोहिनी ॥ २ ॥ सुषुप्तं संहरे देवि कुमार्येकान्तमानसे ॥ श्रमनिःश्वासबाह्ये तु आगच्छ भुवनेश्वरि ॥ ३ ॥ तमःसत्त्वरजोपेते आगच्छ वरवर्णिनि ॥ मनोबुद्धिरहंकारसंहारस्त्वं सरस्वति ॥ ४ ॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गंधश्च पंचमः ॥ आगच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाशनिबंधिनि ॥ ५ ॥ भवस्योत्पत्तिहेतुस्त्वं यावदाभूतसंप्लवम् ॥ भुवः कल्पान्तसंध्यायां वससे त्वं चराचरम् ॥ ६ ॥ भोगिशय्याप्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शासने ॥ त्वं प्रतिष्ठासि वै देवि मुनियोनिसमुत्थिते ॥ ७ ॥ पितृदेवमनुष्याणां सयक्षोरगरक्षसाम् ॥ पशुपक्षिमृगाणां च योगमायाविवर्धिनी ॥ ८ ॥ वससे सर्वसत्त्वेषु मातेव हितकारिणी ॥ एहि सावित्रिमूर्तिं त्वं चक्षुर्भ्यां स्थानगोचरे ॥ ९ ॥ विश नासापुटे देवि कंठे चोत्कण्ठिता विश ॥ प्रतिभावय मां सर्वं मातृत्वं देवि सुंदरि ॥ १० ॥ इदमर्घ्यं मया दत्तं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ उपप्रागात्परमिति तस्याः पूजाविधौ स्मृतः ॥ ११ ॥ ॐ उपप्रागात्परमंयत्सधस्थमर्व्वाँ २ ॥ ऽअच्छापितरंमातरंञ्च ॥ अद्यादेवाञ्जुष्टतमोहिगम्याऽअथाशास्तेदाशुषेवा-

टि० १ (शिव)।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्घ्याणि ॥ इति निद्राकलशे निद्रां पूजयित्वा दिक्पालेभ्यो बलिं दत्त्वा स्थाप्य देवशय्यांतः प्राच्यां सर्वतोभद्रे लिङ्गतोभद्रमण्डले वा द्वादशारं कृत्वा पूजयेत् ॥

## अथ शिवप्रतिष्ठायां मण्डलेऽष्टदलं कृत्वा तत्र कर्णिकायां मेरुं पूजयेत् ।

ततो नमः शिवायेति देवं संस्थाप्य ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः इति कर्णिकायां हृदयम् ॥ ॐ शिवाय नमः इति पूर्वपत्रे शिरः पूजयामि ॥ ॐ ब्रह्मण्याय नमः दक्षिणपत्रे शिखायै वषट् ॥ ॐ ध्रुवाय नमः इति पश्चिमपत्रे कवचाय हुं ॥ ॐ शूलिने नमः इत्युत्तरपत्रे अस्त्रम् ॥ ( इति गर्भाभरणम् ) पुनः अष्टपत्रेषु प्रागादितः ॥ पूर्वे ॐ अनन्ताय नमः ॥ आग्नेय्यां ॐ सूक्ष्माय नमः ॥ दक्षिणे ॐ शिवोत्तमाय नमः ॥ नैर्ऋत्यां ॐ एकनेत्राय नमः ॥ पश्चिमे ॐ एकरुद्राय नमः ॥ वायव्यां ॐ त्रिमूर्त्तये नमः ॥ उत्तरे ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥ ईशान्यां ॐ शिखण्डिने नमः ॥ ( पुनः पूर्वादिक्रमेण पत्रेषु ) पूर्वे ॐ टंकायै नमः ॥ आग्नेय्यां ॐ कृपाक्षाय नमः ॥ दक्षिणे ॐ वज्राय नमः ॥ नैर्ऋत्यां ॐ दहनाय नमः ॥ पश्चिमे ॐ भोगेन्द्राय नमः ॥ वायव्यां ॐ घंटायै नमः ॥ उत्तरे ॐ अङ्कुशाय नमः ॥ ईशान्यां ॐ पाशाय नमः ॥ पुनः पूर्वे ॐ पृथ्वीमूर्त्तये नमः ॥ पृथ्वीमूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः ॥ दक्षिणे ॐ अर्कमूर्त्तये नमः । अर्कमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः ॥ पश्चिमे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ जलमूर्तये नमः । जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः ॥ उत्तरे ॐ वायुमूर्त्तये नमः । वायुमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः ॥ ईशान्यां ॐ पशुपतये नमः । पशुमूर्त्यधिपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ आग्नेय्यां ॐ इन्द्रमूर्त्तये नमः ॥ इन्द्रमूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः ॥ नैर्ऋत्यां ॐ खमूर्तये नमः । खमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः ॥ वायव्यां ईशानाय नमः । ईशानमूर्त्यधिपतये सूर्याय नमः ॥ ततो दिव्यवाससा देवमाच्छाद्य रुद्रसूक्तेन स्तुत्वा पुष्पाञ्जलिं दत्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् शांतिकपौष्टिकमंत्रैर्हुत्वा इति शिवप्रतिष्ठायाम् ॥ (ततो विष्णुश्चेद् द्वादशारे द्वादशदले पद्मे ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति शय्यायां देवं निवेशयेत्) ॐ हुं हृदयाय नमः इति कर्णिकायां हृदयं पूजयेत् ॥ पूर्वे ॐ विष्णवे नमः इति शिरः पूजयेत् ॥ आग्नेय्यां ॐ ब्रह्मणे नमः इति शिखां पू० ॥ दक्षिणे ॐ रुद्राय नमः इति कवचं पू० ॥ नैर्ऋत्यां ॐ ध्रुवाय नमः इत्यस्त्रं पू० ॥ पश्चिमे ॐ चक्रिणे नमः इति गायत्रीं पू० ॥ वायव्यां । इति सावित्रीं पू० ॥ उत्तरे ज्योतिरूपाय० इति पूजयेत् ॥ ईशान्यां शक्तिधराय० इति पूजयेत् ॥ (ततः पूर्वादिक्रमेण द्वादशदलपत्रेषु) ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः । ॐ मधुसूदनाय नमः । ॐ त्रिविक्रमाय नमः । ॐ वामनाय नमः । ॐ श्रीधराय नमः । ॐ हृषीकेशाय नमः । ॐ पद्मनाभाय नमः । ॐ वासुदेवाय नमः ॐ दामोदराय नमः ॥ पुनः प्रागादितः शस्त्रम् ॥ खड्गाय नमः । गदायै नमः । चक्राय नमः । शंखाय नमः ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पद्माय नमः । हलाय नमः । मुशलाय नमः । शार्ङ्गाय नमः । पुनः पूर्वे । ॐ पृथ्वीमूर्तये नमः । पृथ्वीमूर्त्यधिपतये वासुदेवाय नमः । दक्षिणे । ॐ जलमूर्तये नमः । जलमूर्त्यधिपतये संकर्षणाय नमः । पश्चिमे । अग्निमूर्तये नमः । अग्निमूर्त्यधिपतये प्रद्युम्नाय नमः । उत्तरे । ॐ वायुमूर्त्तये नमः । वायुमूर्त्यधिपतये अनिरुद्धाय नमः ॥ मध्ये । खमूर्त्तये नमः । खमूर्त्यधिपतये नारायणाय नमः ॥ ततो दिव्यवाससा देवमाच्छाद्य पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् ॥ अत्र रात्रौ जागरणं कुर्यात् ॥ शांतिकपौष्टिकैर्मंत्रैर्जुहुयात् ॥

## अथ शान्तिकमंत्राः ।

ॐ शन्नोव्वातः पवताᳪशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥ १ ॥ ॐ शन्नऽइन्द्राग्निभवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौशामिन्द्रासोमासुवितायशंयोः ॥२॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ ३ ॥ इति शांतिकमंत्राः ।

## अथ पौष्टिकमंत्राः ।

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिᳪसीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननाय

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ १ ॥ त्र्यंबकंयजामहे सुगन्धिम्पुंष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिंवबन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिंवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ इति पौष्टिकमंत्राः ॥ ( पंचकुण्डीपक्षे ) पूर्वकुंडे । ॐ अग्निमीळेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ दक्षिणकुंडे । ॐ इषेत्त्वोर्ज्जेत्त्वांव्वायवस्थदेवोवः सविताप्प्रार्प्पयतुश्रेष्ठतमायकर्म्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय- भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअंयक्ष्मामावस्तेनऽईशतमाघशंसो सोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्य्यजमानस्यपशून्पा- हि ॥ पश्चिमकुंडे । ॐ अग्नऽआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ उत्तरकुंडे । ॐ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ इति पंचकुंडीपक्षः ( यदा नवकुंडीपक्षः तदा ) ( पूर्वकुण्डे ) ॐ अग्निमीळेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥ ( आग्नेयकुण्डे ) ॐ वौषट् ॥ २ ॥ ( दक्षिणकुण्डे ) ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वांव्वायवस्थदेवोवः सवितापार्प्पयतुश्रेष्ठतमायकर्म्मणऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या- ऽइन्द्रायभागम्प्रजावतीरनमीवा ऽअंयक्ष्मामावस्तेनऽईशतमाघशंसो. सोदृध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्यजमानस्य ॥१२४॥
पशून्पाहि ॥ ३ ॥ ( नैर्ऋत्यकुण्डे ) दशप्रणवयुक्तगायत्र्या ॥ ४ ॥ ( पश्चिमकुण्डे ) ॐ अग्नऽआयाहिवीतयेगृणा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ ५ ॥ ( वायव्यकुण्डे ) ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवासिन्धुन्दुरितात्यग्निः ॥ ६ ॥ ( उत्तरकुण्डे ) ॐ शन्नोदेवी० ॥ ७ ॥ ( ईशानकुण्डे ) ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ ८ ॥ ततः त्यागः कुंडपूर्वदिशि पूर्वस्थापितशान्तिकलशेषु क्षिपेत् ॥ ( ततो अष्टसु पूर्वादिकुण्डेषु मूर्त्तिमूर्तिपलोकपालेभ्यः घृतेन तिलैर्वाऽष्टाष्टसंख्यया जुहुयात् तेषां मंत्राः ॐ स्योनापृथिवि० स्वाहा ॥ इति पृथिवीमूर्त्तेः ॥ १ ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा ॥ इति पृथिवीमूर्तिपतेः सर्वस्य ॥ २ ॥ ॐ सद्योषांइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबवृत्रहाशूरविद्वान् ॥ जहिशत्रूँरपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहिविश्वतोनः स्वाहा इति इन्द्राय ॥३॥ इति पूर्वकुण्डे हुत्वा १ ) ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽआसादयादिह स्वाहा ॥ इत्यग्निमूर्तेः ॥ १ ॥ ॐ तेजः पशूनाᳬहविरिन्द्रियावत्परिस्रुतापयसासारघम्मधु ॥ अश्विभ्यान्दुग्धम्भिषजासरस्वत्यासुतासुताभ्याममृतः सोमइन्दुः स्वाहा ॥ इत्यग्निमूर्तिपतेः पशुपतेः ॥ २ ॥ ॐ अग्नआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषिस्वाहा ॥ इत्यग्नेः ॥ ३ ॥ ( इत्यग्निकुण्डे ) ॐ यऽइन्द्रऽइन्द्रियन्दधुः२सविताव्वरुणोभगः ॥ ससुत्रामा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हविष्पतिर्यजमानायसश्चतस्वाहा ॥ इति यजमानमूर्तेः ॥ १ ॥ ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्द्राव्वसवंः समिन्धतांपुनर्ब्रह्मा-
णोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वन्तन्न्वम्वर्द्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः स्वाहा ॥ इति यजमानमूर्तिपतेः रुद्रस्य
॥ २ ॥ ॐ यमायत्वांगिरस्वते० ॥ इति यमस्य ॥ ३ ॥ ( इति दक्षिणकुण्डे ) ॐ उदुत्यंजातवेदसंदेवंव्वहन्तिके-
तवं÷ ॥ दृशेव्विश्वायसूर्यस्वाहा ॥ इति सूर्यमूर्तेः ॥ १ ॥ ॐ असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः सुमङ्गलं÷ ॥ येचैनर्ठ०
रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः संहस्रशोवैषाऽहेडऽईमहेस्वाहा ॥ इति सूर्यमूर्तिपतेरुद्रस्य ॥ २ ॥ ॐ अशुन्वन्तम-
यजमान० स्वाहा ॥ इति निर्ऋतेः ॥ ३ ॥ ( इति नैर्ऋत्यकुण्डे ) ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे० स्वाहा ॥
इति जलमूर्तेः ॥ १ ॥ उग्ग्रंल्लोहितेनमित्त्रर्ठ० सौव्व्रत्त्येनरुद्द्रन्दौव्र्त्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतोबलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा ॥
भवस्यकण्ठ्यंर्ठ० रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्ययकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेःपुरीतत्स्वाहा ॥ इति जलमू-
र्त्तिपतेर्भवस्य ॥ २ ॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके स्वाहा ॥ इति वरुणस्य ॥ ३ ॥
( इति पश्चिमकुण्डे ) ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वात्सोमपीतये स्वाहा ॥ इति वायुमूर्तेः
॥ १ ॥ ॐ तमीशानं० स्वाहा ॥ इति वायुमूर्तिपतेरीशानस्य ॥ २ ॥ ॐ आनोनियुद्भिः स्वाहा ॥ इति वायोः ॥ ३ ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( इति वायुकुंण्डे ) ॐ वयठं० सोमव्रते० स्वाहा ॥ इति सोममूर्तेः ॥ १ ॥ ॐ सोमोराजामृतठं० सुतऽऋजीषेणांज- हान्मृत्युम् ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियम्विपानठं० शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधुस्वाहा ॥ इति सोमसमूर्ति- पतेर्महादेवस्य ॥ २॥ ॐ आप्यायस्वसमेतुतेव्विश्वतः सोमव्वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे स्वाहा॥ इति कुबेरस्य ॥ ३ ॥ ( इत्युत्तरकुण्डे ) ॐ तमीशानं० स्वाहा ॥ इति खमूर्त्तेः ॥ १ ॥ ॐ मृगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाःपरावतऽ- आजंगन्थापरस्याः ॥ सृकठं० सठं० शायपविमिन्द्रातिग्मंव्विशत्रून्ताड्ढिविमृधोनुदस्वस्वाहा ॥ इति खमूर्त्तिपते- र्भीमस्य ॥ २ ॥ ॐ ईशाव्वास्यमिदठं० सर्व्वंय्यत्किञ्चजगत्याञ्जगत् ॥ तेनत्यक्तेनभुञ्जीथामागृधःकस्य- स्विद्धनम् स्वाहा ॥ इति ईशानस्य ॥३॥ (इति ईशानकुण्डे) ततः स्थाप्य देवस्य मूलमंत्रेण घृतादिद्रव्यैः पञ्चकुण्डेषु वा आचार्यकुण्डे अष्टाष्टसंख्यया हुत्वा ) तद्यथा ( पूर्वकुण्डे ) घृताहुत्यष्टकं मूलमंत्रेण हुत्वा देवपादौ स्पृशेत् ॥ (याम्यकुंडे) पूर्वोक्तमंत्रेण दधि हुत्वा देवस्य नाभिं स्पृशेत् ॥ (पश्चिमकुण्डे) पूर्वोक्तमंत्रेण क्षीरं हुत्वा देवस्य हृदयं स्पृशेत् ॥ (उत्तर- कुण्डे ) पूर्वोक्तमंत्रेण मधु हुत्वा देवस्य मूर्ध्नि स्पृशेत् ॥ ( ईशानकुण्डे ) पूर्वोक्तमंत्रेण मिश्रितघृतादिचतुष्टयं हुत्वा देवस्य सर्वाङ्गं स्पृशेत् ॥ ततः कूर्मशिलाब्रह्मशिलापिण्डिकावाहनानि परिवारदेवाँश्च नाममंत्रैः वैदिकमंत्रैर्वा

१ टि० परिवारदेवाः ॥ विष्णोः चण्डप्रचण्डौ ॥ महादेवस्य नन्दीभृङ्गीमहाकालगणेशचंडमातृवृषस्कन्दाः ॥ सूर्यस्य दंडिपिंगलादयः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूज्य मुख्यप्रतिमाया वामपार्श्वेऽधिवासयेत् ॥ तानि मधुघृताभ्यामभ्यज्य प्रक्षाल्य पुनः सम्पूज्य वस्त्रेणाच्छाद्य प्रधानपिण्डिकायां स्वस्वमंत्रैर्न्यासं कुर्यात् ॥ ( ततः शिवस्य पत्न्या नाममंत्रेण न्यासः) ॥ ॐ घं गौर्य्यै० हृदये ॥ ॐ हं गौर्य्यै० शिरसे स्वाहा ॥ ॐ यं गौर्य्यै० शिखायै वषट् ॥ ॐ भं गौर्य्यै० कवचाय हुं॥ ॐ फं गौर्य्यै० नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ हुं गौर्य्यै० अस्त्राय फट् ॥ ( विष्णोः पत्न्या न्यासः ) ॐ घँ लक्ष्म्यै० हृदये ॥ ॐ हं लक्ष्म्यै० शिरसे स्वाहा ॥ ॐ यं लक्ष्म्यै० शिखायै वषट् ॥ ॐ भं लक्ष्म्यै० कवचाय हुं ॥ ॐ फं लक्ष्म्यै० नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ हुं लक्ष्म्यै० अस्त्राय फट् ॥ ( केचित्तु न्यासान्ते तत्त्वत्रयमूर्तिपूर्त्तिपांश्च पूर्ववत् विन्यासं च कुर्यात् ) ॐ ह्रां श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः ॥ ॐ ह्रां श्रीं ह्रीं दिव्यतेजोधारिण्यै सुभगायै नमः ॥ इति मंत्राभ्यां अधिवासयेत् ॥ इत्यधिवासनम् ॥

## अथ प्रासादोऽपि नूतनश्चेत्तस्याप्यधिवासनम् ।

तद्यथा ॥ प्रासादाग्रे एकाशीतिपदमण्डलं यवचूर्णेन कृत्वा ॥ अथवा ॥ नवकोष्ठान्कृत्वा तेषु नवकोष्ठेषु प्रतिकोष्ठे नव नव कलशान् जलपूर्णान् धान्यपुञ्जोपरि धृत्वा ॥ एवं एकाशीतिकलशा भवंति ॥ तत्र मध्यादिकोष्ठेषु क्रमेण नवनवकानां मध्ये औषध्यादि क्षिप्त्वा ॥ तद्यथा ( मध्यकोष्ठनवकमध्यकलशे ) शमी-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदुम्बर अश्वत्थ चंपक अशोक पलाश प्लक्ष न्यग्रोध कदंब आम्र विल्व अर्जुन इति पल्लवद्वादशकं क्षिपेत् ॥ १ ॥ ( ततः पूर्वदिशि नवकमध्यकलशे ) पद्मकगोरोचनदूर्वाङ्कुरदर्भपिंजुलीश्वेतपीतसर्षपसितरक्तचन्दनजाती-सुमन नद्यावर्त इति दशकं क्षिपेत् ॥ २ ॥ ( आग्नेयां नवकमध्यकलशे ) यव व्रीहि तिल सुवर्ण रजत गंगा-मृत्तिका गोमयामिति सप्तकं क्षिपेत् ॥ ३ ॥ ( दक्षिणे नवकमध्यकलशे ) सहदेवी विष्णुक्रान्त भृङ्गराज महौषधी शमी शतावरी गुडूची श्यामाकमित्यष्टकं क्षिपेत् ॥ ४ ॥ ( नैऋत्यनवकमध्यकलशे ) कदली पूगीफल नारिकेल बिल्व नारिङ्ग मातुलिङ्ग वदर आमलकमिति फलाष्टकं क्षिपेत् ॥ ५ ॥ ( पश्चिमनवकमध्यकलशे ) मंत्रसाधितं पंचगव्यं क्षिपेत् ॥ ६ ॥ ( वायव्यनवकमध्यकलशे ) शंखपुष्पी शमी उदुम्वर अश्वत्थ न्यग्रोध पलाशएतत्पंचवृक्षस्य त्वचः कषायं क्षिपेत् ॥ ७ ॥ ( उत्तरनवकमध्यकलशे ) शंखपुष्पी सहदेवि वला शतावरी घिकुआर गुरुचवचव्याघ्री इति मूलाष्टकं क्षिपेत् ॥ ८ ॥ ( ईशाननवकमध्यकलशे ) सप्तमृत्तिकां क्षिपेत् ॥ ९ ॥ शेषान्कलशान्गन्धोदकेन पूरयित्वा सर्वान्सूत्रेण नवकं नवकं वेष्टयेत् ॥ ततः प्रासादं अन्तः बहिः अधः ऊर्ध्वञ्च पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य ततः प्रसादे ॐ मूर्द्धानन्दिवेतिसप्तमृत्तिका विलिंपेत् ॥ ( ततः ईशानमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् ) तत्र मंत्रः ॥

२२ ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२॥ऽउदारदुपाᳬशुनासमंमृतत्वमानट् ॥ घृतस्यनामगुह्यंयदस्तिजिह्वादेवानाममृतंस्यनाभिः॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० ॥ १ ॥ ( ततो वायव्यमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् ) ॐ यज्ञायज्ञावोऽअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ॥ म०
॥१२७॥ प्रप्रंवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशंर्ठ० सिषम् ॥ २ ॥ ( पश्चिममध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् )
ॐ पयः पृथिव्येति ॥ ३ ॥ ( नैऋत्यमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् ) ॐ याः फलिनीर्येति ॥ ४ ( उत्तरमध्य-
कुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् ) ॐ ॐ हर्ठ०सःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदातिथिर्दुरोणसत् ॥
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ ५ ॥ (पूर्वमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत्)
ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ६ ॥ ( अग्नेय-
मध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रसादं स्नापयेत् ) ॐ व्वयर्ठ० सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ७ ॥
( दक्षिणमध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् ) ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात् ॥
सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ॥ ८ ॥ ( मध्यकुम्भं गृहीत्वा प्रासादं स्नापयेत् )
ॐ नमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः ॥ ९ ॥ ( ततो गन्धोदकपूरिताष्ट-
कलशान्पूर्वादिक्रमेण प्रासादं सशिखरं स्नापयेत् तत्र मंत्राः ) ॐ इदमापःप्रवहतावद्यञ्चमलञ्चयत् ॥ यच्चाभिदु- ॥१२७॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रोहान्नृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसः पवमानश्चमुञ्चतु दैव्यायकर्म्मणेशुन्धध्वन्देवयज्यायैयद्वो- शुद्धाः पराजघ्नुरिदम्वस्तच्छुन्धामि ॥ इतिमंत्रेण संप्रोक्ष्य सूत्रेणावेष्टय स्नापयित्वा देवरूपं प्रासादं चिन्तयित्वा पताकादिना शोभयित्वा गन्धादिना पूजयित्वा तस्याप्यधस्तादेवं संचिन्त्य वक्ष्यमाणमंत्रेण प्रासादमधिवासयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्ज्वलाकृते ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव इत्यधिवास्य ॥ ॐ रक्षोहणंवलगहनंवैष्णवीमिदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेइत्यादिरक्षोघ्नसूक्तेन ॥ यदत्र संस्थितं भूतामित्यादिमंत्रेण श्वेतसर्षपं बाह्यान्तरं विकीर्य ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः इति वास्तुं सम्पूज्य ॥ तीर्थोदकेन कुशैः सर्वतः प्रासादं प्रोक्ष्य प्रासादं स्पृष्ट्वा न्यासं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्राँ पृथिवीतत्त्वाय नमः पृथिवीतत्त्वाधिपतये श्रीकूर्माय नमः ॥ ॐ ह्राँ अप्तत्वाय नमः अप्तत्वाधिपतये जलेशाय नमः ॥ ॐ ह्रां तेजस्तत्वाय नमः ॥ तेजस्तत्वाधिपतये त्विषां निधिपतये नमः ॥ ॐ ह्रां वायुतत्वाय नमः वायुतत्वाधिपतये मातरिश्वने नमः ॥ ॐ ह्रां आकाशतत्वाय नमः आकाशतत्वाधिपतये सूक्ष्माय नमः ॥ ( इति प्रासादपादेषु ) ॐ ह्रां रूपतन्मात्राय नमः रूपतन्मात्राधिपतये भानुमते नमः ॥ ॐ ह्रां रसतन्मात्राय नमः रसतन्मात्राधिपतये जलदाय नमः ॥ ॐ ह्रां गन्धतन्मात्राय नमः गन्धतन्मात्राधिपतये गंधाढ्याय नमः ॥ ॐ ह्रां स्पर्शतन्मात्राय नमः स्पर्शतन्मात्रा- धिपतये वलतत्वाय नमः ॥ ॐ ह्रां शब्दतन्मात्राय नमः शब्दतन्मात्राधिपतये सूक्ष्मनादाय नमः ॥ ( इति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रासादजङ्घयोः ) ॐ हां वाकूतत्वाय नमः वाकूतत्वाधिपतये दुंदुभये नमः ॥ ॐ हां पाणितत्वाय नमः पाणितत्वाधिपतये समादानाय नमः ॥ ॐ हां पादतत्वाय नमः पादतत्वाधिपतये संक्रमाय नमः ॥ ॐ हां पायुतत्वाय नमः पायुतत्वाधिपतये विसर्गाय नमः ॥ ॐ हां उपस्थतत्वाय नमः उपस्थतत्वाधिपतये आनन्दाय नमः ॥ ( इति प्रासादकटिप्रदेशे ) ॐ हां श्रोत्रतत्वाय नमः श्रोत्रतत्वाधिपतये व्योमाय नमः ॥ ॐ हां त्वक्तत्वाय नमः त्वकूतत्वाधिपतये सर्वाङ्गाय नमः ॥ ॐ हां चक्षुस्तत्वाय नमः चक्षुस्तत्वाधिपतये आकाशाय नमः ॥ ॐ हां रसनातत्वाय नमः रसनातत्वाधिपतये महावक्राय नमः ॥ ॐ हां घ्राणतत्वाय नमः घ्राणतत्वाधिपतये विलुण्ठाय नमः ॥ ( इति प्रासादनाभौ ) ॐ हां मनस्तत्वाय नमः मनस्तत्त्वाधिपतये संकल्पाय नमः ॥ ॐ हां बुद्धितत्वाय नमः बुद्धितत्वाधिपतये बुद्धये नमः ॥ ॐ हां अहंकारतत्वाय नमः अहंकारतत्वाधिपतये अहंकृतये नमः ॥ ॐ हां चित्ततत्वाय नमः चित्ततत्वाधिपतये मनसे नमः ( इति प्रासादकण्ठे ) ॐ हां प्रकृतितत्वाय नमः प्रकृतितत्वाधिपतये पितामहाय नमः ॥ ( इति प्रासादद्वारमध्ये ) ॐ हां हृदये पुरुषतत्वाय नमः पुरुषतत्वाधिपतये विष्णवे नमः ॥ ( इति प्रासादमध्ये ) ॐ हां कलातत्वाय नमः कलातत्वाधिपतये ऋतुध्वजाय नमः ॥ ॐ हां विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः ( इति प्रासादवक्रे ) ॐ हां सदाशिवतत्वाय नमः सदाशिवतत्वाधिपतये अजेशाय नमः ( इति प्रासादकलशे ) ॐ हां चक्रायुधचिन्हेभ्यो नमः ॥ ॐ हां सं



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्वाय नमः ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः ॥ ॐ सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ अर्कमण्डलाय नमः ( इति कलशोपरि सम्पूज्य ) इति प्रासादन्यासं कृत्वा ऋत्विग्भिः सह कुंडे स्थण्डिले वा न्यासमंत्रेण तत्वहोमं कुर्यात् ॥

## ( अथ प्रासादशिखरकलशप्रतिष्ठा )

आचार्यो मंडपस्योत्तरभागे स्नानमंडपे स्वस्तिकं लिखित्वा तस्योपरि शिखरकलशं संस्थाप्य लौकिक-पञ्चभिः कलशैः संस्नाप्य ॐ मनोजूतिर्जुषतेति प्रतिष्ठाप्य तैलेनाभ्युक्ष्य संस्नाप्य चंदनादिभिरभ्यर्च्य सूत्रेणा-वेष्ट्य तस्य पुरतः पुण्याहवाचनं कृत्वा । ॐ घृतं घृतपावानः इति घृतेनाभ्यज्य ॥ ॐ द्रुपदादिवेति यवमसूर-हरिद्रापिष्टेनोद्वर्त्य उष्णोदकेन प्रक्षाल्य । मूर्द्धानन्दिवेति वल्मीकमृत्तिकया उपलिप्य ॐ यादिव्याऽआप० इति गन्धोदकेन स्नापयेत् । पुनः स्नानवेदिचतुः कोणास्थितचतुर्भिः कलशैः स्नापयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ मानस्तोके इति प्रथमेन । ॐ विष्णोरराटमसीति द्वितीयेन ॥ ॐ वयठं० सोमेति तृतीयेन । ॐ विश्वतश्चक्षुरिति चतुर्थेन ॥ ॐ पयः पृथिव्येति शुद्धोदकेन स्नापयित्वा द्वादशाक्षरमंत्रेण अर्चयित्वा ( तत्र मंत्रः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ) गंधाद्यैः सम्पूज्य वस्त्रैराच्छाद्य ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रेति उत्थाय मण्डपदेवालयप्रादक्षिण्येनानीय पश्चिमद्वारेण

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रविश्य देवसमीपे भद्रासने निवेश्य पुनः सम्पूज्य ॐ विश्वतश्चक्षुरितिपठित्वा सकलीकृत्य ( षडङ्गन्यासः इति सकलीकृत्य ) घृतदधिक्षीरमधुभिः पृथक् पृथक् ॐ त्र्यम्बकं यजामहेति अष्टोत्तरशतं हुत्वा शान्तिकलशे संस्रवं निक्षिप्य तेनोदकेन पादनाभिहृदाक्षिशिरांसि कलशस्य क्रमेण स्पृशेत् ॥ गंधादिना संपूज्य उत्थाय ॐ आजिघ्रकलशं मह्यात्वेति मंत्रेण शिखरोपरि प्रतिष्ठाप्य तस्मिन्कलशे शिवप्रतिष्ठायां त्रिशूलं स्वर्णमयं ताम्रमयं वा स्थापनीयम् ॥ ( विष्णुप्रतिष्ठायां चक्रं सूर्यलक्ष्मीविरंचीनां पद्मं इत्यायुधानि ( केचित्तु कलशसमीपे मानस्तम्भोध्वजस्तम्भं च प्रतिष्ठापयेत् ) ततो गुरुः प्रासादाभिमुखो भूत्वा देवरूपं प्रासादं ध्यायेत् ॥ ( तद्यथा ) पादौ पादशिलास्तस्य जंघा पादोर्ध्वमुच्यते ॥ गर्भश्चैवोदरं ज्ञेयं कटिश्चैव तु मेखला ॥ १ ॥ स्तम्भाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टा जिह्वा प्रकीर्तिता ॥ दीपः प्राणोस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः ॥ २ ॥ ब्रह्मस्थानं यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्त्तिता ॥ हृत्पद्मं पिण्डिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृतः ॥ ३ ॥ पादचारस्त्वहंकारो ज्योतिस्तच्चक्षुरेव च ॥ तदूर्ध्वं प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः ॥ ४ ॥ जलकुम्भादधो द्वारं तस्य प्रजननं स्मृतम् ॥ शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्यते ॥ ५ ॥ कपोतपालिः स्कन्धोस्य ग्रीवा चामलसारकः ॥ कलशस्तु शिरो ज्ञेयं मज्जा क्षिप्तरसं हितम् ॥ ६ ॥ मोदश्चैव सुधां विद्यात्प्रलेपो मांस उच्यते ॥ अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नायुः कीलादयः स्मृताः ॥ ७ ॥ चक्षुषी शिखरास्तस्य ध्वजाः केशाः प्रकीर्त्तिताः ॥ एवं पुरुषरूपं तं ध्यात्वा च मनसा



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुधीः ॥ ८ ॥ प्रासादं पूजयेत्पश्चाद्गन्धपुष्पादिभिः शुभैः ॥ सूत्रेण वेष्टयेद्देवं वासस्तत्परिकल्पयेत् ॥ ९ ॥ प्रासादमेवमभ्यर्च्य वाहनं चाग्रमण्डपे ॥ ध्यात्वा संपूज्य प्रासादं आत्मानं च निवेदयेत् ॥ १० ॥ ततः पिंडिकावाहनपरिवारदेवानां तत्तन्नाममंत्रैः तिलैरष्टाष्टसंख्याकं होमं कृत्वा ॥ चतस्रो धेनवो उदङ्मुखीः स्थापयित्वा संपूज्य गुरुवे दद्यात् ॥ इति प्रासादाधिवासनम् ॥

## अथ प्रासादोत्सर्गः ॥

तद्यथा ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं इमं शिलेष्टकादार्वादिनिर्मितं वलभीजगतीप्राकारपरिवारगोपुरपरिवारदेवतालयसंयुतं तत्तद्देवतालोककामः कुलद्वयानुग्रहायामुकदेवताप्रीतयेऽहमुत्सृजामि ॥ इति कुशयवजलानि भूमौ क्षिप्त्वा देवं नत्वा ॥ इति प्रासादोत्सर्गः ॥

## अथाऽचलप्रतिष्ठायाः कर्म ॥

ततः आचार्यः अधिवासितां देवताधारभूतां कूर्मशिलां ब्रह्मशिलां पिंडिकां च ॥ ॐ त्रातारमिन्द्र-

१ प्रासादमण्डने ॥ अर्द्धाङ्गुलो भवेत्कूर्म एकहस्ते सुरालये ॥ अर्द्धाङ्गुलो ततो वृद्धिः कार्या तिथिकरावधिः ॥ एकत्रिंशत्करान्तं च तदर्धा वृद्धिरिष्यते ॥ तस्योपरि तदर्धान्तकूर्मो मन्वङगुलोत्तमः ॥ २. शाकल्यसंहितायां ॥ पीठार्धप्रमाणेन तृतीयांशेन वा पुनः स्वायम्भुवी शिला पंचचत्वारिंशद्गर्तयुता ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri.

मवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः इति मंत्रेण गृहीत्वा ॥ शांतिघोषैः प्रदक्षिणं प्रासादमानीय द्वारदेशे स्थापयित्वा ॐ अस्त्रायफट् इतिमंत्रेण ॥ ततः पुष्पोदकेन प्रासादगर्भमभ्युक्ष्य ॥ ॐ महाँऽइन्द्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु ॥ हन्तुपाप्मानंयोस्मान्द्वेष्टि । उपयामगृहीतोसिमहेन्द्रायत्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा इति मंत्रेण दर्भेणोल्लिख्य हुँफट् इति जलेन प्रोक्ष्य ॥ देवालयमध्ये सूत्रं दत्वा तन्मध्यात् यवप्रमाणेन यवार्धप्रमाणेन वा उत्तराश्रितां स्नानादिसंस्कृतां कूर्मशिलां प्रणवेन पञ्चरत्नोपरि निधाय तच्छ्वभ्रे सौवर्णं कूर्मं द्वारसंमुखं निधाय ॥ तदुपरि पंचरत्नानि निधाय तस्योपरि पंचचत्वारिंशद्गर्तयुतां ब्रह्मशिलामधिवासितान्निदध्यात् ॥ ॐ नमो व्यापिनि स्थिरे अचले ध्रुवे ॐ श्रीं लं स्वाहा इति मंत्रेण ततः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ त्वमेव परमा शक्तिस्त्वमेवासनधारिका ॥ शिवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्यमिह सर्वदा इति प्रार्थना ॥ तत आसनशिलायां पूजयेत् ॥ ॐ वर्णाध्वने नमः ॥ ॐ पदाध्वने नमः ॥ ॐ मंत्राध्वने नमः ॥ ॐ भुवनाध्वने नमः ॥ ॐ तत्वाध्वने नमः ॥ ॐ सकलाध्वने नमः इत्यासनस्थानस्थां कूर्मशिलां सम्पूज्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रणमेत् ॥ इति शिलां स्थिरीकृत्य ॐ इदंविष्णुरिति अष्टोत्तरशतं कुंडे हुत्वा ॥ ततः बौधायनोक्तपुण्याहवाचनं कृत्वा ॥ ब्रह्मशिलागर्तेषु सहेम्ना



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रत्नादिन्यासं हस्तेनैव कुर्यात् ( तद्यथा बाह्यपरिधौ ) यवव्रीहिनिष्पावप्रियङ्गुतिलमाषनीवारशालिसिद्धार्थकान् ॥ ( तदधः श्वभ्रे ) वज्रमौक्तिकवैडूर्यशंखस्फटिकपुष्परागचन्द्रकान्तइन्द्रनीलपद्मरागान् ( तदधः श्वभ्रे ) मनःशिलाहरितालश्वेताञ्जनश्यामाञ्जनकासीससौराष्ट्रीगोरोचनगेरूपारदान् ( तदधः श्वभ्रे ) सौवर्णरौप्यताम्रआयसत्रपुसीसकांश्यआरकूटतीक्ष्णलोहानि ( तदधः श्वभ्रे ) श्वेतरक्तचंदनअगरुअर्जुनउशीरवैष्णवीसहदेवीलक्ष्मणा चेति ( तत्र बीजानामभावे यवान् ॥ रत्नानामभावे वज्रम् ॥ धातूनामभावे हरितालं ॥ ताम्राद्यभावे सुवर्णम् ॥ औषधीनामभावे सहदेवीं न्यसेत् ) एवं न्यस्तानां दिक्पालमंत्रेणालम्भनं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ पूर्वे ॥ ॐ त्रातारमिन्द्र० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० ॥ ॐ यमायत्वा० ॥ ॐ अशुन्वन्तम० ॥ ॐ तत्वायामि० ॥ ॐ वायोषेते० ॥ ॐ वयर्ठ० सोम० ॥ ॐ तमीशानं० ॥ एवं रत्नादिन्यासं कृत्वा ॥ श्वभ्ररहिते शिलोपरिभागे सश्वभ्रपिण्डिकापूर्वपश्चिमानने प्रासादे उत्तरप्रणालीं ॥ दक्षिणोत्तरानने पूर्वप्रणालीं ध्रुवसूक्तेन निधाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ ध्रुवोसिपृथिवीन्दृर्ठ० हदृध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षन्दृर्ठ० हाच्युतक्षिदसिदिवन्दृर्ठ०हाग्नेःपुरीषमसि ॥ देवपत्नीमंत्रेण पिंडिकां स्थापयेत् ॥ ( देवपत्नीमंत्रः ) ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरंञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ इति शिवप्रतिष्ठायाम् ( यदा विष्णुश्चेत्तदा श्रीश्चतेतिमंत्रेण ॥ ब्रह्मा चेत्तदा गायत्रीमंत्रेण वा ॥ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्व्वाजि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नींवती ॥ यज्ञंवष्टुधियाव्वंसुः ॥ सूर्यश्चेत्तदा ॐ उषस्तच्चित्रमाभंरास्मभ्यंठं० व्वाजिनीवति ॥ येनंतोकञ्चन-
॥१३१॥ तनंयञ्चधामंहेइतिमंत्रेण स्थापयेत् ) ततो तत्वन्यासं कुर्यात् ॥ शिवतत्वाय नमः ॥ शिवतत्वाधिपत्न्यै इच्छाशक्त्यै नमः ॥ इति शिवप्रतिष्ठायाम् ॥ विष्णुश्चेत्तदा ॥ आत्मत्वाय नमः आत्मतत्वाधिपत्न्यै क्रियाशक्त्यै नमः ॥ विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्वाधिपत्न्यै ज्ञानशक्त्यै नमः ॥ इति तत्वन्यासः ॥ पिंडिकायां आधारशक्त्यै नमः ॥ इति न्यस्य ॥ अनन्तासनतत्वेभ्यो नमः आसनशक्तिभ्यो नमः इत्युक्त्वाभ्यर्च्य प्रार्थयेत् ॥ सर्वदेवमयीशानि त्रैलोक्याह्लादकारिणि ॥ त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मंदिरे विश्वनिर्मिते ॥ १ ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा ॥ तावत्त्वं देवदेवेशि मन्दिरेस्मिन्स्थिरा भव ॥ २ ॥ पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम् ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि मे ॥ ३ ॥ विजयं नृपतेः सर्व लोकानां क्षेममेव च ॥ सुभिक्षं सर्वलोकानां कुरु देवि नमोस्तु ते ॥ ४ ॥ एवं पिंडिकां प्रतिष्ठाप्य प्रसादाद्बहिरष्टदिक्षु स्थण्डिलं कृत्वा स्थंडिलानामीशानभागेषु कलशस्थापन-विधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशान् संपूज्य ॥ स्थण्डिलेषु पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ प्रतिस्थण्डिले प्रादेशमात्रपालाशसमिधामष्टोत्तरशतं देवस्य मूलमंत्रेण हुत्वा आज्येन च ॥ अथाचार्योऽष्टदिक्संस्थेभ्यः कुम्भेभ्यः ॥१३१॥
पात्रे तोयमुद्धृत्य मूलमंत्रेण अभिमंत्र्य प्रतिमासन्निधौ गत्वा सर्वतीर्थमयमिदं जलमिति ध्यायन् देवमूर्ध्नि

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभिषिञ्चेत् ॥ देवप्रार्थना ॥ प्रबुध्यस्व महाभाग देवदेव जगत्पते ॥ मेघश्याम गदापाणे प्रबुद्धकमलेक्षण ॥ प्रबुद्धभूधरानन्त वासुदेव नमोस्तु ते ॥ जलक्षीरकुशाग्रातिलतण्डुलयवसिद्धार्थकपुष्पाणि शंखे वा अर्घे कृत्वा देवायार्घ्यं दत्वा ॥ ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेति देवमुत्त्थाप्य प्रासादद्वारसंमुखं लिङ्गं कृत्वा अर्घ्यं दत्वा प्रासादं प्रवेशये-दिति ॥ ततः सुमुहूर्ते सुस्थिरे लग्ने सौवर्णं पद्मं पिण्डिकायाः श्वभ्रे निधाय तस्मिन् श्वभ्रेऽष्टबंधनादि कृत्वा मूर्तिं निधाय लिङ्गयोरंतरालं वालुकासीसकादिभिर्दृढं कृत्वा पुनर्न चालयेत् ॥ ॐ प्रधानपुरुषो यावद्यावचन्द्रादिवाकरौ ॥ तावत्त्वमनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरो भव इत्युक्त्वा ॥ ॐ स्थिरो भव शाश्वतो भव ॥ ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवापृथिवी-ध्रुवंविश्वमिदंजगत् ॥ ध्रुवाश्चमेनगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः इति सूक्तं पठेत् ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो-मुखोविश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ॥ इतिमंत्रेण देवस्य मूर्ध्नि हस्तं निधाय परं देवं ध्यात्वा रुद्रसूक्तं जप्त्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् (विष्णुश्चेत्तदा पुरुषसूक्तंजप्त्वा) तद्यथा ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं क्रौं शक्तिः प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ऋग्यजुः सामछंदोभ्यो नमो मुखे ॥ प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि ॥ आं बीजाय नमो गुह्ये ॥ क्रौं शक्त्यै नमः पादयोः ॥ ॐ कं खं गं घं ङं आं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः ॥ ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा ॥ म०
॥१३२॥ ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊँ शिखायै वषट् ॥ ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायू-
पस्थात्मने ऐं कवचाय हुं ॥ ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ॥ एवं न्यासं कृत्वा देवं स्पृष्ट्वा
जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः महादेवस्य प्राण इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं
यं रं लं वं शं षं सं हं सः महादेवस्य जीव इह स्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः महादेवस्य
सर्वेन्द्रियाणि ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः ॥ महादेवस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य
स्वस्तये सुखेन सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ आचार्यः हृद्यङ्गुष्ठं दत्वा जपेत् ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै
प्राणाश्चरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ १ ॥ ॐ इति सन्निरुद्ध्य सजीवं ध्यात्वा ॥
ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ॥ ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः इति सूक्तं
जपित्वा कर्णे गायत्रीमंत्रं जप्त्वा ( ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् इति
शिवस्य ॥ विष्णोः ॥ ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ सूर्यस्य ॥ ॐ ॥१३२॥
भास्कराय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात् ॥ गणेशस्य ॥ ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ गौरी ॥ ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि ॥ तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥ नन्दी ॥ हरिवक्त्राय विद्महे रुद्रवक्त्राय धीमहि ॥ तन्नो नन्दी प्रचोदयात् ॥ लक्ष्मीः ॥ ॐ महाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ गरुडस्य ॥ ॐ वैनतेयाय विद्महे स्वर्णपक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ हनुमतः ॥ अञ्जनीसुताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ॥ तन्नो हनुमत्प्रचोदयात् ॥ रामचन्द्रस्य ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ॥ तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥ जानकी ॥ ॐ जनकात्मजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि ॥ तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥ लक्ष्मणस्य ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ॥ भरतस्य ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे माण्डवीवल्लभाय धीमहि ॥ तन्नो भरतः प्रचोदयात् ॥ शत्रुघ्नस्य ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे श्रुतिकीर्तिवल्लभाय धीमहि ॥ तन्नः शत्रुघ्नः प्रचोदयात् ॥ कृष्णस्य ॥ ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ राधायाः ॥ ॐ नन्दात्मजायै विद्महे कृष्णवल्लभायै धीमहि ॥ तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥ नारसिंहस्य ॥ ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ॥ तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥ ब्रह्मा ॥ चतुर्मुखाय विद्महे पद्मासनाय धीमहि ॥ तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥ स्कन्दस्य ॥ ॐ महासेनाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि ॥ तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात् ॥ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय नः ॥ सान्निध्यं तु महादेव स्वार्चायां परिपालय ॥ २ ॥ यावच्चंद्रावनी सूर्यस्तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्तानुकंपया ॥३॥ ( विष्णुश्चेत् ) अतसीपुष्पसंकाशं शंखचक्रगदाधरम् ॥ संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम् ॥ ( रुद्रस्य ) त्र्यक्षं च दशबाहुं च चंद्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ गणेशं वृषभस्थं च स्थापयामि त्रिलोचनम् ॥ ( सूर्यस्य ) सहस्रकिरणं शांतमप्सरोगणसेवितम् ॥ पद्महस्तं महाबाहुं स्थापयामि दिवाकरम् ॥ ( इत्यादि प्रार्थयेत् ) ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳ प्रतिष्ठ ॥ शिवप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ ( विष्णुश्चेत् ) विष्णो प्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ एवं सर्वत्र ॥ ततः षोडशोचारैः पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् इत्यावाहनम् ॥ ॐ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ इत्यासनं समर्पयामि ॥ ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ पाद्यं समर्पयामि ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ॥ अर्घ्यं समर्पयामि ॥ ॐ ततो विराडजायत विराजोऽ अधिपूरुषः ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ इत्याचमनम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ॥
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्व्यानारण्याग्राम्याश्च ये ॥ स्नानं समर्पयामि ॥ ॐ पयः पृथिव्व्यां पयऽ ओषधीषु
पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ पयः स्नानं सम० ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ
दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत् ॥ दधिस्नानं
सम० ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ॥ अनुष्वधमावह
मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्व्यम् ॥ घृतस्नानं स० शुद्धोदकस्नानं स० ॥ ॐ मधु व्वाताऽ ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तु नः
पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ मधुस्नानं स० शुद्धोदकस्नानं
स० ॥ अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् ॥ अपाꣳरसस्य यो रसस्तं व्वो गृह्णाम्युत्तममुपया-
म गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ शर्करास्नानं स० शुद्धोदकस्नानं स० ॥
ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्तानऽ ऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ शुद्धोदकस्नानं स० ॥ वा सुगन्धोदकं स० ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आचमनं स० ॥ ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ॥ वासोऽ अग्ने विश्वरूपं सं व्ययस्व
विभावसो ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ आचमनं स० ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ यज्ञोपवीतं स० ॥ आचमनं स० ॥ युवासुवासाः
परिवीतऽ आगात्सऽ उश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥
उपवस्त्रं स० ॥ आचमनं स० ॥ ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो
राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ गंधं सम० ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत ॥ अस्तोषत स्वभानवो
विप्रानविष्ठया मतीयोजान्विन्द्रते हरी ॥ अक्षतान्सम० ॥ ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥
अश्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ पुष्पमालां स० ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं
परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु विश्वतः ॥ नानापरिमलद्रव्याणि
स० ॥ ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योस्मान्धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमꣳ
सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ धूपं स० ॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य्यः स्वाहा अग्निर्व्वर्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ दीपं सम० ॥ हस्तप्रक्षालनम् ॥ ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्यां-म्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयन् ॥ प्राणाय स्वाहा ॥ अपानाय स्वाहा ॥ समानाय स्वाहा ॥ उदानाय स्वाहा ॥ व्यानाय स्वाहा ॥ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥ मध्ये पानीयं समर्पयामि ॥ उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥ ॐ अꣳशुना तेऽ अꣳशुः पृच्यतां परुषापरुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः ॥ चन्दनेन करोद्वर्त्तनं समर्पयामि ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥ व्वसन्तो-स्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं स० ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ॥ सदाधारं पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ दक्षिणां समर्पयामि ॥ ॐ इदꣳ हविः प्रजननम्मेऽ अस्तु दशव्वीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽ अस्म्मासु धत्त ॥ कर्पूरार्त्तिक्यं स० ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साध्याः सन्ति देवाः ॥ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् । सार्वभौमः सार्वायुषां-तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ मन्त्रपुष्पा-ञ्जलिं समर्पयामि ॥ ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानितन्मसि ॥ प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ ( प्रार्थना ) ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावद्विधिरनुष्ठितः ॥ स सर्व-स्त्वत्प्रसादेन समग्रो भवतान्मम ॥ इति विष्णोः ॥ शिवस्य ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भगवन् यत्कृतं मया ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति प्रार्थ्य (ततः कर्तृनामयुतं देवनाम कुर्यात्सर्वदा व्यवहारार्थं) तद्यथा ॥ शिवस्य—अमुकेश्वरः ॥ विष्णोः—अमुकनारायणः ॥ सूर्यस्य—अमुकादित्यः ॥ गणपतेः—अमुकविनायकः ॥ देव्याः—अमुकेश्वरी ॥ इत्यादि नाम विदध्यात् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ प्रतिष्ठाहोमं कुर्यात् ।

ॐ शिवाय स्थिरो भव स्वाहा ॥ ॐ शिवायाप्रमेयो भव स्वाहा ॥ शिवायानादिबोधो भव स्वाहा ॥ ॐ शिवाय नित्यो भव स्वाहा ॥ ॐ शिवाय सर्वगो भव स्वाहा ॥ ॐ शिवायाविनाशो भव स्वाहा ॥ ॐ शिवाय क्लृप्तो भव स्वाहा ॥

## अथ सर्वशान्त्यर्थं अघोरमंत्रेणाष्टोत्तरशतं हुत्वा—

॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो० स्वाहा ॥ १०८ ॥

एवं सर्वदेवमूलमंत्रेण हुत्वा शिवस्थाने नारायणायेति सर्वेषु ऊहा कार्या ॥

## ( अथ ब्रह्मादिमंडलदेवतानां आज्येन होमः )

ॐ ब्रह्मयज्ञानं० ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥ ॐ वयर्ठ० ॥ सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय० ॥ ॐ तमीशानं० ॥ ईशानाय स्वाहा ॥ इदमीशानाय० ॥ ॐ त्रातरमिन्द्र० ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० ॥ अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ॐ यमायत्वा० ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ अशुन्वन्तम० ॥ निर्ऋतये स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये० ॥ ॐ तत्त्वायामि० ॥ वरुणाय स्वाहा ॥ इदं वरुणाय० ॥
ॐ आनोनियुद्भिः ॥ वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥ ॐ वसोः पवित्रमसि ॥ अष्टवसुभ्यः स्वाहा ॥ इदं
अष्टवसुभ्यो० ॥ ॐ नमस्ते रुद्र० ॥ रुद्राय स्वाहा ॥ इदं रुद्राय० ॥ ॐ बण्महांऽअसि० ॥ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा ॥
इदं द्वादशादित्येभ्यो० ॥ ॐ यावाङ्कशा० ॥ ॐ आश्विभ्यां स्वाहा ॥ इदमश्विभ्यां० ॥ ॐ विश्वेदेवासऽआ० ॥
सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ इदं सपैतृकविश्वेभ्यो० ॥ ॐ अभित्यन्देवर्ठ० स० ॥ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा ॥
इदं सप्तयक्षेभ्यो० ॥ ॐ नमोस्तु सर्पे० ॥ अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा ॥ इदं अष्टकुलनागेभ्यो० ॥ ॐ ऋताषाडृत० ॥
गंधर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा ॥ इदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो० ॥ ॐ यदक्रन्दः ॥ स्कन्दाय स्वाहा ॥ इदं स्कन्दाय० ॥
ॐ आशुः शिशान० ॥ वृषभाय स्वाहा ॥ इदं वृषभाय० ॥ ॐ कार्षिरसि० ॥ शूलाय स्वाहा ॥ इदं शूलाय० ॥
ॐ कार्षिरासि० ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ इदं महाकालाय० ॥ ॐ नमो गणेभ्यो० ॥ दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा ॥
इदं दक्षादिसप्तगणेभ्यो० ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ॥ दुर्गायै स्वाहा ॥ इदं दुर्गायै० ॥ ॐ इदं विष्णु० ॥ विष्णवे स्वाहा ॥
इदं विष्णवे० ॥ ॐ पितृभ्यः ॥ स्वधायै स्वाहा ॥ इदं स्वधायै० ॥ ॐ परम्मृत्यो० ॥ मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा ॥
इदं मृत्युरोगेभ्यो० ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ गणपतये स्वाहा ॥ इदं गणपतये० ॥ ॐ आपोहिष्ठा० ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥
इदमद्भ्यो० ॥ ॐ मरुतो यस्य० ॥ मरुद्भ्यः स्वाहा ॥ इदं मरुद्भ्यो० ॥ ॐ स्योनापृथिवी० पृथिव्यै स्वाहा ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इदं पृथिव्यै० ॥ ॐ इमम्मेवरुण० ॥ गंगादिनदीभ्यः स्वाहा ॥ इदं गंगादिनदीभ्यो० ॥ ॐ पञ्चनद्यः वा समुद्रोऽसि० ॥
सप्तसागरेभ्यः स्वाहा ॥ इदं सप्तसागरेभ्यो० ॥ ॐ प्रपर्वतस्य० वा अश्मा च मे० ॥ मेरवे स्वाहा ॥ इदं मेरवे० ॥
ॐ गणानान्त्वा० ॥ गदायै स्वाहा ॥ इदं गदायै० ॥ ॐ त्रिरं० शङ्खाम० ॥ त्रिशूलाय स्वाहा ॥ इदं त्रिशूलाय० ॥
ॐ महाँइन्द्रो वज्र० ॥ वज्राय स्वाहा ॥ इदं वज्राय० ॥ ॐ वसु च मे० ॥ शक्तये स्वाहा ॥ इदं शक्तये० ॥
ॐ इडएह्य ॥ दंडाय स्वाहा ॥ इदं दंडाय० ॥ ॐ खड्गो वैश्व० ॥ खड्गाय स्वाहा ॥ इदं खड्गाय० ॥ ॐ उदुत्तम० ॥
पाशाय स्वाहा ॥ इदं पाशाय० ॥ ॐ अरं०शुश्च मे० ॥ अङ्कुशाय स्वाहा ॥ इदमङ्कुशाय० ॥ ॐ आयङ्गौः ॥
गौतमाय स्वाहा ॥ इदं गौतमाय० ॥ ॐ अयं दक्षिणा० ॥ भरद्वाजाय स्वाहा ॥ इदं भरद्वाजाय० ॥ ॐ इदमुत्तरात्० ॥
विश्वामित्राय स्वाहा ॥ इदं विश्वामित्राय० ॥ ॐ त्र्यायुषं जम० ॥ कश्यपाय स्वाहा ॥ इदं कश्यपाय० ॥
ॐ अयं पश्चा० ॥ यमदग्नये स्वाहा ॥ इदं यमदग्नये० ॥ ॐ अयं पुरो० ॥ वशिष्ठाय स्वाहा ॥ इदं वशिष्ठाय० ॥
ॐ अत्र पितरो० ॥ अत्रये स्वाहा ॥ इदमत्रये० ॥ ॐ तस्पत्नी० ॥ अरुन्धत्यै स्वाहा ॥ इदं अरुन्धत्यै० ॥
ॐ अदित्यैरास्ना० ॥ ऐंद्र्यै स्वाहा ॥ इदमैन्द्र्यै० ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ॥ कौमार्य्यै स्वाहा ॥
इदं कौमार्य्यै० ॥ ॐ पावकानः ॥ ब्राह्म्यै स्वाहा ॥ इदं ब्राह्म्यै० ॥ ॐ इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यन्दिशाअत्र

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दित्यै भस्ज्जीमूतांन्हृदयौपशेनान्तरिंक्षम्पुरीततां नभंऽउदर्य्येण चक्रवाकौ मतंस्नाभ्यान्दिवंव्वृक्काभ्यांङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपंलान्प्लीन्हाव्वल्मीकांक्क्लोमभिंग्ग्लौभिग्गुल्मांन्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्यांᳩसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥ वाराह्यै स्वाहा ॥ इदं वाराह्यै० ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० ॥ चामुण्डायै स्वाहा ॥ चामुण्डायै० ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मी० ॥ वैष्णव्यै स्वाहा ॥ इदं वैष्णव्यै० ॥ ॐ या ते रुद्राशिवा० ॥ माहेश्वर्य्यै स्वाहा ॥ इदं माहेश्वर्य्यै० ॥ ॐ समख्येदेव्या० ॥ वैनायक्यै स्वाहा ॥ इदं वैनायक्यै० ॥ ( ततः स्विष्टकृदादिहोमः ) तद्यथा ॥ ॐ अग्ने नयं सुपथा रायेऽ अस्मान्विश्वांनि देव व्वयुनांनि व्विद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुंहुराणमेनो भूयिंष्ठान्ते नमंऽ उक्तिं विधेम ॥ ॐ स्वाहास्वधायुताग्नये व्वैश्वानराय नमः इति मंत्रेणाग्निं सम्पूज्य ( ततो हुतशेषद्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् ) ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ( इत्यारभ्य प्राजापत्यन्तं दशसु आहुतिषु हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे त्यागः ) ततो भूरादिनवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ इदं सूर्याय० ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने० ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ॐ सत्वन्नोऽअग्ने० ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० ॥ इदमग्नये अयसे० ॥ ॐ येतेशतं० ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥





CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ उदुत्तमंवरुण० ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥ ( ततो अग्न्यायतनस्य समन्ताद्दिक्षु विदिक्षु च दशादिक्पालानां सदीपदधिमाषभक्तबलयो देयाः ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रेत्यादि० ॥ ॐ इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ एवं सर्वत्र ( एकतन्त्रपक्षे ) ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहाव्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥ ततो गंधादिभिः इन्द्रादिदशादिक्पालेभ्यो नमः इति सम्पूज्य ॥ हस्ते जलाक्षतान् गृहीत्वा ॥ इन्द्रादिदशादिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान्सदीपदधिमाषभक्तबलीन्समर्पयामि ॥ प्रार्थना ॥ भो भो इन्द्रादिदशादिक्पालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्तारः शुभकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशादिक्पालाः प्रीयन्ताम् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

( एवं सर्वेभ्यो ग्रहेभ्य एकतन्त्रैणैकमेव बलिं दद्यात् तद्यथा ) ॐ ग्रहाऽ ऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् ॥ तेषां विशि प्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ सूर्यादिवास्तोष्पत्यन्तदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य ॥ हस्ते जलाक्षतान् गृहीत्वा ॥ सूर्यादिनवग्रहेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतापंचलोकपालवास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना ॥ भो भो सूर्यादिग्रहाः साधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः पंचलोकपालवास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्तारः शुभकर्तारः शांतिकर्त्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॥ अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥

## अथ क्षेत्रपालबलिदानम् ।

एकस्मिन्वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहारचतुर्गुणं द्विगुणं वा माषदध्योदनं वा जलपात्रं च निधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्राकुंकुमादिपताकायुतं कृत्वा ॥ ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एतार॑मग्ने॒ ॥ एमेनमृध॒न्नमृता॒ऽअम॑र्त्यं वैश्वान॒रं क्षैत्रजित्याय दे॒वाः॒ ॥ क्षेत्रपालाय नमः इति संपूज्य प्रार्थयेत् ॥
नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैस्सह ॥ पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ १ ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि
सर्वान्कामाँश्च देहि मे ॥ आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ २ ॥ ( ततो बलिदानम् ) हस्ते जलाक्षतान्गृ-
हीत्वा ॥ क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगणभैरवराक्षसकूष्माण्डवेतालभूतप्रेत-
पिशाचशाकिनीडाकिनीपिशाचिनीगणसहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना ॥ भो
क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता
तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॥ अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥ ततो दुर्ब्राह्मणेन शूद्रेण
वा ( नापितद्वारा ) बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत् ॥ ततो
यजमानस्तस्य पृष्ठतो द्वारपर्यन्तं गत्वा हिंकारायेति मंत्रेण जलं क्षिपेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ हि॒ङ्का॒रा॒य स्वाहा॑
२४ हिङ्कृ॑ताय॒ स्वाहा॒ क्रन्द॑ते॒ स्वाहा॑वक्रन्दा॑य॒ स्वाहा॒ प्रोथ॑ते॒ स्वाहा॑ प्रप्रोथा॑य॒ स्वाहा॑ गन्धाय॒ स्वाहा॑ घ्राताय॒ स्वाहा॒ निवि॑-
ष्टाय॒ स्वाहोप॑विष्टाय॒ स्वाहा॒ सन्दि॑ताय॒ स्वाहा॒ वल्ग॑ते॒ स्वाहासी॑नाय॒ स्वाहा॒ शया॑नाय॒ स्वाहा॒ स्वप॑ते॒ स्वाहा॒ जाग्र॑ते॒

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वाहा कूजंते स्वाहा प्रबुंद्धाय स्वाहां व्विजृम्भंमाणाय स्वाहा व्विचृंत्ताय स्वाहा सꣳहांनाय स्वाहोपांस्थिताय स्वाहायंनाय स्वाहा प्प्रायंणाय स्वाहां ॥ ( ततो यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याचम्य ) ततः नारिकेलं फलं रक्तवस्त्रवेष्टितं द्वादशषट्चतुःस्रुवेण गृहीतमाज्यं स्रुच्यां कृत्वा स्रुच्युपरि नारिकेलं संस्थाप्य ॐ पूर्णाहुत्यै नमः इति सम्पूज्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुंमाँऽउदांरदुपाꣳशुना सममृतत्वमांनट् ॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानांममृतंस्य नाभिंः ॥ १ ॥ व्वयन्नाम प्रब्ब्रवामाघृतस्यास्मिन्यज्ञे धांरयामानमोंभिः ॥ उपंब्रह्माशृंणवच्छस्य मांनश्चतुंःशृङ्गोवमीद्गौरऽ एतत् ॥ २ ॥ चत्वारि शृङ्गा त्रयोंऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तांसोऽ अस्य ॥ त्रिधां बद्धो व्वृंषभो रोंरवीति महो देवो मर्त्याँꣳऽ आविंवेश ॥ ३ ॥ त्रिधां हितम्पणिभिंर्गुह्यमांनङ्गविं देवासों घृतमन्वंविन्दन् ॥ इन्द्रऽ एकꣳ सूर्य्यऽ एकंञ्जजान व्वेनादेकꣳ स्वधया निष्टंतक्षुः ॥४॥ एताऽ अंर्षन्ति हृद्यांत्समुद्राच्छतव्रंजा रिपुणा नावचक्षे ॥ घृतस्य धाराऽ अभिचांकशीमि हिरण्ययों व्वेतसो मध्यंऽ आसाम् ॥ ५ ॥ सम्यक्स्स्रवन्ति सरितो नधेनांऽ अन्तर्हृदा मनंसा पूयमांनाः ॥ एतेऽ अंर्षन्त्यूर्म्मयों घृतस्यं मृगाऽ इंव क्षिपणोरीषंमाणाः ॥ ६ ॥ सिन्धोंरिव प्राध्वने शूंघनासोव्वातंप्प्रमियः पतयन्ति यह्वा ? ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घृतस्य धाराऽ अरुषोन व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥ अभिप्प्रवन्तसमनेव्वयोषाः ॥
कल्याण्यः स्मयमानासोऽ अग्निम् ॥ घृतस्य धाराः समिधोनसन्तताजुषाणोहर्यतिजातवेदाः ॥ ८ ॥ कन्याऽइव-
व्वहतुमेतवाऽ उऽ अञ्ज्यञ्जानाऽ अभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमः सूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽ अभितत्पवन्ते ॥ ९ ॥
अभ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानि धत्त ॥ इमंयज्ञन्नयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥
धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीकेसमिथेयऽ आभृतस्तमश्यामसधुमन्तन्तऽ
ऊर्म्मिम् ॥ ११ ॥ पुनस्त्वादित्यारुद्राव्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः घृतेनत्वन्तन्वंव्वर्धयस्वसत्याः
सन्तुयजमानस्यकामाः ॥ १२ ॥ सप्ततेऽ अग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधामप्रियाणि ॥ सप्तहोत्राः
सप्तधात्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा ॥ १३ ॥ मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृतऽ आजातम-
ग्निम् ॥ कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ १४ ॥ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत ॥
वस्नेवव्विक्रीणावहाऽ इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा ॥ १५ ॥ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे
सप्तवतेऽ अग्नये अद्भ्यश्च न मम ॥ इति प्रोक्षणीपात्रे त्यागः ॥ इति पूर्णाहुतिः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ वसोर्द्धारां जुहुयात् ।

तत्र मंत्राः ॥ ॐ सप्तते ऽ अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधामप्रियाणि ॥ सप्तहोत्राः सप्तधात्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा ॥ १ ॥ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्चसत्यज्योतिश्चज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्चऋतपाश्चात्त्यंहाः ॥ २ ॥ ईदृङ्चान्यादृङ्चसदृङ्चप्रतिसदृङ् ॥ मितश्चसम्मितश्चसभराः ॥ ३ ॥ ऋतश्चसत्यश्चध्रुवश्चधरुणश्च ॥ धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः ॥ ४ ॥ ऋतजिच्चसत्याजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्च ॥ अन्तिमित्रश्चदूरे ऽ अमित्रश्चगणः ॥ ५ ॥ ईदृक्षास ऽ एतादृक्षास ऽ ऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽ एतन ॥ मितासश्चसम्मितासोनो ऽ अद्यसभरसोमरुतोयज्ञे ऽ अस्मिन् ॥ ६ ॥ स्वतवाँश्चप्रघासीचसान्तपनश्चगृहमेधीच ॥ क्रीडीचशाकीचोज्जेषि ॥७॥ इन्द्रन्दैवीर्विशोमरुतोनुवर्त्मानोभवन्न्यथेन्द्रंदैवीर्विशोमरुतोनुवर्त्मानोभवन् ॥ एवमिमंयजमानन्दैवीश्चविशोमानुषीश्चानुवर्त्मानोभवन्तु ॥ ८ ॥ इमᳫंस्तनमूर्जस्वन्तन्धयापाम्प्रपीनमग्नेसारिरस्यमध्ये ॥ उत्सञ्जुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियᳫं सदनमाविशस्व ॥ ९ ॥ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावहमाद- 

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यंस्वस्वाहाकृतंवृषभवाक्षिहुव्यम् ॥ १० ॥ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासविता पुनातुव्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः स्वाहा ॥इदमग्नये वैश्वानराय न मम ॥ इति वसोर्द्धारा समाप्ता ॥ (ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमदेशे प्राङ्मुख उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय त्र्यायुषाणि कुर्यात् ) तद्यथा ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे ॥ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे ॥ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ॥ (संस्रवप्राशनम्) आचमनम् ॥ पवित्राभ्यां प्रणीतोदकेन मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः (ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्) कृतस्य अमुकदेव( पंचायतन )प्रतिष्ठाहोमकर्मणोंगतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु इति मंत्रेण पूर्णपात्रं ब्रह्मा गृह्णीयात् ॥ ततोऽग्नेः पश्चादैशान्यां वा प्रणीताविमोकः ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ उपयमनकुशैर्मार्जयेत् ॥ उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ॥ ततः श्रेयःसम्पाद्यदानम् ॥ आचार्यः जलाक्षतं गृहीत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि कृतस्य प्रतिष्ठाख्यस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये ॥ पुनः जलाक्षतपूगीफलं गृहीत्वा भवन्नियोगेन मया अस्मिन्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं एभिर्ब्राह्मणैः सह यदुत्पन्नं श्रेयस्तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान्भव ॥ भवामीति यजमानः ॥ तत आचार्यादीन्गन्धवस्त्रालङ्कारादिभिर्यथाविभवं पूजयेत् ॥ (ततो

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिणादानम् ॥ तत्रायं क्रमः ) आचार्याय गाम् ॥ ब्रह्मणे वृषभम् ॥ सदस्यायाश्वम् ॥ गाणपत्याय रथम् ॥ उपद्रष्ट्रे गंत्रीम् ॥ ऋत्विग्भ्यः सुवर्णं दद्यात् ॥ तत्र संकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य० गोत्रः शर्माहं कृतस्य शिवादि- ( वा विष्ण्वादि ) प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ कृतस्य० इदं वृषनिष्क्रयभूतंद्रव्यं० ब्रह्मणे तुभ्य० ॥ कृतस्य० इदमश्वनिष्क्रय० सदस्याय० ॥ कृतस्य० इदं रथनिष्क्रय० गाणपत्याय तुभ्य० ॥ कृतस्य० इदं गंत्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यं० उपद्रष्ट्रे ॥ कृतस्य० इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं० ऋत्विग्भ्यः विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ( ततः प्रधानपीठशय्यादिदानम् ) यथालब्धोपचारैः देवान्संपूज्य कर्पूरनीराजनं पुष्पाञ्जल्यन्तमुत्तरपूजां कृत्वा ॥ ततो दानम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य० गोत्रः शर्माहं इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करां शय्यां च अमुकगोत्रायामुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ कृतैतत्प्रधानपीठादिदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ कृतस्य० प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासंख्याकान्ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये ॥ भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये ॥

## अथाभिषेकः ।

ततो रुद्रकलश देवतान्तरकलशोदकं च एकास्मिन्पात्रे कृत्वा दूर्वापञ्चपल्लवैरुदङ्मुखमाचार्यादि तिष्ठन्

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राङ्मुखमुपविष्टं सकुटुम्बं यजमानमभिषिंचेयुः ॥ तत्र मंत्राः ॥ देवस्यंत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैवाचो यन्तुर्यन्त्रियेदधामिबृहस्पतेष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥ देवस्यंत्वा० ॥ सरस्वत्यैवाचोयंतुर्यंत्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥ देवस्यंत्वा० ॥ आश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिंञ्चामिसरस्वत्यैभैषज्येनवीर्यायान्नाद्यायाभिषिंञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियैयशसेऽभिषिंञ्चामि ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः ॥ वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आखण्डलोग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ॥ देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोस्तु ॐ कृतस्य

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मणः तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः समाश्रितबन्धुवर्गेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ (अथावाहितदेवता: अग्निं च विसर्जयेत् ) तत्र मंत्रः ॥ ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽ इन्द्र प्राशूर्भवासचा ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ॥ इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ आवाहितदेवताः स्वस्थाने गच्छत ॥ इति देवविसर्जनम् ॥ ॐ यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा ॥ एष ते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्व्वीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ इत्यग्निविसर्जनम् ॥ कृतस्य० साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं सभूमिमंडपं ( वा निष्क्रयभूतं द्रव्यं ) आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ हस्ते कुशजलाक्षतान्गृहीत्वा ॥ मया यत्कृतं यथाकालं यथादेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति प्रतिष्ठाकर्म तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् ॥ सकुशजलाक्षतान्भूमौ क्षिपेत् ॥ प्रार्थना ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ तिलकाशीर्वादः ।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ॥ धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ एवं चलप्रतिष्ठापि दृढं विहाय सर्वं पूर्ववत्कृत्वा ॥ इति प्रतिष्ठाकर्म समाप्तम् ॥

## अथ संक्षेपेण चलप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

तत्रादौ शुचौ देशे स्थण्डिलादि कृत्वा प्रतिष्ठादिने नित्यकर्म समाप्य शिल्पिस्थानाद्देवं तत्रानीय आसने निधाय तत्राचान्तः प्राणानायम्य ॥ आनोभद्रादीन्मङ्गलमंत्रान्पठित्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्य० गोत्रः शर्माहं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्षय्यसुखकामः अस्यां मूर्तौ लिङ्गे वा देवकलासान्निध्यार्थं अमुकदेवमूर्त्तिचलप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये ॥ ततो गणेशपूजनादारभ्य दिग्रक्षणप्रोक्षणान्तं कृत्वा ततः सर्वतोलिङ्गतोभद्रं वा देवतानुसारेण कृत्वा तदुपरि प्रधानप्रतिमां सम्पूज्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान्सम्पूज्य कुशकाण्डिकां विधाय आज्यभागं हुत्वा ग्रहयज्ञं विधाय प्रधानदेवमंत्रेण

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा आहुतिं कुर्यात् ॥ प्रार्थना ॥ स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोऽस्तु ते ॥ शुद्धेपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिकर्म सहस्वताम् ॥ ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते० इति मंत्रेण देवमुत्थाप्य स्नानपीठे निधाय पंचगव्यैः पंचामृतैश्च पृथक् पृथक् तत्तन्मंत्रैः संस्नाप्य ॥ ततो घृताभ्यङ्गमुद्वर्तनमुष्णोदकेन प्रक्षालनं कृत्वा ॥ पुनः चतुर्भिः कलशैः देवस्यत्वेति अभिषेकमंत्रैः देवमभिषिच्य पुनः औदुम्बरपीठे निधाय अष्टदिक्षु सजलकुंभान्पूर्वादिक्रमेण संस्थाप्य तेषु कलशेषु गंधपुष्पदूर्वाः क्षिप्त्वा ॥ प्रथमकुम्भे सप्तमृदः॥ द्वितीयकुंभे पंचपल्लवान् ॥ तृतीयकुंभे सप्तधान्यकुशांश्च ॥ चतुर्थकुंभे पंचरत्नशान्त्युदकं च ॥ पंचमकुम्भे फलपुष्पाणि ॥ षष्ठकुम्भे यवान् ॥ सप्तमकुम्भे सम्पातोदकं ॥ अष्टमकुम्भे सर्वौषधीः निक्षिप्य स्नापयेत् ॥ ॐ स्योनापृथिवीति मृत्तिकाप्रथमकलशेन ॥ ॐ अश्वत्थेवो० इति पल्लवद्वितीयकलशेन ॥ ॐ ओषधयः समवदन्तेति ॥ ॐ पवित्रेस्थो० इति धान्यकुशतृतीयकलशेन ॥ ॐ परिवाजपतिः द्यौः शान्तिरिति चतुर्थकलशेन ॥ ॐ याः फलिनीतिपंचमकलशेन ॥ ॐ यवोसीति षष्ठकलशेन ॥ ॐ द्यौःशान्तिः इति सप्तमकलशेन ॥ ॐ याऽओषधीरितिअष्टमकलशेन संस्नाप्य वाससी परिधायोपवीतं दत्वा गंधादिभिः सम्पूज्य ॥ अग्निर्ज्योतिरिति अष्टौ दीपान् प्रदर्शयेत् ॥ रजतपुटके मधु घृतं कृत्वा हिरण्यशलाकया ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य व्वरुणस्याग्नेः ॥ इत्यर्धर्चेन नेत्रद्वयं कल्पयित्वा ॥ ततो भक्ष्यभोज्यादर्शादि दर्शयेत् ( तदा अग्रे कोपि न तिष्ठेत् ) ततो ब्राह्मणान्पुण्याहवाचनं कृत्वा तत आचार्याय गां



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दत्वा ॥ कृतस्य नेत्रोन्मीलनसाङ्गतासिद्ध्यर्थं सवत्सां गां ( वा तन्निष्क्रयद्रव्यं ) आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे प्रार्थना ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ कृतै तत्सवत्सगोदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ततो देवं सम्पूज्य उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पतेतिदेवमुत्थाप्य मण्डलादुत्तरतः स्वस्तिकोपरि शय्यायां देवं उपवेश्य ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा न्यासं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ पुरुषात्मने नमः ॥ प्राणात्मने नमः ॥ प्रकृतितत्त्वाय नमः बुद्धितत्त्वाय नमः ॥ अहंकारतत्त्वाय नमः ॥ मनस्तत्त्वाय नमः ॥ इति सर्वाङ्गेषु ॥ प्रकृतितत्त्वाय नमो हृदि ॥ रसतत्त्वाय नमो वस्तौ ॥ गन्धतत्त्वाय नमः पादयोः ॥ श्रोत्रतत्त्वाय नमः कर्णयोः ॥ त्वक्तत्त्वाय नमः सर्वशरीरे ॥ चक्षुस्तत्त्वाय नमः चक्षुषोः ॥ जिह्वातत्त्वाय नमः जिह्वायाम् ॥ घ्राणतत्त्वाय नमः घ्राणे ॥ वाक्तत्त्वाय नमः वाचि ॥ पाणितत्त्वाय नमः पाण्योः ॥ पादतत्त्वाय नमः पादयोः ॥ पायुतत्त्वाय नमः पायौ ॥ उपस्थतत्त्वाय नमः उपस्थे ॥ पृथिवीतत्त्वाय नमः पादयोः ॥ अप्तत्त्वाय नमः वस्तौ ॥ तेजस्तत्त्वाय नमः हृदि ॥ वायुतत्त्वाय नमः घ्राणे ॥ आकाशतत्त्वाय नमः शिरसि ॥ रजस्तत्त्वाय नमः तमस्तत्त्वाय नमः सत्त्वतत्त्वाय नमः ॥ देहतत्त्वाय नमः इति देहे ॥ इति तत्त्वन्यासं कृत्वा पुरुषसूक्तन्यासं कुर्यात् ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः ॥ पुरुषऽएवेदꣳ० ॥ इति करयोः ॥ एतावानस्य० ॥ त्रिपादूर्ध्वेतिपादयोः ॥ ततो व्विराडजायत० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वं हुतः ॥ इति जान्वोः ॥ तस्माद्य-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञात्सर्वहुत ऋचः ॥ तस्मादश्वेति कट्योः ॥ तं यज्ञमिति नाभौ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुः इति हृदि ॥ ब्राह्मणो स्येति कंठे ॥ चंद्रमा मनसो० ॥ नाभ्याऽआसीदन्त० इति बाह्वोः ॥ यत्पुरुषेणेति मुखे ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिरित्यक्ष्णोः ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्तेति शिरसि॥ इति पुरुषसूक्तन्यासं कृत्वा ॥ ततः सुखशायी भव इति शय्यायां देवं वस्त्रेणाच्छाद्य स्वापयित्वा ततो शिरप्रदेश निद्राकलशं प्रतिष्ठाप्य संपूज्याधिवासयेत् ॥ ततः प्रातररुणोदये देवमुत्थाप्य मूलमंत्रेण प्रधानदेवमंत्रेणाष्टोत्तशतं हुत्वा ॥ तद्यथा ॥ अग्नये स्वाहा ॥ सोमाय स्वाहा ॥ धन्वन्तरये स्वाहा ॥ कुहै स्वाहा ॥ अनुमत्यै स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ परमेष्ठिने स्वाहा ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ अग्नये सोमाय स्वाहा ॥ अग्नयेऽअन्नाय स्वाहा ॥ अग्नयेऽअन्नपतये स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इति होमं कृत्वा तीर्थजलमादाय देवमंत्रेण दशवारमाभिमंत्र्य देवशिरसि अभिषिच्य ॥ ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति देवमुत्थाय ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरिति प्रासादे उपस्थाय देवस्य पुरस्तात् जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः ॥ दिक्पालेभ्यो नमः ॥ वसुभ्यो नमः ॥ रुद्रेभ्यो नमः ॥ आदित्येभ्यो नमः ॥ अश्विभ्यां नमः ॥ मरुद्भ्यो नमः ॥ कुबेराय नमः ॥ गंगादिमहानदीभ्यो नमः अग्नीषोमाभ्यां नमः ॥ द्यावापृथिवीभ्यां नमः ॥ इन्द्राग्नीभ्यां नमः ॥ धन्वन्तरये नमः ॥ सर्वेशाय नमः ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ इति जपित्वा पुष्पांजलिं गृहीत्वा प्रतिष्ठितपरमेश्वराय नमः ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इति पुष्पांजलिं दत्वा ॥ ध्रुवसूक्तेन प्रधानदेवमंत्रेण पुरुषसूक्तेन गायत्र्या व्याहृतिभिर्देवं अर्चायां प्रतिष्ठाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ यथा ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं क्रौं शक्तिः प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि ॥ आं बीजाय नमः गुह्ये ॥ क्रौं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः ॥ ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् ॥ ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुं ॥ ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादानगतिविसर्गानंदात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्रायफट् ॥ एवमात्मनि देवे च कृत्वा ॥ देवं स्पृष्ट्वा जपेत् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः देवस्य प्राण इह प्राणाः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं० देवस्य जीव इह स्थितः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं० देवस्य सर्वेन्द्रियाणि ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं० देवस्य वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ प्रतिमायाः लिङ्गस्य वा हृद्यङ्गुष्ठं दत्वा जपेत् ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै
३५ मामहेति च कश्चन ॥ ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ॥ ध्रुवाश्चेमे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 


स्त्रियः ॥ तत कर्णे देवगायत्रीं देवमंत्रं च जप्त्वा ॥ पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा पादनाभिशिरः स्पृष्ट्वा प्रार्थयेत् ॥ स्वागतं देव देवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ धर्मार्थकामासिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय नः ॥ सान्निध्यं तु महादेवस्यार्चायां परिकल्पय ॥ यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्तानुकंपया ॥ भगवन्देव देवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ॥ येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥ तेन रूपेण देवेश अर्चायां सन्निधो भव ॥ इति नमेत् ॥ ततः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ ततोऽग्निं संपूज्य स्विष्टकृदादिपूर्णाहुतिपर्यन्तं कर्म समाप्याचार्याय द्वादश तिस्रः एकां वा गां दत्वा ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्वा शतं विंशतिं वा विप्रान्भोजयेत् ॥ इति संक्षेपेण चलप्रतिष्ठाप्रयोगः समाप्तः ॥

## ( अथ जीर्णोद्धारविधिः )

ततो यजमानः शुभदिने प्रासादस्योत्तरैशान्यां वा पश्चिमद्वारैकतोरणं मण्डपं विधाय तन्मध्ये चतुरस्रां वेदीं तन्नैऋत्ये वास्तुवेदीं उत्तरे हवनार्थं स्थण्डिलं च कृत्वा ॥ आचम्य प्राणानायम्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मंगलमंत्रान्पठेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं ईश्वरप्रीतिकामो जीर्णादि दोषदुष्टलिङ्गस्य प्रतिमाया वा जीर्णोद्धारं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनमायु- 

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्यमंत्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये ॥ ततो गणेशपूजनादारभ्य वरणान्तं कृत्वा मंडपे दिग्रक्षणं प्रोक्षणं वास्तुपूजनं मंडपपूजनं सर्वतोभद्रादिदेवतापूजनं च कृत्वा पठिादौ प्रणवेनासनपूजनं कृत्वा ॥ तद्यथा ॥ ॐ व्यापकेश्वराय एह्येहि नमः ॥ ॐ व्यापकेश्वराय हृदयाय नमः ॥ ॐ व्यापकेश्वराय शिरसे स्वाहा । ॐ व्यापकेश्वराय शिखायै वषट् ॥ ॐ व्यापकेश्वराय कवचाय हुं । ॐ व्यापकेश्वराय नेत्रत्रराय वौषट् । ॐ व्यापकेश्वराय अस्त्राय फट् ॥ इति मंत्रैः शिवं पूजयेत् ॥ अन्यदेवतोद्धारे मूलमंत्रेणार्चयेत् ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः इतिमंत्रमष्टोत्तरशतं जप्ता ॥ ततोऽग्निं संस्थाप्याज्यभागान्तं हुत्वा ॥ लिङ्गचालनार्थं लिङ्गमंत्रेण अघोरेण च तिलाहुतिसहस्रं हुत्वा मंडलदेवताहोमं कृत्वा इन्द्रादिभ्यो बलिं दत्वा जीर्णदेवं प्रणवेन संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ जीर्णभग्नमिदं देव सर्वदोषावहं नृणाम् ॥ अस्योद्धारे कृते शांतिः शास्त्रेऽस्मिन्कथिता त्वया ॥ जीर्णोद्धारविधानं च नृपराष्ट्रविवर्द्धनम् ॥ तदत्राधिष्ठितं देवं प्रोद्धरामि तवाज्ञया ॥ इति देवस्य जीर्णदोषं श्रावयित्वा ॥ पुनः क्षीराज्यमधुदूर्वासमिद्भिर्देवमंत्रेणाष्टोत्तरशतं जप्त्वा तिलैः पायसेन च हुत्वा लिङ्गं प्रार्थयेत् ॥ लिङ्गरूपं समागत्य येनेदं समधिष्ठितम् ॥ यायास्त्वं संमितं स्थानं संत्याज्यैव शिवाज्ञया ॥ १ ॥ अत्र स्थाने च या विद्या सर्वविद्येश्वरैर्युता ॥ शिवेन सह संतिष्ठेतिमंत्रितजलेनाभिषिच्य विसर्जयेत् ॥ शिल्पियुतः शिवं साङ्गं विसृज्य । सौवर्णखनित्रेण

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खात्वा लिङ्गमादाय रथमारोप्य वामदेवायनम इति नद्यादौ क्षिपेत् ॥ प्रतिमां तु प्रणवेन क्षिपेत् ॥ दारुजं तु
॥१४६॥ मधुनाभ्यज्य अघोरेण दहेत् ॥ पुनः पूर्ववत् मूर्त्तिं स्थापयेत् ॥ प्रासादे जीर्णे तु ॥ प्रासादं मंत्रवत्खड्गेन छूरिकया वा संयोज्य नूतनप्रासादसिद्धिपर्यन्तं खड्गादिकमर्चयित्वा प्रसादे सिद्धे खड्गादिमंत्रान्यथास्थानं प्रतिष्ठाकाले न्यस्य यजमानमभिषिंच्य ॥ ततो लिंगं प्रतिमां वा तत्रैव विधिना संस्थाप्य ॥ ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वताऽइमे ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयं ध्रुवन्ते राजा व्वरुणा ध्रुवं देवो वृहस्पतिः ध्रुवन्तऽइन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् । ध्रुवं ध्रुवेण हविष्याभिसोमं मृशामसि अथोतऽ इन्द्रः केवलीर्व्विशो बलिहृतस्करत् ॥ इति ध्रुवसूक्तं पठित्वा स्थिरीकृत्य यथोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ भगवन् भूतभव्येश लोकनाथ जगत्पते ॥ जीर्णलिङ्गसमुद्धारः कृतस्ते चाज्ञया मया ॥ १ ॥ अग्निना दारुजं दग्धं क्षिप्तं शैलादिकं जले ॥ प्रायश्चित्ताय देवेश अघोरास्त्रेण तर्पितम् ॥ २ ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ कर्तूराज्ञः प्रजानां च शान्तिर्भवतु सर्वदा ॥ अस्माकं शिल्पिनां चैव सुप्रीतो भव सर्वदा ॥ ४ ॥ इति नत्वा ॥ पूजास्विष्टनवाहुतीबलिपूर्णाहुत्यंतकर्म समाप्याचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां पूर्वोक्तां दत्वा
देवान् विसृज्य ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ एवं संक्षेपतः प्रोक्तो जीर्णोद्धारविधिस्तव ॥ सर्वेषामेव देवानामेष ॥१४६॥
साधारणः स्मृतः ॥ १ ॥ यो जीर्णविधिना देवं संस्कुर्यान्मानवो भुवि ॥ फलं दशगुणं तस्य मूलान्नास्त्यत्र

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संशयः ॥ २ ॥ वापीकूपतडागानां सुरधाम्नां सदानघ ॥ प्रतिमानां सभानां च संस्कर्ता यो नरो भुवि ॥ ३ ॥ पुण्यं शतगुणं तस्य भवेन्मूलान्न संशयः ॥ संशयोत्र न कर्तव्यो जीर्णसंस्कारकर्मणि ॥ ४ ॥ मूलाद्दशगुणं प्रोक्तं पुण्यं कूपे प्रतिष्ठिते ॥ प्रतिमायां शतगुणं कूपादेः परिकीर्त्तितम् ॥ ५ ॥ प्रतिमादेर्दशगुणं जीर्णसंस्करणाद्भवेत् ॥ स्फुटिताविशीर्णश्वपचसेवितानां लिंगानां तादृशानां बाहुपादशिरःकर्णनासास्यहीनां विध्युक्तप्रकारेण चालनं जलादौ प्रतिपादनं च कृत्वा नूतनप्रकारेण तस्मिन्नेव स्थाने पूर्वसजातीयद्रव्यनिर्मितं तन्मानं तदाकारं लिङ्गं तादृशीं प्रतिमां च स्थापयेत् ॥ निषिद्ध दूषित निषिद्धजलमद्यस्पृष्टविप्रक्षतजदूषितपतिताद्यार्चितश्लेष्मविण्मूत्रादि-दूषितानां स्वस्थान स्थितामेव पुनः संस्कारो नोद्धारो नापि प्रतिपत्तिः ॥ ताम्रादिधातुमूर्तीनां चोरचाडालादिस्पर्शे धातुशुद्धिं कृत्वा पुनः प्रतिष्ठा अर्चाभङ्गादौ तद्दिने उपवासः इति जीर्णोद्धारविधिः ॥

## ( अथ संक्षेपतः बौधायनोक्तराधाकृष्णप्रतिष्ठा । )

आचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः पवित्रोवेति आत्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मंगलमंत्रान्पठेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य० मम सर्वपापक्षयार्थं दीर्घायुर्विपुलपुत्रपौत्राद्यनव-च्छिन्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजय सर्वपापनिरसन सकलसुखधर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिद्वारा श्रीराधा-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णप्रीत्यर्थं सनवग्रहमखसप्रासाद राधाकृष्णमूर्त्योः। स्थिर वा चलप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमंत्रजपं नांदीश्राद्धं आचार्यादिवरणानि च करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये ॥ गणेशपूजनादारभ्य प्रधानपूजनान्तं ग्रहशान्त्यनुसारेण कुर्यात् ॥

## अथ जलाधिवासः।

पंचगव्येन हिरण्ययवदूर्वाश्वत्थपलाशपर्णमिश्रोदकेन आपोहिष्ठेत्यादिमंत्रैः संस्नाप्य देवमभिषिच्य ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेतियवदूर्वाक्षतपुष्पफलानि देवपादयोर्निक्षिप्य रक्षोहणमितिप्रतिसरं बद्ध्वा ततः सम्पूज्य ततो वाससा पुष्पादिभिः आच्छाद्य जलेऽधिवासयेत् ॥ ॐ उदुत्तमेतिमंत्रेण ततो वास्तुपूजनम् ॥ ततः सर्वतोभद्रे चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण द्वौ द्वौ कलशौ स्थापयेत् ॥ तन्मध्ये पंचपल्लवकषायांश्च निक्षिप्य पंचपल्लवदूर्वा गन्धपुष्पसर्वौषधीयवसप्तमृत्तिकापूगीफलपंचरत्नानि निक्षिपेत् पूजयेत् ॥ तदग्रे नारिकेलं स्थापयेत् ॥ ततो ऋत्विजो ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेति जलाधिवासाद्देवमुत्थाप्य शुचिदेशे स्थापयित्वा ॥ वल्मीकमृदाऽनुलिप्य शुद्धोदकेन स्नापयेत् ॥ ततः पञ्चगव्येन पृथक् पृथक् स्नापयेत् ॥ देवस्यत्वेति कुशोदकेन ॥ ॐ इदं विष्णुरिति अष्टभिः कलशोदकेन स्नापयेत् ॥ शमीपलाशखादिरविल्वाश्वत्थन्यग्रोधआम्रउदुम्बरत्वक्कषायेन ॥ ॐ



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अश्वत्थेवेति अभिषिच्य ॥ पुनः परिव्राजपतिरिति वा आपोहिष्ठेति पंचरत्नोदकेन च संस्नाप्य ॥ पीठान्तरे निवेश्य ॥ युवासुवासा इति वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ गंधादिभिः सम्पूज्य ॥ ततः अष्टौ दीपान्बलिं स्थापयित्वा ॥ ततः आचार्यहस्ते तैजसपात्रस्थघृतमधु गृहीत्वा सुवर्णशलाकया नेत्रोन्मीलनं ॐ तेजोसीति मंत्रेण तदा न कश्चित्पुरतः तिष्ठेत् ॥ ततः आदर्शं दर्शयित्वा ॥ आचार्याय गां दद्यात् ॥ ततो देवं उत्थाप्य कुशप्रस्तरे शुभवस्त्रेणाच्छाद्य प्राक्शिरसं देवं स्वापयेत् ॥ प्राजापत्यं मुहूर्तोस्तु ॥ आचार्याः स्थंडिले पंचभूसंस्कारपूर्वकबल-वर्द्धननामाग्निं स्थापयेत् ॥ ततो ग्रहस्थापनं पूजनं च कृत्वा ॥ ब्रह्मासनाद्यारभ्य आघारावाज्यभागान्तं कृत्वा ततो ग्रहाहुतिपूर्वकवास्तुहोमः प्रधानहोमं च समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकं अष्टाष्टसंख्याभिः कृत्वा ॥ ततः प्रधानहोमः ॥ ॐ सहस्रशीर्षाः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ पुरुषएवेदं० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ एतावानस्य० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वं० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ततोविराड० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्० स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ तस्मादश्वा० स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ तंयज्ञं० स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ यत्पुरुषं० स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ ब्राह्मणोस्य० स्वाहा ॥ ११ ॥ चन्द्रमा० स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ नाभ्याऽआसी० स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ यत्पुरुषेण० स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ सप्तास्यासन्० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञ० स्वाहा ॥ १६ ॥ इति षोडशाहुतीर्हुत्वा ॥ ततः श्रीश्चतेति अष्टोत्तरशतं हुत्वा ॥ ॐ इदं विष्णु० स्वाहा ॥ इति देवचरणौ स्पृष्ट्वा ॥ पुनः तेनैव हुत्वा

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाभिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ विष्णोरराटेति शिरशि स्पृशेत् ॥ पुरुषसूक्तेन सर्वाङ्ग स्पृशेत् ॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसामिति देवमुत्थाप्य देवालयं प्रवेश्य गर्ते पंचरत्नसुवर्णखंडं वा निधाय मूर्ति संस्थाप्य दृढं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ततो न्यासं कुर्यात् ॥ ॐ धर्मतत्वाय नमः मूर्ध्नि ॥ ॐ ज्ञानाय नमः हृदि ॥ ॐ वैराग्य० गुह्ये ॥ ॐ ऐश्वर्या० पादयोः ॥ ॐ खड्गाय० शिरसि ॥ ॐ शार्ङ्गाय० मस्तके ॥ ॐ मुसलाय० दक्षिणभुजे ॥ ॐ हलाय० वामभुजे ॥ ॐ चक्राय० नाभ्यां ज्वठरे पृष्ठे च ॥ ॐ शंखाय० लिङ्गे वृषणे च ॥ ॐ गदायै० जंघयो र्जानुनोश्च ॥ ॐ पद्माय० गुल्फयोः पादायोश्च ॥ ॐ लक्ष्म्यै० ललाटे ॥ ॐ सरस्वत्यै० मुखे ॥ ॐ रेवत्यै० गुह्ये ॥ ॐ प्रीत्यै० कंठे ॥ ॐ कीर्त्यै० नेत्रे ॥ ॐ शांत्यै० हृदये ॥ ॐ तुष्ट्यै० जठरे ॥ ॐ पुष्ट्यै० सर्वाङ्गे ॥

## अथ पुरुषसूक्तन्यासः ॥

ॐ सहस्रशी० पादयोः ॥ ॐ पुरुषए० जंघयोः ॥ ॐ एतावानस्य जान्वोः ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व० ऊर्वोः ॥ ॐ ततोविराड वृषणयोः ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् कट्यां ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा० नाभौ ॥ ॐ तस्मादश्वा० हृदि ॥ ॐ तंयज्ञं० स्तनयोः ॥ ॐ यत्पुरुषं० बाह्वोः ॥ ॐ ब्राह्मणोस्य० मुखे ॥ ॐ चन्द्रमा० नेत्रयोः ॥ ॐ नाभ्याआसी० कर्णयोः ॥ ॐ यत्पुरुषेण० भ्रुवोः ॥ ॐ सप्तास्यास० भाले ॥ ॐ यज्ञेनयज्ञ० शिरसि ॥ ॐ अभ्द्यः हृदये ॥ ॐ वेदाहमे०



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिरसि ॥ ॐ प्रजापतिश्चरति० शिखायां ॥ ॐ योदेवेभ्य० कवचं ॥ ॐ रुचंब्राह्मं० नेत्रयोः ॥ ॐ श्रीश्चते० अस्त्रं ॥ ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि क्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता राधाकृष्णयोः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः राधाकृष्णयोः प्राण इह प्राणाः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं० राधाकृष्णयोः जीव इह स्थितः ॥ पुनः आं ह्रीं० राधाकृष्णयोः सर्वेन्द्रियाणि ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं० राधाकृष्णयोः वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ देवस्य मूर्ध्नि हस्तं निधाय गायत्रीं जपेत् ॥ ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ अतसीपुष्पसंकाशं शंखचक्रगदाधरम् ॥ संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम् ॥ ततः पुरुषसूक्तेन देवमभिमंत्र्य ॐ भूः पुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भुवः पुरुषमा० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषमा० ॥ ततो राधिकाया मूर्ध्नि हस्तं निधाय ॐ समुद्धृतायै विद्महे विष्णुनैकेन धीमहि ॥ तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥ ततो ब्रह्मरूपं विभाव्य ॥ सप्तकुशात्मकं कूर्चं दद्यात् कस्तूरीतिलकामिति ध्यानम् ॥ आवाहयामि देवेशं श्रीराधावल्लभं हरिम् ॥ ॥ देवकीतनयं कृष्णं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम् ॥ राधाकृष्णभ्यां नमः ॥ इत्यावाहनम् ॥ राजाधिराजेन्द्र कृष्णं चंद्रादित्ययदूद्भवम् ॥ इदं सिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥ इत्यासनम् ॥ ततो दूर्वाविष्णुक्रान्ताश्यामाकूपद्मपत्रजलेन पाद्यं ॥ श्रीकृष्णात्रागच्छ भगवन्वासुदेव जगत्पते ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 राधया सह गोपेश सुस्थिरो भव सर्वदा ॥ कृष्णचंद्र महावाहो कंसचाणूरमर्दन ॥ यावच्चन्द्रावनीं सूर्य्यौ तावत्त्वं 
 सन्निधो भव ॥ देवेकीसुत राजर्षे कृष्ण राजीवलोचन ॥ राधावल्लभ मे देव श्रीकृष्णाभिमुखो भव ॥ सुप्रसीद
जगन्नाथ महाबलपराक्रम ॥ प्रसन्नो भव मे देव पांडवार्तिविनाशन ॥ त्रैलोक्यपावनस्त्वं हि राधया सहितो
हरे ॥ पाद्यं गृहाण देवेश नमो राजीवलोचन ॥ राधाकृष्णाभ्यां० पाद्यं स० ॥ परिपूर्ण परानन्द ब्रह्मादिदेवता-
त्मक ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं तीर्थवारिसमन्वितम् ॥ पद्मतंडुलचंदनपुष्पदूर्वांकुशाग्रयुक्तजलेन अर्घ्यं स० ॥
एलालवंगतजकर्पूरमिश्रेण जलेन राधाकृष्णाभ्यां आचमनं स० ॥ वासुदेवाय कृष्णाय तत्वज्ञानस्वरूपिणे ॥
मधुपर्कं प्रदास्यामि दीनानाथाय ते नमः ॥ राधाकृष्णाभ्यां० मधुपर्कं स० ॥ नमः शुद्धाय बुद्धाय सत्याय
ज्ञानरूपिणे ॥ गृहाणाचमनं नाथ सर्वलोकैकनायक ॥ राधाकृष्णाभ्यां० आचमनं स० ॥ पंचामृतं मया०
राधाकृष्णाभ्यां पंचामृतस्नानं स० ॥ ब्रह्मांडोदरमध्यस्थं तीर्थैश्च यदुनंदन ॥ स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या स्वकरेण
जनार्दन ॥ स्नानं स० ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं पीताम्बरमिदं हरे ॥ संगृहाण जगन्नाथ कृष्णचंद्र
नमोस्तु ते ॥ राधाकृष्णाभ्यां० वस्त्रं स० ॥ आचमनं० ॥ श्रीकृष्णाच्युत यज्ञेश श्रीधरानंदराधन ॥ ब्रह्मसूत्रं सो-
त्तरीयं गृहाण यदुनायक ॥ राधाकृष्णाभ्यां० उपवीतं उत्तरीयं च स० ॥ आचमनं समर्पयामि ॥ किरीटहारकेयूर- 
वंशीकुंडलमेखलाः ॥ ग्रीवेयकौस्तुभोहाररत्नकंकणनूपुरौ ॥ एवमादीनि सर्वाणि भूषणानि सुरोत्तम ॥ अहं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दास्यामि सद्भक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥ राधाकृष्णाभ्यां० अलंकरणं स० ॥ कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीमिश्रचंदनम् ॥ तुभ्यं दास्यामि विश्वेस राधयासहितो हरे ॥ राधाकृष्णभ्यां गंधं स० ॥ तुलसीकुन्दमन्दारजातिपुन्नागचंपकैः ॥ कदंबकरवीरैश्च कुंकुमैः शतपत्रकैः ॥ नीलाम्बुजैर्बिल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्च केशव ॥ पूजयिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥ राधाकृष्णाभ्यां० पुष्पमालां स० ॥ अथाङ्गपूजा ॥ ॐ कृष्णाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥ ॐ राधावल्लभाय० गुल्फौ पू० ॥ २ ॥ ॐ केशवाय० जानुनी पू० ॥ ३ ॥ ॐ पद्मनाभाय० नाभिं पू० ॥ ४ ॥ ॐ परमात्मने० हृदयं पू० ॥ ५ ॥ ॐ श्रीकंठाय० कंठं पू० ॥ ६ ॥ ॐ सर्वास्त्रधारिणे० बाहूं पू० ॥ ७ ॥ ॐ यदूद्भवाय० मुखं पू० ॥ ८ ॥ ॐ वाचस्पतये० ऊरू पू० ॥ ९ ॥ ॐ विश्वरूपाय० जङ्घे पू० ॥ १० ॥ ॐ माधवाय० कटिं पू० ॥ ११ ॥ ॐ विश्वमूर्तये० मेढ्रं पू० ॥ १२ ॥ ॐ विश्वेशाय० जिह्वां पू० ॥ १३ ॥ ॐ दामोदराय० दंतान्पू० ॥ १४ ॥ ॐ गोपीनाथाय० ललाटं पू० ॥ १५ ॥ ॐ ज्ञानगम्याय० शिरः पू० ॥ १६ ॥ ॐ सर्वात्मने० सर्वाङ्गं पू० ॥ १७ ॥ वनस्पतिरसो० ॥ राधाकृणाभ्यां धूपं स० ॥ ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमः कृष्णाय वेधसे ॥ गृहाण दीपकं विष्णो त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ राधाकृष्णाभ्यां दीपं स० ॥ उद्दूदिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ श्रीकृष्ण सत्यभामेश नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ राधाकृष्णाभ्यां० नैवेद्यं स० ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं० ॥ ताम्बूलं स० ॥ ॐ हिरण्यगर्भेति दक्षिणां स० ॥ कर्पूरगौरामिति आर्तिक्यं स० ॥ नानासुगंधेति

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुष्पांजलिं स० ॥ प्रार्थयेत् ॥ स्वागतं देवदेवेश मद्भावत्वमिहागतः ॥ प्राकृतिं त्वामहं दृष्ट्वा बालवत्परिपालय ॥ धर्मार्थकामसिध्यर्थं सर्वेषां च शुभासिनः ॥ सान्निध्यं तु सदा कृष्ण स्वार्चायां परिकल्पय ॥ यावचंद्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्ति प्रतिघातिनः ॥ तावत्कृपास्व देवेश स्वयं भक्त्यानुकम्पया ॥ भगवन्सर्वदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ॥ येन रूपेण भगवन्त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥ तेन रूपेण देवेश स्वर्चायां सन्निधो भव ॥ इति नमेत् ॥ ततः केशवादिद्वादशनामभिः तर्पणं कार्यम् ॥ ॐ केशवं तर्पयामि ॥ ॐ माधवं तर्प० ॥ ॐ गोविन्दं तर्प० ॥ ॐ नारायणं तर्प० ॥ ॐ विष्णुं तर्प० ॥ ॐ मधुसूदनं तर्प० ॥ ॐ त्रिविक्रमं तर्प० ॥ ॐ वामनं तर्प० ॥ ॐ श्रीधरं तर्प० ॥ ॐ हृषीकेशं तर्प० ॥ ॐ पद्मनाभं तर्प० ॥ ॐ दामोदरं तर्प० ॥ ॐ संकर्षणं तर्प० ॥ एतैर्नामभिः संतर्प्य पुष्पाणि च निवेद्य ॥ केशवादिनामभिः तिलोदनं हरिद्रोदनम् गुडोदनं हुत्वा ॥ पूजास्विष्टनवाहुत्या बलिं पूर्णाहुतिं तथा ॥ श्रेयः संपाद्य दानं च अभिषेको विसर्जनम् ॥ ततः पूर्वोक्तहविर्भिः कृष्णाय बलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं विश्वसृजं यजामहे ॥ त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमेव मात्माप्रति गृह्णीष्व हव्यं ॥ अश्वत्थपर्णे हुतशेषं निवेद्य प्रदक्षिणीकृत्य ॥ ॐ विश्वभुजे नमः ॥ ॐ सर्वभुजे नमः ॥ ॐ आत्मभुजे नमः ॥ ॐ परमात्मभुजे नमः ॥ आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् ॥ आचार्याय १२ गां दद्यात् ॥ ब्राह्मणभोजनम् ॥ प्रधानमंडपादिआचार्याय निवेद्य भूयसीं दद्यात् ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यान्तुदेवेति विसर्जनम् प्रमादादि पठित्वा ॥ कर्मेश्वरार्पणं कुर्यादिति राधाकृष्णप्रतिष्ठा समाप्ता ॥

## अथ संक्षेपतो हनुमत्प्रतिष्ठाविधिः

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं करिष्यमाणसप्रासादवास्तुसनवग्रहमखहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणि अनधिकारिताप्रयोजककायिकादिनिखिलपापक्षयपूर्वकतत्राधिकारसिद्ध्यर्थं त्रिकृच्छ्रप्रायश्चित्तं गोप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ इति मंत्रेण पंचगव्यप्राशनं कृत्वा गोद्रव्यमुत्सर्गं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं पूर्वांगीकृतकृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नायत्वेन इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं उत्सृजे ॥ ततः आचम्य प्राणानायम्य ॥ अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य ॥ हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मंगलमंत्रान्पठित्वा प्रातिज्ञासंकल्पं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं मम समस्तपापक्षयपूर्वकऐश्वर्यायुरारोग्याभिवृद्धिद्वारा तत्सत्परमेश्वरप्रीतये च अस्यां हनुमत्मूर्तौ देवत्वसांसिद्धये सप्रासादवास्तुसनवग्रहमखहनुमत्प्रतिष्ठां करिष्ये ॥ तदंगत्वे० करिष्ये ॥ तत्रादौ नि० करिष्ये ॥ गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन्वृत्वा दिग्रक्षणं पंचगव्यप्रोक्षणं च कुर्यात् ॥ अथ प्रासादे गत्वा तत्र प्रोक्षणादिकं विधाय वास्तुमंडलपूजनं होमान्तं बल्यन्तं वा कृत्वा त्रिसूत्र्यादिकर्म निर्वर्त्य ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 



ततः देवं स्नानपीठे निवेश्य आपोहिष्ठेत्यादिमंत्रेण क्षालनं कृत्वा याओषधीरिति मंत्रेण सर्वौषधिभिर्यथाविधि मूर्त्यंगस्योद्वर्तनं विधाय शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य सप्तधान्यपिष्टैस्तु॥ धान्यमसीति उद्वर्त्तनम्॥ शुद्धजलेन क्षालयेत्॥ ततः सुवर्णादिधातुमूर्तीनां अग्न्युत्तारणं कर्तव्यम् ॥ न तु पाषाणादिमूर्तीनां ॥ यदाबध्नं इति प्रतिसरं बद्ध्वा ॥ पंचोपचारैः सम्पूज्य पीतवस्त्रेणाच्छाद्य उदुत्तममिति जले अधिवासयेत् ॥ ततः सर्वतोभद्रस्थमंडलदेवान् सम्पूज्य उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इतिजलान्निष्कास्य बौधायनोक्तपंचभिर्वाक्यैः पुण्याहं वाचयित्वा प्रार्थयेत् ॥ स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोस्तु ते ॥ शुद्धेपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मस्तु मारुते ॥ मंत्रमूर्तिर्भवान्नाथ संसारोच्छेदकारक ॥ यथापूजार्हो देवः स्यात्कुरु धर्मगतिं च नः ॥ संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः ॥ प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नो भवतु द्विज ॥ ततः पंचामृतस्नानं ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ अष्टकलशैरभिषेकं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ पुरुषसूक्तं पावमानीयसूक्तं ऋचंवाचं विभ्राड्सौरसूक्तम् इत्यादि ॥ ततः पीतवस्त्रेणाच्छाद्य नाममंत्रेण सम्पूज्य ॥ मनोजवमिति प्रार्थयेत् ॥ अग्रे अन्नादिनैवेद्यं निधाय आदर्शे १० दीपान् प्रज्वाल्य हिरण्यगर्भः इति मंत्रेण प्रणमेत् ॥ ततो रजतपात्रे मधुघृते गृहीत्वा सुवर्णशलाकया चित्रन्देवानामिति अर्धर्चेन नेत्रमुन्मीलयेत् ॥ॐ उत्तिष्ठमिति देवं उत्थाप्य प्राक्शिरसं शय्यायां स्वापयेत् ॥ ततः पंचभूसंस्कारपूर्वकबलवर्द्धननामाग्निं प्रतिष्ठाप्य सूर्यादिग्रहान्संपूज्य कुशकांडिकां विधाय आघारावाज्यभागं ग्रहाहुतिं च कृत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ ततः

॥१६१॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शय्यातः उद्धुत्यमिति देवमुत्थाप्य देवालयं प्राविश्य पंचरत्नानि गर्ते निक्षिप्य ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत्प्रचोदयादिति मंत्रेण प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । शाश्वतो भव । गंधादिना सम्पूज्य ॥ ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषमावाहयामि ॥ ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषमावाहयामि ॥ ततो देवं स्पृष्ट्वा ध्रुवसूक्तं जपित्वा ॥ तद्यथा ॥ ॐ इहैवेधि मापच्योष्टाः पर्वत इवाचाचलिः ॥ इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रे मुधारय ॥ इममिंद्रो अदीधर ध्रुवं ध्रुवेण हविषा तस्मै सोमो अधिब्रवत्तस्मा उब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ॥ ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयं ॥ ध्रुवं ते राजा व्वरुणो ध्रुवं देवो वृहस्पतिः ॥ ध्रुवं ते इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभिसोममृशामसि ॥ अथोत इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत् ॥ इति जपित्वा ॥ प्रणवेन देवमूर्तौ षडङ्गन्यासं कृत्वा ॥ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं । क्रौं कीलकं । ह्रीं सौं शक्तिः प्राणाख्यदेवता प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ततो भूतशुद्धिं कृत्वा ॐ अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊँ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ एं तं थं दं धं नं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविसर्गानंदात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं बुद्ध्यहंकारचित्ताव्यक्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥

## अथ ध्यानम् ।

रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं चापबाणान् ॥ बिभ्राणां स्रक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढया ॥ देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ इति ध्यात्वा जपेत् ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं० देवस्य जीव इह स्थितः ॥ ॐ आंह्रीं० देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राण इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ततः हनुमते नमः ॥ १ ॥ अंजनीसूनवे नमः ॥ २ ॥ वायुपुत्राय नमः ॥ ३ ॥ महाबलाय नमः ॥ ४ ॥ रामेष्टाय नमः ॥ ५ ॥ फाल्गुनसखाय नमः ॥ ६ ॥ पिंगाक्षाय नमः ॥ ७ ॥ अमितविक्रमाय नमः ॥ ८ ॥ उदधिक्रमणाय नमः ॥ ९ ॥ सीताशोकविनाशाय नमः ॥ १० ॥ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ॥ ११ ॥ दशग्रीवदर्पहन्त्रे नमः ॥ १२ ॥ एतैर्द्वादशनामभिः षोडशोपचारैः संपूज्य प्रणम्य क्षमापयेत् ॥ ततो देवस्य कर्णे गायत्रीं जप्त्वा प्रार्थनां

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुर्यात् ॥ हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ॥ रामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगाक्षोमितविक्रमः ॥ उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशकः ॥ लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥ इति द्वादशनामभिः पुष्पांजलिं दत्वा ॥ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ सान्निध्यं सर्वदा देव हनुमन् परिकल्पय ॥ यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठंत्यप्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वयात्र स्थातव्यं स्वेच्छाभक्त्यानुकंपया ॥ ततो देवस्य दक्षिणकर्णे त्वं दासहनुमानसि इति नामकरणं ॥ ब्रह्मादिमंडलदेवता एकैकाज्याहुत्या शेषेण स्विष्टकृदादिपूर्णाहुत्यन्तं वसोर्द्धारां च कृत्वा अभिषेकं कुर्यात् ॥ आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् ॥ यान्तु देवेति विसर्जनं प्रमादादिति पठित्वा ॥ इति हनुमत्प्रतिष्ठा समाप्ता ॥

## अथ संक्षेपेण वापीकूपतड़ागप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

ततो अधिवासनपूर्वदिने कुंडमंडपं कृत्वा पूर्ववत्सर्वप्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥ द्वितीयदिने आचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य ॥ हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मङ्गलमंत्रान्पठेत् ॥ संकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतकायिकादिनिखिलपापक्षयार्थं रुद्रालयगमनपूर्वकवैष्णवपदप्राप्तिकामः अमुकजलाशयोत्सर्गकर्माहं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनम्० ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं० ॥ ततो गणेशपूजनादारभ्य वरणान्तं कृत्वा ॥ ततो मंडपप्रवेशादिग्र-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षणं प्रोक्षणं वास्तुपूजनं मंडपपूजनं अग्निस्थापनोत्तरं मध्यवेदीलिखितवारुणमंडलमध्यस्थे पद्मे ग्रहान्पूजयेत् ॥ एतत्सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम् ॥ ततो ग्रहपूजनानन्तरं मंडलमध्ये ताम्रकलशं संस्थाप्य तस्योपरि वरुणप्रतिमा-मग्न्युत्तारणपूर्वकं संस्थाप्य संपूज्य तस्याग्रे सौवर्णकूर्ममकरराजतमत्स्यडुंडुभताम्रमयं कुलीरमंडूकलोहमयं शिशुमारयुतां सुवर्णपात्रीं ॥ ॐ इमम्मेवरुणेति मंत्रेण स्थापयेत् ॥ कुशकण्डिकां विधाय कुंडईशान्यां शान्तिकलशं स्थापयेत् ॥ कलशे वरुणं संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ नमस्ते विश्वरूपाय नमो विष्णो अपां पते ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव समुद्रादिह शान्तये ॥ ( कूपप्रतिष्ठायान्तु ॥ अत्र कूपस्य चतुर्दिक्षु धान्योपरि सितवस्त्रयुक्ता-न्कलशान्स्थापयेत् ) ततः कुण्डे आघारावाज्यभागौ हुत्वा ॥ यजमानः कुंडदक्षिणत उपविश्य जलमादाय ॥ अस्मिन्कर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम ॥ यथादैव-तानि सन्तु ॥ ततः सूर्यादिग्रहाद्यारभ्य प्रधानहोमं मंडलदेवताहोमं च स्विष्टकृदन्तं कृत्वा ( प्रधानहोमस्तु ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी० ॥ इति अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं वा हुत्वा ) ततो भूरादिनवाहुतिं बलिं च पूर्वोक्तं कृत्वा ॥

## अथानन्तरं सुमुहूर्ते यूपस्थापनं कुर्यात

आचार्यः मंडपात्पूर्वतः पादत्रयमितां भूमिं त्यक्त्वा तत्र यूपस्थापनं करोति ( कूपात्पूर्वतः ईशान्यां वा ) तत्र पालाशकाष्ठस्य पुरुषाकृतिं पुरुषसमं यूपं कृत्वा अरत्निमात्रं खातं कृत्वा यूपं स्थिरीकृत्य स्तुतिं कृत्वा ।



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यूपस्त्वं निर्मितः पूर्वं यज्ञभागः सुरेश्वरः ॥ स्तुतः कूपस्य रक्षार्थं पूजां पुष्पबलिं तथा ॥ गृहीत्वा सुस्थिरो भूत्वा यजमानोदयं कुरु ॥ ततः यूपं हरिद्रातैलाभ्यक्तं कृत्वा स्नापयित्वा घृतेनाभ्युज्य पुष्पमालादिनाभ्यर्च्य सर्षपगोरोचनगुग्गुलदुर्वानिम्बपत्राणि एतेषां पोटलिकां कृत्वा यदाबध्नेति यूपदक्षिणहस्ते बद्धा ॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्मां जरदष्टिर्यथासम् ॥ इति बद्धा ॥ ॐ युवासुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽ उश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ इति मंत्रान्ते वस्त्रेणावेष्ट्य ॥ ॐ यूपव्रस्काऽउतयेयूपवाहाश्चषालंयेऽअश्वयूपायतक्षति ॥ येचार्वतेपचनꣳ संभरन्त्युतोतेषामभिगूर्त्तिर्न्नऽइन्वतु ॥ इति मंत्रेण यूपमालभ्य ॥ ततो यजमानः यूपोपरि अभिषेकं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ असंख्याता सहस्राणि० ॥ ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी० ॥ ॐ एका च मे० ॥ ॐ चतस्रश्च मे० ॥ ॐ ये तीर्थानि० ॥ इत्यभिषेकः ॥

## अथ यूपन्यासः ।

यूपशिरसि ब्रह्मणे नमः ॥ चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां नमः ॥ हृदि केशवाय नमः ॥ नाभौ अग्नये

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नमः ॥ ऊर्वोः कट्यां गुह्ये एकादशरुद्रेभ्यो नमः ॥ जंघयोर्मेरुपर्वताय नमः ॥ पादयोर्नागेभ्यो नमः ॥ ॐ अर्थेतं-
स्त्थराष्ट्रदाराष्ट्रम्मेंदत्तस्वाहार्त्थेतंस्त्थराष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मैंदत्तौजंस्वतीस्त्थराष्ट्रदाराष्ट्रम्मेंदत्तस्वाहौजंस्वतीस्त्थराष्ट्रदारा-
ष्ट्रममुष्मैंदत्तापं÷परिवाहिणीस्त्थराष्ट्रदाराष्ट्रम्मेंदत्तस्वाहापं÷परिवाहिणीस्त्थराष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मैंदत्तापाम्पतिंरसि-
राष्ट्रदाराष्ट्रम्मेंदेहिस्वाहापाम्पतिंरसिराष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मैंदेह्यपाङ्गर्भौंसिराष्ट्रदाराष्ट्रम्मेंदेहिस्वाहापाङ्गर्भौंसिराष्ट्र-
दाराष्ट्रममुष्मैंदेहि ॥ इति शिखायाम् ॥ ॐ व्विश्वतंश्चक्षुरुतव्विश्वतोंमुखोव्विश्वतोंबाहुरुतव्विश्वतं-
स्पात् ॥ सम्बाहुभ्यांधमंति सम्पतंत्रैर्द्यावाभूमींजनयंन्देवऽएकं÷ ॥ इति चक्षुषोः ॥ ॐ खड्गोव्वैश्वदेवश्श्वकृष्णः-
कर्णोगंर्द्दभस्तरक्षंसाभिन्द्रांयसूकरः सिंहं० होमांरुतः कृंकलासः पिप्पंकाशकुनिस्तेशंरव्यायैव्विश्वेंषान्देवानां-
म्पृषतः ॥ नासिकायाम् ॥ ॐ अग्निन्दूतं० इति मुखे ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवं० इतिग्रीवायाम् ॥
ॐ बाहूमेबलंमिन्द्रियं० हस्तौंमिकर्म्मव्वीर्य्यम् ॥ आत्माक्षत्रमुरोमम ॥ इतिबाह्वोः ॥ ॐ हृदेत्वामनंसेत्वादिवे-
त्वासूर्य्यायंत्वा ॥ ऊर्ध्वमिममंध्वरंदिविदेवेषुहोत्रांयच्छ ॥ इतिहृदये ॥ ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ऽउदांरदुपांशुना-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समंमृतत्वमानट् ॥ घृतस्यनामगुह्यंयदस्तिजिह्वादेवानांममृतंस्यनाभिः॥ इति उदरे ॥ ॐ त्वाममग्नेसंवितुर्वाम-
मुश्वोदिवेदिवेत्वाममस्मभ्यंर्ठ० सावीः ॥ वामस्याहिक्षयस्यदेवभूरेरयाधियावांमभाजः स्याम ॥ इति कटिद्वयोः ॥
ॐ नाभिर्मेचित्तंविज्ञानंपायुर्मेपचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावान्डौमेभगःसौभाग्यंपसः ॥ जङ्घाभ्यांम्पद्भ्यांम्ध्यांधर्म्मो
स्मिव्विशिराजाप्प्रतिष्ठितः ॥ इति जंघयोः ॥ ॐ आयङ्गौः इति पादयोः ॥ एवं यूपन्यासं कृत्वा पुनः पंचोपचारैः
संपूज्य बलिं दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ एह्येहि धर्मध्वज यज्ञनाथ त्रयीमयो वेदशरीर यूप ॥ विधातु देवा-
ध्वरयज्ञरक्षां बलिं गृहाण भगवन्नमस्ते । यूपायैष बलिर्न मम ॥ ततः प्रार्थना ॥ त्वां प्रार्थये ह्यहं यूप लोकानां
शान्तिदायक ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं जगदानंदकारक ॥ देहि मेऽनुग्रहं यूप प्रसादं कुरु सुप्रभो ॥
मूलच्छेदेन यत्पापं भूमिघातेन पातकम् ॥ अदुष्टयूपघातोत्थं यूप पापं व्यपोहतु ॥ यद्बाल्ये यच्च कौमारे यत्पापं
वार्द्धके कृतम् ॥ तत्सर्वं मम देवेश यूप पापं व्यपोहतु ॥ यन्निशायां तथा प्रातर्यन्मध्याह्नाऽपराह्णयोः ॥ संध्ययोश्च
कृतं पापं कर्मणा मनसा गिरा ॥ तत्सर्वं मम देवेश यूप पापं व्यपोहतु ॥ येन केन निमित्तेन कर्ता पापं तु
कारयेत् ॥ तस्य पापेन नो लिप्तो यो यूपस्पर्शकृन्नरः ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता० ॥ इति पुष्प-
मालां परिधाय यूपं प्रदक्षिणीकृत्य यूपमालिंग्य पुत्रपौत्रादियुक्तो नमस्कुर्यात् ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## अथ यूपप्रमाणं बृहत्पाराशरे ।



पालाशो ब्राह्मणस्योक्तो नैय्यग्रोधस्तु भूभुजः ॥ बैल्वो वैश्यस्य यूपः स्याच्छूद्रस्यौदुम्बरः स्मृतः ॥ शिरःप्रमाणो विप्रस्य आकण्ठं क्षत्रियस्य च ॥ उरःप्रमाणो वैश्यस्य शूद्रस्य नाभिमात्रतः ॥ इति यूपपूजनविधिः ॥ ततो यजमानः सुलग्ने जलाशयजले कनकशृङ्गादिभूषितां गां यथाशक्ति संपूज्य ॥ ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूतꣳ सूयवसिनीमनवेदशस्या ॥ व्यस्कभ्नारोदसीव्विष्णवेतेदाधर्त्थपृथिवीमभितोमयूखैः स्वाहा ॥ इतिमंत्रेणावतारयेत् ( वापीकूपोत्सर्गे तु त्रिरुपरि भ्रामयेत् ) तरन्ती तामनुमंत्रयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ इदं सलिलं पवित्रं कुरुष्व शुद्धाः पूता अमृताः सन्तु नित्यं मां तारयन्ती सर्वतीर्थाभिषेकम् ॥ लोकाल्लोकन्तरते तीर्यते चेति ॥ ततो गुरुणान्वारब्धस्तत्पुच्छे लग्नो जले गच्छन्नेव मंत्रद्वयं पठेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ समुद्रादूर्मिर्म्मधुमाँ० ॥१॥ ॐ येवामीरोचनेदिवोयेवासूर्य्यस्यरश्मिषु ॥ येषामप्सुसदस्कृतंतेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ २ ॥ ततो जल एवेशान्यामुत्तराभिमुख्या गोः पुच्छं गृहीत्वा जले स्थित्वा यजमानो यवकुशादिभिर्देवमनुष्यपितृतर्पणं स्वशाखोक्तं कुर्यात् ॥ सव्येन प्राङ्मुखो ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् ॥ कंठीकृत्वोदङ्मुखो सनकादयो मनुष्याः तृप्यन्ताम् ॥ अपसव्येन दक्षिणाभिमुखो कव्यवाडनलादयः दिव्यपितरस्तृप्यन्ताम् ॥ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥

॥१९९॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वस्वपत्नीसमेताश्च प्रीयन्तां जलतर्पणात् ॥ १ ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः ॥ स्वस्वपत्नी
समेताश्च प्रीयन्तां जलतर्पणात् ॥ २ ॥ अजातदंता ये केचिद्ये च गर्भे व्यवस्थिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय
तडागोदकतर्पणात् ॥ ३ ॥ पितृव्यकाश्च येऽस्माकं भ्रातरश्च सहोदराः ॥ गुरवो मातुलाः पुत्रा आचार्यसखि-
बांधवाः ॥ ४ ॥ तेषां पुत्राश्च पत्न्यश्च श्वशुरा ये सपुत्रकाः ॥ एतेषां क्रीडनार्थाय तडागोदकतर्पणम् ॥ ५ ॥
बंधुवर्गाश्च ये केचित् गोत्रनामविवर्जिताः ॥ स्वगोत्रा परगोत्रा वा तेभ्यश्चेदं तिलोदकम् ॥ ६ ॥
उद्बन्धने मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये ॥ दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिश्चैव तेभ्यश्चैव तिलोदकम् ॥ ७ ॥ असुरा
देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिका तथा ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ग्रहदेवाधिदेवताः ॥ ८ ॥ तेषामुद्धरणार्थाय
तडागोदकतर्पणम् ॥ अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ॥ ९ ॥ विद्युच्चोरहता ये च तेभ्योऽपीदं
तिलोदकम् ॥ रौरवे चान्धतामिस्रे कुंभीपाके च ये गताः ॥ १० ॥ अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोकेषु ये गताः ॥
पच्यन्ते संयमन्यां ये नीता ये यमाकिंकरैः ॥ ११ ॥ असीपत्रवने घोरे तेभ्योऽपीदं तिलोदकम् ॥ विश्वेदेवास्तथा
साध्या आदित्याश्च मरुद्गणाः ॥ १२ ॥ क्षेत्रपीठोपपीठानि नद्यश्चैव ससागराः ॥ पाताले नागपत्न्यश्च
नगाश्चैव सपर्वताः ॥ १३ ॥ पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गन्धर्वराक्षसाः ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाश-
मेव च ॥ १४ ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तडागोदकतर्पणात् ॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदीयाः ॥ वंशद्वयेस्मिन्मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ १५ ॥ मित्राणि सख्युः पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकाराः ॥ जन्मान्तरे ये मम संगताश्च तेभ्यस्तडागोदकमेतदस्तु ॥ १६ ॥ (वापीकूपयोस्तु तडागपदस्थाने तत्तत्पदप्रक्षेपः) ततस्तर्पणान्ते यजमानः पुच्छग्रहणयुक्त आपो अस्मानिति पठन्नीशान्यां उत्तीर्य ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुंधयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वर्ठ०हिरिप्रम्प्रवहंन्तिदेवीरुदिदांभ्यःशुचिरापूतऽएंमि ॥ इति ॥ ॐ सूयवसाद्भगवतीहिभूयाऽअथोवयंभगवन्तः स्याम ॥ अद्धितृणमघ्न्येविश्वदानींपिबशुद्धमुदकमाचरन्ति ॥ इत्यनेन जलान्निष्कास्य ईशान्यां दिशि स्थापयेत् ॥ ततो यजमानः गां संपूज्य सामवेदिने ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् ॥ ततः कुंकुमाक्तेन त्रिवृता सूत्रेण जलाशयं वेष्टयित्वा तत्समीपे उपविशेत् ॥ आचार्यः पूर्वासादितां कूर्ममकरादियुतां हेमपात्रीं दध्यक्षतमहानदीजलयुतामादायोदङ्मुखैश्चतुर्भिर्ऋत्विग्भिः सह स्वयं प्राङ्मुखः स्थित्वाऽगाधे जले सौवर्णौ कूर्ममकरौ प्रागाग्नेयभागयोः ॥ प्रत्यङ्मुखौ राजतौ मत्स्यडुंडुभौ दक्षिणनैऋत्यभागयोः ॥ उदङ्मुखौ ताम्रौ कुलीरमंडूकौ पश्चिमवायव्ययोः ॥ प्राङ्मुखौ आयसं शिशुमारं उत्तरदक्षिणाभिमुखं वारुणैर्मंत्रैः प्रक्षिपेत् ॥ ॐ शन्नोदेवी० ॥ ॐ आपोहिष्ठा० ॥ उदङ्मुखस्तां सुवर्णपात्रीं न्युब्जीकुर्यात् ॥ आचम्य प्राङ्मुखो यजमानः जलाशयोत्सर्गं कुर्यात् ॥ तत्र कुशजलयवतिलानादाय देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं मम सर्वपापक्षयपूर्वक-



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुद्रालयगमनानन्तरबहुकल्पकालावधिकरुद्रलोकभोगानुभवपूर्वकपरार्द्धद्वयकालावच्छिन्नमहस्तपः प्रभृतिलोकग-
मनादिहतल्लोकभोगोत्तर कालसद्योगबलप्राप्य वैष्णवपदप्राप्तिकामोहमिमं तडागादिजलाशयं वरुणदेवताकं
स्नानपानावगाहनाद्यर्थं सर्वेभ्यो भूतेभ्यो उत्सृजे इत्युक्त्वा जलाशयं निरीक्ष्य जलं भूमौ निक्षिपेत् ॥
मंत्रद्वयं जपेत् ॥ सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतज्जलमूर्जितम् ॥ रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥ १ ॥
सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मया दत्तमिदं जलम् ॥ रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥ २ ॥ ततो मण्डपमागत्य
प्रागादिष्विन्द्रादिभ्यः दधिमाषभक्तबलिं दद्यात् ॥ (अथाचारः तडागे नागयष्ट्यारोपणम्) तत्र गुरुरष्टसु
चूतपत्रेष्वनन्तवासुकितक्षककर्कोटकपद्मकुलिकानां नामानि प्रत्येकं लिखित्वा प्राक्स्थापितसजलकलशे
प्रक्षिप्यालोड्य तत्र वरुणं पूजयित्वा एकं चूतपत्रमाकृष्य तत्पत्रलिखितनामानं नागं तीर्थजलाप्लुतायां यज्ञिय-
वृक्षोद्भवायां जलाशयाल्पत्वाद्यनुसारतो द्वादशपंचदशविंशत्यन्यतमारत्निमितायां यष्ट्यां अमुकनाग इहागच्छ
इह तिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा अनेननागेनास्य जलाशयस्य रक्षा कार्या इति जनेभ्यः श्रावयित्वा तं नागं यष्टौ
अमुकनागाय नम इति पूजयेत् ॥ ततो यष्टिसंबन्धिवर्तुलमस्तकोपरि लोहमयं त्रिशूलं चक्रं वा आरोपयन्ति ॥
ततो जलमध्ये प्रागेव यष्ट्यर्थकृतखातसमीपे अर्चितां यष्टिं नयेत् ॥ ततः खाते दधिमध्वक्षतकुशातीर्थजलपंच
२६॥ रत्नानि प्रक्षिप्य ॐ ऊर्ध्वऽऊषुणऽऊतयेतिष्ठादेवोनसविता ॥ ऊर्ध्वोवाजस्यसनितायदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ॐ स्थिरोभवव्वीड्वङ्गऽआशुर्भवव्वाज्यर्वन् ॥ पृथुर्भवसुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः ॥ इतिमंत्रद्वयेन स्थिरकरणम् (इदं यष्ट्यारोपणं कूपवाप्योर्न कर्तव्यम्) इति नागयष्टिरोपणम् ॥ ततो यजमानो गंगादितीर्थजलं जलाशये क्षिपेत् ॥ ततः प्राङ्मुखोपविश्य पठेत् ॥ कुरुक्षेत्रं गयां गंगां प्रभासं पुष्कराणि च ॥ एतानि पंच तीर्थानि तडागे निवसंतु मे ॥ १ ॥ वितस्ता कौशिकी सिन्धुः सरयू च सरस्वती ॥ एतानि पंचतीर्थानि तडागे निवसंतु मे ॥ २ ॥ दशार्णा मुरला सिंधुरथावती दृषद्वती ॥ एतानि पंच तीर्थानि तडागे निवसंतु मे ॥ ३ ॥ यमुना नर्मदा रेवा चंद्रभागा च वेदिका ॥ एतानि पुण्यतीर्थानि तडागे निवसंतु मे ॥ ४ ॥ गोमती वाङ्मती शोणो गंडकी सागरस्तथा ॥ एतानि पंच तीर्थानि तडागे निवसंतु मे ॥ ५ ॥ इति पठित्वा जलं स्पृष्ट्वा ॐ आपोहिष्ठेतितृचं जपन्नविच्छिन्नदुग्धधारया जलाशयं त्रिः प्रदक्षिणीकुर्यात् ॥ तत एकं ब्राह्मणं यथेष्टदुग्धं पाययेत् ॥ गुरुर्दिनत्रयं स्थापितदेवानां पूजनं कृत्वा वारुणहोमं कुर्यात् ॥ स्विष्टकृदादिपूर्णाहुत्यन्तं उत्तराङ्गानि च कुर्यात् ॥ संस्रवप्राशनं आचमनं पवित्राभ्यां मार्जनम् पूर्णपात्रदानं प्रणीताविमोकः आचार्याय सवत्सां गां शय्यापात्रीं च दद्यात् ॥ ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् ॥ अभिषेको विसर्जनम् ॥ प्रमादादिति पठित्वा विष्णुं स्मरेत् ॥ इति जलाशयोत्सर्गः समाप्तः ॥



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# अथारामोत्सर्गप्रयोगः ।

अथ जलाशयोत्सर्गोक्तकालमनुस्मृत्याधिवासनदिनात्पूर्वेद्युः कृतैकभक्तादिनियमोऽधिवासनदिने कर्ता शुभासने प्राङ्मुखोपविश्याचम्य प्राणानायम्य ॥ अपवित्रः पवित्रो वेति आत्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन्मंगलमंत्रान्पठेत् ॥ देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्माहं मम समस्तपापक्षयातीतानागतपितृकुलतारणकामो भगवत्प्रीतिकामो वा आरामोत्सर्गं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन० स्वस्ति० करिष्ये तत्रादौ निर्विघ्नता० ॥ गणेशपूजनादारभ्य मंडपपूजन प्रधानपूजनाग्निस्थापनग्रहस्थापन-ग्रहाहुतिं च कृत्वा ततो आचार्यः चतुरस्रपीठिकामध्ये कृतवालान्वृक्षान्सर्वौषध्युदकैः सिक्तां पिष्टांतकैः पुष्पमालाभिर्वासोभिश्चालङ्कृत्य सुवर्णसूच्या प्रतिवृक्षस्कन्धसमीपे कर्णवेधं तदुपरिप्रदेशे सुवर्णशलाकया नेत्राञ्जनं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वा मूलबद्धचतुरस्रवेदिकोपरि सप्तधान्यं प्रक्षिप्य तस्योपरि जलपूर्णा-न्घटान्सोपस्कान्प्रतिवृक्षसमीपे स्थापयेत् ॥ प्रतिवृक्षे कर्णाशक्तौ वृक्षाष्टके कलशस्थापनं कर्त्तव्यमित्याहुः ॥ ततोऽग्निस्थापनान्ते आचार्यः मध्यवेद्यां षोडशारे सूर्याद्या लोकपालान्ता देवता जलाशयोत्सर्गवत्संस्थाप्य प्रतिवृक्षं सप्ताष्टौ वेति कृतसंख्याकानि स्वर्णफलानि वेद्यां कूर्ममकरादिपात्रीस्थाने ॥ ॐ व्वनस्प्पतेव्वीड्वङ्गोहि-

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्र० भूयाऽअस्म्मत्त्सखाप्प्रतरंणःसुवीरः ॥ गोभिः सन्नद्धोऽअसिव्वीडयंस्वास्थातातेजयतुजेत्वांनि ॥ इत्यासादयेत् ॥ म०
॥१५८॥ तत्रैव ब्रह्माणं शिवं विष्णुं विनायकं कमलामम्बिकां भूतग्रामं च संस्थाप्य सर्वान्पूजयेत् ॥ ततः सर्वेभ्यो
बलीन्दद्यात् ॥ अग्निस्थापनात्प्राच्यां पादत्रयं भुवं त्यक्त्वा जलाशयोत्सर्गवद्यूपं निखनेत् ॥ ततः कुशकण्डिकां
विधायज्यभागान्तं कृत्वा समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकं सूर्यादिग्रहाणामाधिप्रत्याधिपश्चलोकपालदशदिक्पाल-
देवताभिः अष्टाष्टाभिराहुतिभिः जुहुयात् ॥ तदनन्तरंप्रधानमंत्रेण होमः ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ व्वनंस्पतेव्वीड्वङ्गेति ॥
अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं आज्येन जुहुयात् ॥ ततो अग्न्यादिपूजनं स्विष्टकृद्धोमं नवाहुतीं बलिं पूर्णाहुतिं च
कुर्यात् ॥ ततः कुण्डसमीपस्थकलशजलेन कुशैर्यजमानं सकुटुम्बमभिषिञ्चेयुः सर्वौषधीमनुलिप्य स्नापयेयुः ॥
त्र्यायुषं जमदग्नेति त्र्यायुषकरणम् ॥ संस्रवप्राशनम् ॥ आचमनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रति-
पत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतैतत्आरामोत्सर्ग० ब्रह्मणे० ॥ अग्नेः पश्चात्प्रणीताविमोकः विमोकोदकेन
उपयमनकुशैर्मार्जयेत् ॥ उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ॥ कृतैतत्आरामोत्सर्गकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं इमां सवत्सां
गां रुद्रदैवतां आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ कृतैतद्गोदानकर्मणः साङ्गता० ॥ कृतैतत्० आचार्यादिभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । कृतैतत्कर्मणः० यथासंख्याकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये ॥ कृतैतत्कर्मणः न्यूना- ॥१५८॥

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिरिक्त० भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ततः कर्ता हस्ते जलं गृहीत्वा । इदं आरामं यथासंख्यअश्वत्थादियुतान्वृक्षान्वनस्पतिदैवतान्स्वीयपापक्षयपूर्वकपितृमातृकुलद्वयतारणकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सर्वसत्वेभ्योऽहं उत्सृजे ॥ ततो मंत्रद्वयं पठेत् ॥ सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतद्वनमूर्जितम् ॥ रमन्तां सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः ॥ १ ॥ सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मया दत्तामिदं वनम् ॥ रमन्तां सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः ॥ २ ॥ प्रमादादिति पठित्वा ॥ इति आरामोत्सर्गपद्धतिः समाप्ता ॥

## पंचायतनप्रतिष्ठाक्रमकारिका ।

## ज्ञानमालायाम् ।

( शिवपंचायतनं ) यदा तु शङ्करं मध्ये ऐशान्यां श्रीपतिं यजेत् ॥ आग्नेय्यां च तथा हंसं नैर्ऋत्यां पार्वतीसुतम् ॥ वायव्यां च सदा पूज्या भवानी भक्तवत्सला ॥ ( विष्णुपंचायतनं ) यदा तु मध्ये गोविन्दमीशान्यां शङ्करं यजेत् ॥ आग्नेय्यां गणनाथश्च नैर्ऋत्यां तपनं तथा ॥ वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यं समाहितः ( सूर्यपंचायतनं ) सहस्रांशुर्यदा मध्ये ऐशान्यां पार्वतीपतिम् ॥ अग्नेय्यामेकदन्तं च नैर्ऋत्यामच्युतं

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा ॥ वायव्यां पूजयेद्देवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम् ( गणेशपंचायतनं ) हेरम्बं तु यदा मध्ये ऐशान्यामच्युतं यजेत् ॥ आग्नेय्यां पंचवक्रन्तु नैऋत्यां द्युमणिं यजेत् ॥ वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः ( देवीपंचायतनं ) भवानीं तु यदा मध्ये ऐशान्यां माधवं यजेत् ॥ आग्नेय्यां पार्वतीनाथं नैऋत्यां गणनायकम् ॥ प्रद्योतनं तु वायव्यामाचार्यस्तु प्रपूजयेत् ॥(रामपंचायतनं) रामचन्द्रं यजेन्मध्ये वामे जनकनन्दिनीम् । दक्षिणे लक्ष्मणं चैवं अग्रतो मारुतिं तथा ॥ भरतं दक्षिणेचैव शत्रुघ्नमं वाम एव च इति स्थापनप्रकारः ॥ तस्य चक्रम् ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विष्णु १ सूर्य | शिव २ गणेश | शिव ३ गणेश | विष्णु ४ शिव | विष्णु ५ शिव |
| शिव | विष्णु | सूर्य | गणेश | अंबिका |
| अंबिका गणेश | अंबिका सूर्य | अंबिका विष्णु | अंबिका सूर्य | रवि गणेश |

प्रकाशक—मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत-बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस सिटी ।

कृ० व० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित : ६८६५ a



CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

## ॥ पं० श्रीवायुनन्दनमिश्रकृतग्रन्थरत्नानि ॥

| | |
|---|---|
| (१) अर्की विवाहः— ... ... ... ... ... | -)॥ |
| (२) उपनयनपद्धतिः—मूलमात्रम् द्वितीयं संस्करणम् ... ... | ≡) |
| (३) कुम्भविवाहः... ... ... ... ... ... | -) |
| (४) गयाश्राद्धपद्धतिः—मूलमात्रम् ... ... ... ... | ≡) |
| (५) ग्रहप्रयोगः—अर्थात् ग्रहशान्तिः मूलमात्रम् ( तृतीयं संस्करणम् ) | ।।।) |
| (६) चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्—सुमनोहरम् ... ... ... | -)॥ |
| (७) दुर्गासप्तशती—पत्रात्मकम् ... ... ... ... | ।।।) |
| (८) दुर्गासप्तशती—कौशेयवस्त्राच्छादनयुता ... ... ... | ।।।०) |
| (९) नवग्रहचक्रम्— ... ... ... ... ... | -) |
| (१०) पञ्चदानपद्धतिः—मूलमात्रम् ... ... ... ... | ०) |
| (११) पञ्चाङ्गपद्धतिः— ,, ... ... ... ... | ≡) |
| (१२) प्रतिष्ठामहोदधिः— ,, ... ... ... ... | १।।।) |
| (१३) प्रेतमञ्जरी—भाषाटीकासहिता ... ... ... ... | यन्त्रस्थ |
| (१४) मण्डपकुण्डसिद्धिः—भा० टी० ... ... ... ... | यन्त्रस्थ |
| (१५) मूलशान्तिः—मूलमात्रम् ... ... ... ... | ।) |
| (१६) अस्याः—हृदयानन्दजनकम् चक्रम् ... ... ... | ०) |
| (१७) रुद्रयागपद्धतिः—मूलमात्रम् ... ... ... ... | यन्त्रस्थ |
| (१८) वास्तुशान्तिप्रयोगः— ,, ... ... ... ... | ।०) |
| (१९) वाशिष्ठीहवनपद्धतिः— ,, ... ... ... ... | ≡) |
| (२०) विवाहपद्धतिः—मूलमात्रम् (षष्ठं संस्करणम्) ... ... | ≡) |
| (२१) विष्णुयागपद्धतिः— ,, ... ... ... ... | यन्त्रस्थ |
| (२२) श्राद्धसंग्रहः—नूतनश्राद्धविवेकः मूलमात्रम् ... ... | १॥) |
| (२३) श्रावणीप्रयोगः—मूलमात्रम् ... ... ... ... | यन्त्रस्थ |
| (२४) श्रीसत्यनारायणव्रतकथा—चमत्कारसंयुक्तहिन्दीटीकासहिता | ।-) |
| (२५) सर्वतोभद्रचक्रम्—अतीवरमणीयकम् ... ... ... | -)॥ |
| (२६) त्रिपिण्डीश्राद्धपद्धतिः—मूलमात्रम् ... ... ... | ।) |

विविधकर्मकाण्डपुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

**मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स**

संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस सिटी ।

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

149
A

इति प्रतिष्ठामहोदधिः समाप्तः ।

Published by J. N. Yadava for Messrs. Master Khelarilal & Sons, Kachaurigali, Benares City.

CC.0- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri